

UNEVEN PAGE NUMBERS IN THE BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180556

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—881—5-8-74—15,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No.

1183/

Accession No.

11. 3927

Author

G 97 P

Title

This book should be returned on or before the date last marked below

गुरुदत्त

नम
और
प्रण

TAB AUR AB : NOVEL

GURUDUTT

मूल्य : दो रुपये

पूर्वावस्था



पहला परिच्छेद

एक अस्सी वर्ष की वृद्धा, एक हवेली में, एक सामान से शून्य कमरे में चटाई पर बैठी थी। उसको मिलने के लिए एक मध्यमावस्था का पुरुष आया हुआ था और उसके सम्मुख चटाई पर बैठा हुआ था। पुरुष कह रहा था, “मां ! इस प्रकार तो काम चलेगा नहीं।”

“तो कैसे चलेगा ?”

“तुम कहो तो मैं न्यायालय में एक प्रार्थना कर दूँ।”

“क्या प्रार्थना करोगे ?”

“यही कि तुमको निर्वाह के हेतु दो सौ रुपया प्रतिमास मिलने चाहिए।”

“परन्तु मैं दो सौ रुपये को लेकर क्या करूंगी ? रोटी शिव दे जाता है। वस्त्र तुम्हारे पिता इतने बनवाकर दे गए हैं कि कई वर्ष तक पहनूंगी, तब भी समाप्त नहीं होंगे। दान-दक्षिणा के लिए महेश आठ आना नित्य दे जाता है। और मैं कितनी देर तक जिऊंगी ?”

“पर मां ! है तो सब कुछ तुम्हारा ही। होना तो यह चाहिए कि तुम सबकी स्वाभिनी बनो। सबको अपनी इच्छानुसार बांटो। सब तुम्हारी खुशामद किया करें और सेवा करें।”

“देखो राम ! वृद्धा ने सतर्क हो, कहा। मेरा कुछ नहीं है। यह सम्पत्ति प्रभु-परमात्मा की है। मैं तो उतने की ही हकदार हूँ जितना मुझको खाने-पहिरने के लिए चाहिए। वह मुझको प्राप्त है।”

“शिव अभी तो देता है, परन्तु क्या जाने, किसी दिन भी आंखें

बदल ले ?”

“तो फिर क्या होगा ?”

“मां, भूखों मर जाओगी, जो दो-चार वर्ष तुमने जीना है, वह भी नहीं जी सकोगी ।”

वृद्धा का नाम कर्मदेवी था । वह दिल्ली के एक बड़े व्यापारी लाला सुलक्षणमल की विधवा थी । पति का देहान्त हुए अभी एक मास ही व्यतीत हुआ था । एक वसीयत (इच्छापत्र) लाला जी के हस्ताक्षरों से लाला जी के सबसे बड़े लड़के शिवकुमार ने न्यायालय में दाखिल करा दी थी और उसके अनुसार लाला जी की पूर्ण सम्पत्ति का उत्तराधिकारी अपने को घोषित करने की प्रार्थना की थी । न्यायालय ने सब सम्बन्धियों को, जिनकी संख्या पचास से ऊपर थी, एक नोटिस दे दिया था कि वे अमुक तिथि को उपस्थित होकर यह बताएं कि क्यों न शिवकुमार द्वारा उपस्थित किए गए इच्छापत्र को ठीक घोषित किया जाए और उसके अनुसार लाला सुलक्षणमल की सम्पत्ति के विभाजन की स्वीकृति दे दी जाए ।

लाला सुलक्षणमल का देहान्त इक्यासी वर्ष की आयु में हुआ था और वे अपने पीछे अपनी वृद्धा पत्नी, चार लड़के, चार लड़कियां एवं लड़के-लड़कियों की सन्तानें, जो इस समय पचास के ऊपर थीं, छोड़ गए थे ।

वृद्धा से बातें करने वाला लाला जी का सबसे छोटा लड़का रामकुमार था । लाला जी के कारोबार में दो लड़के सहायक रहे थे । एक का नाम शिवकुमार एवं दूसरे का नाम महेशकुमार था । दो छोटे लड़के पढ़-लिख गए थे और एक गोपालकुमार तो ज़िला कचहरी में ही नौकर था । वह सबजज बहादुर का पेशकार था । यद्यपि वेतन तो पैंतालीस रुपये मासिक ही मिलता था परन्तु चार-पांच रुपये नित्य मेज के नीचे से, आय हो जाती थी और निर्वाह हो रहा था । चौथा लड़का जो विधवा की सबसे छोटी एतदर्थ सबसे अधिक प्रिय सन्तान थी, वकील बन, अपना काम-धंधा चलाता था, वह सम्मुख बैठा रामकुमार था ।

राम न्यायालय से उस इच्छापत्र की एक प्रतिलिपि लाया था जो शिवकुमार ने न्यायालय में उपस्थित की थी । इच्छापत्र में लिखा था :

“यह पूर्ण सम्पत्ति मेरी अपनी उपार्जन की हुई है। मैं अपने पिता के घर से भाग आया था। दिल्ली में पहुंच, सात रुपये मासिक की नौकरी से कार्य आरम्भ कर सत्तर वर्ष के अनथक प्रयत्न से, मैंने यह पूर्ण सम्पत्ति उपार्जन की। इस सम्पत्ति के उपार्जन में केवल शिवकुमार ही सहायक रहा। महेशकुमार भी घर से भाग कलकत्ता में कारोबार करने चला गया था। वह चार वर्ष हुए, अपनी पत्नी एवं तीन बच्चों के साथ सर्वथा अकिंचन अवस्था में लौटा था। उसको मैंने दो सौ रुपये प्रतिमास पर, दुकान पर नौकर रख लिया था।

“अतएव मैं केवल शिवकुमार को ही इस सम्पत्ति का उत्तराधिकारी समझता हूं और उसे इस सारी सम्पत्ति के अर्जन करने में सहायक समझ, यह बात उसकी शुद्ध वृत्तियों पर छोड़ता हूं कि वह अपनी मां एवं विधवा बहिन सदारानी के निर्वाह का प्रबन्ध करता रहे।”

रामकुमार को तथा गोपालकुमार को इस इच्छापत्र के असली होने पर किंचित्-मात्र भी विश्वास न था। गोपाल और राम दोनों ने राय की थी। गोपाल का तो स्पष्ट कथन था, “मैं इस इच्छापत्र के असली होने को चुनौती दूंगा।” इसपर भी उसने अपने वकील भाई को अपना सब रहस्य बताया नहीं। वकील भी इसको चुनौती तो देना चाहता था, मगर वह चाहता था कि परिवार के सब सदस्य मिलकर भगड़ा करें तो कदाचित् यह इच्छापत्र रद्द हो सके। अन्यथा इसपर वह अपने पिता के हस्ताक्षर देख आया था और उसको वह अपने पास पिता के एक लिखित पत्र के हस्ताक्षरों से मिलान कर चुका था। उसका ज्ञान यह कहता था कि इच्छापत्र स्वीकृत होगा। भले ही इसके लिए शिवकुमार को उच्च न्यायालय तक जाना पड़े। इससे वह परिवार के सब सम्भव उत्तराधिकारियों को इच्छापत्र के स्वीकार किए जाने में बाधक बनवाना चाहता था। इससे वह अधिक से अधिक अपने बड़े भाई से जितना ऐंठ सके, ऐंठ लेने की आशा करता था। वह न्यायालय में, सबकी वकालत बिना एक भी पैसा लिए, करने को तैयार था।

इसलिए वह महेश से मिला था। उसने तो स्पष्ट कह दिया, “मैंने इस सम्पत्ति के अर्जन में कुछ अधिक सहयोग नहीं दिया, इस कारण मैं उसमें एक पैसे का भी स्वामी नहीं हूं।”

“परन्तु तुम बाप के बेटे तो हो।”

“केवल माता-पिता की सन्तान होना इस बात का सूचक नहीं कि मैं पिता के गाढ़े पसीने की कमाई का भागीदार बन सकूँ। मैं दस वर्ष की आयु में घर से भाग गया था और लाख प्रयत्न करने पर भी निर्वाह से अधिक उपलब्ध नहीं कर सका। बस, जीवन में मां ही एक ऐसी वस्तु मिली है जिसको मैं अपनी सम्पत्ति कह सकता हूँ।”

राम ने समझा कि यह बुद्धिहीन व्यक्ति है और यही कारण है कि वह जीवन में उन्नति नहीं कर सका। उसे छोड़, वह पेशकार भाई गोपाल कुमार से मिला। उसको मुकद्दमा लड़ने के हेतु तैयार, परन्तु बिना किसीकी सहायता के, देख प्रसन्न तो हुआ, परन्तु उसने न तो राम को अपना वकील बनाने का यत्न किया, न ही उसने उसको बताया कि किस प्रकार वह उपस्थित इच्छापत्र को गलत सिद्ध कर सकेगा।

राम अब मां से मिलने आया था। मां को अपनी अवस्था से सन्तुष्ट देख, उसने उसके मन में भय उत्पन्न करने का यत्न किया। उसने कह दिया, “मां ! भूखी मर जाओगी।”

“बेटा,” मां का निश्चित उत्तर था, “मेरी आयु अस्सी वर्ष की है। तुम्हारे पिता चले गए और मैं भी जाने को तैयार बैठी हूँ। बीमार पड़कर मरने से भूखे रहकर मरना सुगम होगा। इस कारण मुझको इसका शोक नहीं होगा। बेटा, मैं मुकद्दमा नहीं करूंगी।”

“पर मां ! मेरे लिए ही कर दो।”

“मैंने शिवकुमार से कहा था। उसने यह कहा कि पहले तुम सब लोग पिता जी के लिखे पर फूल चढ़ाओ, उपरान्त मैं सबको कुछ न कुछ पिता जी की सम्पत्ति में से प्रसाद के रूप में दे दूंगा।”

वकील इस प्रकार की अनिश्चित बातों से संतुष्ट नहीं था। अतः वह अपनी बहन सदारानी के पास जा पहुँचा। सदारानी राम से दो वर्ष बड़ी थी। वह बालविधवा थी और जब से विधवा हुई थी, अपने पिता के ही घर में रहती थी। लाला सुलक्षणमल के गृह में दो कक्ष थे। एक में शिवकुमार रहता था। उसका अपना लड़का निरंजन तो पृथक् गृह में रहता था। शिवकुमार की दो लड़कियाँ थीं। एवं दोनों का विवाह हो चुका था और वे अपने-अपने पतियों के घर में रहती थीं।

शिवकुमार गृह के इस कक्ष में अकेला अपनी पत्नी के साथ निवास करता था। गृह के दूसरे कक्ष में सुलक्षणमल स्वयं रहता था और उसके साथ उसकी विधवा लड़की सदारानी रहती थी। अब सुलक्षणमल के देहान्त पर गृह के इस कक्ष में मां एवं बेटी दो औरतें ही रह गई थीं। दोनों ने एक विधवा ब्राह्मणी को नौकरानी रख लिया था। वह उनका चाँका-बासन कर देती थी, कपड़े धो देती थी। और कभी-कभी बाज़ार जाएं तो साथ चली जाया करती थी।

राम ने सदारानी से जाकर कहा, “बहिन ! शिवकुमार की नीयत ठीक मालूम नहीं होती।”

“क्यों ! क्या किया है उसने !”

“उसने यह इच्छापत्र जाली बना न्यायालय में उपस्थित कर दिया है। पिता जी तो तुमपर बहुत दयालु थे और इसमें तुम्हारा कुछ भी उल्लेख नहीं है।”

“किया तो है। उन्होंने शिव दादा को आदेश दे दिया है कि मेरा ध्यान रखें। और मुझको क्या चाहिए !”

“मगर बहिन, यह इच्छापत्र झूठा है।”

“तो मुझको क्या ! तुम भाई-भाई जानो और समझो। मैं तो, तुममें से कोई भी मालिक बने, अपने निर्वाह-हेतु पा लूगी।”

निराश राम अपने घर लौट गया। जब से उसने वकालत का कार्य आरम्भ किया था, वह एक पृथक् गृह में निवास करता था।

२

लाला सुलक्षणमल की एक लड़की थी गौरी। उसके घरवाले का नाम था गोवर्धनलाल। वह डिप्टी कमिश्नर के दफ्तर में एक साधारण क्लर्क था। युवावस्था में वह बहुत ‘राशी’ समझा जाता था। किसीका कार्य बिना घूस लिए नहीं करता था और घूस से कुछ भी कार्य सरलता से कर देता था। परन्तु ज्यों-ज्यों उसकी अवस्था बड़ी होती गई और उसके घर में कोई सन्तान उत्पन्न न हुई तो उसके मन में भय समाने लगा। वह दान-दक्षिणा तथा पूजा-पाठ करने लगा।

इसपर भी कुछ न बना तो उसने घूस लेना छोड़ दिया। फिर इससे

भी एक पग आगे की ओर बढ़ा। वह अपने बस का कार्य बिना कुछ लिए-दिए करने लगा। अब एक अन्तिम पग उठाने का विचार कर रहा था। वह था—सब कुछ त्याग, संन्यास धारण कर, हरिद्वार में जाकर भगवद्भजन में लीन हो जाना। यदि इसमें कुछ बाधा थी तो वह गौरी थी। गौरी अपने पति के साथ जाना चाहती थी, परन्तु पत्नी के साथ संन्यास नहीं ग्रहण किया जा सकता था।

लाला सुलक्षणमल को मरने से पूर्व गोवर्धन की इस अवस्था का ज्ञान था। अतः देहवसान से एक दिन पूर्व उन्होंने गोवर्धन को बुलाया था एवं कक्ष को बन्द कर उससे कुछ बातें की थीं। उसने वह कही बात लाला जी के लड़कों को नहीं बताई थी। चारों भाई गोवर्धन को मूर्ख मानते थे और लाला जी के क्रियाकर्म हो जाने पर उन्होंने उससे बात तक नहीं की थी।

अन्य सम्बन्धियों की भांति उसको भी नोटिस आया था कि शिव-कुमार ने एक इच्छापत्र दाखिल किया है। यदि उसको उसमें कुछ आपत्ति हो तो अमुक तिथि को न्यायालय में आकर उपस्थित करे। उसने घर आकर अपनी पत्नी को बताया, “गौरी ! एक अदालती नोटिस आया है।”

“क्या आया है ?”

“यही कि शिवकुमार ने लाला जी का इच्छापत्र दाखिल करा दिया है।”

“तो ठीक है।” गौरी ने अनासक्ति का भाव प्रकट करते हुए कह दिया।

“परन्तु लाला जी ने कहा था कि उनको शिवकुमार पर विश्वास नहीं है। इसी कारण उन्होंने इच्छापत्र रजिस्टर्ड करा दिया है।”

“तो क्या यह इच्छापत्र रजिस्टर्ड नहीं है ?” गौरी ने पूछा।

“नोटिस में इस विषय पर कुछ लिखा नहीं।”

“तो आप उस इच्छापत्र की, जो दाखिल किया गया है, प्रतिलिपि नहीं ले सकते ?”

“ले सकता हूँ। पर मैं सोचता हूँ कि मैं क्यों इस झंझट में पड़ूँ ? मुझको तो कुछ लेना-देना नहीं।”

“देखिए जी ! हमने ठाकुर जी के सम्मुख सौगन्ध ली हुई है कि हम यथासम्भव लोक-कल्याण के हेतु प्रयत्नशील रहेंगे । परमात्मा के निमित्त हम कर्म करेंगे, तो हमारे लिए क्यों का तो कुछ प्रयोजन ही नहीं रह जाता ।”

अगले दिन गोवर्धनलाल ने न्यायालय में उस इच्छापत्र की नकल के लिए प्रार्थना कर दी ।

यद्यपि उस इच्छापत्र में पूर्ण सम्पत्ति पर शिवकुमार का अधिकार माना गया था और वह रजिस्टर्ड नहीं था तो भी गोवर्धनलाल को उसमें कोई अनौचित्य प्रतीत नहीं हुआ । वह जानता था कि शिवकुमार ही इस सम्पत्ति के निर्माण में पिता का सहायक रहा है । इससे उसके हृदय में अपने उस ज्ञान को प्रयोग करने के लिए उत्साह नहीं था जो लाला जी के देहावसान से एक दिन पूर्व, पृथक् के वार्तालाप में प्राप्त हुआ था । वह सायंकाल घर आया तो उसने गौरी को पूर्ण परिस्थिति से अवगत करा दिया । साथ ही उसने अपने मौन रहने का कारण भी बता दिया ।

गौरी अपने पति के इस निर्णय से सन्तुष्ट नहीं थी । उसने कहा, “शिव ने यह भूठा लेख उपस्थित किया है । कोई भूठ व्यर्थ नहीं बोलता । इससे यह सिद्ध होता है कि उसने किसी दूसरे का अधिकार छीना है ।”

“तो तुम समझती हो कि एक बूढ़ा आदमी कुछ लिख गया और वह किसीके अधिकार का प्रमाण हो गया ?”

“एक तो यह बात कि हम जानते नहीं कि किसका अधिकार शिव ने हरण किया है, वह शिव से अधिक उपयुक्त अधिकारी हो सकता है ? दूसरे यह कि हम कौन हैं किसीके निर्णय को बदलने वाले । पिता जी अधिकारी थे एवं उनका लिखा मान्य होना चाहिए ।”

“गौरी ! इस बात में तो मुझको संशय हो गया है कि पिता जी कैसे अधिकारी थे । सम्पत्ति-निर्माण में तो शिव उनका सहायक रहा है । अतः शिव भी उस सम्पत्ति को वितरण करने का उतना ही अधिकारी है जितना लाला जी थे । साथ ही सम्पत्ति तो ईश्वर की देन है । यह किसीके एकाधिकार में मान लेना तो ठीक नहीं ।”

गौरी हंस पड़ी । वह जानती थी कि युक्ति करने में उसके पति सदा

दुर्बल रहे हैं। अतः उसने उसको समझाना आरम्भ कर दिया। उसने कहा, “स्वामिन्, भगवान ने यह धन-सम्पदा पिता जी को दी थी। इससे यही प्रतीत होता है कि उसने उनको इसके वितरण का अधिकार भी दिया था। देखने की बात तो केवल यह है कि क्या पिता जी ने परमात्मा का आदेश कि उसके द्वारा दी गई सम्पत्ति को प्रथम यज्ञरूप में एवं उपरान्त अपने प्रयोग में लिया है अथवा नहीं।”

“परन्तु देवी ! कैसे पता चले कि लाला जी का दूसरा इच्छापत्र पहले से अधिक यज्ञरूप हो ?”

“मैं तो यह कह रही हूँ कि लाला जी की कमाई है। वह उनकी रुचि के अनुसार ही व्यय होनी चाहिए। इसपर भी यदि उनकी रुचि में हमको कोई अनौचित्य प्रतीत हुआ तो हम उस अनौचित्य से लाभ उठाने वाले को समझा सकते हैं कि उसको वह लाभ भगवद् अर्पण कर देना चाहिए। हम लाला जी के निश्चय में हस्तक्षेप कर, भला कैसे उनके पाप-पुण्य में भागीदार बन सकते हैं ?”

गोवर्धनलाल को बात समझ आ गई। उसमें यह गुण तो था कि जब कोई बात वह समझ जाता था तो फिर वह मानता भी था। अतः अगले दिन वह रजिस्ट्रार के कार्यालय में गया और पेशकार से कहकर लाला सुलक्षणमल के इच्छापत्र की खोज करवा उसकी प्रमाणित लिपि ले आया। इस इच्छापत्र को पढ़कर तो वह चकित रह गया। उसको समझ आ गया कि लाला सुलक्षणमल जो एक अक्षर भी अंग्रेज़ी का नहीं पढ़े थे तथा जिन्होंने एक दिन भी किसी स्कूल-पाठशाला में जाकर शिक्षा ग्रहण नहीं की थी, बड़े-बड़े पढ़े-लिखों से अधिक न्याय-बुद्धि रखते थे। उन्होंने अपने इस इच्छापत्र में लिखा था :

“मैं दिल्ली में सर्वथा अकिञ्चन के रूप में, दस वर्ष की आयु में आया था। मैंने, सात रुपये मासिक वेतनभोगी से, उन्नति की ओर अग्रसर हो, यह पूर्ण सम्पत्ति अर्जित की है। जब मैं पैंतीस वर्ष का था तो शिव भी मेरे साथ कार्य में सहयोग देने लगा था। यद्यपि मैं अपनी एवं शिवकुमार की योग्यता में तुलना नहीं कर सकता, इसपर भी मोटे तौर पर हम दोनों का इस सम्पत्ति के अर्जन में भाग, उस समय से तो लगाया ही जा सकता है जो हम दोनों ने इसमें व्यय किया है। मैंने इसमें सत्तर वर्ष तक परिश्रम

किया है और उसने पैंतालीस वर्ष तक। अतः इस काल के अनुपात में ही मेरा और उसका सम्पत्ति में भाग है। प्रति सौ रुपये में मेरा भाग साठ रुपये है और शिवकुमार का चालीस रुपये।

“अतः मैं चाहता हूँ कि मेरा दामाद लाला गोवर्धनलाल मेरी सम्पत्ति का संरक्षक बने एवं इसका चालीस प्रतिशत शिवकुमार को देकर शेष का निम्न रूप में वितरण करे—

“मेरे साठ प्रतिशत में से मेरी पत्नी कर्मदेवी को पांच प्रतिशत दिया जाए। मेरी लड़की सदारानी को दो प्रतिशत, और मेरी शेष तीनों लड़कियों को दो-दो प्रतिशत।

“मेरा लड़का महेश भी चार वर्ष से मेरे साथ कार्य करता रहा है। मैं चाहता हूँ कि उसको मेरी सम्पत्ति का तीन प्रतिशत मिले एवं चार प्रतिशत गोवर्धनलाल को इस कार्य के हेतु मिले जो मेरे इच्छापत्र के अनुसार मेरी सम्पत्ति का वितरण कराए, शेष चालीस प्रतिशत से दिल्ली के किसी ऐसे मुहल्ले में, जो अति निर्धनों का हो, एक सत्यनारायण का मन्दिर निर्माण करवा, उसकी रक्षा का प्रबन्ध करे। सम्पत्ति की सूची इच्छापत्र के साथ परिशिष्ट में दी गई है।”

जब गोवर्धनलाल ने यह इच्छापत्र गौरी को सुनाया तो उसने पूछा, “अब क्या करेंगे ?”

“मेरे मन का संशय निवारण हो गया है। मैं समझता था कि पिता-जी ने अपना संचित धन न जाने किन-किन अनधिकारियों में विभक्त किया होगा।”

“मुझको उनकी धर्म-बुद्धि पर विश्वास था। परन्तु अब आप क्या करेंगे ?”

“मैं कल ही सबजज साहब के न्यायालय में एक याचना करने वाला हूँ कि शिवकुमार द्वारा उपस्थित किया गया इच्छापत्र असली नहीं है। असली इच्छापत्र वह है जो नियमपूर्वक रजिस्टर्ड कराया गया है और उसके अनुसार मुझको सम्पत्ति का आदाता (रिसीवर) नियुक्त किया जाए।”

यह किया गया और इसने शिवकुमार के पूर्ण षड्यन्त्र पर दम्ब गिरा दिया।

सबजज के न्यायालय से एक दूसरा नोटिस जारी हुआ और उसमें परिवार के सदस्यों से इस नये इच्छापत्र पर भी अनुमति मांगी गई। यह नोटिस जब शिवकुमार के पास पहुंचा तो वह इस नये इच्छापत्र की प्रतिलिपि लेने न्यायालय में जा पहुंचा। इस इच्छापत्र को पढ़, उसके पांव तले से मिट्टी निकल गई।

वह सीधा गोवर्धनलाल के गृह पर जा पहुंचा एवं अपनी बहिन गौरी के समक्ष अपने जीजा से पूछने लगा, “जीजा जी ! आपने यह क्या कर दिया है ?”

“क्या कर दिया है ?”

“मुझको भूठा सिद्ध करने का यत्न किया है।”

“मैंने ऐसी कोई बात नहीं की। मैंने प्रार्थना की है कि वह इच्छापत्र जो तुम्हारे पक्ष में जाता है, वह वास्तविक नहीं। वास्तविक वह है जो मैंने दाखिल किया है।”

“यही तो कह रहा हूं कि आपके विचार से वह नकली है। मैंने बनवाया है ?”

“इसका अर्थ यह नहीं निकलता। यह भी सम्भव है कि तुम्हारे वाला इच्छापत्र पूर्व का लिखा हो और रजिस्टर्ड पीछे वाला हो।”

“जी नहीं। यह रजिस्टर्ड पूर्व का है एवं यह तो उन्होंने देहावसान से एक सप्ताह पूर्व अपने रुग्णागार में बैठ लिखाया था। इसके साक्षी हैं। इसको लिखने वाला भी है।”

इस रहस्योद्घाटन से तो गोवर्धनलाल भौचक्का हो, मुख देखता रह गया। कुछ देर विचारकर उसने कहा, “तो ठीक है। शिवकुमार, तुम वे सब प्रमाण न्यायालय में उपस्थित करना। मुझको तुम्हारे यह सिद्ध करने पर कोई नाराजगी नहीं होगी।”

“मैं यह कहने आया हूं कि आप मेरे वकील के कहे अनुसार अपने बयान दे दें। आपका और गौरी का वह भाग, जो रजिस्टर्ड इच्छापत्र के अनुसार बनेगा, मैं दे दूंगा। नहीं तो यह मुकदमा चलेगा और कदाचित् कई वर्ष तक चलेगा।”

“देखो शिवकुमार ! मैं इसमें से कुछ भी ग्रहण नहीं करना चाहता। मैं बयान तो वही दूंगा जो सत्य है। शेष रही बात मुकदमे की, मुझको

अतिरिक्त कोई भी इस भगड़े में रुचि न रखने के कारण, दोनों इच्छा-पत्रों में अन्तर को नहीं समझता था। इस कारण दुकान के मुहरबन्द हो जाने की बात को राम और गोपाल के अतिरिक्त किसीने पसन्द नहीं किया।

मां कर्मदेवी ने कहा, “शिव ! गोवर्धन एवं गौरी को भी बुला लेते तो मैं उनको समझा देती। गौरी तो सदैव मेरा कहा मान लेती है।”

“मैंने उनको आने का सन्देश भेजा था और उनका उत्तर आया है कि अब तो न्यायालय में मिलेंगे।”

“ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी पुरानी लेन-देन की प्रवृत्ति पुनः जाग्रत् हो उठी है।”

राम और गोपाल अभी तक चुप एवं शान्त बैठे थे। वे शिव की बातें सुन, मुस्करा रहे थे। अब विष्णुदेवी, सबसे बड़ी बहिन, ने कहा, “कम से कम हम सबको उनसे बोलना-चालना बन्द कर देना चाहिए।”

राम बोल उठा, “बहिन, जानती हो गोवर्धन ने क्या दावा किया है ?”

“मैंने वह नोटिस, जो पीछे आया है, तुम्हारे जीजा जी से पढ़ाया था। उसमें तो यह लिखा है कि वह इच्छापत्र जो शिवकुमार ने दाखिल किया है, सत्य नहीं। वास्तविक इच्छापत्र वह है जो उसने दिया है।”

“और उन दोनों में क्या लिखा है अथवा उसमें से किस-किसको क्या प्राप्त होने वाला है, यह भी जाना है अथवा नहीं।”

“बात यह है कि हम लड़कियों को न तो कुछ लेने की लालसा है और न ही हमको कुछ आशा है। इससे प्रतिलिपि लेने में समय और धन व्यर्थ गंवाने की इच्छा नहीं। मैं तो यह विचार कर रही थी कि शिव भैया को अपना स्थानापन्न पत्र (प्रॉक्सी) दे दूँ, जिससे मुझको वहां जाने से अवकाश मिल जाए।”

“वह तुम मुझको दे देना। मैं ले जाऊंगा। मैं तो प्रतिदिन न्यायालय में जाता ही हूँ।” राम ने कह दिया।

“तुम लिख लाना, मैं हस्ताक्षर कर दूंगी।”

“और तुम क्या चाहती हो लक्ष्मी बहिन ?” राम ने दूसरी बहिन से पूछ लिया।

लक्ष्मी ने उत्तर दिया, “तुम्हारे जीजा जी को मैंने नोटिस दिखाया था। उन्होंने कहा था कि एक दिन गोवर्धन जी से मिलकर पता करेंगे कि मामला क्या है ! वे बेमतलब बात तो करने वाले नहीं हैं।”

“तो बहिन ! मैं मतलब समझा देता हूँ। क्यों शिव भैया, कहो तो इन सबको समझा दू।”

शिव ने राम की नीयत में गड़बड़ देखी तो कह दिया, “इच्छापत्र में कुछ भी लिखा हो। मैं एक बात पूछता हूँ कि जब तक पिता जी जीवित थे, अपने सब परिवार को संतुष्ट रखते थे। वे सदैव मेरी इच्छा-नुसार ही सब लेते-देते थे। अगर मैं उनके पीछे कारोबार को सम्हालूंगा तो उनकी भांति ही मैं भी उस प्रकार लेता-देता रहूंगा। यह गोवर्धन स्वयं आदाता बनना चाहता है। भला यह पापकर्म कि पिता का श्राद्ध लड़की एवं दामाद करें, कहां तक उचित है ?”

राम और गोपाल हंस पड़े। हंसकर वे चुप रहे। शिवकुमार ने राम को सम्बोधन कर कहा, “तुम क्या आशा करते हो गोवर्धन से ?”

गोपाल ने कहा, “भैया, पिता की बात पिता के साथ गई। अब तो हम तुमसे पूछते हैं कि तुम क्या देने वाले हो हमको ?”

“पिता जी ने एक बात मुझको लिखकर दे रखी है। उसमें उन्होंने लिखा था कि प्रत्येक लड़के के लड़के तथा पोते के विवाह पर पांच-पांच हजार रुपया दुकान से दे दिया जाया करे तथा लड़की के विवाह पर दस हजार रुपया। इसी प्रकार प्रत्येक लड़की के लड़के के विवाह पर तीन-तीन हजार रुपया एवं उनकी लड़की के विवाह पर छः-छः हजार रुपया।”

“यह बात उन्होंने अपने इच्छापत्र में क्यों नहीं लिख दी ?” राम ने पूछ लिया। “साथ ही यह तो बहुत कम है। मैं भी वैसे ही पिता का पुत्र हूँ जैसे तुम हो। पिता जी मुझको कुछ भी नहीं दे गए। मेरे लड़कों एवं पोतों की चिन्ता तो उनको हो गई, पर मेरी क्यों नहीं हुई ?”

“यह तो पिता जी से जाकर पूछ लेना कि वे क्यों क्या कर गए और क्यों क्या नहीं कर गए।”

“देखो दादा ! मैंने दोनों इच्छापत्र पढ़े हैं। उनमें कौन ठीक है और कौन गलत है, यह तो न्यायालय निर्णय करेगा। मगर तुम यदि हमको

चौथा भाग देना चाहो तो बात करो, मैं अभी गौरी को बुलाकर, निर्णय घर पर करा सकता हूँ।”

गोपाल ने कह दिया, “दादा ! हमको किसलिए बुलाया है ?”

“मैं यह चाहता हूँ कि हम सब गौरी बहिन को समझावें और आप सब कुछ ले-देकर उसको घर में ही निर्णय करने पर राजी कर लें।”

“यह निर्णय हो सकता है। मैं अभी-अभी गोवर्धन जीजा से मिल-कर आया हूँ। उनसे उपस्थित इच्छापत्र आप स्वीकार कर लें तो बात बन सकती है।”

इसपर राम ने कह दिया, “मैं तो दोनों इच्छापत्रों को अमृत्य मानता हूँ। दादा वाले इच्छापत्र में सब कुछ दादा को मिल गया और गोवर्धन जीजा जी वाले इच्छापत्र में सब कुछ ठाकुर जी के हेतु है।”

“ठाकुर जी ?” माता कर्मदेवी के कान खड़े हो गए, “कौन ठाकुर जी ?”

गोपाल ने बताया, “मां ! गोवर्धन जी वाले इच्छापत्र में लिखा है कि रुपये में छः आने के लगभग शिव दादा को मिले। छः आने एक सत्यनारायण के मन्दिर-निर्माण करवाने में व्यय हों और शेष चार आना उनके लड़कों एवं लड़कियों में विभक्त कर दिया जाए। और शिव दादा वाले इच्छापत्र में तो सब कुछ शिव दादा के लिए है। न मन्दिर, न मस्जिद, न दूसरे बहिन-भाई हैं।”

“शिव !” मां ने कह दिया, “बेटा, मान जाओ न ! किसी भले कार्य के लिए ही तो कह रहे हैं।”

इसपर राम ने कह दिया, “पर मां, हम तो उसकी सहायता करेंगे जो हमको पूरा-पूरा भाग देगा। मैं तो कहता हूँ कि दोनों असत्य हैं। पिता जी ने किसी प्रकार का कोई इच्छापत्र नहीं लिख रखा।”

“देखो राम ! तुम्हारे पिता ने क्या कर रखा है और क्या नहीं कर रखा, इसको छोड़ो। मैं तो यह कहती हूँ कि सबको कुछ न कुछ तो मिलेगा ही। क्यों महेश ! तुमको क्या मिलेगा ?”

“दादा तो मुझको दुकान पर नौकर रखने का आश्वासन दे रहे हैं और जीजा गोवर्धन जी मुझको लगभग डेढ़ लाख दिलवा रहे हैं।”

“महेश ! तुम क्या चाहते हो ?”

“मुझको तो पिता जी से कुछ भी आशा नहीं थी। वे मुझसे सदा रुष्ट रहते थे। यह नौकरी देकर भी मेरे बच्चों पर दया ही कर रहे थे, शिव दादा ने यही कुछ देने का आश्वासन दिया था। गोवर्धन दादा ने डेढ़ लाख का आश्वासन दिया है और राम ने मुझको सात लाख दिलवाने का वचन दिया है। जो कोई भी जीत जाए मुझको तो लेना ही लेना है। मैं मुकदमा करने की सामर्थ्य नहीं रखता।”

इसपर मां ने कह दिया, “न्यायालय का निर्णय हमारे हाथ में तो है नहीं। हां शिव, घर में फैसला कर लो। तुम मुझको गौरी के घर ले चलो; मैं निर्णय करवा दूंगी।”

राम ने पूछ लिया, “पर दादा और जीजा जी मान जाएंगे क्या?”

“बताओ शिव?”

“जो तुम सब लोग कहोगे मैं वह मान जाऊंगा।”

अब मां ने लड़कियों को सम्बोधन कर पूछ लिया, “क्यों विष्णी, लक्ष्मी और सदा, तुम क्या कहती हो?”

“मां! यदि तुम निर्णय कराती हो तो जो तुम कहोगी हमको वही स्वीकार है। हमने तो बताया है न! न कुछ पाने की आशा थी, न ही लालसा।”

“तुम बताओ गोपाल!” मां ने पूछ लिया।

“देखो मां! सत्य क्या है, मैं नहीं जानता। परन्तु मैं जानता हूँ कि न्यायालय मैं क्या होने वाला है। गोवर्धन जीजा जीत जाएंगे। इसलिए मेरी तो यही राय है कि शिव दादा को उसकी बात मान जानी चाहिए।”

“मैं नहीं मानूंगा।” राम ने कह दिया।

“ठीक है। तुम भगड़ा कर लेना। तुम्हारी बात तो पहले ही दिन रद्द हो जाएगी।”

“राम, मान जाओ। देखो मैं भी तो अन्तकाल पर ही हूँ। मैं अपने भाग की सम्पत्ति तुम्हारे नाम लिख दूंगी।”

राम तो ज़रा धमकाकर ही अधिक से अधिक प्राप्त करना चाहता था। इससे वह माना तो नहीं। इसपर भी घर में निर्णय के लिए वह भी कहने लगा। उसने कह दिया, “मां! तुम यत्न करो कि अधिक से अधिक इस गरीब पुत्र को दिलवा सको।”

“राम ! तुम मुझसे कल प्रातःकाल मिलना ।” शिव ने कह दिया ।
“किसलिए ?”

“गोवर्धन से बातचीत करने के लिए मैं कुछ मसाला दगा ।”

४

गोवर्धनलाल को गोपाल बता आया था कि शिवकुमार ने पारिवारिक गोष्ठी का आयोजन किया है । जब शिव ने गोवर्धनलाल तथा अपनी बहिन गौरी को उस गोष्ठी में आमंत्रित नहीं किया तो वह समझ गया कि परिवार वालों को भड़काने के हेतु ही उसने यह यत्न किया है । अतः वह उस प्रयत्न की दिशा एवं परिणाम जानने के लिए माता कर्मदेवी के घर पहुंच गया । उस समय वह गोष्ठी में गई हुई थी । वह उसके लौटने की प्रतीक्षा में वहीं ठहर गया ।

कर्मदेवी एवं सदारानी इकट्ठी लौटीं । कर्मदेवी वृद्धावस्था के कारण रात के समय चलने-फिरने में कठिनाई अनुभव करती थी और सदारानी उसको हाथ पकड़कर लाई थी । वहां गोवर्धन को बैठा देख दोनों को प्रसन्नता हुई । मां ने कह दिया, “बेटा, तुम आ गए हो, बहुत अच्छा किया है । घर में भगड़ा शोभनीय नहीं है । यही मैं शिव को कह रही थी । यही तुमको कहती हूं ।”

“माता जी !” गोवर्धनलाल ने कह दिया, “जब यह बात निश्चय हो जाए कि लाला जी की वास्तविक इच्छा क्या थी तो इसमें हेर-फेर करना तो भारी पाप हो जाएगा और साथ ही जब वे न्याय-बुद्धि से कार्य ले रहे हैं । शिवकुमार को उसका उचित भाग दिया गया है । उन्होंने जितने दिन पिताजी के साथ काम किया है उन दिनों की गिनती कर सम्पत्ति में उसका भाग आंककर दिया है ।

“केवल एक बात उन्होंने विलक्षण की है । वह यह कि लगभग दो लाख रुपया मुझको दे दिया है । यह अपने अन्य दामादों को नहीं दिया । उन्होंने लिखा है कि यह मेरे आदाता बनने के प्रतिकार में है । मैं यह अपने परिश्रम से अधिक समझता हूं, अतः यदि इसको दे देने से कोई मानता हो तो मैं अपना भाग सहर्ष दे दूंगा, परन्तु माता जी, मैं किसी दूसरे के भाग में एक पाई का भी हेर-फेर स्वीकार नहीं करूंगा ।”

“तुम प्रातः आ जाना । गौरी को भी लेते आना । मैं तुम्हारे घर पर आने वाली थी, परन्तु अब तुम आ गए हो तो मुझको लड़की के घर की यात्रा मत कराओ ।”

अगले दिन गोवर्धन एव गौरी मात बजे माता कर्मदेवी के घर आ गए । शिव और राम भी आ गए । महेश और लाला जी के अन्य लड़के-लड़कियों को भी वहा ही बुला लिया गया ।

शिवकुमार राम को भड़काकर लड़ने के लिए तैयार कर लाया था । शिवकुमार ने राम को कहा था कि मुकदमा उसको करना चाहिए । वह न्यायालय में अपने पिता जी के हस्ताक्षर पहचान ले और कह दे कि वह इच्छापत्र उसके सुभाव से लिखा गया है । ऐसा कहने एवं करने पर वह उसको पांच प्रतिशत के बराबर भाग देगा ।

राम अधिक पाने का इच्छुक था, परन्तु बात पांच प्रतिशत से पांच लाख पर निर्णय हुई ।

राम ने इसको तब माना जब शिव ने उसको मुकदमे के व्यय के हेतु पांच हजार तुरन्त देने का वचन दिया । वे वहा आए और परिवार के अन्य लोग एकत्रित हो गए तो कर्मदेवी ने सबके सम्मुख कह दिया कि घर में भगड़ा करना ठीक नहीं । अब दोनों इच्छापत्रों के विषय में घर पर ही बातचीत कर लो । बताओ शिव क्या कहते हो ?

“मा ! जीजा जी वाला इच्छापत्र पुरातन है, मेरे वाला तो लाला-जी ने मृत्यु के केवल एक सप्ताह पूर्व लिखा था । यह नियम है कि दूसरा इच्छापत्र लिखने पर पहला रद्द हो जाता है ।”

“क्यों गोवर्धनलाल ! तुम क्या कहते हो ?”

“मेरा यह कहना है कि भैया शिव वाला इच्छापत्र जाली है । उस-पर हस्ताक्षर लाला जी के नहीं है । वह उनकी मृत्यु के उपरान्त लिखा हुआ है ।

“न्यायालय में तो मैं इसके जाली होने के प्रमाण उपस्थित कर दूंगा । यहा मैं वह सब कुछ नहीं करना चाहता । यहां तो मेरा यह कथन है कि शिव दादा गौ माता की सौगन्ध खाकर कह दें कि जो कुछ भी वे इच्छापत्र के विषय में आज कह रहे हैं वह सत्य है, तो मैं मुकदमा नहीं लड़ूंगा ।”

सब उपस्थित जन स्तब्ध बैठे रह गए। वे उत्सुकता से शिवकुमार के मुख पर देखने लगे। शिवकुमार की आंखें भूमि की ओर झुकी हुई थीं। जब उसने कुछ उत्तर नहीं दिया तो राम ने उसके स्थान पर उत्तर दे दिया। उसने कहा, “मां ! इतनी बड़ी सौगन्ध डालकर गोवर्धनलाल ‘ब्लैक मेलिंग’ करना चाहता है।”

“वह क्या होता है, राम ?”

“ब्लैक-मेलिंग का अर्थ है डरा-धमकाकर अपनी बात स्वीकार करवा लेना। मैं कहता हूँ कि वह इच्छापत्र असली है एवं जीजा जी वाला रद्द किया हुआ है।”

मां ने कहा, “राम, तुम्हारी भी बारी आएगी। प्रथम मुख्य व्यक्ति से बात हो जाए। देखो शिव, यदि जो कुछ तुम्हारा कथन है वह सत्य पर आधारित है तो इस सौगन्ध से तुम्हारे सिर पाप नहीं लगेगा, बल्कि तुम पुण्य के भागी होगे। बताओ तैयार हो इस सौगन्ध के लिए ?”

“नहीं मां !” शिव ने अभी भी आंखें नीचे किए हुए कह दिया, “मैं यह सौगन्ध नहीं खा सकता। मझको जीजा जी वाला इच्छापत्र स्वीकार है।”

“तो फिर न्यायालय में प्रार्थनापत्र दे दो कि तुमको इस रजिस्टर्ड प्रलेख का ज्ञान नहीं था और तुम्हारे वाला प्रलेख लाला जी के पत्रों में पड़ा प्राप्त हुआ था। तुम नहीं जानते कि वह रद्द किया हुआ लेख है।” गोवर्धनलाल ने शिवकुमार को असत्य साक्ष्य देने से निकलने का मार्ग सुझा दिया।

शिवकुमार ने कहा, “मैं यह नियत तिथि से पूर्व कर दूंगा।”

“और सम्पत्ति का प्रबन्ध करने के लिए यद्यपि मैं नियुक्त हूँ, परन्तु तुम चाहो तो मैं तुम एवं गोपाल से मिलकर काम करने के लिए स्वीकार करता हूँ।”

इसपर गोपाल ने कह दिया, “और जो कुछ इस कार्य के हेतु जीजा जी को मिलने वाला है वह तीनों में विभक्त किया जाएगा।”

“मेरे कहने का यही अभिप्राय है।”

इसपर राम बोल उठा, “तब तो मुझको भी सम्मिलित कर लो।”

“चार व्यक्ति किसी समिति में उचित नहीं रहते। तब महेश को

भी ले लो एवं पांचों की एक समिति आदाता के रूप में कार्य करे ।”

महेश बोल उठा, “मुझे स्वीकार है ।”

इसपर बात निश्चय हो गई । शिवकुमार गाय की सौगन्ध से इतना भयभीत हुआ था कि वह उस सब नकद रुपये के विषय में भी बक गया, जो उसने पिछले दो दिनों में, दूकान के खाते से निकालकर अपने नाम जमा करा लिया था ।

मां के घर से लौटते हुए राम ने शिवकुमार को कहा, “दादा ! यह क्या कर दिया है तुमने ?”

“राम, गाय की सौगन्ध खाकर मैं भूठ बात नहीं कह सकता था ।”

“तुम भी धर्मभीरु हो ?”

“भीरुता धर्म के सम्मुख ही तो की है न ? मुझको इसमें लज्जा की बात प्रतीत नहीं होती ।”

“तब तो दादा, मैं बच गया । तुम मुझको फंसाकर स्वयं भाग जाते ।”

“राम ! मैं गौ-हत्या का पाप सिर पर नहीं ले सकता ।”

“अरे दादा ! बिना हत्या किए भला कैसे हत्या का पाप लग जाता ?”

“असत्य बोलने से ।”

“वह तो तुमने बोल दिया ।”

“वह तो बिना सौगन्ध के बोला है न ?”

राम हंस पड़ा । हंसते हुए कहा, “मैंने कान को हाथ लगाया है कि आगे से शिव दादा का कभी विश्वास नहीं करूंगा । यह तो अपने साथियों को मंभधार मे छोड़ जाने की बात हो गई है ।”

“परन्तु राम ! जब शिव गाय की सौगन्ध से कुछ कहे तब तो तुम निश्चिन्त होकर मान जाओगे न ?”

रामकुमार ने बात बदल दी । उसने पूछ लिया, “दादा, यह जीजा-जी वाला इच्छापत्र देखा है ?”

“हां !”

“उसके अनुसार मभको क्या मिलने वाला है ?”

“कुछ नहीं ।”

“और तुम्हारे वाले इच्छापत्र के अनुसार ?”

“कुछ नहीं।”

“तब तो दादा, तुमने मेरे साथ भारी अन्याय किया है।”

“क्यों ?”

“तुमने मेरे साथ मिलकर संयुक्त मोर्चा बनाया था और जब मैं लड़ने के लिए लंगोटा ही कस रहा था कि तुम भाग खड़े हुए।”

“देखो राम, अब तुम आदाता समिति में हो। उसमें के भाग से चालीस हजार के लगभग तुमको मिल जाएगा।”

वास्तव में शिवकुमार डरता था कि कचहरी में असत्य बयान देने के अपराध में कहीं उसको दण्ड न मिल जाए। साथ ही वह गाय की सौगन्ध से डर गया था। उसके जीवन-भर के संस्कार उसको विवश करने लगे थे। नियत तिथि से पूर्व ही उसने एक दिन न्यायालय में एक प्रार्थना कर दी। उसमें उसने लिखा था, “वह इच्छापत्र को जो मैंने इस कोर्ट में अमुक तिथि को उपस्थित किया था, वह मुझको पिता जी की संदूकची में पड़ा मिला था। मैंने समझा कि यह उनका अंतिम इच्छापत्र है। मुझको अब विदित हुआ है कि उन्होंने एक इच्छापत्र रजिस्ट्रार बहादुर के पास रजिस्टरी कराया हुआ था। अतः वही प्रमाणित होना चाहिए। इस कारण मैं वह इच्छापत्र वापस लेता हूँ एवं उसको स्वीकार करता हूँ जो लाला गोवर्धनलाल ने उपस्थित किया है।”

इस प्रार्थनापत्र के उपरान्त किसीने आपत्ति नहीं की और घर पर प्रबन्ध के अनुसार एक कर्ता-समिति बना दी गई एवं वह ‘सम्पत्ति’ का विभाजन तथा मन्दिर की योजना बनाने लगी।

पूर्ण परिवार में असन्तुष्ट रामकुमार था और उससे कुछ कम रुष्ट गोपालकुमार था। इनको सबसे कम मिला था। रामकुमार की पत्नी रोहिणी भी एक असफल वकील की लड़की थी और रामकुमार का भी कामधन्धा चलता नहीं था। इससे बेचारा बेकार वकील होते हुए भी घर में मुकदमेबाजी आरम्भ नहीं करा सका।

जिस दिन शिवकुमार ने गाय की सौगन्ध से भयभीत हो, मुकदमा न लड़ने का निर्णय किया, उसी दिन घर पहुँच राम शोकग्रस्त हो, अपनी मसीबत की कथा अपनी पत्नी को बताने लगा था। वह कह रहा था,

“रोहिणी ! मैं तो समझता हूँ कि पिता जी ने मुझको वकील बनाकर मुझसे भारी द्रोह किया है ।”

“और मैं समझती हूँ कि यदि आप मेरे विवाह से पूर्व वकील बन गए होते तो मेरे पिता जी मेरा विवाह आपसे कदापि नहीं करते ।”

“तो इसका अर्थ यह हुआ कि जहाँ पिता जी ने मेरे साथ शत्रुता की वहा उन्होंने तुम्हारे साथ भी द्वेष किया है ।”

“पर मैं पूछती हूँ कि आपके घर में इतनी सम्पत्ति थी और आपका कारोबार इतना चलता था कि चार-चार मुनीम दूकान पर बैठे बही लिखते रहते थे, तो आपको एम० ए० तथा वकालत पाम करने की आवश्यकता क्यों पड़ी थी ?”

रामकुमार अपनी पत्नी का मुख देखता रह गया । इसपर रोहिणी ने अपना कथन जारी रखा । उसने कहा, “मैं तो कभी विचार करती हूँ कि घर-बाहर को त्याग साधु हो जाऊँ ।”

“क्यों ? इससे क्या होगा ?” सतर्क हो राम ने पूछा ।

“होगा यह कि अब पारो तीन वर्ष की हो गई है और नियम से आप प्रति तीन-चार वर्ष के पश्चात् एक नये वच्चे की नींव रख देते हैं । देखिए रूप इक्कीस वर्ष का हो गया है । कृपा सत्रह वर्ष की है, दया चौदह वर्ष की है एवं मध्य में एक गर्भपात हो गया था । छाया सात की है और पारो तीन की है । मेरे मन में तो नित्य यह भय समाया रहता है कि अब क्या होगा ?”

“वात तो अवश्य शोचनीय है, परन्तु इसका उपाय घर त्यागकर भाग जाना कैसे हो गया ? इतनी लम्बी-चौड़ी सृष्टि करने के पश्चात् इसको किस भाँड में भोंककर जाओगी ?”

“तो कुछ उपाय करिए न ?”

“जरा तुम भी बुद्धि लडाओ । मैं तो जब भी विचार-मग्न होता हूँ तो मेरा मन अपने पिता जी को जली-कटी सुनाने को करने लगता है । देखो न, एक पत्थर की मूर्ति को खड़ा करने के लिए तो बीस लाख के लगभग दे गए हैं और सात हाड़-चाम के प्राणियों के लिए एक पैसा भी नहीं ।”

“इस समय आप कहां जा रहे हैं ?”

“कचहरी।”

“वहां क्या है ?”

“श्रीमती जी, दुकानदारी है। वहां जाकर देखूंगा, कोई भूला-भटका फंस गया तो दो-चार रुपये ँठ लाऊंगा।”

“कितने वर्ष हो गए हैं, आपको न्यायालय जाते हुए ?”

“रूप तीन वर्ष का था, जब मुझको वकालत का आज्ञापत्र मिला था, तब से नित्य ही जाता हूं। बीच में काम चुस्त हुआ था, परन्तु अब तो दस वर्ष हो गए हैं, कोई पूछता ही नहीं।”

“मेरी राय मानिए। न्यायालय जाना छोड़ दीजिए तथा कुछ कार्य आरम्भ कर दीजिए।”

“रूप ने एम० ए० पाम किया है। मगर भाग्य की बात देखो, छः मास से इधर-उधर घूम रहा है। अभी नौकरी नहीं मिली।”

“मैं तो समझी थी कि वह कुछ करता है।”

“कैसे पता चला है ?”

“कई दिनों से उसकी जेब रुपयों से भरी रहती है।”

“कहां है वह ?”

“कुछ बताकर तो जाता नहीं, कपड़े पहने और चल दिए।”

“और भोजन ?”

“कभी दोपहर भी आ जाता है तो घर पर कर लेता है, नहीं तो सायंकाल आता है और कह देता है : ‘एक मित्र ने खिला दिया है।’”

“एक बात करो। उसकी जेब में से थोड़ी-सी राशि निकाल लो, पुनः देखें वह क्या कहता है।”

“मैं कई दिन से कर रही हूं। कभी पांच, कभी दस निकाल लेती हूं।”

“और वह इसको जान नहीं पाता ?”

“अभी तक तो पूछा नहीं। आज भी दस रुपये निकाल लिए हैं।”

“तो आज का खर्चा तो चल गया है।”

“हां। इसीलिए तो कहती हूं कि कचहरी छोड़, कोई अन्य काम करिए।”

रामकुमार को रहने के लिए तो उसके पिता सुलक्षणमल ही दे गए थे । उन्होंने रामकुमार के अध्ययन का व्यय दिया और उपरान्त वकालत को कार्यान्वित करने के लिए दस हजार रुपया भी दिया था ।

मानसिक विकारों में फंसे हुए व्यक्ति की स्मृति भ्रष्ट तो होती ही है, और यही बात रामकुमार के साथ हुई थी । उस काल की प्रथानुसार रामकुमार का विवाह, जब उसने पन्द्रहवें वर्ष में पदार्पण किया था, कर दिया गया था । दुर्भाग्य से उसको श्वसुर मिले लाला कंवरसेन मद्य-मांसभक्षी तथा क्लब जानेवाले वकील—आय कम, व्यय अधिक करने-वाले एव क्लब में जुआ खेलते हुए सदा हारने वाले ।

रोहिणी के विवाह में भी कंवरसेन की दिवालिया अवस्था ही कारण थी । रोहिणी अति सुन्दर थी और कंवरसेन ने नगर के चोटी के धनी का लड़का चुन लिया और विवाह के पश्चात् लड़की द्वारा सेठ सुलक्षण की सम्पत्ति को चूसना आरम्भ कर दिया । राम अपनी पत्नी के सम्मोहन में फसा हुआ सदैव पत्नी की रक्षा करता रहता था ।

सुलक्षणमल सतर्क हो गए और रोहिणी की चोरी को सीमा में रखने के लिए राम को दुकान से दूर करना आरम्भ कर दिया । जब राम ने बी० ए० की परीक्षा पास की तो उसके पिता ने कहा था, 'राम ! काफी पढ़ गए हो, अब उस पढ़ने का कुछ उपयोग करो ।'

'तो क्या नौकरी करूँ ?'

'नहीं । तुम दुकान पर हिसाब-किताब किया करो ।'

'वह तो आपके पचीस रुपये मुन्शी करते हैं । इतना पढ़-लिखकर पचीस रुपये के मुनीम का कार्य मुझसे नहीं हो सकेगा ।'

'तो क्या करोगे ?'

'अभी और पढ़ूँगा ।'

'ठीक है, पढ़ो ।'

राम ने एम० ए० किया । पुनः पिता ने वही प्रस्ताव किया । राम का अभी भी वही उत्तर था, 'पिता जी, आपकी दुकान पर मेरे जितना पढ़ा-लिखा क्या काम करेगा ?'

‘तो कोई और काम चिचार लो ।’

‘मैं वकालत पास करूंगा ।’

इस समय राम के घर प्रथम सन्तान हो चुकी थी । नामकरण संस्कार किया गया । लड़का मां पर गया था । वह गौरवर्णीय एवं सुन्दर था । नाम रख दिया गया रूपकृष्ण । इसके साथ ही रोहिणी ने सास के साथ लड़ना आरम्भ कर दिया । विवश कर्मदेवी के कथन पर रोहिणी को, उसके पति के अध्ययनकाल में ही, पृथक् मकान में रख दिया गया । दो सौ रुपया मासिक निर्वाह के लिए मिलने लगा । इसमें से भी एक सौ रुपया लाला कंवरसेन के परिवार की ओर बहने लगा ।

वकालत पास करने पर पिता ने काम जमाने के लिए दस हजार रुपया दिया तो कंवरसेन ने उसको अपने साथ काम करने का निमंत्रण दे दिया । उस दस हजार में अधिकांश तो स्वसुर के खान-पान में काम आया और काम नहीं जमा ।

वकालत पास करने पर भी सुलक्षणमल दो सौ रुपया प्रतिमास देते रहे । यह सहायता लाला जी के देहान्त तक मिलती रही । सुलक्षणमल ने राम को अपनी सम्पत्ति में से एक पैसा भी नहीं दिया । उसका चिचार था कि राम को अन्य सब लड़के-लड़कियों से अधिक दिया जा चुका था ।

राम यह सब भूल गया । उसे एक बात स्मरण रह गई और वह थी, उसके पिता जी का अन्तिम कार्य, जोकि उसको उन्होंने इच्छापत्र में स्मरण तक नहीं किया था । रोहिणी भी, वह सब चोरी किया धन, जो कि उसके पिता एवं भाई-बहिनों की जेबों में पहुंचा था, भूल गई थी । उसको भी अपने स्वसुर की कठोरता ही स्मरण थी कि वह उनके लिए कुछ नहीं छोड़ गया ।

लाला सुलक्षणमल के देहान्त के दिनों में ही उसको अपने लड़के रूप में एक विलक्षणता प्रतीत हुई थी । वह रात्रि का भोजन प्रायः बाजार में ही करके आने लगा था । जब मां ने पूछा, “रूप भोजन नहीं करोगे ?”

तो वह कह देता, “एक मित्र ने खिला दिया है ।”

मां पूछती, “अपने घर में ।”

“नहीं मां ! होटल में ।”

जब कई दिन यही क्रम चलता रहा तो उसको भी संदेह हुआ कि रूप भी तो उनको खिलाता होगा। कहां से ? इस प्रश्न का समाधान करने के लिए उसने एक दिन जब रूप स्नान करने गया हुआ था, उसके कोट की जेब देख ली। उसका 'पर्स' नोटों से मरा हुआ था। उसने स्वभाववश एक दस रुपये का नोट निकाल लिया। वह रूप के पिता की जेब में से निकालने की प्रवृत्ति रखती थी।

दिन-भर वह रूप के उन दस रूपयों के विषय में प्रतीक्षा करती रही। रूप ने कुछ नहीं पूछा। अगले दिन उसने पांच रुपये निकाले। तब भी कोई हो-हल्ला नहीं हुआ। इसपर तो वह नित्य ही कभी पांच, कभी दस रुपये निकालने लगी थी।

रूप को तो रुपये के निकालने का सन्देह पहले दिन ही हो गया था। उसको अपनी मां का स्वभाव ज्ञात था। उसने मां को पिता जी की जेब को हाथ लगाते अनेक बार देखा था। उसने एक दिन मां को उमकी जेब से रुपये निकालते देख भी लिया। इसपर भी उसने मां से झगड़ा नहीं किया। हां, वह जेब में रुपये गिनकर रखने लगा था।

यह धन रूप की जुए की आय थी। वह प्रायः रात को एक जुए के अड्डे पर जाता था और वहां से प्रायः जीतकर आता था। वह यह जानता था कि जीतने का सौभाग्य उसको सदा मिलता नहीं रह सकता। इस कारण वह रुपया बैंक में जमा करता जाता था। जुएखाने में वह बीस रुपये से अधिक लेकर कभी गया नहीं था। प्रायः दो-तीन सौ जीतने के उपरान्त वह खेलना छोड़ देता। कभी हारता तो बीस हार वह वहां से चला आता था। जब भी जीतकर आता, जीता हुआ रुपया उसकी जेब में होता। मां उसमें से पांच-दस ही निकालती थी। उसको भय लगा रहता था कि अधिक निकालने से लड़के को सन्देह हो गया तो झगड़ा हो जाएगा और आगे से वह जेब में रुपये रखना छोड़ देगा। कभी जेब में नहीं भी होते अथवा बहुत कम होते थे। तब वह कुछ नहीं निकालती थी। जब से वह निकालने लगी थी, ऐसे अवसर बहुत कम आए थे।

राम अपने भाई की दुकान पर जा पहुंचा। दुकान अब भी चल रही थी। अब भी उसमें चार मुनीम बैठे बही लिख रहे थे। अब भी माल खरीदा और बेचा जा रहा था। कभी टेलीफोन पर और कभी जबानी

व्यापार होता था।

शिवकुमार ने राम का देखा तो पूछ लिया, “आओ राम ! किस-लिए आए हो ?”

“भैया ! जीवन-भर इसी आशा पर बैठा रहा था कि पिता जी मरने पर कुछ दे ही जाएंगे। वे कुछ भी नहीं दे गए। इससे जीवन-आशा टूट गई है। एक क्षीण आशा तुम हो। बताओ, कुछ सहायता कर सकते हो ?”

“हां, कर सकता हूं। मगर जैसा मैं कहूंगा वैसा ही करना होगा।”

“क्या करना होगा ?”

“यह सूट उतारकर दुकानदारों के से कपड़े पहनने आरम्भ कर दो।”

रामकुमार हंस पड़ा। हंसकर पूछने लगा, “बस या कुछ और भी ?”

“यह तो केवल आरम्भिक कृत्य है। इससे तुम दुकान पर आने योग्य हो जाओगे।”

“ओह ! अच्छा और ?”

“यहां प्रातः आठ बजे आ जाया करो। मध्याह्न के समय भोजन करने के लिए एक घंटे का अवकाश मिलेगा और फिर दो बजे से सायं छः बजे तक यहां रहना होगा।”

“यह तो बहुत लम्बी ड्यूटी (नौकरी) है।”

“हां। हम सब करते हैं। मेरा लड़का निरंजन भी ऐसा ही करता है।”

“अच्छा यह भी कर लूंगा। काम क्या करना होगा ?”

“जो निरंजन करता है। कुछ काम नहीं करता और सब कुछ कर लेता है। दुकान पर भाड़ू देने से लेकर बड़े-बड़े सेठ-साहूकारों से बातचीत करने तक, और घर की सब्जी-भाजी खरीदने से लेकर घर पर बीमारों की तीमारदारी करने तक। समय-समय पर मैं बताता रहता हूं और वह करता रहता है।”

“मुझको तुम्हारा कहा मानने से मिलेगा क्या ?”

“जो दुकान से निरंजन को मिलता है। मैं उसको दो सौ रुपया

प्रतिमास देता हूं। वही तुमको दे दिया करूंगा।”

“निरंजन का लड़का क्या करता है ?

“वह कालेज में पढ़ता है। सन्त को इस वर्ष इण्टर की परीक्षा देनी है और सूर्य ने मैट्रिक की।”

“और वे दुकान पर नहीं बैठेंगे ?”

“यह निरंजन के विचार का विषय है। मैंने इस विषय में कभी विचार नहीं किया।”

“पर भैया शिव ! तुम मेरे कालेज में पढ़ने के परिणाम देखकर भी उसको मना नहीं करते।”

“देखो राम ! सफलता-असफलता भाग्याधीन होती है। व्यवसाय तो अपने परिश्रम एवं बुद्धि का परिणाम है। जो भाग्य से सफल होने-वाले होते हैं वे किसी भी व्यवसाय में चले जाएं, सफल हो जाते हैं। कालेजो, स्कूलों के पढ़े भी तो सफल हो रहे हैं। हमारे पड़ोसी सन्तोषी-लाल के बच्चों की ही बात देख लो। वह स्वयं तो मुनीम का कार्य करता था, परन्तु एक लड़का बड़े लाट के दफ्तर में बड़े पद पर है। मोटर में कार्यालय को जाता है और मोटर में आता है। मकान नया बन गया है। दूसरा लड़का भी पढकर कहीं परदेश में गया है। सुना है अच्छा खाता-पीता है। जब भी मा-बाप से मिलने आता है तो उनके लिए और भाई-बहिनो के लिए बहुत बढ़िया वस्तुएं लाता है। यह तो सब भाग्य का खेल है।”

राम मुस्कराकर पूछने लगा, “तो यह भाग्य को कैसे बनाया जा सकता है ? इसके लिए क्या करना चाहिए ?”

“यह मुझको ज्ञात नहीं। गोवर्धन जी से पूछ लेना। वे कुछ कह गए हैं। अभी आए थे—‘शिव भैया ! पिछले जन्म की कमाई खा रहे हो। आगे के लिए भी कुछ जमा कर जाओ। नहीं तो राम की भाति मक्खियां उड़ाया करोगे।’ यद्यपि मैंने उसको हंसी में उड़ा दिया है, मगर अपने भाग्य की बात देख, उनके कथन में भी तो तत्त्व दिखाई देता है।

“मैं स्कूल-कालेज में नहीं पढ़ा। पाधा के यहां लुंडी में हिसाब-किताब सीख दुकान पर बैठ गया था। अब जिस भी काम में हाथ लगाता

हूं, वही धन उगलता प्रतीत होता है।”

“तो भैया ! कब से आऊं ?”

“कल से आ जाना।”

६

अगले दिन से रामकुमार अपने भाई की दुकान पर जाने लगा। वह धोती-कुर्ता तो नहीं पहन सका परन्तु बन्द गले का कोट और दिल्ली वालों की टोपी पहनने लगा था।

शिवकुमार की दुकान पर ही गोवर्धनलाल और गोपाल से राम की भेंट हुई। गोवर्धन द्वारा नियुक्त ट्रस्ट लाला सुलक्षणमल की सम्पत्ति का प्रबन्ध करने के लिए तो अब बैठा जब लाला जी के इच्छा पत्रानुसार गोवर्धनलाल सम्पत्ति का आदाता नियुक्त कर दिया गया। इस नियुक्ति के पश्चात् गोवर्धनलाल ने एक पत्र चारों भाइयों को लिख दिया कि वह उनके पिता की सम्पत्ति का कर्ता नियुक्त हुआ है। उसको बहुत प्रसन्नता होगी, यदि वे उसके इस कार्य में सहयोग देंगे। वह उनको उनकी सेवाओं के लिए, अपने इस कार्य के लिए मिले धन में से, एलाउंस (भत्ता) देने को तैयार है। यह भत्ता परस्पर वार्तालाप से निश्चय हो सकता है।

पत्रों का उत्तर लिखित रूप में प्राप्त कर ही गोवर्धनलाल ने इस प्रबन्धकर्ता-समिति की सभा बुलाई। यह सभा बुलाई गई शिवकुमार की दुकान पर। गोवर्धनलाल आया तो राम को वहां एक पत्र टाइप करते देख, चकित रह गया। उसने पूछ लिया, “राम ! क्या कर रहे हो यहां पर ?”

“जीजा जी ! भैया की नौकरी कर ली है।”

“ओह ! और क्या काम करते हो ?”

“भैया का काम अब विदेशों से भी होने लगा है। उनसे पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में और टाइप में होता है। यह काम मुझको करना पड़ता है।”

“यह तो बहुत अच्छा काम है।”

“पर भैया वेतन बहुत कम देते हैं।”

“क्या देते हैं ?”

“दो सौ रुपया महीना।”

“राम, छोड़ना नहीं। वेतन की बात गौण है। व्यापार में आना मुख्य है।”

यद्यपि गोवर्धनलाल से वह बातचीत दुकान के पिछले कमरे में उसे बैठाकर कर रहा था और शिवकुमार अभी वहां नहीं आया था, फिर भी वह किसी समय आ सकता था इस कारण उसने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, “जीजा जी ! आपने पत्र में एलाउस की बात लिखी है। वह तो विचार आपका ही था। आप ही बताइए कैसे होगा यह ?”

गोवर्धनलाल ने बता दिया, “पहले पूर्ण सम्पत्ति मेरे चार्ज में आ जानी चाहिए। मुझको विदित हो जाना चाहिए कि मेरे चार प्रतिशत में मुझको क्या मिलने वाला है। तब ही तो आपका भाग निश्चय कर सकता हूं।”

“भैया ने सम्पत्ति की एक सूची बनवाई है ?”

“वह लाला जी के इच्छापत्र में दी गई सूची के अनुसार होनी चाहिए। अन्यथा मुझको पुनः न्यायालय का द्वार खटखटाना पड़ेगा।”

शिवकुमार और गोपाल ने आते ही पूछ लिया, “आप भगड़े की बात घर में निश्चय करना चाहेंगे अथवा न्यायालय में ?”

“घर पर। परन्तु सब कुछ सत्य-सत्य निश्चय होनी चाहिए।”

“हां। सब कुछ सौगन्धपूर्वक होगा।”

सौगन्ध पर गोवर्धनलाल चुप कर गया। सौगन्ध का जादू वह पहले देख चुका था। उसने शिव की बात स्वीकार करते हुए कहा, “हां। तो वह सूची निकाल दो।”

राम उठकर गया और अपनी मन्दूकची में से एक सूची और उसके साथ प्रमाणपत्रों की फाइल उठा लाया। शिवकुमार ने स्थावर सम्पत्ति के साथ-साथ उन रूपयों की भी सूची दी जो उसने बैंक से निकाल, अपने खाते में जमा करा लिए थे।

गोवर्धनलाल ने सरकारी अधिकारपत्र को बैंक में दिया, लाला जी के बैंकों में हिसाब की नकलें प्राप्त कर ली थी। उसने उसके साथ शिवकुमार की सूचियों का मिलान किया। थोड़ा अन्तर निकला तो उसका स्पष्टीकरण लिखित माग लिया। राम से उनके स्पष्टीकरण टाइप करवा, शिव के हस्ताक्षर करवा लिए।

इसपर गोवर्धनलाल ने यह निश्चय कर लिया 'इस समिति का प्रधान तथा मन्त्री का कार्य मैं स्वयं करूंगा। परन्तु अपनी सहायता के लिए एक मुन्शी नौकर रख लूंगा।'

राम ने सुभाव उपस्थित कर दिया, "इस कार्य के लिए रूप को रख लिया जाए।"

'नहीं, राम ! इस काम के लिए वह ठीक नहीं।'

"क्यों ?"

"वह विश्वस्त व्यक्ति नहीं।"

"क्या खराबी है उसमें ?"

"उसमें दो दोष हैं। एक तो वह जुआ खेलता है और दूसरा वह मद्य का सेवन करने लगा है। ये दोनों व्यसन बुद्धि भ्रष्ट कर देते हैं और इनसे नाश अवश्यम्भावी है।"

राम जुए की बात सुन, रूप की जेबों में रुपयों की बात समझ गया। इसपर भी मद्य-सेवन की बात पर उसको विश्वास नहीं आया। उसने पूछ लिया, "जीजा जी ! आपको यह कैसे ज्ञात है ?"

"देखो राम ! मैं कमिश्नर के कार्यालय में होने से बहुत बातों का ज्ञान रखता हूं। जो भी बात पुलिस के ज्ञान में आ जाती है वह न्यूनाधिक मात्रा में हमको ज्ञात होती रहती है। रूप का नाम मुझको पता न चलता, यदि उसने किसी पुलिस अधिकारी के सम्मुख यह न कह दिया होता कि मैं उसका सम्बन्धी हूं।"

राम मुख देखता रह गया। इसपर गोवर्धनलाल ने उसको कह दिया, "मेरी सम्मति उसको बता देना कि वह इसको छोड़ दे। कोई अन्य निर्दोष कार्य करने लगे। इसमें कभी भी, किसी समय भी वह कष्ट में पड़ सकता है।"

"परन्तु जब कोई ईमानदारी का काम न मिले तो क्या किया जाए ?"

"देखो राम ! यह भाग्य की विडम्बना है। इसके लिए सबसे पहले भाग्य को सुधारना चाहिए।"

"वह कैसे सुधरता है ?"

"तुम एक दिन अपनी बहिन से भी पूछ चुके हो। जो कुछ उसने

बताया था, वही मैं जानता हूँ। ईमानदारी के मापदंड दो हैं। एक तो समाज की स्वीकृति, दूसरे धर्म, शाश्वत धर्म की स्वीकृति।”

“परन्तु इन दोनों में तो परस्पर विरोध होता है।”

“हां। कभी-कभी ऐसा अस्थायी रूप में हो जाता है। यह तब और वहां होता है जब और जहां अशिक्षा, रूढ़ियों तथा अज्ञान के कारण, समाज की मति भ्रष्ट हो जाती है।

“उदाहरण तुम्हारे सामने है। जुएखाने में जानेवाले तो यही समझते हैं कि वे किसी व्यापार में लगे हुए हैं। वास्तव में यह व्यापार नहीं है। जुआरियों का समाज इसको अपने दूषित मन की अवस्था से व्यापार समझने लगता है।”

राम युक्ति करने में गोवर्धनलाल को गौरी से भी तेज समझने लगा था। शिवकुमार ने बात पुनः समिति के विषय पर घुमा दी। उसने पूछा, “तो अब बताइए हम समिति के सदस्यों को क्या-क्या भत्ता मिला करेगा।”

“भत्ते के तीन ढंग हैं। एक तो जितना रुपया है। उसको भी पांच भागों में विभक्त कर लिया जाए। इसको मैं पसन्द नहीं करता। इससे धन का सम्बन्ध प्रबन्ध से नहीं रह जाएगा। दूसरा है, वेतन के रूप में। यह हम वार्षिक आय का अनुमान लगाकर उसमें से पांच सदस्य निकाल सकते हैं। एक तीसरा ढंग है, प्रति मीटिंग कुछ न कुछ निकाल लिया जाया करे।”

यह अन्तिम ढंग सबको पसन्द आया। शिवकुमार और गोपाल तो ‘तुरन्त दान महाकल्याण’ की कहावत को पसन्द करते थे। इसपर गोवर्धनलाल ने कह दिया, “एक सौ रुपया प्रति मीटिंग प्रति सदस्य। प्रधान को पचास और अधिक। एक क्लर्क का सौ रुपया मासिक वेतन। इसके अतिरिक्त अन्य कुछ व्यय प्रबन्ध के हेतु होंगे।”

“ठीक है।” सबसे पहले राम ने स्वीकार किया।

जितने निर्णय हुए थे, एक रजिस्टर पर लिख दिए गए थे। सभा विसर्जित हुई। गोवर्धनलाल ने सम्पत्ति का चार्ज ले लिया। शिवकुमार ने बैंकों से निकाला रुपया पुनः जमा करा दिया और कार्य होने लगा।

रूपकृष्ण से राम ने गोवर्धनलाल की बात बता दी ।

“वेटा, तुम्हारे काम को मैं न तो अच्छा समझता हूँ और न ही तुम्हारे फूफा गोवर्धनलाल ।”

“लाला गोवर्धनलाल ? भला वे क्या जानते हैं मेरे काम के विषय में ?”

“वे जानते हैं कि तुम प्रतिदिन जुआ खेलने जाते हो । तुम्हारे मद्य-सेवन के विषय में भी वे जानते हैं ।”

“उनको किसने बताया ?”

“उनके कार्यालय में तुम्हारा नाम दर्ज है । जुआरियों और आदतन शराब पीने वालों का नाम उनके यहां लिखा जाता है । साथ ही तुमने किसी पुलिस अधिकारी के समक्ष कहा है कि तुम लाला गोवर्धनलाल के सम्बन्धी हो ।”

रूपकृष्ण मुख देखता रह गया । उसे चुप देख राम ने कहा, “ये दोनों काम एक भाग्यशाली व्यक्ति कहता है कि गलत है ।”

“मुझको उस कंगले की बात पर विश्वास नहीं । घर में भांग भुजती है परन्तु लोगों को उपदेश देते रहते हैं ।”

“मैंने तो उनका उपदेश मानना आरम्भ कर दिया है ।”

“क्या ?”

“यही कि जल्दी सो जाता हूँ और सूर्योदय से पूर्व उठ पड़ता हूँ । साथ ही दुकान जाते समय दो पैसे पहले दो मिलने वाले भिखारियों को दान कर जाता हूँ ।”

रूप खिलखिलाकर हंस पड़ा । जब पिता-पुत्र में वार्तालाप हो रहा था तब रोहिणी, रूप की माँ, भी वहाँ उनकी बात सुनने आ गई थी । वह भी हंस पड़ी । रूप ने कह दिया, “भापा ! नौ मन चूहे खाके बिल्ली हज को चली है क्या ?”

“देखो राम, चूहे तो मैंने खाए नहीं । वकालत का काम किया है । उसमें मुझको सफलता नहीं मिली । गोवर्धनलाल ने घूस लेना त्याग दिया था और सबका काम मुफ्त में दान-दक्षिणा समझ, करने लगा था

और उसको सफलता मिलने लगी है। उसको चौबीस हजार रुपये की वार्षिक आय होने लगी है। उसमें भी उसने लगभग आधी हममें बांट देने का निर्णय कर लिया है। उसका कथन है कि उसको इससे और भी अधिक सफलता प्राप्त होगी।”

“भापा ! वह मूर्ख है। हाथ में आई वस्तु को जो नाली में फेंक देता है, उसकी बात मैं मान नहीं सकता।”

“तो मैं नाली हूं। वह तो मुझको एक सौ रुपया प्रति मीटिंग भत्ता देने को कह रहा है।”

“तो लाला गोवर्धनलाल ने मुझको उस मीटिंग में क्यों नहीं रखा ?”

राम ने हंसते हुए कहा, “समिति के सदस्य तो लाला जी के लड़के ही बनाए गए हैं। हां, मैंने उस समिति में तुमको नौकर रखने के हेतु कहा था, परन्तु तुमको जीजा जी ने स्वीकार नहीं किया। केवल इस कारण कि तुम मद्य-सेवन करते हो तथा जुआ खेलते हो।”

“समिति की नौकरी में क्या मिलता ?”

“एक सौ रुपया मासिक।”

“हा...हा...” ठहाका मारकर रूपकृष्ण हंस पड़ा। हंसकर उसने कहा, “भापा ! जानते हो पिछली रात मुझको क्या मिला है ?”

“क्या मिला है।”

“दस हजार से ऊपर।”

“दस हजार ? रूप, इसमें से कुछ दान-दक्षिणा कर दो, नहीं तो यह हराम की कमाई हज़म नहीं होगी।”

“भापा, सौ रुपये तो रात ही एक को दान कर दिए थे।”

“किसको।”

“एक है। बहुत सुन्दर है, और मुझको बहुत प्रेम करती है।”

“ओह ! तो तुम यह भी करते हो ?”

“क्यों ? इसमें क्या हानि है ?”

“यह तो पाप है रूप !”

“मैं तो समझता हूं कि मैंने उसको सौ रुपया देकर भारी पुण्य किया है। वह एक अति निर्धन विधवा की लड़की है। अभी कुंवारी है। यदि एक-दो दिन और ऐसे ही लग जाएं तो मैं उससे विवाह कर लूंगा।”

राम का मस्तिष्क भन्ना उठा था। वह रूप की बात गले के नीचे उतार नहीं सका। राम के एक ही लड़का रूप था परन्तु घर में चार लड़कियां थीं। उनमें सबसे बड़ी लड़की कृपा विवाह के योग्य हो चुकी थी। तीन और भी थीं, जो घर में ही रहती थीं। एक दया चौदह वर्ष की थी। दूसरी छाया सात वर्ष की थी और सबसे छोटी पारो तीन वर्ष की थी। इन लड़कियों का विचारकर, राम ने अपनी पत्नी की ओर देखकर पूछ लिया, “क्यों देवी जी, क्या समझती हो तुम ?”

“मैं इसमें क्या कह सकती हूँ। वह आती है तो ले आएँ। हाँ, इतना ध्यान रखना चाहिए कि मेरे घर में आकर यदि वह किसी अन्य से दान-दक्षिणा मांगने चल पड़ी तो मैं घर से धक्के देकर निकाल दूँगी।”

“मां ? वह बहुत अच्छी है। कहो तो उसको पहले ट्रायल (परीक्षा) के तौर पर एक-दो दिन के लिए ले आऊँ।”

“पहले उसको दिखा दो। तुम्हारी बहिन हैं। दो विवाहने योग्य हो रही हैं। उनके मन में कहीं कुछ विकार बन गया तो मुख पर कालिख पुत जाएगी।”

अपनी बहिन कृपा तथा दया की बात सुनकर रूप गम्भीर विचार में पड़ गया। उसने कुछ विचारकर कहा, “अच्छा मां ! विचार करूँगा।”

उस रात रूप घर पर नहीं आया। अगले दिन रोहिणी ने अपने पति से कहा, “रात रूप घर पर नहीं आया।”

“उस विधवा की सुन्दर लड़की की संगत में रहा होगा।”

“मेरा मन डरता है। मैंने कल उसको लड़की को यहां लाने से मना तो नहीं किया था। इसपर भी भय का कारण तो है कि कहीं वह घर छोड़कर भाग न जाए। ले-देकर अपने पूर्ण जीवन की एक बही तो कमाई है।”

“तो आ जाएगा। कदाचित् वह उस लड़की को लेने गया होगा और उसने आने से ना कर दी होगी। ये वेश्याओं की लड़कियां भले घरों में आकर रह नहीं सकतीं।”

राम का दुकान पर जाने का समय हो गया तो वह चला गया। घर पर कोई नहीं जानता था कि रूप कहां गया होगा। इससे प्रतीक्षा

करने के अतिरिक्त कोई उपाय न था ।

रूप मध्याह्न तक नहीं आया तो रोहिणी को चिन्ता लगने लगी । इसपर भी वह कुछ कर सकने में असमर्थ थी । तीसरे प्रहर रोहिणी का पिता कंवरसेन रूप को साथ लेकर आ गया । रोहिणी उनको देख भौचक्की खड़ी रह गई । कंवरसेन ने लड़की को सम्बोधित कर कहा, “रोहिणी, इस अपने लाल को समेटो ।”

“क्या हुआ है पिता जी ?”

“इसकी जमानत दे छुड़ाकर लाया हूँ ।”

“रूप का हाल-बेहाल हो रहा था । उसके कपड़े गन्दे हो रहे थे । दाढ़ी बढ़ रही थी और ऐसा प्रतीत होता था कि वह कई दिनों का भूखा-प्यासा है ।”

इसके पश्चात् कंवरसेन ने रूप से कहा, “देखो बरखुरदार ! अगर तुमको इस बात का शौक है तो मेरे साथ आना । मैं तुमको क्लब का सदस्य बनवा दूँगा और वहाँ जुआ खेलने से कोई मना नहीं करता ।”

“पर बाबूजी ! यह क्यों ?”

“यह कानून है । इसको समझने के लिए तुमको वकालत पढ़नी चाहिए थी । अभी तो तुमको मेरी बात माननी चाहिए । उन लफंगों में मत खेलने जाया करो । देखो रूप, जहाँ तुम जाते थे, वहाँ जुआ नहीं, लूट होती है । वह पुलिस के लाभ के लिए खुला हुआ है । उसको जुआ-खाना कहते हैं । क्लब हम रईसों के लिए खुली है । एक व्यापारियों के लिए भी जुआखाना खुला है । उसका नाम चेम्बर है ।”

“चेम्बर के जुएखाने का नाम व्यापार है, क्लब के जुएखाने का नाम मनोरंजन है और उस सदर बाजार वाले जुएवाले का नाम जुआखाना अर्थात् गुनाहों का घर है । अपने परिवार की मर्यादा का ध्यान रख अब वहाँ मत जाना ।”

८

रूप को समझ आ गई कि जहाँ वह जाता है वह बहुत बदनाम स्थान है । इसपर भी वह एक बार तो यह जानने के लिए कि उसकी प्रेमिका का क्या हुआ, वहाँ गया । सदर बाजार में दूकानों के पीछे माल के कई

गोदाम थे। उनमें से एक गोदाम में एक बनवारीलाल मनचले ने यह जुआ खेलने का प्रबन्ध कर रखा था। रूप के एक मित्र किशोरीलाल ने उसको वहां का पता बताया था और तब से वह वहां नित्य जाता था। उसे वहां जाते हुए तीन मास के लगभग हो चुके थे और इन तीन महीनों में वह तीन-चार दिन के अतिरिक्त जीत ही रहा था। हारनेवाले दिनों में तो वह बीस रुपये हारकर खेलना बन्द कर देता था। उसके साथ खेलने-वाले उसे प्रोबोट पर खेलने के लिए कहते भी थे, परन्तु वह कह देता, “न मैं उधार पर खेलता हूं, न ही किसी उधार लेकर खेलने वाले से खेलता हूं।” इससे बहुत लोग उससे नाराज हो जाते थे, परन्तु वह किसी का आई० ओ० यू० स्वीकार नहीं करता था। न ही स्वयं किसी को इस प्रकार का लिखकर देने को पसन्द करता था।

जुएखाने का मालिक उसके इस व्यवहार को पसन्द करता था। इससे दूसरे खेलनेवाले बहुत खार खाते रहते थे। जिस दिन पुलिस ने छापा मारा था उससे कई दिन पहले से रूप लगातार जीत रहा था। पिछले दिन तो उसने ग्यारह हजार के लगभग जीत लिया था। उसमें से एक हजार तो जुएखाने के मालिक का भाग बना था। उस दिन वह उसको कमीशन के रुपये देने गया तो बनवारीलाल ने कह दिया, “रूप-जी ! आज तो आपने सबको भगा दिया है।”

“हां भापा, एक के बाद दूसरा मेरे साथ किस्मत-आजमाई करने आता रहा और सब ऐसे जाते रहे थे जैसे मशीनगन के सामने निहत्थे खेत रह जाते हैं।”

“कितना है ?”

“तुम्हारा हिस्सा यह है। कमीशन तो प्रत्येक दांव के समय निकाल ली जाती थी, गिनाई तो वह एक हजार एक सौ रुपया से ऊपर निकाली।” बनवारी ने कह दिया, “इसका मतलब है तुमको दस हजार मिला है।”

“हां।”

“आज किशनों से मिलने जाओगे ?”

“मैं किशनों को तो पसन्द नहीं करता। हां, उसकी लड़की सुमित्रा से बातचीत किया करता हूं। किशनों मुझको ढरका देती है। इसलिए मेरी रुचि नहीं रही।”

“भाई ! वह कुंवारी लड़की है । उसका तो विवाह होगा ।”

“वह भी कर लूंगा ।”

“उसकी मां को क्या दोगे ?”

“वह क्या चाहती है ?”

“एक हजार नकद और लड़की के नाम कुछ जायदाद ।”

“जायदाद की बात तो यह है कि मैंने अभी अपने लिए कोई सम्पत्ति नहीं खरीदी । इस समय तक मेरे बैंक में पचास हजार के लगभग जमा हैं । वह लड़की का विवाह कर दे और फिर उसकी इच्छानुसार जैसी जायदाद वह कहेगी, खरीद दूंगा ।”

“मैं समझता हूँ कि सौदा हो जाएगा ।”

“तो करा दो ।”

किशनो को बुलाया गया । रूपकृष्ण ने उसके लिए एक हजार रुपया तत्काल दे दिया और बनवारी के समक्ष वचनबद्ध हो गया कि दो-तीन दिन में विवाह कर लेगा । सुमित्रा को बुलाया गया तो उसने एक सौ रुपया उसे भी दे दिया । वह लेती नहीं थी । परन्तु बनवारी के कहने पर उसने पकड़ लिया ।

इसी बात के लिए अपने माता-पिता का मन तैयार करने के निमित्त रूपकृष्ण ने विवाह का संकेत कर दिया था । मां ने कुछ शर्तें रखीं तो वह उन शर्तों के विषय में सुमित्रा से बात करने के विचार से रात को वहां जा पहुंचा । सदा की भांति उस दिन भी वह जेब में बीस रुपये लेकर ही वहां पहुंचा था । सुमित्रा के विषय में वह उसकी मां से कुछ जेब में जीत का धन लेकर मिलने वाला था । उस दिन भी लाभ तो हुआ था, यद्यपि पिछले दिन की भांति तेजी से नहीं । उसकी जेब में पांच सौ रुपया हुआ तो उसने ताश के पत्ते मेज़ पर रख दिए । उसके साथियों ने कहा भी, “रूप ! हम तुमको इस प्रकार भागकर नहीं जाने देंगे ।”

“भाई ! मुझको तुम्हारी जेबें खाली होते देख दुःख होता है ।”

“हमको किशनो के दामाद को जीतते देख प्रसन्नता होती है ।”

“ओह ! मुझको उससे मिलने जाना है ।”

इतना कह वह बनवारीलाल की ओर जाने लगा कि उस गोदाम के दरवाज़ा खटखटाने का शब्द हुआ । किसीने भागकर दरवाज़ा खोल

दिया। बनवारी ने आवाज भी दी। मत खोलो। उसको सन्देह हो गया था। वह स्वयं द्वार पर जा, कुछ ले-देकर उनको लौटा देता, परन्तु दरवाजा खुला तो फिर कुछ हो नहीं सका। वहां पर चालीस के लगभग लोग रंगे हाथ पकड़ लिए गए।

रूपकृष्ण की जेब में पांच सौ के लगभग रुपये थे। वह उसने भीतर के सलूके की जेब में रखे और पुलिस के साथ चल पड़ा। बनवारीलाल भी उसके साथ ही था। कोतवाली में पहुंच, सबको हवालात के एक कमरे में बन्द कर दिया गया। रूप ने बनवारीलाल से कहा, “भापा ! अब क्या होगा !”

“तुम्हारी जेब में कितना रुपया है ?”

“पांच सौ के लगभग है।”

“ठीक है, दिन निकलने दो। इतने से हम दोनों छूट सकेंगे।”

दिन निकलने पर बनवारीलाल ने रूप को कहा, “एक पांच रुपये निकालो।”

रूप ने पांच का एक नोट निकाल दिया। इसपर उसने पूछा, “कोई ज़ामिन है ?”

“एक लाला कंवरसेन एडवोकेट हैं।”

बनवारी ने एक सिपाही को, जो कारागृह के बाहर बन्दूक लेकर खड़ा था, पांच का नोट दे दिया और कंवरसेन एडवोकेट को बुलवाने के लिए कह दिया।

कंवरसेन आया और वृत्तान्त जान मजिस्ट्रेट के समक्ष उसको ले गया। उसने ज़मानत मांगी तो कंवरसेन एक पेशेवर ज़ामिन को ले आया। जब ज़मानत हो गई तो कंवरसेन ने एक सौ रुपया रूप से मांग लिया। रूप ने रुपये दिए तो कंवरसेन ने पचास रुपये ज़ामिन को दिए। दस रुपये मजिस्ट्रेट के अर्दली को दिए तथा शेष चालीस अपनी जेब में रख, रूपकृष्ण को उसके घर ले गया।

आज सायं पांच बजे रूप बनवारी के घर पहुंचा। घर को ताला लगा था। वहां से वह किशानों के मकान पर पहुंचा। वह जुएखाने और बनवारी के घर से कुछ अन्तर पर था। घर का दरवाजा खुला था परन्तु

घर में कोई नहीं था। घर के नीचे एक ठेला खड़ा था और घर का सामान निकाल ठेले में लादा जा रहा था। रूप ने ठेले वालों से पूछा, “यह कहां लिए जा रहे हो?”

“प्रीमियर फरनिशिंग हाउस में। यह सामान भाड़े पर था।”

“और इसके लोग?”

“हम नहीं जानते।”

वहां से लौट, जुएखाने पर पहुंचा। वहां भी कोई नहीं था। हताश रूपकृष्ण वहां से लौट, घर पहुंचा। उस समय राम दुकान से लौट चुका था और रूप के साथ घटी घटना का वृत्तान्त जैसा रोहिणी जानती थी, सुन चुका था।”

“सुनाओ बरखुरदार! आज कहां गए थे?”

“जिस दुकान पर काम करता था, वह बन्द हो गई है।”

“तो अब कोई और दुकान करोगे?”

“नानाजी बता गए हैं कि दो स्थान पर जुआ खेलना मान-प्रतिष्ठा का काम माना जाता है। एक क्लब में तथा दूसरे ‘चेम्बर’ में।”

“हां, समाज ने वहां पर इसकी स्वीकृति दे रखी है। परन्तु रूप, बात वही काम की है जो गोवर्धनजी ने बताई थी। बिना भाग्य के कुछ नहीं बनता। किसी काम के अथवा उस काम के स्थान के अच्छा-बुरा होने के अतिरिक्त लाभ तो भाग्यशालियों को मिलता है।”

“भापा, यह तो जाना, परन्तु जहां से लाभ हो और जिस काम से लाभ हो, वह काम ही तो अच्छा माना जाएगा।”

रूपकृष्ण अपने पिता की भांति अच्छे-बुरे काम का मापदण्ड लाभ ही मानता था। राम इस बात पर आज ही गोवर्धनलाल से विचार करता हुआ आ रहा था।

गोवर्धनलाल दुकान पर आया था। शिवकुमार ने अपने एक सौदे की बात बताई। उसने बताया था: “जीजा जी! मैंने ईमानदारी से लाला जी का सब रुपया आपके पास लिखा दिया था। इस ईमानदारी से मुझे पांच लाख रुपये की हानि हुई थी। परन्तु भगवान की कृपा से आज ही एक सौदे में मैं अपनी हानि पूरी कर आया हूं। सरकार ने सेना के लिए पांच लाख टन भूसे का टेंडर मांगा था। वह टेंडर मैंने दो

रुपये टन अन्य व्यापारियों से अधिक भरकर दिया हुआ था। मुझको स्वीकार होने की आशा नहीं थी। आज टेंडर खुले तो मेरा टेंडर स्वीकार हो गया। इसके लिए मुझे अफसरों का मुंह मीठा करना पड़ा है।'

गोवर्धनलाल ने पूछ लिया, 'कितना खर्च करना पड़ा होगा?'

'एक लाख रुपया—कुछ अग्रिम और कुछ वचन से देना पड़ा है।'

'ठीक है शिवकुमार ! तुम बेईमानी से मृत पिता को धोखा देना चाहते थे। वह तुम कर नहीं सके और अब बेईमानी से सरकार को धोखा दे आए हो। जहां तक तुम्हारा सम्बन्ध है, तुम वहीं के वहीं हो।'

'दोनों में भारी अन्तर है जीजा जी। वह व्यक्ति जिसको धोखा दिया जाना था, जानता नहीं था और इस सौदे में तो सब कुछ स्पष्ट है। सौदा स्वीकार करने वाले भी जानते थे कि मुझको दस लाख रुपये से ऊपर लाभ होने वाला है। इसके अतिरिक्त सामान्य लाभ तो है ही।'

'किसको विदित था?'

'सरकारी अफसरों को।'

'तो यह भूसा उस अफसर के घर बंधी गाय के लिए था?'

'नहीं। था तो सेना के जानवरों के लिए।'

'और क्या सेना उस अफसर के बाप की कमाई पर पलती है?'

'नहीं, सेना...हां, सेना तो सरकार की है। परन्तु सरकार ने ब्रिगेडियर माईकल को इस काम के लिए नियुक्त जो किया हुआ है।'

'जैसे आपके पिताजी मुझको सम्पत्ति का प्रबंध करने के लिए नियुक्त कर गए हैं। यदि मैं भी आपसे कुछ ले-देकर वह पांच लाख छोड़ देता तो मैं भी ब्रिगेडियर माईकल बन जाता।'

'परन्तु जीजा जी ! आप वही कुछ करते जो ब्रिगेडियर साहब ने किया है, तो मैं कैसे दोषी हो जाता।'

'परन्तु आपने घूस जो दी है।'

'यह तो हम सब अधिकारियों को देते हैं। इस सौदे में कुछ अधिक देनी पड़ी है। दोष सरकार का है कि उसने ऐसे अफसर रखे हुए हैं।'

'सरकार की बात सरकार निपट लेगी। मैं तो तुम्हारी बात कर रहा हूं। तुम यदि मुझको धोखा देकर या मुझको ले-देकर लाला जी का पांच लाख बचा लेते तो पाप के भागी तो तुम हो ही जाते। मेरे बेईमान बनने

से अथवा बुद्ध बनने से तुम कैसे पाप से मुक्त माने जा सकते हो ?'

'हमारे व्यापार का नियम है कि जब तक हम कानून (राज-नियम) से बचे रहते हैं तब तक हम धर्मात्मा हैं। धर्म समाज का नियम है और जब समाज का नियम हमको छूता नहीं तो हम अधर्मी नहीं हो सकते।'

'नहीं शिव जी ! यह ऐसा नहीं। धर्म एक शाश्वत वस्तु है। वह ध्रुव की तरह सत्य एवं अटल है। समाज तथा राज्य के नियम उस ध्रुव सत्य धर्म के विपरीत न होने चाहिए, न होते हैं। कभी धोखाधड़ी से अथवा घूस देने से समाज के नियम उस ध्रुव धर्म के विपरीत हो सकते हैं, अथवा उनको किया जा सकता है। परन्तु उस धर्म द्वारा विरोध होते ही पाप सम्पन्न हो जाता है। उसका फल मिलता है।'

'देखिए सत जी महाराज ! हमारे लाला जी समाज एवं राज-नियम का पालन करते ही लाखोंपती बने हैं और मैं भी इसी प्रकार लाखों कमा रहा हूँ। राज-नियम से बचकर मेरा जीवन सुखमय हो जाएगा। उपरान्त जो होगा, तब विचार कर लूंगा।'

'अच्छा, एक बात बताओ। वह दुकान के बाहर एक कुत्ता दस मिनट से मुख उठाए खड़ा है, क्यों ?'

'उसको इस वक्त यहां मे नित्य एक रोटी मिला करती है।'

'यह कोई अच्छी परिस्थिति है ?'

'नहीं। आज रोटी बची नहीं। इस कारण यह कुछ देरी तक और ठहरकर चला जाएगा।'

'तो यह दुःख क्लेश और कष्ट पाएगा ?'

'हां। यह तो है।'

'बताओ, इसने क्या किया है कि इसको यह परतन्त्रता का भोग करना पड़ रहा है और उसमें भी दुःख और कष्ट पृथक् हैं।'

'यह तो मैं बता नहीं सकता।'

'मैं बताता हूँ। शास्त्र में लिखा है—

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसा वृताः।

तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः॥

'वह मनुष्य जो आत्मा का हनन करता है अर्थात् ईश्वरीय नियमों को, जिनको दूसरे शब्दों में शाश्वत धर्म कहा है नहीं मानता, वह मृत्यु

के उपरान्त असुर योनियो में जाकर अन्धकार में विचरता है।

‘इसका अर्थ यह है धर्म का पालन न करने वाले देहावसान के उपरान्त इन कुत्ते, बिल्ली इत्यादि की योनियो में विचरते हैं। इन योनियो में प्राणी अन्धकार में वास करते हैं। अर्थात् इनमें ज्ञान, विवेक नहीं होता। ये अपनी अवस्था को सुधारने के हेतु कोई उपाय विचार नहीं कर सकते। इनका जीवन आसुरी अर्थात् इन्द्रियो के विषयो के अधीन होता है। समय आने पर ये वासना-तृप्ति कर लेते हैं अथवा भूख-प्यास लगने पर उनकी तृप्ति करते हैं। शीत लगने पर धूप में जा खड़े होते हैं अथवा गर्मी लगने पर जल में नहा लेते हैं। परन्तु यदि उन विषयो की तृप्ति के साधन भी समक्ष उपलब्ध न हों तो ये नहीं विचार कर सकते कि वे साधन कहा से प्राप्त करें।

‘इसलिए शिव जी ! मैं कहता हूँ कि धर्म की अवहेलना अति भयानक वस्तु है।’

‘परन्तु यह कैसे प्रतीत हो कि धर्म यह है। राज-नियम तो लिखे रहते हैं। कानून की पुस्तक सरकारी छापेखाने में बिकती है क्या धर्म की कोई पुस्तक भी ईश्वर के किसी छापेखाने में बिकती है?’

गोवर्धनलाल हंस पड़ा था। उसने कहा था, ‘हा धर्मशास्त्रों में लिखा है। लिखा है सदा सब आयुओं में और सब मनुष्यों के लिए धर्म है :

धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह ।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्मलक्षम् ॥

‘अन्य सब धर्म इनके अनुकूल ही होने चाहिए। इनके विपरीत नहीं हो सकते। शिवकुमार ! तुमने अस्तेय धर्म का विरोध किया है।’

‘तो तुम समझते हो कि मैं इस कुत्ते की योनि में पड़ूँगा?’ शिव-कुमार ने पीतमुख हो पूछ लिया।

‘यह मैं क्या जानूँ, देखो शिव जी ! एक चोर चोरी करता है न्यायाधीश दो मास का दण्ड दे, मुक्त कर देता है। दूसरे को वैसेही अपराध पर दो वर्ष की कैद का दण्ड देता है। वह न्यायाधीश इस भेदभाव में कुछ तो कारण रखता ही होगा। परन्तु हम कैसे कह सकते हैं कि न्याय करते समय न्यायाधीश क्या विचार कर कितना दण्ड दे देगा। हमका तो इतना ज्ञान होना पर्याप्त है कि जो कुछ कर रहे हैं वह

दण्डनीय है ।’

शिवकुमार ने मुनीम को कहा, ‘मोहन भैया, इस कुत्ते को आज आधा सेर दूध पिला दो ।’

मुनीम गया औ हलवाई की दुकान से दूध लाकर कुत्ते को पिलाने लगा ।

राम ने सोचा कि शिव भैया का, गोवर्धनलाल जी की बात से, हृदय कांप उठा मालूम होता है । वह स्वयं भी उम समय से अपने जीवन का अवलोकन कर रहा था । वकालत के दिनों में अनेकों बार वह किसी सम्भावित ग्राहक के आने पर मुख उठा उमके कथन की प्रतीक्षा करता रहता था । प्रायः आने वाला कुछ इधर-उधर की बात कर चल देता था । कोई विरला ही ऐसा होता था जो उसकी आय की बात करता था । वह अपनी अवस्था की तुलना उस दुकान के बाहर खड़े कुत्ते की अवस्था से करता था । वह भी अपनी अवस्था सुधारने में कुछ नहीं कर सकता था । जो मनुष्य उससे गप्पें हांकने आते थे, वह उनको यह नहीं कह सकता था कि वे किसी मुकदमें की बात करें । यह ठीक कुत्ते को रोटी फेंकने अथवा न फेंकने के सदृश ही था ।

उसने रोमांच अनुभव करते हुए कहा, “रूप ! मैं तो तुमको समझा नहीं सकता । मैं केवल इतना ही कह सकता हू कि जुआ खेलना श्रेष्ठ कार्य नहीं है !”

९

पूर्ण सम्पत्ति का चार्ज लेने में तीन मास लग गए थे । कई भकान थे, कोठियां थी और पोर्ट ट्रस्टों के तथा अन्य कम्पनियों के हिस्से थे । सबसे पहली बात जो गोवर्धनलाल ने की, वह रुपये को सुरक्षित करना था । उसने उन व्यवसायों में लगा रुपया, जिनको सुदृढ़ नहीं समझता था, नकद कर बैंकों में करा लिया । मकानों की देख-रेख के लिए उसने एक मुन्शी सौ रुपये मासिक पर रख लिया । वह मकानों एवं कोठियों की देख-रेख करता था तथा किराया वसूल करता था ।

गोवर्धनलाल ने नौकरी छोड़ दी थी । अब वह भगवद्भजन एवं सुलक्षण ट्रस्ट के प्रबन्ध में समय व्यतीत करता था । अपनी सास कर्म-

वह औरत नई सड़क पर से होती हुई चावड़ी बाजार और फिर अजमेरी गेट में से होती हुई पहाड़गंज की ओर चल पड़ी।

वह औरत पहाड़गंज में बड़ी मस्जिद के समीप एक गली में घुसी तो उसकी दृष्टि रूपकृष्ण पर जा पड़ी। वह ठिठककर खड़ी रह गई।

गली वीरान थी। उन दिनों पहाड़गंज नगर के भले लोगों की बस्ती नहीं थी। बहुत ही छोटी जाति एवं निम्न सामाजिक स्थिति के लोग वहां निवास करते थे। दिन के दस बजे का समय होने के कारण प्रायः लोग अपनी मेहनत-मजदूरी करने गए हुए थे।

वह औरत किशनो ही थी। रूप का अनुमान यथार्थ था। उस औरत ने भी समझ लिया था कि वह रूप को धोखा नहीं दे सकी। इस-पर उसने हाथ के संकेत से रूप को बुला लिया। रूप उसके सम्मुख जा खड़ा हुआ। औरत ने पूछ लिया, “किसलिए आए हो?”

“सुमित्रा को ले जाने के लिए।”

“विवाह करोगे?”

“हां।”

“तो मां को मुझसे मिला दो।”

“कहां।”

“इसी मकान में।” उसने उस मकान की ओर संकेत कर दिया, जिसके सामने खड़ी थी।

“तो तुम यहां रहती हो?”

“हां।”

“और सुमित्रा?”

“वह भी मेरे साथ ही है।”

“परन्तु समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की बीवी इस मुहल्ले में मिलने नहीं आएगी। तुम मेरे साथ अभी चलो। मैं तुमको अपनी मां से मिला देता हूं।”

“इस समय मुझको फुरसत नहीं।”

“तो किस समय मेरे साथ चल सकोगी। बताओ यहां लेने आऊं या कहीं अन्य स्थान पर मिलोगी?”

“यहीं मिलूंगी। कल प्रातःकाल छः बजे।”

“मैं सुमित्रा के लिए कुछ लाया हूं।”

“मुझको दे जाओ। मैं उसे दे दूंगी।”

“नहीं। यह तो उसके हाथ में ही दे सकता हूं।”

“तो वह नीचे नहीं आ सकती।”

“पर मैं तो ऊपर जा सकता हूं?”

“नहीं, लाला जी घर पर नहीं हैं?”

“कौन लाला?”

“लाला बनवारीलाल।”

“वे यहां क्या करते हैं?”

“अपनी कमाई का भोग करते हैं।”

“मैं उनसे मिलना चाहूंगा।”

“तो तुम बताओ। वे तुमको कहां मिलें?”

“टाउन-हाल के सामने मलिका विक्टोरिया के बुत के नीचे कल प्रातः छः बजे। वहां से हम दोनों मां के पास चले जाएंगे।”

“अच्छी बात है। अब तुम जाओ।”

रूप लौटा तो किशनो उस मकान में नहीं गई जिसके बाहर खड़ी थी। रूपकृष्ण गली के बाहर निकला और बाजार में पहुंच, घूम गया। एकाएक उसको विचार आया कि वह औरत उसको धोखा दे गई है। वह यहां नहीं रहती। इससे वह पुनः गली में भाँककर देखने लगा। उसको किशनो गली के आगे जाती हुई दिखाई दी। किशनो की पीठ उसकी ओर थी। वह दीपक की ओर पतंगे की भाँति आकर्षित हो, पुनः उसके पीछे चल पड़ा। कुछ दूर जाकर वह औरत पुनः एक मकान के बाहर खड़ी हुई और फिर घूमकर पीछे को देखने लगी। उसने पुनः रूपकृष्ण को अपने पीछे आते देखा तो हंसने लगी। उसने पुनः रूपकृष्ण को समीप बुलाया और कहने लगी, “तो तुमको विश्वास नहीं आया न?”

“नहीं। आधे घण्टे में तुम दो बार झूठ बोल चुकी हो। पहले तुम भली औरत बनीं। उपरान्त तुम इस पिछल मकान में रहने वाली बनी। लाला बनवारीलाल घर पर नहीं और वे कल मुझसे टाउन-हाल के बाहर मिलने आएंगे। यह भी झूठ ही हो सकता है।”

“तुम ठीक समझे हो कि मैंने झूठ बोला है परन्तु लाला जी तुमसे मिलने आते यह सत्य है।”

“कैसे मानूँ। कुछ भी तो प्रमाण होता।”

“तो आओ भीतर आ जाओ। प्रमाण मिल जाएगा।”

एक क्षण के लिए तो रूप का हृदय कांपा। वह सोचता था कि भीतर जाकर कहीं भारी मुर्सीबत में न फंम जाए। अतः अब वह झिझक अनुभव करने लगा था। उसको भीतर आने में संकोच करते देख, किशनो ने मुस्कराते हुए कहा, “क्यों ? अब डर लगने लगा है ?”

“हां ! तुम जैसी झूठ बोलने वाली औरत से और हो ही क्या सकता है ? मैं अपना पिस्तौल घर से लाया नहीं।”

पिस्तौल की बात उसने झूठ कही थी। उसने क्या, उसके बाप-दादा ने भी पिस्तौल को छूकर नहीं देखा था। परन्तु पिस्तौल का प्रभाव उस औरत पर भिन्न हुआ। वह यह समझी कि वह सत्य ही कोई रईसजादा है। इसपर उसने कह दिया, “अच्छा ठहरो। मैं अभी आती हूँ।”

यह कह, मकान के भीतर चली गई। रूपकृष्ण बाहर गली में मकान के भीतर की तुलना में अपने को सुरक्षित पाता था। उसने यह समझा कि कदाचित् वह सुमित्रा को लेकर बाहर आएगी और उससे भेंट प्राप्त करने का यत्न करेगी। उसकी जेब में भेंट के लिए कुछ था ही नहीं। यह उसने भी झूठ बोला था।

सुमित्रा नहीं आई। लाला बनवारीलाल तहमद और कुर्ता पहने निकला।

११

रूपकृष्ण बनवारीलाल को देख, निश्चिन्त हो, मकान में चला गया। वहां सुमित्रा से भी मिला। इसके उपरान्त बनवारीलाल तथा किशनो से अगले दिन विक्टोरिया के बुत के नीचे मिलने का समय निश्चित कर वह सन्तुष्ट मन, घर लौट आया।

वह ठोकर खा गया। बनवारी उससे मिला और फिर उसको वह अपनी मां से मिलाने ले गया। रूप के सौभाग्य से रामकुमार अभी दुकान पर जाने की तैयारी ही कर रहा था, जब वे वहां पहुंचे। मकान

की बैठक में रूप बनवारीलाल को बैठा ही रहा था कि राम बैठक में रूप को किसीसे बातें करने का शब्द सुन, आ पहुँचा और वह बनवारीलाल को वहाँ देख, भौचक्का हो खड़ा रह गया। एकाएक राम के मुख से निकल गया, “बनवारी ! अरे तुम यहाँ कैसे ?”

“राम ? तुम ! यह रूप तुम्हारा लड़का है क्या ?”

“क्यों ? इससे तुम्हारा क्या मतलब है ?”

बनवारीलाल उठ खड़ा हुआ और बोला, “भैया रूप, मैं गलत स्थान पर आ गया हूँ।” परन्तु राम ने, जो दरवाजे में खड़ा था, मार्ग नहीं छोड़ा। उसने कहा, “भाई ! बैठो न, चाय-पानी पीकर जाना। बहुत दिनों के बाद मुलाकात हुई है।”

“रूप !” राम ने लड़के को कहा, “जाओ ! मां को कहना कि एक अतिथि आए हैं। अल्पहार उनके लिए भी बनेगा।”

रूप इसका अर्थ न समझते हुए टुकर-टुकर मुख देखता हुआ, बैठक-घर से निकला और ऊपर की मंज़िल पर मां को चाय की कहने चला गया।

बान बनवारीलाल ने आरम्भ की। उसने कहा, “सुमित्रा से तुम्हारे शाहजादे विवाह करेंगे।”

“सुमित्रा !”

“हां। अब वह सज़ान हो गई है।”

“ओह ! समझ गया। तो यह लड़का तुमसे जुएखाने में मिला है ?”

“वह जुआखाना मेरा ही था। अब पुलिस के हस्तक्षेप के कारण टूट गया है।”

“सुमित्रा कितने वर्ष की हो गई है अब ?”

“पन्द्रह से कुछ ही कम है।”

राम एक क्षण तक विचार करता हुआ मौन रहा। फिर बोला, “यह शादी तब ही हो सकती है जब तुम और तुम्हारी किशानो दोनों, उससे न मिलने का वचन दें।”

बनवारीलाल ने अभी उत्तर नहीं दिया था कि रूप मां को चाय के लिए कह आया। उसे आया देख, बनवारीलाल ने अपने मन की बात

कह दी, “देखो राम ! यह विवाह मैं नहीं कर रहा । ये तुम्हारे साहब-ज्जादे उसकी मुहब्बत में फंस गए हैं । मेरे लिए तो यह व्यापार की बात है ।”

“कितना रुपया तुमको लड़की के लिए चाहिए ?”

“पचास हजार रुपया ।”

“वह तो हमारे पास है नहीं ।”

“तुम्हारे साहबज्जादे के पास है ।”

“क्यों रूप ?”

“है तो । परन्तु वह लाला जी के लिए नहीं । वह तो सुमित्रा के लिए है । मैं लाला जी से मुहब्बत नहीं करता । मैं तो सुमित्रा से मुहब्बत करता हूँ ।”

बनवारीलाल ने कह दिया, “एक ही बात है ।”

“तब ठीक है । विवाह हो जाए और मैं इतने की सम्पत्ति उसके नाम खरीद दूँगा । वह उसकी आय खा सकेगी ।”

रूप की बात दोनों बड़ों को विस्मय में डालने वाली सिद्ध हुई ।

बनवारीलाल ने कह दिया, “तो रूप, तुम सुमित्रा से भी मुहब्बत नहीं कर सकते । मुहब्बत अंधी होती है । तुम तो समझ-समझकर पग रख रहे हो ?”

रूप ने केवल यही कहा, “मुहब्बत नहीं, यह काम है जो अंधा होता है ।” रूप गौरी की युक्तियाँ प्रयोग करने लगा था । उसको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि अब उसकी आंखें मशाल के सामने न होने से चुंधिया नहीं रहीं । वह बनवारी और किशनो की बात से सतर्क हो गया था ।

बनवारीलाल ने कह दिया, “तो मैं लड़की की माँ से बात कर बता सकूँगा कि उसको रूप की बात स्वीकार है अथवा नहीं ?”

“तो फिर कब तक पता देंगे ?”

“एक सप्ताह के भीतर । मगर तुम हमारे मकान पर मत आना । वह इसको पसन्द नहीं करती ।”

रूप चुप रहा तो राम ने कह दिया, “इस बार आओ तो किशनो और सुमित्रा को लेते आना ।”

“क्यों ?”

“मैं ज़रा उसकी रूपरेखा देखना चाहता हूँ।”

“तो तुमको अभी भी सन्देह है ?”

“हां।”

बनवारीलाल गया तो राम ने रूप से पूछा, “आर यू हैड एण्ड टेल इन लव विद दिस गर्ल ?” (क्या तुम इस लड़की से बुरी तरह मुहब्बत में फंस गए हो ?)

“नहीं।” यह रूप का उत्तर था।

“तो सुनो ! यह बनवारीलाल मेरा मित्र था। किशनो, सुमित्रा की मां, हमारी सांझी रखेल थी। किशनो के गर्भ ठहरा तो वह हम दोनों के पास से भाग गई। अब मुझको सन्देह होता है कि बनवारीलाल ने उसको छिपा लिया होगा। एक बार बनवारीलाल ने मुझको कहा था कि किशनो के लड़की हुई है और उसका नाम सुमित्रा रखा गया है। मुझको सन्देह है कि लड़की मेरी है। अब बताओ, क्या विचार है ?”

रूप भौचक्का हो, मुख देखता रह गया। राम को दुकान पर जाना था। उसके जाने का समय हो रहा था। उसने ऊपर कपड़े पहनने के लिए जाते हुए कहा, “अब तुम विचार कर बात करना। मैं कल तुमसे इस विषय में बात करूंगा। देखो ! अपनी मां को मत बताना।”

रूप उस दिन अनेकानेक विचार में लीन, अपने कमरे में बैठा रहा। आज सायंकाल वह गोवर्धनलाल के घर जा पहुंचा। उस समय उसके फूफा घर पर आ जाया करते थे। परन्तु उस दिन वे नहीं आए। गौरी ने बताया, “आज लाला जी की सम्पत्ति की प्रबन्ध समिति की बैठक है। इस कारण उनको देरी हो गई है। तुम कैसे आए हो ?”

“एक बहुत आवश्यक विषय पर उनसे परामर्श करना था।”

“उनसे ही ?”

“नहीं। आप दोनों से।”

“क्या समस्या है ?”

“मैं यह पूछने आया था कि बहिन से विवाह क्यों नहीं किया जाता ?”

“कोई इसमें वैज्ञानिक कारण होगा।”

“तो आपको नहीं विदित ?”

“मैं यह जानती हूँ कि शास्त्र में इसका खण्डन किया गया है।”

“तो सब बातों को, जो शास्त्र में लिखी हों, आंखें मूंदकर स्वीकार कर लेना चाहिए ?”

“नहीं। शास्त्र की किसी बात को जो झूठी सिद्ध हो जाए, नहीं मानना चाहिए।”

“और जो सत्य सिद्ध न हो जाए ?”

“सत्य तो वह है ही। जब शास्त्र में मौ में से अस्सी बातें सत्य दिखाई देती हैं तो शेष बीस भी सत्य ही होनी चाहिए। हां। यदि किसीके विषय में यह निर्णयात्मक प्रमाण प्राप्त हो जाए कि वह गलत है तो फिर उसको त्याग देना चाहिए।”

“हमारा तो मिद्वांत यह है बुआ ! ‘टेक ऐवरी बाँडी टु बी ए स्काउंड्रल टिल ही प्रूव्ज हिमसेल्फ टु बी ए जैण्टलमैन।’ इसका अर्थ है कि जब तक कोई अपने को भला मनुष्य सिद्ध न कर दे, तब तक उसको बदमाश समझो। इसी प्रकार मैं कहता हूँ कि जब तक कोई बात सत्य सिद्ध न हो जाए तब तक उसको असत्य समझो।”

“यह तुम्हारे शास्त्र की बात है। हमारे शास्त्र में तो यह लिखा है कि मनुष्य जन्म में भली आत्माएं ही आती हैं। जब तक कोई अपने आचरण से अपने को बदमाश सिद्ध न कर दे, तब तक उसको भला मनुष्य ही समझना चाहिए। मनुष्य भूतल पर प्राणी सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इससे यह तो मानना ही पड़ेगा कि जो मनुष्य-योनि में आया है वह नैसर्गिक श्रेष्ठता रखता है। इसी प्रकार शास्त्र की बात है। शास्त्र जो सहस्रों वर्ष से प्रचलित है, वह अवश्य एक श्रेष्ठ पुस्तक है। इसलिए जब तक उसकी कोई बात असत्य सिद्ध नहीं हो जाती, तब तक उसको सत्य स्वीकार करना ही पड़ेगा।”

रूप देख रहा था कि जो कुछ भी वह कालेज अथवा अंग्रेजी-साहित्य में पढ़ा है, वह इस अशिक्षित नारी की युक्ति के समक्ष टिकना ही नहीं। वह सगे बहन-भाई के विवाह को समाज में अप्रचलित जान एवं शास्त्र में वर्जित लिखा सुन चुप कर गया। इसपर गौरी ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया, “क्यों, क्या बात है रूप ! किसलिए यह प्रश्न तुम्हारे मन में उत्पन्न हुआ है ?”

“बुआ ! पहले यह बताओ कि बहिन पिता की लड़की माननी चाहिए अथवा मां की ?”

गौरी ने कह दिया, “शास्त्र का मत यह है कि लड़की माता की सपिण्ड न हो अर्थात् माता की सात पीढ़ियों में न हो और जो पिता के गोत्र में न हो वह ही द्विजों के हेतु विवाह के योग्य है।”

इसी समय गोवर्धनलाल आ गए। वे भी रूप को उस समय वहां बैठा देख विस्मय में उसका मुख देखने लगे। गौरी ने पति को कहा, “आप रूप का संशय-निवारण करिए और मैं आपके लिए चाय तैयार करती हूं।” इतना कह, वह उठकर चली गई।

गोवर्धनलाल ने पूछा, “इस समय किस काम से आए हो रूप !”

“फूफा जी, मैंने बुआ से पूछा है कि बहिन और भाई का विवाह क्यों नहीं होना चाहिए ? बुआ ने उत्तर दिया है कि वह ठीक तो प्रतीत होता है, परन्तु उसमें प्रमाण नकारात्मक ही है।”

“मैं तो इस विषय में एक ही प्रमाण दे सकता हूं कि सगी मां और पिता की सन्तान तो प्रायः सब देशों में विवाह में वर्जित की गई है। हां, मुसलमानों में मां की दूसरे पिता से सन्तान कुछ अवस्थाओं में स्वीकार की गई है। संसार के सब देशों में इसका अस्वीकार होना ही सबसे बड़ा प्रमाण है कि ऐसा विवाह उचित नहीं। परन्तु तुमको इस विषय में जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता क्यों उत्पन्न हुई है ?”

“यदि आप किसीसे न कहने का वचन दें तो बता सकता हूं।”

“तुम्हारी स्वीकृति के बिना नहीं बताऊंगा।”

“बात यह है कि पिता जी की एक रखेल रही है। उसकी लड़की से मेरी मुहब्बत हो गई। पिता जी ने बताया है कि उनको मन्देह है वह लड़की उनकी है।”

“क्या प्रमाण दिया है उन्होंने ?”

“कोई प्रमाण तो दिया नहीं परन्तु एक बात मेरे मन में आती है। वह स्त्री पिता जी और उनके मित्र की सांझी पत्नी थी। जब गर्भ ठहर गया तो पिता जी का उससे सम्पर्क छूट गया। उसके उपरान्त वह दूसरे मित्र के पास ही आज तक है। परन्तु उसकी पुनः कोई सन्तान नहीं हुई है।”

“यह एक पुष्ट प्रमाण तो है परन्तु निर्णयात्मक नहीं। इसपर भी क्या तुम उस लड़की के मोह में इतने फंस गए हो कि उसका विचार नहीं त्याग सकते ?”

“उससे विवाह तथा बिना विवाह के भी सम्बन्ध का विचार तब ही छोड़ सकता हूं जब मैं उसको बहिन समझ लूं।”

“बहिन तो केवल कहने से भी हो जाती है। किसीको मुख से कह दिया ‘बहिन’ तो वह बहिन हो जाती है।”

“यही पूछ रहा हूं कि कहां अथवा न कहां ?”

“सदिग्धावस्था में कह दो। यही कल्याण का मार्ग है। रूप, संसार में इतनी लड़कियां हैं कि किसी एक के लिए पागल होना तो महा मूर्खता है। विवाह में माता-पिता की स्वीकृति अथवा विवाह-योग्य होने पर लड़के-लड़की की अनुमति अत्यावश्यक है। इसपर भी यदि बहिन-भाई का सम्बन्ध हो तो उक्त दोनों प्रकार की स्वीकृतियां भी निरर्थक हो जाती हैं।”

इसी समय गौरी चाय और नमकीन दालमोठ ले आई। वे तीनों लेने लगे तो गोवर्धनलाल ने अपनी पत्नी से कहा, “गौरी ! रूप के लिए कोई लड़की ढूढ़ दो न ?”

रूप हंस पड़ा। हंसते हुए उसने कहा, “फूफा जी, मैं अपनी रुचि के विपरीत विवाह नहीं करूंगा।”

“तो लड़की तुमसे पसन्द करा लेंगे।”

“परन्तु मैं आपको सचेत कर देता हूं कि मेरा श्रेष्ठता का मापदण्ड बहुत ऊंचा है।”

“यह तो देख लिया जाएगा।”

१२

अगले दिन रूप ने अपने पिता को कह दिया, “पिता जी ! मैं सुमित्रा से विवाह नहीं करूंगा।”

“ठीक है। तुम्हारी मां को कह देता हूं कि कोई और लड़की ढूढ़े।”

“परन्तु पिता जी ! मुझ बेकार से कौन करेगा विवाह ?”

“तुम जो कहते हो कि तुम्हारे पास पचास हजार रुपया है ?”

“वह जुए की आय का है।”

“उसको पूजी में बदल दो।”

“यह मैं जानता नहीं। यह विद्या मुझको किसीने पढ़ाई नहीं।”

“पढ़ाई तो होगी। तुम अर्थशास्त्र में ग्रेजुएट हो, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उसके क्रियात्मक रूप को किसीने बताया नहीं। देखो रूप, मैं तुमको एक प्रयोगशाला बताता हूँ। तुम नित्य शिव ताया की दुकान पर आ जाया करो। वहाँ आँखें खोलकर बैठा करो। अवश्य तुमको कोई न कोई ढग सूझ जाएगा, जिससे तुम फलों और फूलोंगे।”

इसपर रूपकृष्ण शिवकुमार की दुकान पर जाने लगा। पहले दिन तो उसको वहाँ बैठा देख, सबको विस्मय हुआ, परन्तु जब वह नित्य ही वहाँ पहुँचने लगा तो एक दिन शिव ने पूछ लिया, “रूप ! तुमको कोई काम नहीं, यहाँ आकर क्या सिद्ध करना चाहते हो ?”

“जो सिद्ध करना चाहता हूँ, वह अभी हुआ नहीं।”

“क्या ? कुछ चोरी करना चाहते हो ?”

“हां। ताया जी ! आपके व्यापार की प्रतिभा की चोरी करना चाहता हूँ।”

“तो मिली ?”

“नहीं, अभी वह दिखाई नहीं दी। जिस दिन उसे देख पाऊंगा, चुरा लूंगा।”

“अच्छी बात है। यत्न करो, कदाचित् तुमको दिखाई दे जाए। केवल देखने से ही उसको ग्रहण नहीं कर सकोगे। उसको ग्रहण करने के लिए साहस भी होना चाहिए।”

“ताया जी ! साहस तो मेरे पास है।”

“साहस के साथ सामर्थ्य भी तो चाहिए।”

“वह भी कुछ बटोर ली है।”

“कितनी ?”

“मेरे पास बैंक में पचास हजार हैं।”

“हां ! कुछ तो हैं। तो बैठो जो कुछ समझ में न आए पूछ लेना।”

बनवारीलाल पुनः रूपकृष्ण से मिलने नहीं आया, न ही रूपकृष्ण मुमित्रा के पीछे गया। उसने उसे मन से निकाल दिया था।

उसको शिवकुमार की दुकान पर जाते हुए एक मास से ऊपर हो गया था। जैसे चलती गाड़ी को बहुत कम प्रयत्न से ही चलाया जा सकता है, वैसे ही शिवकुमार की दुकान चल रही थी। शिवकुमार का थोड़ा-सा प्रयत्न भी रूपकृष्ण को इस काल में दिखाई नहीं दिया। माल बेचने वाले लाला सुलक्षणमल के नाम से आकृष्ट हो आते थे। बिना रसीद-पत्रों के माल दे जाते थे। शिवकुमार ही अपनी बही में लिखता था और इसको प्रमाण माना जाता था। लोग खरीदने वाले भी आते थे अथवा उनके एजेण्ट आते थे। दुकान की आदत इन सौदों में बहुत कम—दो पैसे से एक आना रुपया तक ही होती थी। हाँ, जब माल बिकने के पूर्व रुपया अग्रिम दिया जाता तो उसपर आठ आने सँकड़ा सूद काटा जाता था। प्रायः माल दुकान खरीद लेती थी और जब माल खरीदती थी तो फिर जब तक माल बेचने वाला रुपया नहीं ले जाता था, आठ आना सँकड़ा के हिसाब ब्याज दिया जाता था। कभी दुकान से माल त्रय करने वाला भी उधार खरीदता था अथवा हुंडी पर माल ले जाता था तब उस हुंडी पर साढ़े आठ आने का ब्याज ले लिया जाता था। इस प्रकार बहुत सस्ते में व्यापार चलता था। इसपर भी दुकान की आय चार-पाँच लाख रुपये वार्षिक हो जाती थी। यह सब रहस्य राम अपने पुत्र रूप को बताया करता था।

“इसमें रहस्य क्या है?” रूप का प्रश्न था।

“रहस्य है विश्वास। किसान लोग लाला सुलक्षणमल की दुकान का विश्वास करते हैं। उनके मन में यह बात अंकित हो चुकी है कि यहां माल जमा करा जाने पर, एक छटांक की हेरा-फेरी नहीं होगी। वे यहां रखा माल अपने घर में रखने से अधिक सुरक्षित मानते हैं। शिव माल पर पचहत्तर प्रतिशत तक अग्रिम दे देता है। उसपर तब तक ही ब्याज लेता है जब तक ग्राहक का माल बिक नहीं जाता अथवा वह स्वयं खरीद नहीं लेता। ईमानदारी से उसी दिन अग्रिम दिए गए रुपये से सूद लेना बन्द कर माल के बकाया मूल्य पर ग्राहक को ब्याज मिलना आरम्भ हो जाता है।

“मुझको पाँच मास कार्य करते हो गए हैं। इस काल में एक भी मनुष्य ऐसा नहीं आया जिसको दुकान की बही पर सन्देह हुआ हो और

एक भी अक्षर बही पर ऐसा नहीं लिखा गया जो यथाथ के अतिरिक्त हो ।”

“पिता जी ! यह विश्वास किस प्रकार बैठता है ?”

“यह सुनने में आया है कि जब तुम्हारे बाबा ने यह दुकान खोली थी और दुकान का मुहूर्त हुआ था तो घर के पुरोहित ने पूजा कराई थी। पूजा में बहियां भी ठाकुर जी के समक्ष रखी गई थीं। पूजा पर यह कहा गया था कि जो कुछ उन बहियों पर लिखा जाएगा वह सत्य होगा एवं जो कुछ सत्य होगा वही उनपर लिखा जाएगा और इस बात के साक्षी-रूप में तब की बही के प्रथम पृष्ठ पर पण्डित जी ने गणेश का चित्र केसर से चित्रित किया था एवं उसका भी पूजन किया गया था।

“एक दिन शिवकुमार ने तब की बही मुझको दिखाई थी ; और प्रतिवर्ष नई बही लगाने समय वह साठ वर्ष पुरानी बही को निकाल नमस्कार करता है और तब नई बही पर लिखना आरम्भ करता है।”

“तो पिता जी ! आप इस बात को सत्य मानते हैं ?

“सत्य का क्या अर्थ ? किस बात को सत्य मानता हूं ?”

“यही कि बही का पूजन करने में दुकान का विश्वास बैठ गया है।”

“तुम भी कुछ मूर्ख हो रूप ! मैंने यह नहीं कहा। मेरे कथन का भावार्थ यह है कि उन बहियों पर सदैव सत्य लिखने से उसमें कभी भूल-चूक से गलत बात लिख देने पर भी वह सत्य ही मानी जाती है। भले ही वह दुकान के हितों के विपरीत जाती हो। मुनीम लिखने वाले हैं। वे कभी भूल भी कर जाते हैं। परन्तु ग्राहकों और दुकान के मालिक के मन में बही की सत्यता पर इतना विश्वास है कि सब उसपर लिखे को प्रमाण मानते हैं।

“शिवकुमार प्रतिवर्ष पुरानी बही को निकालकर अपने मन के संकल्प को हरा-भरा करता-रहता है, जिससे वह बही के विश्वास को बनाए रखे।

“एक बात और भी बताता हूं। मैं अभी नया-नया ही दुकान पर काम करने लगा था कि जीजा गोवर्धनलाल जी को शिवकुमार के किसी सेना विभाग के माल में धोखा-धड़ी का ज्ञान हो गया। माल का बाजार-भाव अढ़ाई रुपये मन था। और उसने टेंडर भर दिया था चार रुपये मन।

इससे आठ आने मन की घूस देकर एक रुपया मन बचा लिया। बीस हजार टन का सौदा था। इस प्रकार पांच लाख से ऊपर की नकद आय थी।

“गोवर्धनलाल ने पूछ लिया, ‘ईमानदारी से कितना लाभ होता चाहिए?’

“‘जितना खरीदने एवं बेचने वाले में निश्चय हो जाए।’

“‘परन्तु यहां तो निश्चय करने वाला खरीदने वाला नहीं और उसने इस भाव का निश्चय अपने घूस के बल पर कराया है। शिव, यह बताओ, दूसरे टेंडर किस भाव के थे?’”

“‘मुझसे नीचे वाला टेंडर ही अढ़ाई रुपये का था।’

“‘मेरी राय मानो। तुम सब माल सप्लाई कर दो और बिल बनाते समय इसका भाव इतना लगाओ जिससे तुमको सब ले-देकर मुनासिब ही बचत हो।’

“‘मुनासिब क्या है?’

“‘जितना लाभ तुम साधारण खरीदार से लेते हो।’

“‘वह तो दो आना प्रतिमन लेता हूं।’

“‘ठीक है, गिनती कर लो। व्यय में अफसरों को दिया धन भी डाल दो और फिर देरी से मिलने वाले धन का ब्याज भी लगा लो। तब बिल बनाकर रुपया वसूल कर लो। कारण यह लिखो कि अपनी दुकान की परम्परा के अनुसार तुम माल पर अधिक मूल्य नहीं ले रहे, इसलिए बिल टेंडर के भाव से कम का बनाया है।’

“रूप ! शिवकुमार कुछ देर सोचता रहा और उपरान्त गोवर्धन जीजा का जादू चल गया और परसों अन्तिम हिसाब का चिट्ठा मैंने ही तैयार किया है और उसपर वही बात लिखी गई है जो जीजा जी ने कही थी। इस प्रकार सरकार से, बनने वाले बिल में से, दो लाख अस्सी हजार रुपये कम मांगे गए हैं।”

रूप टुकर-टुकर मुख देखता रह गया। राम ने कहा, “भला कौन इस दुकान का विश्वास नहीं करेगा।”

रूप विचार कर रहा था कि गौरी एवं गोवर्धनलाल में कौन बात है कि उनकी बात मानने के लिए शिवकुमार तैयार हो जाता है। वह स्वयं

अपने पर भी विस्मय कर रहा था कि वह भी तो अपने जीवन पर उनके कथन का प्रभाव देख रहा था। इसपर भी वह सोचता था कि यदि अढ़ाई लाख रुपये की हानि की बात होती तो कदाचित् वह न मानता।

रूप हौजकाजी में पहुंचा तो वहां एक तबेले के बाहर डुग्गी पिटती देखी। दस-बारह बच्चे वहां एकत्रित हो रहे थे। कोई प्रौढ़ावस्था का व्यक्ति वहां पर नहीं था। डुग्गी पीटने वाले के समीप एक बाबू मेज़-कुर्सी लगाए बैठा था। समीप ही एक स्टूल पर पुलिस का मिपाही बैठा था। रूप ने एक लड़के से पूछ लिया, “यहां क्या हो रहा है?”

“यह तबेला नीलाम हो रहा है।”

“पुलिस क्यों बैठी है यहां?”

“नीलाम करने वाला सरकारी आदमी है, इसलिए।”

“इस समय डुग्गी पीटने वाले ने आवाज दे दी। एक हजार पांच सौ रुपया, इस तबेले के लिए।”

कुछ लोग तबेले के भीतर आ-जा रहे थे। वे इसकी लम्बाई-चौड़ाई देख रहे थे। वह भी उसमें अन्दर चला गया। अच्छी लम्बी-चौड़ी जगह थी। एकाएक उसके मन में आया कि यह जगह बिक रही है। क्या इसकी मांग है। और मांग इस दाम से अधिक दाम की है क्या? उसको समझ आया कि तबेला तो यहां रह नहीं सकता। बाज़ार में तो दुकानें बनेंगी, दुकानों पर मकान बनेगा। मकान में रहने वाले आएंगे...

इस विचार के आते ही वह बाहर आया और मेज़-कुर्सी लगाए बैठे बाबू से पूछने लगा, “यह बोली किसकी है?”

“यह बताने की आज्ञा नहीं है।”

“तो मैं एक हजार छः सौ की बोली देता हूं।”

“मुंशी ने रजिस्टर खोल दिया और बोली का मूल्य, बोली देने वाले का नाम तथा पता लिख हस्ताक्षर करवा लिए और कह दिया बोली इससे न बढ़ी तो दस प्रतिशत जमा करना पड़ेगा।”

“करा दगा।”

अब डुग्गी पीटने वाले ने घोषणा करनी आरम्भ कर दी, “एक हजार छः सौ रुपया।” रूप कुछ दूर हटकर खड़ा हो गया। वह देखना चाहता

था कि क्या कोई बढ़ता है उससे ? और वह कौन है जो बढ़ता है ।

वह अभी खड़ा ही था कि रूपरेखा से पहलवान दिखाई देने वाला एक व्यक्ति उसके समक्ष आकर खड़ा हो गया । रूप ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया तो उसने पूछ लिया, “बाबू ! किसके नाम की बोली दे रहे हो ?”

“किसलिए पूछ रहे हो ?”

“इसलिए कि पहली एक हजार पांच सौ की बोली मेरी थी ।”

“और तुम कौन हो ?”

“यह भूमि मेरी गिरी है ।”

“मैंने यह नहीं पूछा । जब तुम यह पूछते हो किसके नाम की बोली दी है तो मैंने भी यही पूछा है किसके नाम से तुम बोली दे रहे हो ?”

“बनवारीलाल के नाम से ।”

“वही जो पहले सदर बाजार में रहते थे और अब पहाड़गंज में रहते हैं ?”

“हां ।”

“वे तो बहुत बड़े आदमी हैं ।”

“हां ।”

“और मैं सुलक्षणमल की दुकान के लिए खरीद रहा हूं ।”

“तो उन लाला जी से जाकर कहो कि अगर यह जमीन उन्होंने ले ली तो उन्हें यमलोक का द्वार दिखा दूंगा ।”

“पहलवान ! यह बात तुम उसको दुकान पर जाकर कह आओ ।”

रूपकृष्ण को समझ में आया कि शिवकुमार ने साहस की बात कही थी । इस पहलवान की धमकी में साहस से काम लेना चाहिए ।

पहलवान ने उद्दण्डता से कहा, “तो तुम्हारी टांगें टूट गई हैं क्या ?”

“नहीं जी । टांगें तो हैं । केवल एक बात है । मैं कहूंगा तो उनको विश्वास नहीं आएगा और मकान वे ले लेंगे ।”

“क्यों लेंगे ?”

“एक लड़की सुमित्रा है । ये इस जमीन पर मकान बनाकर उसको नज़र में देना चाहते हैं ।”

पहलवान भौंचक्का हो, मुख देखने लगा। फिर कुछ विचारकर, पूछने लगा, “सुमित्रा उनकी कौन है ?”

“यह मैं क्या जानू। इतना मालूम है कि एक किशनो-किशनो विधवा है। वह लाला जी के पास आती-जाती है।”

“यह तुम कैसे कहते हो कि भूमि और मकान उसके लिए है ?”

“भाई, मैं तो अपना अनुमान ही बता रहा हूँ। कल किशनो आई थी और उसके जाने के पश्चात् ही मुझको आज्ञा मिली थी कि मैं इस मकान को खरीद लूँ।”

“और तुम्हारा क्या नाम है ?”

“मेरा नाम रामकुमार है। मैं लाला जी के पास नौकरी करता हूँ।”

पहलवान रूप को वहीं छोड़, अजमेरी गेट से बाहर की ओर चला गया।

रूपकृष्ण भी वहाँ से टल गया। वह चलता हुआ विचार करने लगा कि किस प्रकार वह मकान को ले सकता है। वह मन में कल्पना कर रहा था कि पहलवान बनवारीलाल को बताने के लिए पहाड़गंज को गया है। इससे उसके मन में गुदगुदी उत्पन्न होने लगी। वह मन ही मन बनवारीलाल और किशनो के मन की कल्पना करने लगा था। वे समझेंगे कि राम अपनी लड़की को देने के लिए मकान खरीद रहा है।...

उस समय दोपहर के दो बज बज चुके थे। नीलामी सायं चार बजे तक चलने वाली थी। इससे वह साढ़े तीन बजे यहाँ पुनः लौट आया। उसने देखा कि अब बनवारी और उसका एजेण्ट पहलवान दोनों खड़े थे। बोली अभी एक हज़ार छः सौ ही चल रही थी। इससे उसको यह समझ आया कि वे यह बोली उसके नाम में समाप्त करने की बात विचार रहे हैं। कदाचित् उनको विश्वास हो गया है कि मत्स्य ही मकान उनकी लड़की को मिलने वाला है।

रूप को आया देख, बनवारीलाल उसकी ओर बढ़ आया। वह उसके समीप पहुँच कहने लगा, “रूप, यह मकान कौन खरीद रहा है ?”

“मैं खरीद रहा हूँ।”

“परन्तु तुमने झूठ क्यों बोला है कि सुलक्षणमल की दुकान खरीद

रही है।”

“मैं पहलवान को यहां से टरकाना चाहता था।”

“तुम किसके लिए मकान खरीद रहे हो ? तुम्हारे पास तो अपना मकान है।”

“यह मेरा रहस्य है।”

“देखो रूप ! मैं यह मकान किशनों के लिए खरीद रहा हूं। यदि तुम उसकी लड़की के लिए खरीद रहे हो तो मैं बोली नहीं बढ़ाऊंगा।”

“मैं यह खरीद रहा हूं अपनी पत्नी के रहने के लिए। वह पत्नी कौन होगी, कैसे कह सकता हूं। आप तो जवाब देने नहीं आए ?”

“तो तुमको तुम्हारे पिता ने नहीं बताया कि सुमित्रा उनकी लड़की है ?”

“उन्होंने बताया है परन्तु मुझको विश्वास नहीं आया। मुझको वह आपकी लड़की प्रतीत होती है। इसीलिए उसके लिए पृथक् मकान बनवा रहा हूं, जहां पिता जी का हस्तक्षेप न हो।”

“अच्छी बात है, मैं बोली नहीं बढ़ाऊंगा।”

बनवारीलाल ने पहलवान को आंखों से संकेत किया और वह वहां से टल गया। चार बजे तक बोली एक हजार छः सौ पर रूपकृष्ण के नाम समाप्त हुई। रूपकृष्ण ने दो सौ रुपये का चेक अग्रिम जमा कराया और उसकी रसीद ले ली। रूपकृष्ण समझ रहा था कि उसने जीवन में प्रथम व्यापार किया है और उसमें उसने सफलता प्राप्त की है। वहां से वह अपने घर गया।

अगले दिन उसने गोवर्धनलाल जी के घर जा, अपनी योजना बता दी। उसने कहा, “फूफा जी ! मैंने एक व्यापार आरम्भ किया है।”

“क्या ?”

“मैंने हौजकाजी में एक जमीन का टुकड़ा नीलाम में मोल लिया है। सोलह सौ की बोली मेरे नाम समाप्त हुई है।”

“ठीक है, यदि किसीने उजरदारी न की तो यह टुकड़ा तुम्हारे नाम हो जाएगा। क्या करना चाहते हो इसपर ?”

“मैं मकान बनवाऊंगा। नीचे दुकानें होंगी और ऊपर मकान होगा। जब बन जाएगा तो इसको मुनासिब लाभ पर बेच दूंगा। यदि इसमें

सफलता मिली ता यह काम मुझको पसन्द है ।”

“ठीक है ।”

“अब मैं आपसे दो बातों की सहायता लेने आया हूँ । एक तो इस भूमि को लेने के लिए मुझको क्या करना चाहिए और दूसरे मकान बनवाने में किससे बनवाऊँ और कैसा बनवाऊँ ?”

“पहले तुमको एक प्रार्थनापत्र सब-जज के नाम देना होगा । दोपहर के समय मेरे साथ न्यायालय चलना । मैं तुमको यह बात करवा दूंगा । इस प्रार्थनापत्र के उत्तर के पश्चात् ही विचार किया जा सकता है ।”

दूसरा परिच्छेद

सुलक्षणमल की सबसे बड़ी लड़की विष्णुदेवी का विवाह बिरादरी में एक धनी आदमी के पुत्र प्रतापकृष्ण से हुआ था । पहले तीन वर्ष तो विष्णुदेवी के अपने समुराल में बहुत सुख में व्यतीत हुए । जब उसके घर में प्रथम सन्तान यमुना हुई, तो उसके समुर का देहान्त हो गया और उसकी सास ने आत्महत्या कर ली । समुर की मृत्यु हुई थी निमोनिया से, और सास ने मकान की छत पर चढ़कर छलांग लगा दी थी । दोनों की अर्थी एक समय निकली और एक ही चिता में फूँकी गई थी ।

माता-पिता के देहान्त के उपरान्त प्रतापकृष्ण बेलगाम हो गया । पिता की एक ही सन्तान थी और सम्पत्ति पर अधिकार पाते ही उसको मद्य-सेवन एवं जुआ खेलने की लत लग गई थी । परिणामस्वरूप पूर्ण सम्पत्ति चार-पांच वर्ष में समाप्त हो गई । इस समय उसके पिता का व्यापार नष्ट हो चुका था और कोष खाली होने तक प्रतापकृष्ण इतना बदनाम हो चुका था कि मुहल्ले में उसको कोई मुंह नहीं लगाता था ।

प्रताप के पिता की नई मड़क पर एक कटरे में कपड़े की थोक दुकान थी । अब उस दुकान पर मक्खियाँ भिनभिनाती थीं ।

अवस्था के बिगड़ने पर भी प्रताप को चेतना न हुई । वह बढ़िया स्कीच व्हिस्की पीता-पीता अब देसी फरीदकोट की बनी शराब पीने

लगा था । और इससे उसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा था ।

इस समय तक उसके घर दो लड़कियां और हो चुकी थीं । दूसरी का नाम बंगा एवं तीसरी का नाम गोदावरी रखा गया । अब विष्णुदेवी घर पर पड़ोसियों के कपड़े सीकर निर्वाह किया करती थी ।

इन दिनों मुहल्ले में मे किमीने मुलक्षणमल को आकर बताया कि उसकी लड़की विष्णुदेवी की अवस्था बहुत बिगड़ गई है और वह बेचारी हाथ से काम कर अपना निर्वाह करती है । पिता ने अपने बड़े लड़के को भेजा कि वह जाकर मालूम करे कि क्या कारण है उस अवस्था का, और उसने अभी तक बताया क्यों नहीं ।

शिवकुमार प्रातः के अल्पाहार के समय पहुंचा । यमुना खाना बना रही थी । वह इस समय आठ वर्ष की हो चुकी थी । विष्णुदेवी घर के वातायन के समीप बैठी मलमल का एक कुर्ता सी रही थी । उसकी आंखों पर चश्मा लगा हुआ था और उसने भी वह सीने में कठिनाई अनुभव कर रही थी ।

बहिन भाई को आया देख, अपनी बिगड़ी अवस्था पर लज्जा अनुभव करने लगी थी । उसने यत्न किया कि मलमल के कुर्ते को छिपा ले परन्तु वहां छिपाने के लिए स्थान नहीं था ।

“यह क्या कर रही हो विष्णी ?”

“आओ भैया । आज तुम्हारा चित्त किया है बहिन को मिलने का ? बैठो, पानी पिओगे ?”

“नहीं । हमारे जीजा जी कहां हैं ?”

“कहीं गए हैं ।”

“बताकर नहीं गए ?”

“बताने की आवश्यकता नहीं थी । मैं जानती हूं, वे कहां गए हैं ?”

“कहां ?”

“देसी शराबखाने में ।”

“शराब के लिए पैसे कहां से पाते हैं ?”

“साथ ही जुआखाना है । वहां छोटे-छोटे दांव लगाते हैं—कभी जीत जाते हैं तो खूब पीते हैं और बदमस्त हो, घर पर आ जाते हैं । हारते हैं तो भूत की भांति दीवारों के साथ-साथ आश्रय ले, चले आते हैं ।”

“कभी जीतते हैं तो घर के व्यय के लिए भी दे देते हैं क्या ?”

“हां। एक-आध रुपया खैरात के रूप में फेंक जाते हैं।”

“तो निर्वाह कैसे होता है ?”

“मैं और यमुना दिन-भर में दो कुर्ते सी लेती हैं। गली के बाहर रमजान दर्जी है। वह काम दे जाता है। आठ आना प्रति कुर्ते की सिलाई देता है। इस तरह निर्वाह हो रहा है।”

परन्तु तुमने पिता जी को कभी बताया नहीं ?”

“उनको क्या बताती ? अपने दुर्भाग्य की कथा बता, उनको व्यर्थ में दुःखी करती।” विष्णुदेवी की आंखों से आंसू बहने लगे थे।

“परन्तु बहिन, तुमको इस नरक से निकाल लेते।”

“भैया, यह भाग्य की विडम्बना यदि मानवकृत होती तो मनुष्य के करने से छूट जाती। भला भाग्य को कौन टाल सकता है ! आपने तो अच्छे आदमी ढूँढ़े थे। दित्त-दाज भी खूब दिया था। भाग्य ने साथ नहीं दिया।” विष्णुदेवी की चोली भीगने लगी थी।

शिवकुमार ने कहा, “अच्छा, उठो, आज हमारे घर चलो। पिता जी को तुम्हारी दशा का वृत्तान्त कल किसी मुहल्ले वाले ने बताया तो वे तब से ही बेचैन हो रहे हैं। रात-भर वे सो नहीं सके। आज उन्होंने मुझको भेजा है कि तुमको वहां ले चल। वहां चलकर इसका कुछ उपाय ढूँढ़ा जाएगा।”

“क्या उपाय हो सकता है। मैं समझती हूं, आपने अपना कर्तव्य पालन कर दिया। भला मेरे दुर्भाग्य से भगड़ा कैसे होगा ?”

यमुना रोटी बना चुकी थी। वह रोटी थाली में परस, ले आई। तीनों प्राणियों का भोजन एक ही थाली में था। मूंग की दाल थी, आम का अचार था और बिना चुपड़ी रोटियां थीं।

गंगा तो पांच वर्ष की थी और खेल रही थी। रोटी आई देख वह भी वहां आ गई। सबसे छोटी गोदावरी अभी एक वर्ष की थी। उसको यमुना ने दूध पिलाकर सुला दिया था।

विष्णुदेवी ने अपनी दोनों लड़कियों को हाथ धो, भोजन करने के लिए कहा और स्वयं अधसिले कुर्ते को एक ओर खाट पर रख, हाथ धोने चल पड़ी। “भैया शिव,” उसने रोटी खाने के लिए बैठते हुए कहा,

“भोजन करोगे ?”

“नहीं बहिन, मैं भोजन करने नहीं आया। मैं तुमको यहां से बाहर करने के लिए आया हूं। मुझको बहुत ही दुःख है कि तुमने अपनी इस अवस्था का हमसे कभी वर्णन नहीं किया।” इन सूखी अधजली रोटियों को खाया जाता देख, शिव की आंखें भी तरल हो उठी थीं।

बहिन ने दृढ़ स्वर में कहा, “भैया, तुम लोग भी तो कभी खबर लेने नहीं आए। मैं तो यह समझ रही हूं कि बिना भगवान के आश्रय के उद्धार होगा नहीं।”

“तो भगवान के रूप में ही तो कल पिता जी को कोई कहने आया प्रतीत होता है। विष्णी बहिन, तुम नहीं जानतीं, परन्तु आज से पांच वर्ष पूर्व प्रताप जी दुकान पर किमी काम से गए थे और पिता जी के कुछ कहने पर दुर्वचन कहने लगे थे। उस समय उनकी अवस्था इतनी बिगड़ी हुई प्रतीत नहीं होती थी। हमने यह समझा कि तुम पति-पत्नी सुखी रहो। हम दूर से ही सुख अनुभव कर लेंगे।”

विष्णी को याद आ गया। गंगा का जन्म हुआ था। विष्णी की मां कर्मदेवी नई सन्तान के हेतु वस्त्रादिक लेकर आई थी। उसके साथ सदा और राम भी आए थे और विष्णी उनको मिठाई खिला रही थी। मां को जो कुछ देना था, देकर चली गई। सदा और राम दिन-भर शिशु लड़की को गोदी में ले खेलाने का रस लेने वहां रह गए थे। उस समय प्रताप आया था। कदाचित् भारी रकम हारकर आया था। उसने भी वहां पर रखे वस्त्र और उनपर कुछ रुपये रखे देखे तो पूछा, ‘ये कहां से आए हैं ?’

‘मां दे गई है।’

प्रतापकृष्ण ने बिना देखे वस्त्र फेंककर कह दिया, ‘अब हम निर्धन हो गए हैं। इसलिए सूती कपड़े देने लगे हैं ?’

‘तो हमारा उनसे पाने का अधिकार है क्या, जो दे गए उनकी कृपा है।’

‘ठीक है, और इन दोनों को यहां की रोटियां तोड़ने की कृपा कर गए हैं।’

विष्णी समझ रही थी कि उसका पति भारी रकम हारकर आया

प्रतीत होता है। इससे चुप रही। बात आई-गई हो गई। राम और सदा चले गए और फिर उसकी मां के घर से कोई नहीं आया। यह तो उसको आज ही विदित हुआ था कि उसका पति उसके पिता से लड़ आया है।

उस समय अवस्था इतनी पतली नहीं हुई थी। इसपर भी परिवार निर्धनता के गर्त में धंसता जा रहा था। इन पांच वर्षों का पूर्ण इतिहास विष्णुदेवी को स्मरण आया तो वह पुनः आंसू बहाती हुई उन सूखी अध-जली रोटियों को चबाने लगी। मन की अवस्था के कारण मुख का ग्रास गले से नीचे उतरता नहीं था।

वह उठ, स्नानागार में गई और मुख से ग्रास निकाल, गला और आंखों को धो-पोंछ, भाई के समक्ष आ बैठी। उसकी अवस्था पर शिव-कुमार ने भी अपने आंसू पोंछते हुए कहा, “मैं समझता हूं, तुमको चलना चाहिए। पिता जी किसीको भेज, जीजा जी को भी बुला लेंगे और फिर वहां बैठ, राय करेंगे।”

“मैं यह कहने वाली थी कि तुम जाओ। वे रात को आएंगे तो मैं उनको पिता जी से मिलने के लिए कहूंगी।”

“वह नहीं आएगा।”

“तो मैं वहां जाकर क्या करूंगी?”

“कम से कम ये कुर्ते मीने तो बन्द हो जाएंगे, ये सूखी रोटियां तो कुछ तर हो जाएगी।”

“बिना उनके कुछ नहीं होगा शिव ! फल खाए इस पेड़ के गन्दे कीने पात। यही हमारा धर्म है, जलेंगे इनके साथ।”

शिव बहिन की भावना समझता था। उसने कहा, “अच्छा बहिन ! मैं उनको ढूढ़कर लाता हूं और तुम सबको इकट्ठा ही ले चलूंगा।”

शिव मकान से नीचे उतर गया। मकान के नीचे एक दुकान पर से पूछने लगा, “भाई साहब ! यहां देसी शराबखाना किधर है?”

दुकानदार ने शिव को प्रताप के मकान से उतरते देखा था। इस कारण उसने पूछा, “प्रताप को ढूढ़ रहे हो?”

शिव को प्रताप की इतनी ख्याति देख विस्मय हुआ। उसने कह दिया, “तो आप जानते हैं कि वह कहां है?”

अभी बहुत सुबह है। वह शराबखाने में नहीं होगा। इस समय

शराबखाने की एक बैठक पर होगा।”

“किसकी बैठक है?”

“नसीम रण्डी की।”

“वह किधर है?”

दुकानदार ने बताया तो शिवकुमार उधर ही चल पड़ा। दंडने में कुछ कठिनाई अवश्य हुई परन्तु बैठक का द्वार खुला था और मीढ़ियां चढ़ने पर चार-पांच आदमी हंसते हुए और बातें करते हुए सुनाई दिए। शिवकुमार मीढ़ियों में खड़ा उनकी बातें सुनने लगा। वह यह देखना चाहता था कि उसमें किसी स्त्री की आवाज है क्या। किसी औरत की आवाज सुनाई नहीं दी। बातचीत प्रताप के विषय में हो रही थी। एक सज्जन उसको गाली देता हुआ कह रहा था, “प्रताप! अब तो कई दिन से तुम निरन्तर हार रहे हो। बताओ, उधार कैसे दोगे?”

“अरे भाई!” एक भर्गई हुई आवाज, जिसको प्रतापकृष्ण की मानने को शिवकुमार को साहस नहीं होता था, कहने लगी, “कभी तो जीतूंगा ही। कब तक पत्ते उलट चलने रहेंगे।”

“नहीं, ओ उल्लू के पट्टे! अब एक पैसा और नहीं मिलेगा। कुछ बीबी की नथनी वगैरा है या नहीं। जाओ ले आओ तो बान करूंगा।”

“अब तो उसके पास भी कुछ नहीं?”

“तो तुमको शर्म नहीं आती यहां आते हुए?”

“शर्म किस बात की? तुमसे उधार लूंगा। सुभीता होते ही दे दूंगा।”

“तुम्हारे जैसे नहसत को देकर वापस मिलेगा ही नहीं।”

“और यह क्यों नहीं कहते कि तुम्हारा रुपया ही नहमत (अप-शकुन) है।”

“बकवास बन्द करो प्रताप, निकल जाओ यहां से, नहीं तो मीढ़ियों से नीचे धक्का दे दूंगा। सीधे यमलोक पहुंच जाओगे।”

“पर यह मकान तुम्हारा है क्या?”

“जिमके पास पैसा है, नसीमा उसकी है। नसीम का मकान भी उसीका है।”

“ओह! नसीम के भी मालिक बन बैठे हो? आ ले वह, पूछूंगा।”

“अच्छा जी। अब उसकी अदालत में मुकदमा जाएगा ?”

“क्यों नहीं जाएगा ?”

“तो जाओ उसकी अदालत में।” इसके अनन्तर बैठक में हाथा-पाई की नौबत आ गई। शिवकुमार सीढ़ियों में खड़ा उनके वार्तालाप और भगड़े की बात सुन रहा था। एकाएक दो आदमी भगड़ते और लड़ते हुए सीढ़ियों के पास आ गए। उनमें से एक प्रतापकृष्ण था। शिव ने आवाज दे दी, “प्रताप !”

दोनों लड़ते-लड़ते सीढ़ियों में देखने लगे। लड़ाई बन्द हो गई। शिव ने पुनः कहा, “प्रताप चलो ! मैं तुमको बुलाने आया हूँ।”

“क्यों, किसलिए बुलाने आए हो ?”

“एक नये जुएखाने में ले चलने के लिए।”

“तो शिव, तुम भी जुआ खेलने लगे हो ?”

“हां, आओ।”

प्रताप नीचे न उतरता, यदि उसका साथी उसको सीढ़ियों में नीचे धकेलने के लिए उसकी गर्दन पकड़े न खड़ा होता। बैठक में कुछ लाग और भी थे परन्तु उनमें से कोई भी उसकी सहायता के लिए तैयार नहीं हुआ था। इसपर एक ने आवाज लगा दी—“सूम जाए !”

प्रताप नीचे उतर आया शिव ने उसके कंधे पर हाथ रखकर पूछ लिया, “प्रताप, कितना रुपया तुम्हें इसको देना है ?”

“कुछ नहीं दादा, यह रुपयों के लिए नहीं लड़ रहा था। यह तो नसीम के कारण लड़ाई थी। वह इस धनी बाप के बेटे पर भी मुझको तरजीह देती है।”

“पक्की बात करते हो ?”

“हां दादा, अगर मैं दो दिन यहां न आऊं तो मुझको अपना नौकर भेजकर बुला लेती है।”

शिवकुमार को इस कथन पर उतना ही विश्वास आया जितना किसी भी मद्यसेवी और जुआरी पर आ सकता था। इसपर भी शिव ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुस्कराते हुए, प्रताप से पूछ लिया, “मा नूम होता है वह तुमसे प्रेम करती है ?”

“जल्द करती होगी।”

“अच्छा देखेंगे, एक दिन। अब तुम मेरे साथ चलो, कुछ काम है तुमसे।”

“क्या काम है?”

“कुछ तुम्हारे लाभ की बात विचार रहा हूँ।”

“क्या बात है, बताओ न।”

“यहां बाजार में ही? नहीं। चलो मेरे घर। तुम, विष्णी, यमुना, गंगा, गोदावरी—सब चलो।”

“क्या है? लड़के की सगाई करने वाले हो?”

“नहीं भाई, सगाई-वगाई कुछ नहीं। वैसे ही कुछ आय की बात है।”

“परन्तु मैंने तो कसम खाई है कि तुम्हारे लाला जी के मकान पर नहीं जाऊंगा।”

“मकान पर नहीं चल रहे, तुम लोग मेरी दुकान पर चलोगे।”

२

विष्णुदेवी ने अपने पिता के समक्ष उपस्थित हो, कह दिया, “मैं अपने पति के साथ रहने में धर्म समझती हूँ। मैं यह भी जानती हूँ कि वे मद्य-सेवन करते हैं और जुआ खेलते हैं। कदाचित् वेश्यागमन भी करते हैं, परन्तु मैं उनके इन कर्मों की भागीदार नहीं हूँ। मैं यथाशक्ति उनकी और अपनी लड़कियों की सेवा कर देती हूँ। यह मेरा धर्म है और मैं इसको पूर्ण करने का यत्न करती रहती हूँ।”

“ठीक है विष्णी।” उसके पिता ने कहा, “मैं तुमको उसे त्यागने के लिए नहीं कह रहा। मैं तो यह कह रहा हूँ कि उसका चरित्र सुधरेगा तो उसका स्वास्थ्य भी सुधरेगा और तुम्हारा सुहाग चिरकाल तक बना रहेगा। वर्तमान अवस्था में तो वह दो-तीन वर्ष से अधिक जीवित रह नहीं सकता। क्या तुम अपने सुहाग की भी चिन्ता नहीं करती?”

“करती हूँ। मैं उनको अपने वर्तमान व्यवहार को बदलने के लिए भी कहती हूँ और जब देखती हूँ कि मेरे कहने का प्रभाव नहीं होता तो भगवान से विनती करती हूँ कि उनको सम्मार्ग दिखाए। बस यही तो मेरी सामर्थ्य की सीमा है।”

“इसमें कुछ हमको भी यत्न करने दो। हम तुम्हारी सामर्थ्य को अधिक करना चाहते हैं।”

“आप करिए।”

“तुम हमारे इस कार्य में सहयोग दो तो।”

“मैं उनसे लड़ नहीं सकती। मैं उनको त्याग भी नहीं सकती। इसके अतिरिक्त जो एक पत्नी के धर्म के विपरीत नहीं, वह मुझको बताइए। मैं यथाशक्ति करूंगी।”

“एक तो घर में पौष्टिक तथा स्वादिष्ट भोजन बने। दूसरे, तुम स्वच्छ और सुन्दर वस्त्र पहनो। तीसरे, लड़कियों को स्कूल में भेज, पढ़ने का अवसर दो। चौथे, घर को सुख-सुविधा का स्थान बनाओ। इसके लिए शिव तुमको साधन देगा। परन्तु तुम नकद उसको कुछ नहीं देना। जो वह तुमको दे, उसको सावधानी से रखना। व्यर्थ कुछ न जाए। शेष हम स्वयं प्रताप से निपट लेगे।”

“कठिनाई तो यह है कि जब मेरे हाथ में वे रुपये देखेंगे और वे जुग के लिए अथवा अन्य व्यसनों के लिए मांगेंगे तो मैं इन्कार नहीं कर सकूंगी। यह मेरी प्रकृति में नहीं।”

“तुम्हारे हाथ में कुछ होगा ही नहीं। तुम चिन्ता मत करो। तुम आज से सीने-परोने का काम छोड़, गृहस्थी को सुखकारक बनाने का यत्न करो। दोनों लड़कियों को स्कूल में भरती करवा दो।”

“तो खर्चा कैसे चलेगा?”

“यह तुमको चिन्ता नहीं करनी चाहिए। शिव इसका प्रबन्ध करेगा।”

“मैं आपसे मांग नहीं रही। मैं इनसे अपना अधिकार नहीं मांगती।”

“पर मेरे दिए को लेने से इन्कार कैसे कर सकती हो! तुम मेरा अधिकार, कि मैं अपनी सन्तान को जो उचित समझू, दू, छीन क्यों रही हो?”

विष्णुदेवी को पिता जी के कथन में कुछ भी आपत्तिजनक नहीं दीखा। वस्तुतः उसपर अपनी इच्छानुसार व्यवहार रखने में किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं था। वह चुप रही।

उसको समझा सुलक्षणमल ने उसे मां के पास भेज दिया। कर्मदेवी

ने अपनी लड़की को पहनने योग्य वस्त्र दिए। लड़कियों को भी नवीन वस्त्र पहना दिए, और उनको अपने ही घर में कुछ दिन रहने का निमंत्रण दे दिया।

दूसरी ओर शिव प्रताप को बता रहा था, “देखो प्रताप, जुआ खेलना एक अनिश्चित लाभ का कार्य है। इसमें कभी भारी लाभ भी हो जाता है। यह एक बहुत बड़ा प्रलोभन भी होता है। इसको छोड़ा नहीं जा सकता।

“परन्तु इस अनिश्चय के आधार पर यदि कुछ निश्चित न हो तो इसका परिणाम यही होता है जो तुम अपने में देख रहे हो। पिछले पांच वर्ष में तुम आधे रह गए हो। इस अट्टाईस वर्ष की आयु में तुम्हारे बाल पकने लगे हैं और मुख पर झुर्रियाँ पड़ने लगी हैं।”

“परन्तु भैया निश्चित आधार क्या हो सकता है?”

“आय का निश्चित आधार है परिश्रम। कुछ घंटे नित्य ऐसा काम करो, जिसका फल उममें लगाए परिश्रम और परिश्रम में प्रयोग की हुई बुद्धि के अनुसार हो। परिश्रम एवं बुद्धि तो अपने हैं। इस कारण उससे उपलब्ध आय भी अपनी और निश्चित है। नित्य ऐसी आय कमा करो। फिर उममें मे कुछ के साथ अपने भाग्य की परीक्षा जुएदाने में लिया करो।

“परन्तु जुएखाने के कुछ नियम हैं। यदि उनका पालन करोगे तो उस मूर्ख से धक्के खा-खाकर जुएखाने से कभी निकल नहीं जाओगे।”

“क्या नियम है?”

“उधार लेकर जुआ मत खेलो। अपने धन से जुआ खेलो। दूसरे के पैसों से मत खेलो। यदि अपनी जेब में पजी समाप्त हो जाए तो फिर खेलना बन्द कर दो। जब जीतकर आओ तो एक निश्चित राशि से अधिक जेब में मत रखो। शेष को ऐसे कोष में जमा कर दो, जिसमें से अपने सुख-सुविधा के लिए ही निकाल सको।”

“इसमें मैं तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ। मैं दो प्रकार से यह सहायता कर सकता हूँ। एक तो प्रातः ठीक आठ बजे यहाँ आ जाया करो। दो-तीन घंटे दुकान पर काम किया करो। इससे तुम्हारी निश्चित आय हो जाएगी। तुम जुए में जीतो अथवा हारो, यह आय तुम्हारी

आधारभूत आय होगी जिसका सम्बन्ध हारने-जीतने से नहीं होगा, तुम्हारी बुद्धि एवं पिरश्रम से होगा।

“पारिश्रमिक तुमको नित्य मिल जाया करेगा और इतना लेकर तुम जुएखाने में चले जाया करो। जब इतना हार जाओ तो खेलना बन्द कर दिया करो। जिस दिन जीत जाओ उस दिन जीता हुआ रुपया मेरे पास जमा करा जाया करो। उसपर आठ आने सैकड़ा ब्याज दिया जाएगा और तुम्हारी लड़कियों के विवाहादि के समय वह धन दिया जाएगा। कभी तुम जुआ खेलते पकड़े गए अथवा नसीम ने तुमको किसी भगड़े के कारण पकड़वा दिया तो तुम्हारे मुकदमे पर व्यय किया जाएगा।”

“नसीम भगड़ा नहीं करेगी। मुझको विश्वास है।”

“तो उस अवस्था में कुछ व्यय नहीं होगा। फिर भी तुमको विश्वास होना क्या उचित नहीं कि यदि किसीसे उलझ गए तो तुम बेयारो-मददगार नहीं रहोगे?”

“अच्छा, तीन-चार घंटा प्रतिदिन काम करने से क्या मिल जाया करेगा?”

“वह निर्भर है तुम्हारे काम पर। जितना चित्त लगाकर काम करोगे उतना अधिक तुमको मिल जाएगा। देखो प्रताप जी! हमारे यहां बीस-पच्चीस कर्मचारी हैं। मैं भी एक कर्मचारी हूं। कर्मचारी आठ आना नित्य से लेकर दस रुपये नित्य तक प्राप्त करते हैं। मैं दस रुपये नित्य लेता हूं।”

“यह तो कुछ भी न हुआ। इतना तो जब मैं जीतता हूं तो शराब पिलाने वाले को टिप (बख्शीश) दे देता हूं।”

“पर देखो प्रताप, जुए में जीती राशि में से वह कर सकते हो। वह फोकट की आय है। उसमें से दस से भी अधिक बख्शीश दी जा सकती है। मगर मेहनत-मजदूरी के दस रुपये का मूल्य तो जुए में जीते हजार रुपये से भी अधिक होता है। इसमें अपना खून और पसीना होता है।”

वास्तव में प्रतापकृष्ण को इस समय दस रुपये की अति आवश्यकता थी। वह अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा नसीम की बैठक में पुनः प्राप्त करने की अभिलाषा रखता था। इससे वह पूछने लगा, “और मजदूरी नित्य

की नित्य मिलेगी ?”

“हां। तीन घंटे काम करोगे तो मजदूरी मिल जाएगी।”

“तो भैया ! काम बताओ। अब बारह बजे हैं। मैं सायंकाल से पूर्व उस बेईमान के बच्चे जग्गू को यह बताना चाहता हूं कि नसीम उसकी कुछ भी परवाह नहीं करती।”

“इधर आओ।” शिवकुमार उसको दुकान पर ले गया। उसको एक स्थान पर बैठा दिया और पिछले वर्ष की वही उसके समक्ष रखकर कहने लगा, “देखो प्रताप, इसमें हमें कुछ से रुपये लेने हैं। कुछ को देना है। तुम लेन-देन का पृथक्-पृथक् चिट्ठा तैयार कर दो। जब तक तुम ये चिट्ठा तैयार कर दोगे तब एक दूसरा काम है वह बता दूंगा। अभी तुम खाली कागज पर ही बनाओ। जब मैं देख लूंगा कि ठीक बन गया है तो फिर नई वही में लिखने के लिए कह दूंगा।

तीसरे पहर शिवकुमार उसको चाय के लिए पुनः दुकान के ऊपर घर पर ले गया। वहां उसको विष्णुदेवी और अपनी लड़कियों के साथ बैठ, चाय पीने के लिए कहा गया। अल्पाहार लेते समय प्रताप ने अपनी स्त्री तथा बच्चों को नवीन रेशमी वस्त्रों में देखा तो पूछने लगा, “ये कहां से पा गई हो ?”

“मां जी ने दिए हैं।”

“किस निमित्त ?”

“लड़कियों की नानी होने के निमित्त। उन्होंने इनको फटे-मैले कपड़ों में देखा तो पहना दिए हैं।”

“तुम जानो, तुम्हारा काम जाने।”

प्रतापकृष्ण को अल्पाहार में एक दिल्ली के सेठ के घर में बनी नमकीन दाल, भुजिया, फलों की चाट और उसके साथ लौंग-इलायची से बनी चाय मिली। ये वस्तुएं उसको कई वर्षों के उपरान्त प्राप्त हुई थीं। जब से उसकी पत्नी को अपने तथा बच्चों के लिए मेहनत-मजदूरी करनी पड़ी थी, वह सूखी रोटी-दाल बनती देख घर पर खाना-पीना छोड़ बैठा था। बाज़ार से जैसी रोटी और साग-भाजी मिलती थी, उसीसे निर्वाह करता था।

आज उसको घर का खाना-पीना बहुत स्वादिष्ट प्रतीत हुआ।

इसपर विष्णुदेवी ने कह दिया, “मां जी कुछ दिन यहां रहने के लिए कह रही हैं।”

“तो रह जाओ।”

“आप भी यहां रहोगे तो रहूंगी।”

“मुझको रात को बहुत देरी हो जाती है।”

“आपको कुछ जल्दी आ जाना चाहिए। साथ ही मद्य-सेवन कर यहां आना ठीक नहीं होगा।”

“इसीसे तो कहता हूं कि मैं यहां नहीं आऊंगा।”

“तो मैं भी यहां नहीं रहूंगी।”

“क्यों?”

“केवल इसलिए कि माता-पिता ने मेरा हाथ आपके हाथ में पकड़ाया था। अब तो आपके हाथ में ही रहेगा। इससे हम दो घरों में कैसे रह सकते हैं?”

प्रतापकृष्ण को समझ रखी फलों की चाट का स्वाद अनुभव हो रहा था। यह उसको कई वर्षों के पश्चात् खाने को मिली थी। इससे कुछ विचारकर उसने कहा, “अच्छा, यदि शिव मुझको कहेगा तो मैं रान सोने के लिए यहां आ जाऊंगा।”

“भैया कह देंगे। जब तक हाथ तय है यहां आ ही जाना चाहिए। हां, मद्य बाजार में ही पीकर मत आइएगा।”

“क्यों?”

“रात को मकान के बाहर चौकीदार बठा रहता है। वह आपको देखेगा तो क्या कहेगा!”

“क्या कहेगा?”

“यही कि इतने बड़े बाप के बेटे और सेठ के दामाद गली की नालियों में गिर-गिर पड़ते हैं।”

“पर मुझको तो उसके बिना नींद नहीं आती।”

“आप घर पर ला रखिए।”

“तो अब तुम घर पर पीने को दोगी?”

“हां, मां जी ने समझाया है घर पर दिया कम।”

“तो अब लड़कियों पर उस पीने का प्रभाव नहीं होगा?”

“वे पृथक् कमरे में सोया करगी। शिव भैया के वच्चे हैं। ये सब इकट्ठे सोएंगी। एक बात और है। यमुना और गंगा स्कूल में भरती होंगी।”

“बात यह है विष्णी, कि मैं पिता जी से लड़कर गया था। पांच वर्ष से अधिक हो गए हैं। अब उनके घर रहने में मुझे लज्जा आती है।”

“तो ऐसा करिए, आप चुप रहिए। पिता जी तो कदाचित् भूल गए हैं कि क्या भगड़ा था और कब था। आपको शिव भैया यहां रहने के लिए यह दें तो कह दीजिए कि मुझको राजी कर लें। शेष मैं सब ठीक कर दूंगी।”

३

प्रतापकृष्ण तो संभला नहीं। हां, विष्णुदेवी तथा उसके बच्चों का भविष्य अवश्य सुधर गया था। जब प्रताप को शिव ने अपने घर में निवास करने का निमंत्रण दे दिया तो प्रतापकृष्ण मान भी गया। परन्तु वह अपने इस निश्चय पर स्थिर नहीं रह सका।

पहले ही दिन जब वह नसीम की बैठक पर पहुंचा तो वहां पर एकत्रित जुआरी उसको नित्य से अधिक प्रसन्न देख समझ गए कि आज फिर वह अपनी स्त्री का कोई आभूषण लेकर खेलने आया है। “आओ प्रताप ! कुछ है जेब में ?”

“प्रताप की जेब में दस रुपये थे। ये शिवकुमार ने उसे दिए थे। वह बैठ गया। जग्गू ने उसके सम्मुख ताश रख दी। “फेंट दो” जग्गू ने कहा।

प्रताप ने ताश फेंटते हुए कहा, “नई मंगवाओ। इस गंदी ताश से मैं नहीं खेलूंगा।”

“ओह ! बहुत कुछ लेकर आए हो जेब में !”

“कुछ भी हो। मैं इससे नहीं खेलूंगा।” जग्गू ने बैठक के नौकर करीम की ओर देखकर कहा, “लाओ भाई, नई ताश ला दो।”

“आठ आने दाम।” करीम का प्रश्न था।

“प्रताप देगा।”

“नहीं। तुम जीते हुए हो। दाम तुम दोगे।”

“अच्छा, जो जीतेगा वह देगा। क्यों करीम ! ठीक है न ?”

करीम ने ताश की नई डिब्बी आलमारी में से निकालकर सामने फेंक दी। ताश के पैकेट को प्रताप ने खोला। पत्तों को फेंटा और जगू ने पत्ते बांटे। खेलने वाले चार आदमी थे। पत्ते बांटे तो प्रताप ने दस रुपये का नोट, जो वह शिवकुमार के पास से लेकर आया था, बाजी पर लगा दिया। सबने दस-दस रुपये बाजी पर लगा दिए। प्रताप के दस के चालीस हो गए।

अब बांटने की बारी प्रताप की थी। फेंटने की बारी जगू की थी। प्रताप ने चालीस के चालीस बाजी पर लगाए। सबने भी उतने निकालकर रख दिए। इस बार पुनः प्रताप जीता। अब उसकी जेब में एक सौ साठ रुपये थे। तीसरी बार उसने एक सौ साठ की बाजी लगानी चाही। बुद्धू भैया उठ गए। उसकी जेब में इतना धन नहीं था। उसने कहा भी, “प्रताप बाबू उधार दें तो मैं खेल सकता हूँ।”

प्रताप ने कहा, “बुद्धू भैया ! तुम एक तरफ हट जाओ। आज तो मेरी बाजी जगू से लगेगी।”

इसपर अन्य दोनों हट गए। अब प्रताप और जगू में चलने लगी। तीन बार के खेल में जगू खाली जेब हो गया। आज कई मासों के पश्चात् उसकी जेब में बारह सौ से ऊपर रुपया था। जगू ने कहा, “अभी उधार दे दो तो मैं और खेलूंगा।”

“नहीं ओ जगू ! मुबह मैं तुमसे पांच रुपये मांग रहा था। तुमने गर्दन से पकड़ सीढ़ियों के नीचे धकेलने का यत्न किया था। अब मैंने फैसला किया हुआ है कि जुएखाने में न तो उधार लूंगा न दूंगा।”

“अच्छा, नसीम को आने दो। फिर खेलूंगा।”

“हां, तुम नसीम की प्रतीक्षा करो, मैं तो चलता हूँ।”

प्रताप ने नसीम के नौकर को कमीशन के एक सौ रुपये दिए और शेष रुपया बटोरकर चला गया।

आज उमने एक सौ रुपया मद्य पर व्यय किया। एकेशा नं० १ की तीन बोतलें खरीद घर पर जा पहुंचा। सेठ सुलक्षणमल के घर में बैठकर पी जाने लगी। अगले दिन प्रताप ने शिवकुमार को पिछली रात की जीत की कहानी बताई तो शिवकुमार ने वह जीत का सब रुपया ले लिया

और उसको काम पर लगा दिया। आज भी उसको कार्य का पारिश्रमिक दस रुपये दे दिया। इस दिन भी प्रताप जीतकर आया और उसने सब रुपये शिव के पास जमा करा दिए। यही बात कई दिन तक चलती रही। नसीम तक प्रताप के जीतने की खबर पहुंची तो वह एक दिन उस समय ही बैठक में आ पहुंची और प्रताप को जीत का रुपया ले भागते हुए पकड़ बैठी, “क्यों जी लाला ! अब पांचों घी में हैं तो हमको भूल ही गए हो ?”

“नहीं बाई जी ! आपको कैसे भूल सकता हूं !”

“तो कहां भागे जा रहे हो ?”

“घर को ?”

“आज यहां ही ठहर जाओ न ?”

“बात यह है कि यह नीचे की ढाबे की रोटियां खाने-खाने ऊब गया था। इसलिए घर पर खाना-पीना होने लगा है।”

“पीना भी ?”

“हां बाई जी। यमुना की मां भर-भरकर पिलाने लगी है।”

“ओह ! तभी तो कहती हूं, भूल गए हो वे दिन, जब मेरी मुहब्बत में दीवाने बने रहते थे !”

“भूला तो नहीं। हां, जिस दिन धक्के दे-देकर यहां से निकाला गया था, उस दिन से तनिक सचेत और सतर्क हो गया हूं।”

“किसने धक्के दिए थे ?”

“जगू ने—और करीम के देखते-देखते।”

“तो लाला जी। उस दिन बताना था। कब की बात है ?”

“आज पन्द्रह दिन के लगभग हुए हैं। कहना था जिसके पास पैसा है, नसीम उसकी है और उसका मकान भी उसीका है।”

“वह बिल्कुल मूर्ख है। पैसा तो चाहिए ही, मगर पैसे के अलावा इन्सान भी चाहिए। तुमने मुझको बताया होता तो मैंने उसको उसी दिन कान पकड़कर उसकी बीवी के पास भेज दिया होता। कैसे-कैसे गन्दे लोग यहां आते हैं !”

बस, तीन मास की बिगड़ी दो मीठी-मीठी बातों से बन गई। शिवकुमार से दिए गए दस रुपये प्रताप ने पृथक् अपनी जेब में रख हुए

थे। उसके मन में विश्वास बैठ गया था कि वे रुपये बरकत वाले हैं और उन दस रुपयों को खर्च कर देने से डरता था। इससे उनको वह जीते हुए धन से पृथक् रखता था।

उस रात प्रताप बैठक की ऊपरी मंज़िल पर नसीम के पास रहा। उसने जो छः सौ रुपयों के लगभग जीता था, सब व्यय कर दिया। रात बहुत आनन्द से व्यतीत हुई। अगले दिन उसको शिवकुमार के घर जाने में संकोच होने लगा। वह फिर वहां नहीं गया।

कई दिनों तक विष्णुदेव और शिवकुमार उसकी प्रतीक्षा करते रहे। एक दिन शिवकुमार उसको खोजता हुआ नसीम की बैठक पर जा पहुंचा। वहां कुछ लोग बैठे मिले, परन्तु प्रताप न मिला। शिवकुमार ने पूछा तो सब बैठक के नौकर करीम का मुख देखने लगे। करीम ने कह दिया, “साहब ! प्रतापकृष्ण को यहां आए आज दस दिन हो गए हैं।”

“तो कहां होगा वह ?”

“सुदा जाने।”

शिवकुमार जब सीढ़ियां उतर रहा था तो उसने ऊपर बैठक पर बैठे हुआ को ठहाका मारकर अट्टहास करते सुना। वह सीढ़ियों में ठहर गया। परन्तु एकाएक सबकी हंसी रुक गई और शान्ति छा गई। करीम सीढ़ियों के ऊपर भांक रहा था। शिवकुमार भी हंसी की आवाज़ सुन, ठहर गया था और ऊपर को देखने लगा था। करीम ने आवाज़ दे दी, “लाला जी ! प्रताप को ढूढ़ना हो तो बानों की बैठक पर जाइए। किसीने उसको वहां पर देखा है।”

“वह किधर है ?” शिवकुमार ने पूछा।

“चावड़ी बाज़ार के जामा मस्जिद वाले कोने पर दो बैठक छोड़कर।” शिवकुमार को इन रंडियों का अनुभव नहीं था। इसपर भी बहिन का विचार कर वह पूछता-पूछता वहां पहुंचा। वहां बानों नाचने के लिए पांवों में पायल बांध, तैयार खड़ी मिली। वहां वह बैठ गया। बानों ने समझा कि कोई नया शिकार आया है। अतः उत्साह से नृत्य आरम्भ कर दिया। जब सब बख्शीश देने लगे तो शिव ने भी एक दस का नोट निकालकर मैदान में फेंक दिया। बानों ने देखा तो कह दिया, “बस !”

शिवकुमार ने मुस्करा दिया। पान-मुपारी बितरण करने वाले से

वह पृच्छने लगा, “मैं एक प्रतापकृष्ण की खोज में आया हूँ।”

“कितनी आयु है उसकी ?”

“पचीस-तीस वर्ष की होनी चाहिए।”

“ओह ! मैंने समझा कि कोई नादानिग है। लाला, उसकी घर पर प्रतीक्षा करिए, उसको घर का रास्ता तो आता होगा।”

लज्जित हो शिवकुमार घर लौट आया। छः मास व्यतीत हो गए। प्रताप घर नहीं लौटा। इस दुर्घटना से विष्णुदेवी बहुत शोकांतर रहती थी। उसका विचार था कि उसके भाई की योजना से ही वह भाग गया। एक दिन उसने अपने पिता से कह दिया, “आपकी योजना से तो मैं जो कुछ थी, वह भी नहीं रही।”

मेठ मुलक्षणमल भी इस बात को अनुभव करता था। उसने कहा, “हमारा विचार था कि वह इस प्रकार धीरे-धीरे सुधर जाएगा। परन्तु हमारा विचार गलत निकला। ऐसा प्रतीत होता है कि उसके पूर्वजन्म के कर्म अति प्रबल सिद्ध हुए हैं।”

“कुछ भी हो। यदि आप कहें तो मैं अपने घर चली जाऊँ।”

“क्या करोगी वहाँ जाकर ?”

“उनके आने की प्रतीक्षा करूंगी।”

“और लड़कियाँ ?”

“यदि शिव भैया मानें तो यमुना और गंगा यही रहेंगी। उनकी नङ्गी के साथ रहेंगी। गोदावरी को मैं अपने माथ ले जाऊँगी।”

“और फिर कुर्ते सीया करोगी ?”

“हां। पेट तो भरना ही होगा।”

“नहीं। मेरा कहा मानो। तुम उस घर में जाओ। उसको शिव सब सुखद सामान से सुसज्जित करा देगा। शिव तुम्हारे भोजन-वस्त्र की भी व्यवस्था कर देगा। कुछ रुपया तुम्हारे अन्य व्ययों के हेतु तुमको मास की प्रथम तिथि को दे आया करेगा।”

“और मैं खाली बैठकर क्या किया करूंगी ?”

“रामायण का अध्ययन करो। भगवद्भजन किया करो और घर को उसके स्वागत के लिए तैयार रखो।”

विष्णुदेवी छः मास अपने पिता और भाई के घर रहकर पुनः अपने

पति के मकान में चली गई। मरम्मत, सफेदी, रंग-रोगन और नये फरनी-चर से मकान को ठीक रहने योग्य बनवा दिया गया।

विष्णुदेवी अब वहां रहने लगी। अपने पति की अनुपस्थिति में उसने निर्णय कर लिया था कि वह साध्वियों का सा जीवन व्यतीत किया करेगी। घर में तो पलंग, दरी-कालीन बिछे थे। विड़कियों और दरवाजों पर पर्दे टंग गए थे। भोजन के लिए प्रत्येक प्रकार के स्वादिष्ट एवं पौष्टिक पदार्थ आ गए थे। परन्तु वह श्वेत परिधान में अनलंकृत एवं भूषणों से रहित रहती थी। उसके सोने के कमरे में भूमि पर चटाई बिछी थी। बच्ची गोदावरी के लिए एक खटोला रहता था। वह नमकीन दलिया और शाक-भाजी पर निर्वाह करती थी।

शिवकुमार अथवा दुकान के वृद्ध मुनीम दूसरे-तीसरे दिन आकर समाचार ले जाया करते थे। इस प्रकार के जीवन के भी छः मास से ऊपर व्यतीत हो गए थे।

तब तक यह विदित हो चुका था कि वह वहीं नसीम की बैठक पर उसके साथ रहता है। इतना विष्णुदेवी को बता दिया गया था। इसपर भी वह उसको छोड़ने के लिए मन को तैयार नहीं कर सकी।

४

जब तक शिवकुमार का दस का नोट सुरक्षित रहा, वह निरन्तर जीतता रहा। यह क्रम सात-आठ मास तक चला। नसीम उसे एक भाग्यशाली खिलाड़ी समझ, अपने पास रखे हुए थी। इन आठ मासों में नसीम ने पचास हजार के लगभग प्रतापकृष्ण का जीता हुआ रुपया प्राप्त किया था। एक वेश्या के घर का व्यय भी असीम था। रुपया पानी की भांति आता था तथा पानी की ही भांति बह जाता था।

इस काल में नसीम तथा प्रताप इकट्ठे ही रहते थे। भाग्य की गति एक समान नहीं रहती। अच्छे दिनों के उपरान्त बुरे दिन भी आ जाते हैं। एक दिन शराब के नशे में वह शिवकुमार वाला दस का नोट खर्च बैठा। शराब के नशे में उसने शराब पिलाने वाली बांदी को वह बख्शीश में दे दिया था।

भाग्य का पांसा अगले दिन से बदला। पहले तो कभी जीत कभी

हार होने लगी। धीरे-धीरे हार अधिक और जीत कम और अन्त में हार ही रह गई।

ऐसा चलते हुए भी चार मास से ऊपर व्यतीत हो गए। नसीम का व्यय उसी स्तर पर चल रहा था जिस स्तर पर जीत के दिनों में था और जब निरन्तर हार होने लगी तो नसीम ने समझा कि प्रताप का सितारा मन्द गति में चला गया है। वह अब किसी उच्च गति पर चलने वाले मितारे की खोज करने लगी।

आखिर वह मिला। एक दिल्ली के रईम घामीराम लोहिया का लड़का किशोरचन्द जुए की बैठक पर पहुँचा। उसको ऊपर की मंजिल पर ले जाने में कुछ भी कठिनाई न हुई।

नसीम को अभी भी यह आशा थी कि प्रताप का मितारा उच्च स्तर पर आ सकता है। इस कारण वह दोनों में सम्बन्ध बनाए हुई थी। किशोरचन्द लोहिया में दो विशेषताएँ थी। एक तो वह जीते या हारे, नसीम के लिए भेंट मँदव उसकी जेब में रहती थी। दूसरा यह कि वह मद्य को छूता तक नहीं था। इससे वह समझती थी कि यह आदमी लूटा नहीं जा सकता। प्रतापकृष्ण तो शराब में बदमस्त हो सब कुछ नसीम के हाथ में दे देता था।

एक दिन नसीम ने किशोर के मन की भावना को जानने के लिए कह दिया, “किशोर जी ! आप प्रताप को जानते हैं ?”

“हां, देखा है। वही जो आपके लिए सुपारी कनरा करता है और पान लगाया करता है।”

“वास्तव में वह मेरा प्रेमी है।”

“सत्य ?”

“हां।”

“पर मैंने तो सुन रखा है कि आपकी जात वालियों का प्रेम धन से होता है, किसी व्यक्ति से नहीं।”

“आप तो बहुत समझदार हैं। इसपर भी मैं आपको बताना चाहती हूँ कि प्रताप ने मेरे पास पचास हजार जमा करा रखा है, जिसको मैंने ब्याज पर चढ़ाया हुआ है। उससे पाँच सौ रुपया महीना मुझको ब्याज आता है।”

“यह तो बहुत अच्छी बात है।”

“मैं यह कह रही हूँ कि आपमें कुछ अधिक की आशा रखती हूँ।”

“कितना अधिक?”

“जिमसे मैं प्रताप को छुट्टी देकर पूर्णरूपेण आपके आश्रय रह सकूँ।”

“और मुझसे अधिक कोई देने वाला आ गया तो मुझको छुट्टी दे सको?”

“आप इतना कुछ दीजिए कि उसमें अधिक देने वाला कोई आ ही न सके।”

“मेरे पास तो पचास हजार है ही नहीं। हाँ, मैं एक लाख के व्याज के बराबर प्रतिमा दे सकता हूँ।”

“अर्थात् एक हजार रुपया महीना?”

“हाँ।”

“परन्तु विद्वान् कैसे आएगा कि आप मुझको ये देना बन्द नहीं कर देंगे। मैं वदा जवान तो रह नहीं सकती।”

“मैं समझता हूँ कि एक हजार में तो तुमको बुढ़ापे के लिए बचा रखने के लिए भी समझना चाहिए। जिस वावू का वेतन एक हजार रुपया हो, उसमें पाम तो बूढ़ा होने तक एक लाख की सम्पत्ति एकत्रित हो जाती है।” नसीम के पाम उस बात का उत्तर नहीं था। परन्तु जिस दिन किशोर ने नसीम को एक हजार दिया उस दिन ही उसने प्रताप को वहाँ से निकाल देने का आग्रह कर दिया।

एक दिन प्रताप को तेज शराब पिला, अचेत कर, बैठक के नीचे नाली में डाल दिया गया। नसीम के नेवक ही इसमें उसके सहायक हो गए।

दो घंटे वहाँ पड़े रहने पर उसको कुछ चेतना आई तो वह उठा और स्मरण करने लगा कि क्या हो गया है। ज्योंही उसको समझ आया कि वह नाले में पड़ा है, वह आत्मम्लानि में गलने लगा। वह उठा और नाली में से बाहर निकला परन्तु सड़क पर चक्कर खाकर गिर पड़ा।

इस समय उसको अपनी पत्नी और बच्चों की याद आई। उसको विश्वास नहीं आता था कि इस अवस्था में और उस व्यवहार के पश्चात् जो उसने पत्नी के साथ किया था, वह उसे, वापस जाने पर स्वीकार

करेगी।

उसको यह विदित हो चुका था कि उसकी पत्नी पुनः उसके घर में आकर रहने लगी है। इससे वह अपनी पत्नी की परीक्षा के लिए मकान के नीचे जा पहुँचा और दरवाजा खटखटाने लगा। आशा के विपरीत उसकी पत्नी उसको आश्रय दे ऊपर ले गई। उसके लिए पानी गरम किया। स्नान कराया और खाने को दिया। पश्चात् सोने के लिए पलंग दिया। इतने पर भी उसने उसके पलंग का भागीदार बनना स्वीकार नहीं किया।

इस सब अप्रत्याशित व्यवहार पर विचार करते हुए रात-भर उसको नींद नहीं आई।

प्रतापकृष्ण ने रात कई बार उठकर देखा, उसकी पत्नी चटाई पर गहरी नींद सो रही है। अर्थात् उसको भूमि पर लेटने का भी किसी प्रकार कष्ट नहीं हो रहा। वह अपने विषय में भी विचार करता। उसको कोमल गद्देदार पलंग पर भी नींद नहीं आ रही थी। वह समझ रहा था कि वह उससे अधिक सुखी प्रतीत होती है। क्यों? वह समझ नहीं रहा था।

दिन चढ़ने तक उसको नींद नहीं आई। विष्णुदेवी स्नान ने अवकाश पा, सूर्योदय में पूर्व उस पलंग के पास आई। वह जाग रहा था। विष्णी ने उसे लेटा देव सोया हुआ समझा, इससे उसने अपने पति के चरण बिना छूए, माथा टेक दिया। एक क्षण तक प्रणाम कर वह अपने कमरे में चली गई और पूजा में लीन हो गई।

प्रताप को इनके पश्चात् कुछ काल के लिए एक झपकी लग गई। वह जागा तो दिन के आठ बज चुके थे। वह शीघ्र आदि के लिए चला गया। वह लौटा तो उसके स्नान के लिए जल गरम किया जा चुका था। स्नान में निवृत्त हुआ तो प्रातः का अल्पाहार तैयार मिल गया। अल्पाहार करते समय उसकी पत्नी उसके सम्मुख बैठी थी। इस समय तक प्रताप-कृष्ण ने मकान की सफाई, मरम्मत और फर्नीचर सब देख लिया था। यह सब कुछ ऐसा और इतना था जितना कि उसकी सम्पन्नता के दिनों में भी उसे अप्राप्त था। भोजन-व्यवस्था भी सुखद थी।

प्रतापकृष्ण ने पूछ लिया, “यह सब तो बहुत सुन्दर है।”

“सब क्या ?”

“मकान, फरनीचर, और तुम तथा गोदावरी । तुम लोग अब हृष्ट-पुष्ट प्रतीत होती हो । यह सब कहा से आया है ?”

“भैया दे गए हैं ।”

“क्यों ?”

“वे भैया हैं—इस कारण ।”

“परन्तु तुम तो भूमि पर सोती हो । तो तुमका इसमें क्या लाभ हुआ है ?”

“यह सब आपके भोग के लिए है । विवाह के समय भी उन्होंने बहुत कुछ दिया था । उस समय तो मैं बालिका-मात्र थी । वह सब कुछ आपकी माता जी के पास था । उपरान्त आपन उसका भोग किया । अब पुनः यह सब कुछ दे गए हैं । और यह आपके लिए ही है ।”

“और तुम ?—मेरा अभिप्राय है कि तुम्हारे भाग के लिए कुछ नहीं ?”

“मैं तो केवल आपके द्वारा ही भोग कर सकती हूँ, जो कुछ और जितना आप मुझको भोग के लिए देगे वही मैं ले लगी ।”

“यह सब मैं नहीं समझ सका । तुम्हारे भाई ने दिया और तुम उसका प्रयोग नहीं करती ।”

“यह हमारी जात-बिरादरी की रीति है । लडकी के माता-पिता लडकी को और उसके साथ दत्त-दाज का उसके पति को देने हैं । वही उसको मुखी रखने का दायित्व अपने मिर लेता है ।”

“परन्तु मैं तो तुमको सुख दे नहीं सका ।”

“यह मेरे भाग्य के अनुसार ही है ।”

५

प्रतापकृष्ण को घर लौटते एक सप्ताह से अधिक हो गया । आरम्भ में उसको घर से निकलते लज्जा आती थी । अब धीरे-धीरे वह मञ्जी-भाजी लेने जाने लगा था । मोहल्ले वाले और बाजार में दुकानदार उसके घर में लौट आने को जान गए थे । वह घर की आवश्यक वस्तुएँ खरीदने बाजार जाने लगा था और उनको उठा-उठाकर घर लाता देखा जाता

था। इसपर भी किसीको उससे पछने का न तो साहम होता था और कदाचित् न इसकी आवश्यकता अनुभव होती थी।

एक दिन वह सब्जी खरीदकर तथा अपने लिए कपड़े मिलवाकर दर्जी से ला रहा था कि शिवकुमार बहिन के घर की ओर जाना दिखाई दिया।

“ओह प्रताप जी, किधर से आ रहे हैं ?”

“राम-राम भैया !” प्रताप तो आख वचाकर निकल जाना चाहता था। परन्तु शिवकुमार की दृष्टि में आ गया। अतः वह अब राम-राम करने पर विवश हो गया। शिवकुमार उसके घर आ जाने के विषय में पूछे बिना शेष प्रश्न कर दिया, “अब क्या कारोबार करने का विचार है ?”

“अभी तक निश्चय नहीं कर सका। मुझको तो कोई काम ऐसा दिखाई नहीं देता जिसको सहस्रों और लाखों पहले न कर रहे हों। किसी नये आदमी के लिए, किसी भी काम के लिए स्थान निकाल सकेगा—समझ में नहीं आता।”

शिवकुमार उसके साथ उसीके घर की ओर चल पड़ा। शिवकुमार ने कुछ विचारकर कहा, “मुझको एक काम सूझ रहा है, जिसमें बहुत कम लोग हैं।”

“क्या है वह ?”

“यह आप दुकान पर आइएंगा तो इस विषय में योजना बनाई जा सकती है।”

“कुछ दिन से मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहा। ज़रा ठीक हो जाऊं तो आऊंगा।”

“किसी वद्य-दकीम को दिखाया है ?”

“हां, एक वैद्य को दिखाया है। उसने बताया है कि कुछ दिन के लिए परिश्रम का काम न करो। इसीसे प्रायः घर पर पड़ा रहता हूं।”

“ठीक है। ईश्वर करे, आप शीघ्र स्वस्थ और मग्न हो जाएं। तब आ जाइएंगा। मैं आपके लिए और कुछ भी विचार करूंगा। एक बात और...”

“क्या ?”

इस समय वे प्रतापकृष्ण के मकान के नीचे पहुँच गए थे। प्रतापकृष्ण ऊपर चढ़ते-चढ़ते रुक गया। वह अपने प्रश्न का उत्तर वही मकान के नीचे ही ले लेना चाहता था। शिवकुमार ने मस्कराते हुए कह दिया, प्रतापकृष्ण “प्रताप जी, चलिए, उस विषय पर फिर बात करेंगे।”

एक दिन प्रताप ससुर की दुकान पर जा पहुँचा।

लाला जी ने देखा और उसको अपने पास बैठाते हुए पूछने लगे, “सुनाओ। स्वास्थ्य कैसा है?”

“ठीक है।”

“देखो। अब तुम तीस वर्ष की आयु से ऊपर हो चुके हो। तुम्हारी बड़ी लड़की यमुना एक-दो वर्ष में विवाह के योग्य होने जा रही है। अब तुमको अपने पाव पर खड़ा होने का यत्न करना चाहिए।”

“इसी अर्थ तो आया हूँ। भैया शिवकुमार ने कहा था कि वे ऐसा कोई काम बता सकते हैं जिसको समार में करने वाले बहुत कम हैं।”

“हा! वह बताएगा। तुम नित्य यहाँ ठीक आठ बजे आ जाया करो। शेष तुम हमपर छोड़ दो।”

प्रतापकृष्ण आने लगा। उसको काम यह बताया गया कि वह दुकान के कर्मचारियों पर जमादारी करे। बैंक से रुपया निकालने के लिए अथवा जमा कराने के लिए जाया करे। उसके साथ चौकीदार जाता था। इस काम के लिए उसको दो सौ रुपया मासिक मिलने लगा।

धीरे-धीरे उसको अधिक, और अधिक उत्तरदायित्व का काम दिया जाने लगा। एक वर्ष के भीतर उसके घर एक लड़का और हो गया। उसका नाम भूषण रखा गया।

भूषण के पश्चात् अन्य कोई सन्तान नहीं हुई। समय पाकर गंगा-यमुना और गोदावरी का विवाह हो गया। इन तीनों लड़कियों के विवाह के समय सुलक्षणमल ने भग्मक सहायता की। भूषण की शिक्षा-दीक्षा में भी उसके नाना का काफी सहयोग रहा। उसने एम० ए० किया तो हिन्दू कालेज में उसे प्रोफेसर की नौकरी मिल गई। इसके पश्चात् उसका विवाह हो गया।

राजेश्वरी बैरिस्टर रघुनाथसहाय त्रिवेदी की लड़की थी। वह भूषण के कॉलेज में ही पढ़ती थी। दोनों सेंट स्टीफन कॉलेज के विद्यार्थी थे।

जब भूषण ने एम० ए० किया तो राजेश्वरी ने बी० ए० पास किया था। दोनों का परस्पर प्रेम हुआ और विवाह हो गया।

विवाह के पश्चात् छः वर्ष व्यतीत हो चुके थे और उनके घर में एक लड़की तथा एक लड़का उत्पन्न हो चुके थे। इसी समय मुलक्षणमल का देहान्त हुआ।

६

रूपकृष्ण ने सरकारी अधिकारी द्वारा नीलाम की हुई भूमि खरीदी थी, एक हजार छः सौ रुपये में। उसने लाला गोवर्धनलाल के साथ जाकर सबजज के पास प्रार्थना-पत्र दे दिया कि उसे भूमि का पूरा दाम जमा करने की आज्ञा प्रदान की जाए।

इसपर दो माह के पश्चात् उसको आज्ञा हुई कि वह अमुक तिथि को हाज़िर होकर यहां बताए कि क्यों न उसके नाम की हुई बोली को मनसूख (रद्द) कर दिया जाए।

इस नोटिस को लेकर रूपकृष्ण लाला गोवर्धनलाल के घर चला गया। गोवर्धनलाल ने बताया, “ऐसा प्रतीत होता है कि किसीने उजर-दारी (आपत्ति) कर दी है।”

“क्या उजरदारी उठाई जा सकती है इसमें?”

“किसीने कहा होगा कि यह नीलाम नाजायज़ है।”

“तो इसकी सफाई देनेवाला मैं कौन हूँ?”

“तुमको लाभ होने वाला है!”

“यह तो मेरी करनी से होगा। सरकार की बात इसमें क्या है? मेरे लाभ को अथवा उसके तरीके को तो किसीने चुनौती दी नहीं। सरकार ने भूमि नीलाम का, किसीने उजरदारी की है कि नीलाम गलत है अथवा गलत हुई है। मैं पूछता हूँ कि मैं इसमें क्यों कचहरी की मिट्टी छानूँ?”

गोवर्धनलाल हंस पड़ा। हंसते हुए उसने कहा, “रूप बेटा! यह कानून है।”

“किस मूर्ख ने बनाया है यह कानून?”

इसपर तो गौरी, जो यह तर्क-वितर्क सुन रही थी, हंसने लगी।

जब दोनों गौरी का मुख देखने लगे तो उसने कह दिया, “आप यहां क्यों भगड़ रहे हैं। भगड़ा करना है तो सरकार के यहां करना चाहिए।”

गोवर्धनलाल को बात समझ में आ गई और उसने कहा, “तुम आज मेरे साथ सबजज के न्यायालय में चलो। वहां इस आज्ञा में कारण देखेंगे। जरा जल्दी चलना ; जज साहब के आने से पूर्व वहां पहुंचना चाहिए।”

सबजज के पेशकार रूप के ताया गोपालकुमार थे। इस कारण जब वे अदालत के कमरे में पहुंचे तो पेशकार गोपाल उस दिन उपस्थित होने वाले मुकदमों की सूची कमरे के बाहर लगाने के लिए तैयार कर रहे थे। पेशकार ने गोवर्धनलाल को देखा तो हाथ जोड़कर प्रणाम कर दिया। गोवर्धनलाल ने सुख-समाचार पूछ, रूपकृष्ण को मिला नोटिस दिखा दिया। पेशकार ने कहा, “मैं अभी फाइल मंगवा देता हूं। आप इस पिछले कमरे में बैठ देख लीजिए। गोवर्धनलाल रूपकृष्ण को लेकर उस कमरे में चला गया। पांच मिनट में चपरासी वह फाइल ले आया। गोवर्धनलाल ने फाइल देखी।

वह तबेला पांच सौ रुपये पर लाला बनवारीलाल के पास गिरी था। बनवारीलाल ने रुपये प्राप्त करने के लिए रुपये और ब्याज की नालिश की। एक वर्ष के मुकदमे के पश्चात् निर्णय बनवारीलाल के पक्ष में हुआ। बनवारीलाल ने तबेले की नीलामी करा दी। नीलामी में बनवारीलाल स्वयं सस्ते दाम पर खरीद लेना चाहता था। जो कोई भी उससे ऊंची बोली देने आता था, उसका नौकर पहलवान डरा-धमकाकर उसको भगा देता था। जब रूप ने यह कहा कि वह मकान बनवाकर सुमित्रा को भेंट करने वाला है तो बोली रूप के नाम समाप्त हो जाने दी गई।

परन्तु जब यह बात किशनो को पता चली कि रूप ने जुआ खेलना बन्द कर दिया है और वह बेकार घूमता है तो किशनो ने कहा कि उससे ज़मीन लिखा ली जाए, तब ही उसको मकान बनाने दिया जाए। उसको किसी भी जुआरी पर विश्वास नहीं है।

एक भेदिये को रूपकृष्ण के मन की बात जानने के लिए भेजा गया और उसे पता चला कि रूपकृष्ण ने तो मकानों का व्यापार करने के

लिए भूमि खरीदी है। इसपर वर्तमान उजरदारी ज़मीन के मालिक से करवा दी गई है।

उजरदारी थी यह कि बनवारीलाल ने और रूपकृष्ण ने परस्पर पड्यंत्र कर भूमि का मूल्य बढ़ने नहीं दिया और नीलामी पुनः की जाए। साथ ही ग्राहकों को बोली देने से मना करने वालों को नियंत्रण में रखने के लिए पर्याप्त पुलिस का प्रबन्ध किया जाए।

फाइल पढ़ गोवर्धनलाल ने उक्त विवेचना बता दी। उसका कथन था, “यह है पूर्ण उजरदारी का अभिप्राय।”

गोवर्धनलाल तो कचहरी में नित्य होने वाली बातों की जानकारी रखता था और उसकी उक्त विवेचना इस आधार पर बनी थी। रूपकृष्ण को यह बात ठीक ही प्रतीत हुई थी। वह जानता था कि बनवारीलाल को पता चल गया है कि वह मकान सुमित्रा के लिए नहीं प्रत्युत व्यापार करने के लिए मोल लिया जा रहा है।

परन्तु वह विचार करता था कि मालिक-ज़मीन का फैसला तो न्यायालय को करना चाहिए। इसमें उसको क्यों बुलाया जा रहा है। इससे कचहरी से लौटते हुए रूपकृष्ण ने पूछ लिया, “फूफा जी ! मुझको क्या करना चाहिए ?”

“तुमको निश्चित तिथि को पेश होकर कहना चाहिए—नीलामी ठीक कायदे-कानून के मुताबिक हुई है और उसमें न तो नीलाम करने वाले ने और न ही तुमने कोई अनियमित बात की है। इससे रुपया तुमको दाखिल करा ज़मीन तुम्हारे नाम दाखिल-खारिज करने का हुक्म सादर किया जाए।”

“पर फूफा जी ! यह बात तो अदालत को स्वयं करनी चाहिए। मैं क्यों करूँ ?”

“तो तुमको यह ज़मीन नहीं लेनी ?”

“लेनी है। परन्तु यदि उस विधवा को, जो इसकी मालकिन है, नये नीलाम से अधिक दाम मिल रहा है तो मैं क्यों उसको नुकसान पहुंचाऊँ ?”

गोवर्धनलाल की धर्मबुद्धि जाग पड़ी। न्यायालय के वातावरण ने उसके मन को विचलित कर दिया था। वह चुप कर रहा।

उस रात रूप ने अपने पिता से बात की। राम लड़के की बात सुन हंस पड़ा। रूप को इसी हंसी का अर्थ समझ नहीं आया। उसने पूछ लिया, 'पिता जी, इसमें हंसने की बात कहां से आई है?'

"तुम वकील नहीं हो। इसलिए मैं होता तो इस बुढ़िया पर डिफेंडेशन (अपमान) करने का दावा कर देता।

"इससे लाभ यह होता कि बुढ़िया को जब अदालत में रगड़ा चढ़ता तो बक जाती कि उसको बनवारीलाल ने बहकाया है और बनवारीलाल होता कठघरे में और मैं उसपर जिरह करता। एक बार तो अदालत को भी मजा आ जाता।"

रूपकृष्ण ने एक क्षण तक विचार किया और कह दिया, "नहीं पिता जी ! मैं यह नहीं करूंगा। मैं तो चाहता हूं कि नीलाम पुनः हो और उस विधवा को कुछ लाभ हो जाए।"

राम ने कंधों को झटककर असन्तोष प्रकट किया।

एक दिन रूप शिवकुमार की दुकान पर पहुंचकर एक चिट्ठी टाईप करने लगा।

शिव ने पूछा, "यह क्या है?"

"एक अदालती नोटिस का उत्तर दे रहा हूँ।"

"तो तुम भी अपने पिता की भांति यकान्त करने लगे हो?"

"नहीं ताया जी ! यह नहीं।" उसने पूर्ण कथा सुनाई तो शिव ने पूछ लिया, "भला सुनाओ तो क्या लिखा है?"

रूपकृष्ण ने चिट्ठी पढ़कर उसका अनुवाद शिवकुमार को सुना दिया। शिवकुमार अंग्रेजी नहीं जानता था।

रूप ने सुनाया, "श्रीमान सबजज की अदालत में। नोटिस संख्या ३६६, तारीख १३ जनवरी, १९३५ के जवाब में निवेदन है कि यह नोटिस भूल से मुझको आ गया है। हकीकत में यह उस क्लर्क को जाना चाहिए था जिसने नीलामी की थी अथवा यह नोटिस उस जज को जाना चाहिए था जिसके हुक्म से यह नीलामी हुई थी। साथ ही यह नोटिस उस पुलिस अधिकारी को जाना चाहिए था जो नीलाम की रक्षा के लिए खड़ा था।

"मेरे पास इस प्रकार की फिजूल जांच-पड़ताल में हिस्सा लेने के

वास्ते न तो समय है न ही रुपया । अदालत अपनी जिम्मेदारी मुझपर डाल रही है । मैं इसके खिलाफ प्रोटेस्ट (विरोध) करता हूँ ।

प्रार्थी—रूपकृष्ण

कटरा खुशहाल राय, किनारी बाज़ार, दिल्ली ।”

राम भी समीप बैठा अपने लड़के की अंग्रेज़ी की चिट्ठी लिखने की योग्यता को देख रहा था । वह पत्र सुनकर हंस पड़ा । शिवकुमार भी हंस पड़ा, परन्तु तुरन्त ही गम्भीर हो कहने लगा, “रूप ! यह तो अदालत से भगड़ा है ।”

“हां ।”

“इसमें तुम केवल प्रजा-मात्र हो । अदालत से भगड़ा कर तो हानि में रहोगे । है हिम्मत सरकार से लड़ने की ?”

“मैं समझता हूँ कि यह एक वस्तुस्थिति का वर्णन है । यह किसीसे भगड़े का सूचक नहीं ।”

इसपर राम ने कह दिया, “अच्छी बात है, कुछ गड़बड़ हो जाए तो तुम मुझको अपना वकील बना लेना । मैं तुम्हारी ओर से मुकदमा लड़ूंगा ।”

जैसी शिवकुमार और रामकुमार को आशा थी, वैसा ही हुआ । जब रूपकृष्ण ने अदालत में स्वयं उपस्थित हो चिट्ठी दी तो सबजज बहादुर ने पढ़ी और माथे पर त्योंरी चढ़ाकर रूप से पूछने लगा, “तुम्हारा वकील किधर है ?”

“मेरा कोई वकील नहीं है । इस छोटी-सी बात के लिए मैं वकील की आवश्यकता नहीं समझता ।”

“तुम कितने पढ़े हो ?”

“मैं अंग्रेज़ी साहित्य में एम० ए० हूँ ।”

“कहां नौकर हो ?”

“कहीं नहीं ।”

“काम क्यों नहीं करते ?”

“करता हूँ । मैं प्रापर्टी डीलर बनना चाहता हूँ । इसी निमित्त यह ज़मीन खरीदी है ।”

“तो यह ज़मीन तुमको नहीं चाहिए ?”

“अगर श्रीमान जी नीलाम को नियमित ठहराएंगे तो लूंगा और अगर नियमित नहीं ठहराएंगे तो नहीं लूंगा। मेरी प्रार्थना यह है कि उस नीलामी को नियमित सिद्ध करना सरकार का काम है। मेरा इसमें कुछ लेना-देना नहीं। जिस किसीने भी यह चुनौती दी है, उसने सरकार को चुनौती दी है मुझको नहीं। मैं इसमें समय और रुपया व्यय करना नहीं चाहता।”

“पर अदालत आपको तहकीकात के लिए तो बुला सकती है?”

“हां। उस समय मुझको एक साक्षी के रूप बुलाया जाना चाहिए न कि एक अपराधी के रूप में।”

“तुम अपने को अपराधी मानकर जवाब दो।”

“उस अवस्था में सरकार मुझको अपराधी के रूप में बुलाती। मुझ-पर कोई आरोप लगाया जाता और मैं उसका उत्तर देता। मुझपर कोई आरोप नहीं है। अतः मैं अपराधी के रूप कैसे आ सकता हूं?”

“अच्छा, बयान लिखाओ।”

“एक बयान जो नोटिस के उत्तर में है वह मैंने लिखित रूप में दे दिया है।”

“तुम अपराधी के कठघरे में आ जाओ। वकील तुमपर ज़िरह करेगा।”

रूप एक बने कठघरे में खड़ा हुआ तो राम, जो पीछे खड़ा सब कुछ सुन रहा था, अदालत के सामने आ खड़ा हुआ।

उसने कह दिया, “हुजूर, मैं इस मुलज़िम की डिफेंस (प्रतिरक्षा) के लिए हाज़िर हूं। मुझको इसके खिलाफ चार्जशीट (आरोपपत्र) दी जाए।”

सब-जज एक क्षण के लिए राम का मुख देखता रह गया। राम कचहरी में एक थर्ड रेट का वकील माना जाता था। परन्तु आज तो सबजज क्रोध से आगबबूला हो रहा था। उसने कहा, “तुम वकालत-नामा पेश करो।”

राम इस सबकी सम्भावना मान ही कचहरी में आया था। वह विचार कर रहा था कि रूप अदालत में भगड़ा करने जा रहा है और इसकी रक्षा के लिए उसको भी अदालत में चलना चाहिए। अतः वह

वकालतनामा लिख उसपर उचित कोर्ट-फीस का स्टाम्प लगा तैयार लाया था ।

उसने अपने बस्ते से वकालतनामा निकाला और रूप के समक्ष रख उसे हस्ताक्षर करने को कहने लगा । रूप का विश्वास था कि यह धींगामस्ती हो रही है और इसका विरोध उसको करना चाहिए । उसने हस्ताक्षर किए तो राम ने वकालतनामा अदालत में उपस्थित कर कहा, “मेरी प्रार्थना है कि चार्जशीट बनाई जाए । फाइल में कोई नहीं है ।”

“चार्ज यह है कि लड़के ने और बनवारी ने पड़्यंत्र कर नीलाम की बोली होने नहीं दी ।”

“हुजूर ! यह तो प्रार्थनापत्र है । इसपर चार्जशीट तैयार नहीं की गई । उस चार्जशीट से पूर्व प्रार्थना करने वाले के बयान नहीं लिए गए । उन बयानों पर कोई जिरह नहीं हुई । फिर इस आरोप का कोई साक्षी नहीं । नीलाम करने वाले एजेंट के बयान नहीं लिए गए ; और... और एक बात और है । आज्ञा हो तो निवेदन करूं ।”

“हां, करो ।”

“यदि यह आरोप ठीक भी हो तो यह ज़ाब्ना फौजदारी (पीनल कोड) के अन्तर्गत है । इसलिए हुजूर इस मुकदमे को करने का अधिकार नहीं रखते, यह फर्स्टक्लास मैजिस्ट्रेट के पास जाना चाहिए ।”

“मैं !” सबजज ने कहा, “मैं मुकदमे की तारीख डालता हूं । १५ फरवरी, १९३५ को प्रार्थी मुसम्मात फिरोज़ा बेगम हाज़िर होकर अपनी प्रार्थना का सबूत पेश करे ।”

“चलो रूप ।” राम ने गर्व से कहा ।

रूपकृष्ण बाहर आया तो बनवारीलाल का वकील राम के साथ-साथ अदालत से निकलते हुए कहने लगा, “राम ! आज तो तुमने कमाल कर दिया ।”

“हां भाई ! बात है कि न चलती दुकान पर खरीदार सस्ता माल लेने आते हैं और दुकानदार मुनाफा कम मिलने पर घटिया माल देता है । आज मैं वकालत करने नहीं आया था, आज तो मैं साहबज़ादे की तुम बड़े पेट वालों से रक्षा करने आया था ।”

गौरी रूपकृष्ण अदालत में हुई घटना सुना रहा था। गोवर्धनलाल और रूप चाय पीने के लिए बैठे थे और गौरी उनके सम्मुख रखे प्यालों में चाय बना रही थी। जब रूपकृष्ण ने अपने पिता की कारगुजारी बताई तो गौरी ने पूछा, “रूप, तुमको जेल जाने का डर नहीं लग रहा ?”

“क्यों बुआ ? जेल क्यों जाऊंगा ?”

“तुमने सरकार के एक बड़े अफसर की भूल निकाली है।”

“और यह अपराध है क्या ?”

“यह गुस्ताखी (धृष्टता) है।”

“एक भूल करने वाले को बताना कि वह भूल कर रहा है, एक पढ़े-लिखे व्यक्ति का कर्तव्य है।”

“मैं तुमको बधाई देती हूं।”

“बधाई ? यह कैसी बूआ ?”

“तुमने अपने को आज पढ़ा-लिखा समझा है।”

“मेरे समझने न समझने की बात नहीं बुआ। मैं वास्तव में एम० ए० पास हूं।”

“हां, आज मुझको मालूम हो गया है। देखो रूप, विद्या से मनुष्य बुद्धिशील एवं निर्भय होता है। आज तुमने ये दोनों बातें की हैं। बुद्धिशीलता तो यह है कि तुमने सरकारी नोटिस में वास्तविक दोष पहचान लिया है। यह बुद्धि का काम है। और विद्या से बुद्धि निर्मल होती है। दूसरे विद्या कहते हैं आत्मज्ञान को। यथार्थ आत्मज्ञान से मनुष्य के सब सांसारिक भय छूट जाते हैं। ये दोनों बातें तुमने सिद्ध कर दी हैं और तुम कहते हो कि यह एक पढ़े-लिखे व्यक्ति का कर्तव्य है। इसलिए मैं कहती हूँ कि तुमको यथार्थ ज्ञान आज हुआ है।”

गोवर्धनलाल ने कहा, “यह मकान तो अब तुमको मिलेगा नहीं। अब कोई और काम विचार करो।”

“काम तो यही करूंगा। हां, अब सरकारी नीलाम हो रही भूमि नहीं लूंगा। अब तो मैं प्राइवेट मालिक से सीधे ही भूमि लेने का यत्न करूंगा। इसलिए मैं यह यत्न कर रहा हूं।”

“क्या यत्न कर रहे हो ?”

“रोहतक रोड पर नगर से तीन मील के अन्तर पर चार आने गञ्ज जगह मिल रही है।”

“इतनी दूर जगह लेकर क्या करोगे ? वहां तो कोई जाकर रहेगा नहीं।”

“मैं अभी योजना बना रहा हूं। जब बन जाएगी तो बताऊंगा।”

इसपर गोवर्धनलाल ने कह दिया, “जुए का रुपया फोकट में ही जाएगा।”

“फूफा जी ! मैं इस रुपये को शुद्ध-पवित्र कर लूंगा।”

“वह कैसे ?”

“यही बुआ से पूछने आया हूं। एक बार ताया शिवकुमार ने बताया था कि व्यापार में साहस से काम लिए बिना लाभ नहीं हो सकता। सो अब मैं साहम बटोर रहा हूं। एक दिन मैंने बुआ से पूछा था, ‘साहम कैसे उत्पन्न होता है ?’ तो बुआ बताने लगी, ‘संसार में सबसे बड़े शक्तिशाली से नाता जोड़ने से।’

“मैंने पूछा, ‘वह कौन है और कहाँ है ?’

“तो बुआ ने बताया, ‘वह परमात्मा है। सब स्थान पर व्यापक है। हमारे हृदय में भी है। सो फूफा जी, मैं अब यही करता हूं। अब मुझको अपने हृदय में सत्य अनुभव हुई बात कहने में भी संकोच नहीं होता।”

विष्णी को जो सम्पत्ति मिली थी वह कुछ तो मकान के रूप में थी और कुछ एक बीमा कम्पनी के हिस्सों के रूप में। इन सबकी आय दस हजार रुपये वार्षिक के लगभग बनती थी। यह योजना बनी कि इसमें से आठ हजार के लगभग परिवार की लड़कियों के विवाह पर सहायतायें दिया जाया करे। सहायता की राशि निश्चित करने के लिए एक समिति बना दी गई। उसमें गौरी, विष्णी एवं राजेश्वरी, रूप तथा गोवर्धनलाल काम करने पर राजी हो गए।

भूषण ने मां की यह योजना सुनी तो खिलखिलाकर हंस पड़ा। राजेश्वरी ने पारिवारिक विवाह समिति की सदस्यता स्वीकार करने से पूर्व अपने पति से इसकी चर्चा की थी।

भूषण ने जब योजना सुनी तो हंसते हुए पूछने लगा, “और तुम इन घोंघावसन्तों में राय देना स्वीकार कर आई हो ?”

“मुझको यह योजना अति सुन्दर प्रतीत हुई है। क्या खराबी लग रही है आपको इसमें ?”

“क्या अच्छाई है इसमें ?”

“परिवार की लड़कियों के लिए अच्छे वर प्राप्त करने में यह एक अति सुन्दर विचार है।”

“तो मां अपने धन के बल पर स्वाभाविक सेनैक्शन (निर्वाचन) में हस्तक्षेप करेंगी ?”

“यह तो सब स्थानों पर होता ही है। हमारे परिवार में कुछ घर के तो संपन्न हैं और उनको धन की आवश्यकता नहीं। मामा शिवकुमार हैं। परन्तु उनके भाई राम जी हैं। बेचारे मस्जिद के चूहे की भांति हैं। फिर गोपाल दादा हैं। वैसे तो उनको ऊपर की आय होती है, परन्तु उससे भी निर्वाह नहीं होता। उनके बड़े लड़के काहन का विवाह हुआ है। परन्तु उसकी पत्नी उसको अपने पिता से पृथक् ले जाकर सरकारी क्वार्टर में रहने लगी है। उसका पति बी० ए० पास करने पर सरकारी नौकरी पा गया है और सरकारी क्वार्टर मिलते ही न केवल पृथक् हुआ है प्रत्युत किसी प्रकार अपने माता-पिता को सहायता भी नहीं देता। अब रुक्मिणी मामी हैं, तीन युवा लड़कियां हैं। तीनों पढ़ती हैं और सरस्वती अध्यापिका के कार्य की ट्रेनिंग ले रही है। महेश्वरी अभी इण्टर में पढ़ती हैं और लाज तो स्कूल में है। सबका खर्चा चलाने में गोपाल मामा पिस रहे हैं।”

“यह तो सब ठीक है। परन्तु राजेश्वरी, साधन न होने पर सन्तान उत्पन्न करने का अपराध भी तो इन्होंने किया है। देखो, आज से बीस वर्ष पूर्व भारतवर्ष अन्न-अनाज में स्वावलम्बी था। तब इसकी जनसंख्या लगभग तीस करोड़ थी। अब इसकी जनसंख्या चालीस करोड़ से ऊपर है। दस करोड़ पेट भरने के लिए और हो गए हैं और भारतवर्ष, जो अन्न-अनाज विदेशों में भेजता था, अब बर्मा तथा इण्डोनेशिया से चावल मंगवाता है।

“यदि मां की इस समिति ने कार्य आरम्भ कर दिया तो परिवार

में दस लड़कियां इस समय जो विवाह योग्य हैं, बच्चे पैदा करने के लिए विवश कर दी जाएंगी और अगली मरदमशुमारी (जनगणना) के समय तक कम से कम तीस पेट भरने के लिए नये पेट पैदा कर देंगी। और कहीं देश में दम-बीम ऐसी समितियां बन जाएं जो हिन्दुओं की लड़कियों के विवाह में सहायता देने लगे, तो निश्चय जानो कि अगली मरदम-शुमारी में जनसंख्या पैतालीस करोड़ हो जाएगी।”

राजेश्वरी का पति अर्थशास्त्री एवं समाजवादी था। वह अपनी गणना से भयभीत परेशानी अनुभव करने लगा था। परन्तु राजेश्वरी का दृष्टिकोण भिन्न था। वह समझती थी कि बच्चे विवाह के बिना पैदा नहीं होते क्या? उसको अपनी बात अभी भूली नहीं थी। वह ट्रेनिंग कालेज में पढ़ती थी। भूषण से मित्रता तो तब से ही थी जब वह अभी बी० ए० में पढ़ती थी। परन्तु ट्रेनिंग कालेज की परीक्षा में अभी दो माम शेष थे कि उसे मां बनने का सन्देश होने लगा। उसने अपनी मां से कहा। मां ने अपने पति बैरिस्टर से वार्तालाप किया और उसने उसकी चिकित्सा कराई तब जान छूटी थी। इस सबका ज्ञान भूषण को नहीं था। अपनी मां की सम्मति से उसने इस घटना का वर्णन किसीसे नहीं किया था। केवल चार प्राणियों को इसका ज्ञान था। उसको स्वयं, उसकी मां, पिता एवं लेडी डाक्टर को। राजेश्वरी की मां को भय था कि यदि भूषण को भी इस बात का ज्ञान हो गया तो वह विवाह नहीं करेगा। राजेश्वरी ने पूछा भी था, ‘क्यों?’

‘तुम नहीं जानतीं। यह तुम्हारे पिता का विचार है। वे इस विषय में बहुत अनुभव रखते हैं। इससे हमको उनकी राय माननी चाहिए।’

इसके उपरान्त वह ट्रेनिंग लेकर इन्द्रप्रस्थ गवर्नर्स स्कूल में नौकरी पा गई और फिर विवाह की बातचीत होने लगी। यद्यपि भूषण उस विवाह के लिए इच्छा रखता था, परन्तु उसके माता-पिता विरादरी से बाहर विवाह के लिए राजी नहीं होते थे। बैरिस्टर साहब का विचार था कि विरादरी की बात ढोंग है। वास्तविक बात दहेज की है। अतः बीस हजार की कीमत के दहेज का प्रस्ताव करने के लिए राजेश्वरी की मां को भेज दिया; और विवाह हो गया। उस बीस हजार में दस हजार के तो भूषण, वस्त्र, फर्नीचर और अन्य भेंट की वस्तुएं थीं और दस हजार

नकद था। यह दस हजार अभी तक उसके पति के खाते में जमा था।

इससे वह समझती थी कि जहां तक सन्तान का प्रश्न है, वह तो बिना विवाह के भी हो सकती है और यदि भ्रूण-हत्या नहीं करनी, तो जनसंख्या बढ़ेगी ही। जब तक धन से विवाह करने का प्रश्न है, इससे सन्तान तो होगी केवल भ्रूण-हत्याएं नहीं होंगी। हां विवाह में धन का आश्रय होने से योग्य वर मिलने की सम्भावना बढ़ जाएगी। यही परिणाम था उसके अपने अनुभवों का।

इस कारण वह कहने लगी, “जनसंख्या बढ़ती है अथवा घटती है, इससे हमको किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं। हम तो अपने परिवार की लड़कियां अच्छे घरों में विवाहने का प्रबन्ध कर रही हैं।”

“रुपये से मिलने वाले परिवार अच्छे होंगे क्या?”

“मेरा अनुभव तो यही है।”

“कितने विवाह कर देखे हैं तुमने? अभी तो तुम्हारी लड़की बहुत छोटी आयु की है।”

“मैंने एक विवाह किया है—अपना, और उसमें यह अनुभव हुआ है कि विवाह प्रोफेसर साहब से न हो सकता यदि पिता जी के पास दस हजार नकद देने के लिए न होता।”

“तो यह किसीने मांगा था? और न मिलने पर विवाह होने से इनकार किया था?”

“मैं यह निन्दा के भाव से नहीं कह रही। पिता जी ने इतना कुछ सहर्ष दिया था। हां, एक बात यह हुई है कि वे जीवन-भर और भी अपनी लड़की को कुछ न कुछ देने का विचार रखते थे। अब अपना हाथ खींच लिया है। वे कहते हैं कि प्रोफेसर साहब के माता-पिता लोभी हैं। किसी समय लोभवश में मांग बैठें तो उस समय उनका मुख बन्द करने के लिए कुछ जमा करना चाहिए।”

“किस समय मांग सकते हैं?”

“क्या जाने, राजकुमारी के विवाह के अवसर पर आपकी मांजी कह दें कि आधा खर्चा वे दें, तो उसके लिए वे तैयार रहना चाहते हैं।”

“मैं तो इस सबको बेहूदा समझता हूं।”

“किसको? लेने या देने को?”

“दोनों को ।”

“आप कहते तो ठीक हैं, परन्तु अपनी मां से कहिए कि वे मांगें नहीं ।”

“मां मेरी बात तो मानेगी नहीं । पहले तुम यह देने वाली समिति में सम्मिलित न होवो । फिर मैं मां से कह दूंगा । इसपर भी वह क्या मानेगी या नहीं, कौन कह सकता है ?”

८

राजेश्वरी को दो बातों से बहुत भय लग रहा था । लड़के-लड़कियों के नियमित विवाह का प्रबन्ध न किया तो सम्भोग तो होंगे ही । ये रुक नहीं सकते । वह जब वासनाभिभूत भूषण से सम्बन्ध बनाने के लिए तत्पर हुई थी तब उस सम्बन्ध के परिणामों को भली भांति जानती थी । इसपर भी वह विवश थी । यौवन की मांग पर किसी प्रकार का अंकुश न होने से वह दीपक की ज्वाला पर शलभ की भांति जलने चल पड़ी थी । वह उस सम्बन्ध के भयंकर परिणामों से बच गई थी, पिता के अनुभव एवं परिचय के कारण । सबके पिता इतने अनुभवी हो नहीं सकते । इससे वह समझती थी कि ठीक आयु में माता-पिता को बच्चों के विवाह का प्रबन्ध कर देना चाहिए । न केवल यह अपितु किसी भी युवक अथवा युवती को इस बात में सन्देह नहीं होना चाहिए कि उसका विवाह असम्भव है । विवाह में कम से कम बाधाएं रह जाएं तो ठीक है । इससे परिवार की लड़कियों के मार्ग की एक बाधा तो वे समिति बना हटा ही रहे थे । इस कारण वह अपने पति से इस बात में सहमत नहीं थी कि वह इस समिति की सदस्या न बने ।

इसपर भी जब उसके पति ने कहा कि उसको इस कार्य में सहयोग नहीं देना चाहिए तो वह चुप रही । हां, अपनी सास से उसने इतना कह दिया था, “मां जी ! आपके पुत्र इस प्रकार के कार्य से प्रसन्न नहीं ।”

“क्यों ? उसको तो प्रसन्न होना चाहिए ।”

“यह आप ही उनसे पूछ लीजिए ।”

“परन्तु उसने ही तो कहा था कि इस प्रकार के रुपये को व्यय कर

देना चाहिए ।”

“मुझको तो उनकी बात समझ आती नहीं । वे मुझको इस कार्य में रुचि लेने से मना कर रहे हैं ।”

“तो बेटा ! तुम इसमें सम्मति मत दिया करो । एक स्त्री को अपने पति को प्रमत्त रखना चाहिए ।”

“उनकी अयुक्तिसंगत बातों और कामों में भी ?”

“बेटा, जहाँ मतभेद हो प्रेम से समझ-समझा लेना चाहिए ।”

“और जब वे न समझें तो ?”

“तो उनका कहा मानना चाहिए ।”

इसपर राजेश्वरी आंखें नीचे किए बैठी रह गई । फिर साहस पकड़ बोली, “मैं एक बात आपसे पूछती हूँ । आप मेरा नाम बीच में न लाएं तो कहूँ ।”

“क्या बात है ?”

“राजकुमारी अब अढ़ाई वर्ष की हो गई है । वे मुझको गर्भ न धारण के लिए कह रहे थे । कुछ खर्च का सामान भी उन्होंने लाकर दिया था । मेरी उन वस्तुओं के प्रयोग में रुचि नहीं थी । पिछले माम से आपके परिवार की लड़कियों के विवाह में सहायता की बात से तो मैं कुछ निर्भय हो गई थी और अब देखती हूँ कि मुझको कुछ दिन ऊपर हो गए हैं । एक ओर तो वे मुझको कह रहे हैं कि इस प्रकार व्यय करना धन का अपव्यय होगा और दूसरी ओर मुझको कह रहे हैं कि किसी लेडी डाक्टर से मिलकर सफाई करवा द ।”

“सफाई ? क्या मतलब है तुम्हारा ?”

“मां जी ! वे इस बच्चे को निकाल देने के लिए कहते हैं ।”

“तो इसको सफाई कहता है ?”

“जी ।”

“तो कुछ गन्दगी है, जिससे पेट को साफ कराने को कह रहा है ?”

“यह वे कहते हैं ।”

“तो मत मानो उसका कहना । उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है । यह बच्चों के ऊपर एक का अधिकार मैं नहीं मानती । बच्चे परिवार के हैं । इसलिए जब राम ने अपनी लड़कियों के विवाह की बात कही, तो मैं

तुल्य मान गई। मैं कभी पश्चात्ताप करती हूँ कि मैंने इसको इतना पढ़ाया ही क्यों ? जरूर इसकी संगत खराब रही है।”

राजेश्वरी विचार करती थी कि अपने पति की संगत में वह भी रही है। फिर यह खराबी कहां से आई ? वह स्वयं भी इस गर्भपात के पक्ष में नहीं थी; परन्तु दिन-रात भूषण आग्रह कर रहा था। उमने एक लेडी डाक्टर से बात भी की थी और वह उमको वहां जाने की कह रहा था, परन्तु वह टाल-मटोल कर रही थी।

बात यहां तक ही रह नहीं सकी। राजेश्वरी ने अपनी मां से कहा तो उमने बैरिस्टर साहब से बात कह दी और बैरिस्टर रघुनाथसहाय यह जानता था कि बार-बार गर्भपात कराना भय-रहित नहीं हो सकता। वह एक दिन भूषण के कालेज में जा पहुंचा।

भूषण अपनी श्रेणी को पढ़ा रहा था। इस कारण रघुनाथसहाय को स्टाफ-रूम में बैठ प्रतीक्षा करनी पड़ी। घण्टी बजी तो वह स्टाफ-रूम में आया और अपने श्वशुर को बैठा देव बहुत आदर से मिला। चाय-पानी पूछने लगा।

रघुनाथसहाय ने पूछ लिया, “यहां का काम समाप्त हुआ है अथवा कुछ रहता है ?”

“क्यों ? कहीं चलना है ?”

“हां, हमारे घर।”

“क्या है पिता जी ?”

“वहां आज तुमको चाय पर निमंत्रण देने आया हूँ।”

“क्यों, क्या बात है आज ?”

“तुम चलो तो बताऊंगा।”

“तो ठहरिए। प्रिन्सिपल साहब से एक मिनट का काम है, उनसे मिलकर अभी आया।”

बैरिस्टर साहब के दो ही सन्तान थीं। एक राजेश्वरी और दूसरा कमलकिशोर। कमलकिशोर राजेश्वरी से पांच वर्ष छोटा था और अब एम० ए० में पढ़ता था। भूषण को समझ आया कि उसके विवाहादि के विषय में विचार करने के लिए उसको ले जाया जा रहा है। कमल-किशोर अपनी बहिन के सदृश ही सुन्दर था। इससे वह समझता था

कि उसके विवाह की चिन्ता उसके माता-पिता को नहीं करनी चाहिए। सैकड़ों पढ़ी-लिखी सुन्दर लड़कियां उसपर लट्टू हो जाएंगी और उसको अपनी पत्नी के लिए किसीको चुन लेना कठिन नहीं होगा।

इस विषय में वह विचार करता हुआ प्रिन्सिपल साहब से मिलने गया और काम कर लौट आया। बैरिस्टर साहब अपनी मोटर साथ लाए थे और श्वसुर-दामाद उसमें बैठ चल पड़े। मार्ग में भूषण ने पूछ लिया, “कमल की सगाई की बातचीत हो रही है क्या?”

“उसकी सगाई तो हो चुकी है। मौखिक रूप में बात हो चुकी है। एक दिन निश्चय कर पब्लिक फंक्शन भी हो जाएगा।”

“अच्छा ! आपने तो बताया नहीं।”

“इसकी ज़रूरत नहीं समझी। यथार्थ में मेरे एक मित्र हैं भृगुदत्त। उनकी लड़की है। लड़की कमल की माता जी तथा कमल की भी देखी-भाली है। एक दिन भृगुदत्त आए और सगाई की बात करने लगे। मैंने लड़के और उसकी मां से बात की। हम तुरन्त सहमत हो गए और बान पक्की हो गई।”

“लड़की कितनी पढ़ी है?”

“सुना है, बहुत कुछ पढ़ी है। कमल की मां एक दिन उनके घर गई थी और वह लड़की की शिक्षा के विषय में जानकारी ले आई है। मैं उससे सन्तुष्ट हूं।”

“क्या जानकारी लाई हैं मां जी?”

“वह कुकरी की परीक्षा पास है। कपड़े कटिंग का लन्दन के ‘स्कूल आफ कटिंग’ का डिप्लोमा लिए हुए है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की साहित्य-रत्न की परीक्षा पास किए हुए है। अंग्रेजी भी जानती है।”

“यह तो कुछ न हुआ।”

“मैं समझता हूं तुमसे तो अधिक पढ़ी है। तुमने तो केवल एक विषय में ही एम० ए० किया है और उसने तो कई विषयों की उच्चतम परीक्षा पास की है।”

एक दर्जी के काम में डिप्लोमा को उसके श्वसुर एम० ए० इल इकानौमिक्स से बड़ी परीक्षा बता रहे थे। वह समझता था कि उनके दिमाग में कुछ खराबी आ रही है। इससे उसने बात बदल दी। उसने

कहा, “मैंने पी-एच० डी० के लिए थीसिस दे दी है। आशा करता हूँ कि मुझको डाक्टर की उपाधि शीघ्र ही मिल जाएगी।

इस समय वे बैरिस्टर साहब की कोठी में पहुँच गए थे। यह सिविल लाइन्ज में राजपुर रोड पर थी। मोटर से उतर वे कोठी के ड्राइंगरूम में बैठ गए थे। राजेश्वरी की मां भी वहाँ आ गई और बैरा चाय लेने चला गया, बैरिस्टर साहब कहने लगे।

“देखो ! तुम्हारे कितने बच्चे हैं ?”

“अभी तो दो हैं।” भूषण ने चाय का घूट पीते हुए कहा। उसको अब कुछ विश्वास हो गया था कि राजेश्वरी ने कुछ गर्भपात की बात यहाँ कही है। इसमें वह चाय पी सावधान हो पत्नी की भर्त्सना करने के लिए तैयार हो गया।

“तुम दोनों को कितना वेतन मिलना है ?”

“पाने चार सौ है। पिछले माम ही मुझको पच्चीस रुपये उन्नति मिली है।”

“राजेश्वरी कह रही थी कि उसको भी दस रुपये उन्नति मिलने वाली है। मैं पूछता हूँ कि क्या तुम एक-दो और बच्चों का बोझ सहन नहीं कर सकते ?”

“पिता जी ! यह मेरे सहन करने की बात नहीं। यह पूर्ण देश के समाज की बात है। दिन-प्रतिदिन देश में खाने वाले मुख बढ़ रहे हैं और अनाज की उपज बढ़ नहीं रही। हम स्थायी अकाल के गाल में जा रहे हैं।”

“तो तुमको उनके बच्चों की अपने बच्चों से अधिक चिन्ता है, जो समाज के उपकारी अंग नहीं बन सकते ? कम से कम इतना तो तुम भी समझ सकते हो कि एक प्रोफेसर और स्कूल की अध्यापिका के बच्चे देश के कल्याण में अधिक सहयोग देंगे और एक भिखारी का बच्चा उतना कल्याण नहीं कर सकता ?”

“कौन जाने भविष्य में कौन नेपोलियन और बिस्मार्क बनने वाला है।”

“ठीक है। यही तो मैं कह रहा हूँ कि यह तुम कैसे कह सकते हो कि राजेश्वरी के पेट का बच्चा उजड़ु गंवार होगा, जो उसकी हत्या

करने के लिए कह रहे हो !

“ देखो भूषण ! इसकी हत्या करने से तुम्हारे किसकी परवरिश होगी, बता सकते हो ? मैं तो एक बात जानता हूँ कि ये ईश्वरीय बानें हैं । तुम अल्पज्ञान से उसकी योजनाओं को नष्ट-भ्रष्ट कर रहे हो ।

“कहीं सुभाषचन्द्र बोस के मां-बाप भी यही करते जो तुम करने जा रहे हो तो भारनवर्ष एक शूरपुत्र की सेवाओं से वंचित रह जाता और कहीं रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पिता भी यही कुछ करते तो वह भी न हो सकता । ये दोनों परिवार में सबसे छोटे थे ।

“ देखो ! अब चुपचाप चाय पियो और जाकर अपनी पत्नी को प्रसन्न करो । वह इस हत्या के पाप से इतनी भयभीत है कि अपने पति का घर छोड़ देने वाली थी । मैंने उसको समझा-बुझाकर वापस तुम्हारे घर भेज दिया है ।

“ एक बात और किया करो । अपने इस मिथ्या अर्थशास्त्र को लपेटकर कालेज में ही छोड़ आया करो । इसका स्थान एक हिन्दू परिवार में नहीं है । हमारा शास्त्र इस अधिकचरे ज्ञान से अधिक श्रेष्ठ और सत्य के समीप है । ”

९

भूषण आज प्रिंसिपल से कहने गया था कि वे मालूम करें कि उसके लेख के परीक्षकों ने उसके लेख के विषय में क्या लिखा है ? प्रिंसिपल ने उसे बधाई दी कि उसको डाक्टरेट मिलने वाली है ।

इधर बैरिस्टर साहब से उसको डांट पर डांट पड़ रही थी और उसने अपने श्वसुर की सम्मति मान ली कि वह चुपचाप चाय पीकर घर जाए और राजश्वरी को प्रेमपूर्वक समझावे ।

पर उसका मन पूछ रहा था कि क्या समझावे ? अपने मन की बात समझावे अथवा अपने श्वसुर के मन की । वह मन ही मन विचार कर रहा था कि जिन बनबूते पर वह डाक्टरेट प्राप्त कर रहा है और भविष्य में उसकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त होने वाला है, क्या वह मिथ्या है ? यदि यही है तो उसके परीक्षक उसकी डाक्टरेट की उपाधि क्यों दे रहे हैं ?

वह श्वसुर की मोटर में अपने घर लौट रहा था और अपने मन में विचार कर रहा था कि यह क्या हुआ ? क्या समाजवाद का नियन्त्रण जनसंख्या की वृद्धि पर नहीं होना चाहिए । यह तो अनर्थकारी होगा । तो क्या भ्रूण-हत्या के अनिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं ? उसको तो कुछ सूझ नहीं रहा था । वह मन में गणना करने लगा कि उसके नाना के परिवार में कितने प्राणी हैं ? लालाजी के चार लड़के और चार लड़कियां । यह हुए आठ । शिव बड़े लड़के के एक लड़का और दो लड़कियां । ये हुए ग्यारह । शिव के तीन पोते और तीन दोहने-दोहतियां । ये हो गए सत्रह ।

मोटर में बैठा भूषण उंगलियों पर गिनती कर रहा था । लाला जी की सबसे बड़ी लड़की थी उसकी मां । मां के घर चार सन्तानें थीं । इस प्रकार हो गए इक्कीस । उसकी मां के पोते-दोहने थे नौ । सब बन गए तीस । लाला जी की दूसरी लड़की थी लक्ष्मी । उसके घर में भी लड़के-लड़कियां, पोते-पोतियां, दोहने-दोहतियां सब थे बारह । तो यह हो गए बयालीस । चौथा था गोपाल । गोपाल के घर चार बच्चे थे । एक पोता, एक दोहता और एक दोहती । ये सात मिलाकर लालाजी के परिवार में हो गए लगभग पचास प्राणी ।

इस समय मोटर पहुंच गई थी हेमिल्टन रोड पर, जहां उसका मकान था । वह गणना समाप्त नहीं कर सका और तोबा ! तोबा !! एक जोड़े के साठ सन्तान ! कदाचित् साठ से भी अधिक ! उसकी सूचना पूर्ण नहीं थी । इतने बड़े परिवार में एक-आध प्रतिमास उत्पन्न होना विस्मय करने की बात नहीं थी ।

वह मोटर से उतरा तो डाइवर ने सलाम किया और मोटर ले गया । वह गया तो उसकी मां, पिता एवं राजेश्वरी रेशमी सफेद वस्त्र पहने कहीं जाने को तैयार खड़े थे । तीनों के मुख पर शोकमुद्रा थी । विष्णुदेवी ने कहा, “कहां ठहर गए थे भूषण ?”

“मैं राजेश्वरी के पिता के घर गया था ।”

“कुछ काम था क्या ?”

“हां, मां । तुम सब कहां जा रहे हो ?”

“गोपाल भैया के लड़के काहनचन्द्र की पत्नी का देहांत हो गया है ।”

“कैसे देहान्त हो गया है ?”

“मर्टिनी होम में । हम सब वहां जा रहे हैं । तुमको भी चलना चाहिए ।”

“फजूल है मां ।”

“नहीं बेटा ! तुम्हारा भाई है काहन—मामा का लड़का । तुमको अफसोस करने जाना चाहिए ।”

“तो कैसे चलोगे ?”

“नौकर टांगा लेने गया है ।”

भूपण मन में विचार कर रहा था कि इतने बड़े परिवार में यदि सबके मरने पर जाने लगा तो उसको तो कालेज जाने के लिए भी समय नहीं रहेगा । परन्तु मां और पत्नी को जाने के लिए तैयार देख वह भी उनके साथ चल पड़ा ।

करीब बाग में डाक्टर भार्गव के हस्पताल में काहनचन्द्र की पत्नी सुधा को तीन मास का गर्भपात हुआ और देहान्त हो गया । काहन, उनका पिता गोपालकुमार और मां रुक्मिणी तथा परिवार के अन्य मुख्य-मुख्य सम्बन्धी हस्पताल के बाहर एकत्रित थे । शव को पंचकुइयां रोड पर संस्कार के लिए ले गए ।

जब सब संस्कार कर काहन के क्वार्टर पर आए तो कर्मदेवी, काहन की दादी, ने कहा, “काहन ! बच्चा कहा है ?” काहन तथा सुधा के लड़के की बात थी । वह अभी एक वर्ष का नहीं हुआ था कि सुधा पुनः गर्भवती हो गई थी । इससे पति-पत्नी दोनों बहुत दुःखी हुए थे और उस दुःख-निवारण का सुगम उपाय करने चल पड़े थे ।

“बड़ी मां !” काहन ने बताया, “पड़ोसियों के घर में है ।”

“उसको ले आओ ।”

वह गया और बच्चे को उठा लाया । कर्मदेवी ने उसको गोद में ले लिया और काहन से कहा, “देखो काहन ! या तो तुम मेरे घर में चलो, नहीं तो मैं यहां रह जाती हूं ।”

“मां, कूचा घासीराम में मैं जाकर रह नहीं सकता । वह गली बहुत तंग है और गन्दी है । इस खुली हवा में रहने के पश्चात् तो यह भी वहां बीमार हो जाएगा ।”

“परन्तु यहां मैं अकेली नहीं आऊंगी। मैं आऊंगी तो मेरे साथ सदारानी भी आएगी। मैं उसको वहां अकेली नहीं छोड़ सकनी।”

“तो दोनों आ जाओ।”

“इसका किराया कितना पड़ता है?”

“वह तो दफ्तर में वेतन से कट जाता है।”

“मैं यह पूछती हूं कि कितना देना पड़ता है?”

“पन्द्रह रुपये किराया। छः रुपये बिजली-पानी और कुछ भंगी-माली इत्यादि। सब मिल-मिलाकर पचीस रुपये।”

“तो ठीक है। हम दोनों आज ही यहां रह जाएंगी।”

भूषण बड़ी मां की काहनचन्द से बातें सुन रहा था। इसपर उमने कह दिया, “बड़ी मां ! मेरा विचार है कि तुम बच्चे को अपने साथ ले जाओ और काहन को कहो कि यह क्वार्टर छोड़ दे।”

“मुझको कुछ आपत्ति नहीं। मैं जानती हूं कि काहन अपना निर्वाह कर लेगा। मैं यह भी जानती हूं कि यह अपने पिता के पास जाकर नहीं रहेगा। मैं तो इस बच्चे की रक्षा की बात कर रही हूं।”

“तो तुम बच्चे को ले जाओ।”

“क्यों काहन ! क्या कहते हो ?”

“बड़ी मा ! मुझको भूषण भापा की बात पसन्द नहीं। तुम यहां रहोगी तो मेरा विवाह भी हो सकेगा। अकेला रहने पर तो सम्भव नहीं।”

“विवाह तो होगा तुम्हारा। तेरह दिन निकल जाने दो। तब विवाह का प्रबन्ध कर दूगी।”

“कहां ?” भूषण का प्रश्न था।

“तुम्हारी साली से।”

“कौन साली ? बड़ी मां ! मैं समझता हूं कि राजेश्वरी के पिता पहले ही बनियों के घर लड़की देकर पश्चात्ताप कर रहे हैं। और फिर उसकी छोटी बहिन कोई नहीं है।”

“मेरे पढ़-लिखे मूर्ख बेटे ! कल से काहन की सगाइयां आने लगेंगी। निश्चय जानो, जब तक मैं जीती हूं, हमारे घर का कोई लड़का अविवाहित नहीं रह सकता।”

भूषण विचार करता था, बहुत अभिमान है धन का उसकी नानी को। इससे वह चुप रहा। वह मन में विचार करता था, “यदि यहां समाजवाद चल जाए तो कम से कम इस बूढ़ी औरत का अभिमान तो चूर हो सकता है।”

इस समय राजेश्वरी बड़ी मां से छुट्टी ले घर चलने के लिए आई गई। उसने अपने पति से कहा, “भैया की बाईसिकल लेकर एक टांगा पकड़ लाइए।”

प्रोफेसर तांगा लेने चल पड़ा। घर पहुंचकर राजेश्वरी से भगड़ा हो गया। घर पहुंचते, भोजन बनते, करते आधी रात व्यतीत हो चुकी थी। सोने से पूर्व बात भूषण ने आरम्भ की। उसने पूछ लिया, “तुम पिता जी से मिलने गई थी?”

“हां। माता जी लेने आई थी। स्कूल से आधे दिन की छुट्टी ले उनके साथ गई थी।”

“तुम्हारे पिता जी आज मुझसे कालेज में मिलने आए थे। फिर मुझको घर चाय पिलाने ले गए। मैंने समझा कि कमल की सगाई के विषय में कुछ बातचीत करने जा रहे हैं। परन्तु उन्होंने तो तुम्हारे गर्भ-पात की बात आरम्भ कर दी। मुझको भली भांति डांट-डपटकर कह दिया चाय पिऊं और घर आकर उनकी लड़की के साथ प्रेमपूर्वक रहूं।”

“यह तो बहुत अच्छी सीख दी है पिता जी ने।”

“तुम वहां गई क्यों थी?”

“मैंने बताया तो कि मैं नहीं गई थी। इसपर भी कल आपसे पूछकर प्रातःकाल जाने का विचार था। पर माता जी ने कुछ नहीं कहा? वे कह रही थी कि वे अपने विचार आपको मिलकर बता देगी।”

“वे कुछ नहीं बोली। वे कुछ कहती तो पिता जी से अधिक क्या कह सकती थीं।”

“वे मेरे मन की बात बतातीं।”

“और तुम्हारे मन की क्या बात है?”

“जब आपकी मां ने भी आपकी बात को पसन्द नहीं किया तो मैं भी आपका घर कम से कम एक वर्ष के लिए छोड़ जाने का विचार कर रही थी। आज काहन भापा की सुधा की कहानी सुनकर तो विचार

आया है कि या तो आपको अपने विचार में सुधार करना पड़ेगा अन्यथा मैं अपना पृथक् घर बना लूँगी।”

“ओह ! तुम तो मेरे बिना एक रात भी रह सकना असम्भव कहा करती थीं ?”

“जी। जब मरकर पृथक् होना है तो जीवन ही पृथक् होना ठीक नहीं होगा क्या ? आज आपकी बड़ी मां कह रही थीं कि न जाने आज-कल लड़कियों को क्या हो गया है कि अपने-आप अपने सौभाग्य को धक्के दे-देकर घर से निकालती रहती है।

“वे अपनी कथा बता रही थीं। उनका विवाह बारह वर्ष की आयु में हुआ था और शिव का सोलह वर्ष की आयु में हुआ। आठ बच्चे पैदा कर भी वे हट्टी-कट्टी बैठी हैं। प्रत्येक बच्चे के पैदा होने के समय उनको और आपके नाना को अत्यन्त प्रसन्नता होती थी और भगवान भी अवश्य प्रसन्न होता होगा। प्रत्येक सन्तान के बाद हमारे कारोबार में उन्नति होती थी। भगवान जिसको भी यहां भेजता है उसका भाग्य भी साथ भेजता है।”

“ये सब अज्ञानता के लक्षण हैं। न कोई भगवान है, न वह किसीको यहां भेजता है। अनेकों परिवार बच्चे अधिक हो जाने से भूखे मरते देखे गए हैं। धोखाधड़ी लाला जी को खूब आती रही होगी और गरीब किसानों का धन लूटने में सफल हो गए प्रनीत होते हैं। भोले-भाले किसानों के परिश्रम का धन लूट लिया और नाम लग्न दिये बच्चों के भाग्य का।”

“खैर, इससे मेरा क्या सम्बन्ध है। मैं आपको कह देती हूं कि मैं सुधा-सी मौत मरने के लिए तैयार नहीं।”

“तो ठीक है। अब सो जाओ। इस विषय पर कल बात करेंगे।”

१०

रूपकृष्ण को होज़ काज़ी वाली ज़मीन मिल गई। वह नीलाम रद्द नहीं हो सका। भूमि की मालिक फ़िरोज़ा बेगम की उजरदारी स्वीकार नहीं हुई और नीलाम नियमित ठहराया गया।

रूपकृष्ण ने इसपर मकान बनवाने का नक्शा तैयार करवाया,

म्यूनिस्सिपल कमेटी से पास करवाया और मकान बनवाना आरम्भ कर दिया ।

काहन का विवाह राम की सबसे छोटी साली से हो गया । राम की पत्नी रोहिणी अति सुन्दर स्त्री थी और उसकी बहिन उससे कम सुन्दर नहीं थी ।

काहन को इस विवाह में कुछ अधिक दहेज तो मिला नहीं । हां, पत्नी सुन्दर, चुलबुली और चतुर मिल गई । विवाह का निश्चय तो सुधा के तेरहवें से पहले ही हो गया था, परन्तु मगाई तेरहवें के पांच दिन उपरान्त और विवाह एक माम के मध्य में हो गया ।

जहां सम्बन्धी और मित्रगण काहनचन्द से उसकी पत्नी के देहावसान पर शोक प्रकट कर रहे थे वहां दो ही दिन में बधाइयां देने के लिए आने लगे ।

भूषण ने तो जब सुना कि रूप की मौसी से ही काहन का विवाह हो रहा है, तो उसके विस्मय का ठिकाना न रहा । तेरहवें दिन का इकट्ठा हो रहा था । क्वार्टर में भीतर स्त्रियां बैठी थी । सुधा के माता-पिता की ओर से स्त्रियां शोक प्रकट करने आई हुई थी और रोना-धोना कर रही थीं । उसमें से कुछ तो काहन की भावी पत्नी को गाली भी दे रही थीं । परन्तु बाहर पुरुषों में काहन के नवीन विवाह की चर्चा चल रही थी ।

भूषण ने मामा रामकुमार से पूछ लिया, ‘मामा जी ! आपसे पूछकर यह विवाह हो रहा है ?’

“हां । यदि यह कहा जाए कि मेरे ही सुझाव पर हो रहा है तो अधिक ठीक होगा ।”

“आपको तो विदित होना चाहिए कि काहन अपनी पत्नी का हत्यारा है ।”

“कौन किसीकी हत्या कर सकता है बिना ईश्वर की इच्छा के ! सब अपने-अपने कर्मफल का भोग करते हैं ।”

भूषण इस कर्मफल की मीमांसा को समझ नहीं सकता था । यदि कोई पैदा हो तो कर्मफल से । यदि कोई मरे तो भाग्य से । विवाह हो तो भाग्य से और न हो तो भाग्य से । वह मन में विचार करता था कि

इन सब रूढ़िवादियों को सन्मार्ग दिखाने के लिए कम्यूनिज़म ही समर्थ होगा।

भूषण को तो पूण परिवार से अरुचि हो रही थी। राम ने भूषण को अपने मन की बात कह दी, “हम परिवार में सुन्दर स्त्रियां ला-लाकर परिवार में सुन्दर बच्चे पैदा कर रहे हैं। मैं रूप के लिए भी किसी सुन्दर स्त्री की खोज में हूँ।”

“कटरे में कोई न कोई मिल जाएगी।” आवेश में भूषण ने कह दिया।

राम ने ध्यान से उसकी ओर देखा और उपरान्त मुस्कराते हुए कहा, “मालूम होता है, बरखुरदार भूषण, कटरे की सैर करते रहे हो ! क्या राजेश्वरी को वहीं से ढूँढ़कर लाए हो ?”

“वह तो बैरिस्टर साहब ने नियमित रूप से विवाह कर दी है।”

“मैं तो यही जानता था। पर भूषण ! वह सुन्दर नहीं है क्या ? क्या समझते हो उसको तुम ? रूप तो वैसी ही पत्नी के लिए आग्रह कर रहा है।”

“ओह ! तो उसकी दृष्टि मेरी पत्नी पर है ?”

“नहीं प्रोफेसर साहब ! वह ऐमा लड़का नहीं। राजेश्वरी को बड़ी भाभी समझता है और हमारे धर्मशास्त्र में बड़ी भाभी को मां के समान पदवी दी गई है।”

“पर रूप कब से धर्मशास्त्र मानने लगा है ?”

“अपनी बुआ गौरी से पढ़ता रहता है। मैं समझता हूँ तुम भी गौरी मौसी से मिला करो। तुम्हारा भी कुछ तो कल्याण हो जाएगा।”

“तो वे देवी हैं।”

“देवी-लेवी की बात तो मैं जानता नहीं। हां, बात वह ऐसे ढंग से करती है कि स्वीकार करनी ही पड़ती है। देखो, उसने और उसके पति ने लाला जी से मिले धन का एक ट्रस्ट बना दिया है और उससे एक विधवा आश्रम खोल दिया है। उस आश्रम पर एक हज़ार रुपया प्रति-मास का व्यय हो रहा है।

“गौरी बहिन ने तुम्हारी मां से कहकर, उसके रुपये का भी एक ट्रस्ट बनवा दिया है। उसमें लड़कियों के विवाह पर रुपये की सहायता दी जाया करेगी। मेरी लड़की कृपा की सगाई की चर्चा उसी ट्रस्ट द्वारा हो

रही है।

“अब एक ओर ट्रस्ट बनने का विचार हो रहा है। मां, मेरा तात्पर्य है तुम्हारी बड़ी मां और बहिन सदारांनी मिलकर एक ट्रस्ट निर्माण कर रही हैं, जिससे परिवार के मेधावी बालकों की शिक्षा में सहायता मिला करेगी।”

“यह तो बहुत बढ़िया काम है।”

“और गौरी बहिन शिव भैया से कह रही है कि वे भी पांच-छः लाख का दान कर एक ट्रस्ट बना दें जिससे परिवार के निर्धन सदस्यों की बीमारी में चिकित्सा का प्रबन्ध हो सके।”

“यह तो सब ठीक है। मैं तो गौरी मौसी को सर्वथा अनपढ़ मानता था, परन्तु वह तो पढ़े-लिखे के कान भी कतर रही है। हां, एक बात यदि वह कर देती तो दिल्ली-भर में उनका और बड़े लाला जी का नाम रौशन हो जाता।”

“क्या कर देती?”

“यही कि इस दान-दक्षिणा का प्रभाव-क्षेत्र परिवार से बाहर सब पात्रों तक फैल जाए।”

“तो ऐसा करो। तुम स्वयं मिलकर यह शुभ सम्मति उनको दे दो। परन्तु मैं समझता हूं कि वह मानेगी नहीं।”

“क्यों?”

“मिलकर स्वयं बात कर लो।”

भूषण को कुछ ऐसा समझ आया कि परिवार में गौरी ही सब गड़-बड़ मचा रही है। इसमें वह गौरी के अनपढ़ होने को भी कारण मानता था। दूसरी ओर रूप काहन को बता रहा था, “मेरा प्रेम तो एक लड़की से है। परन्तु कई कारणों से मेरा उससे विवाह नहीं हो रहा। इससे मैं विवाह के लिए तत्पर नहीं होता। जब तक कोई अन्य लड़की उससे सुन्दर न मिल जाए, विवाह करने में रुचि नहीं होती।”

“तो उससे विवाह क्यों नहीं हो रहा?”

“कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है कि उस लड़की के माता-पिता बहुत लोभी हैं। मैं उनका लोभ पूरा नहीं कर सकता।”

“तो लड़की को भगा ले जाओ।”

“वह अभी अल्पवयस्क है।”

रूपकृष्ण ने विवाह न हो सकने का वास्तविक कारण नहीं बताया। वास्तव में फिरोजा बेगम के मुकदमा हार जाने के उपरान्त किशनो कई बार रूप से मिलने आ चुकी थी और मुमित्रा से विवाह करने के लिए कह चुकी थी। एक-दो बार बनवारीलाल भी आया था। पहले तो रूप टालमटोल करता रहा, परन्तु उपरान्त उमने स्पष्ट कह दिया, “जब से मैंने सुना है कि पिता जी का सम्बन्ध किशनो से रहा है, मैंने विवाह न करने का निश्चय किया हुआ है।”

“परन्तु तुम तो कहते थे कि तुमको अपने पिता के कथन पर विश्वास नहीं?”

“हां, विश्वास तो नहीं होता। फिर भी सन्देह तो होता है। कुछ भी हो, मेरा चित्त अब मुमित्रा से विवाह के लिए नहीं करता।”

बात समाप्त हो गई। काहन के विवाह के कुछ दिन पश्चात् रूप-कृष्ण हौज काजी में मकान के बनवाने का निरीक्षण कर रहा था कि बनवारीलाल घबड़ाया हुआ उसके पास आया और पूछने लगा, “रूप ! मुमित्रा से कब मिले थे ?”

“बहुत देरी हुई है। जहां तक मुझको स्मरण है कि फिरोजा बेगम की उजरदारी के पश्चात् तो मैं आपके घर की ओर भी नहीं गया। क्यों क्या हुआ है ?”

“वह लापता है। कुछ दिन से वह मां से तुम्हारे विषय में पूछती रही थी। परमां भी बात हुई थी। किशनो ने उससे पूछा था कि क्यों पूछ रही है ? इसपर उसने पूछा था कि तुमसे विवाह की बात टूट गई है क्या ?”

“किशनो ने उत्तर दिया कि तुम अब विवाह करना नहीं चाहते। तुम्हें कोई अच्छी लड़की का सम्बन्ध मिल रहा है।”

“इसपर वह कुछ उदास दिखाई दी थी। मैं उसके लिए कोई उपयुक्त वर की खोज में था। परन्तु पिछली रात वह अपने कमरे में सोने गई थी और आज प्रातः वहां नहीं थी। रात को वह बिस्तर में सोई तो प्रतीत होती है, परन्तु मैं जब प्रातःकाल उठा तो उसके कमरे का दरवाजा और मकान का बाहरी द्वार खुले थे।

“ मुझको सन्देह था कि वह भागकर तुम्हारे पास चली गई है । ”

“ नहीं भापा । वह मेरे पास नहीं आई । अगर आती तो मैं उसको अपनी बहनों के पास रखता और उसको पूर्ण परिस्थिति से अवगत कर देता ।

“ परन्तु भापा ! उसका मेल किसी बाहरी आदमी से था क्या ? ”

“ पिछले एक-दो मास से मैंने अपना कारोबार करौलबाग में आरम्भ कर रखा है । मैं वहां देरी तक रहता था और किशनो भी उसकी देख-भाल के लिए वहां आती-जाती रहती थी । वह वहां से जल्द लौट आती थी । परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी अनुपस्थिति में कोई उससे सम्बन्ध बना उड़ा ले गया है । ”

“ भापा ! एक बात तो हुई है । तुम उसके विवाह पर खर्च करने से बच गए हो । ”

“ पर किशनो को इसका बहुत शोक है । ”

“ शोक तो मुझको भी है, परन्तु मेरी एक बुआ है और उसका कथन है कि भाग्य एव काल मनुष्य को खींचता हुआ मृत्यु की ओर ले जाता है । काल खींचता है और भाग्य मार्ग को रजित अथवा अरजित करता रहता है । ”

“ बकवास है । देखो, मैं यह समझना हूं कि यदि मैं उसका विवाह तुम्हारे पिता से मिलने के पूर्व कर देता तो ठीक था । किशनो ने भूल यह की कि वह एक रडी की लड़की को एक भले परिवार की लड़की की भांति विवाहना चाहती थी । मैं उसके लिए तुम्हारे माता-पिता को देखने चल पड़ा । यह तो अब समझ आया है कि वह तुमसे विवाह न हो सकने की बात सुन निराश हो किमी अन्य के साथ भाग गई है । एक बार यह विवाह हो जाता तो फिर यह घटना न घटती । ”

“ परन्तु भापा ! तुमने जान-बूझकर तो कुछ किया नहीं था । तुम तो उसके भले का ही विचार कर रहे थे । हुआ वही जो उसके भाग्य में था । कौन जाने यह सब उसके लिए ही हुआ है । ”

बनवारीलाल सिर लटकाए चला गया । बनवारीलाल का मन कहता था कि रूपकृष्ण मृत्यु बात नहीं बता रहा । जिस शान्ति और अलिप्तता में उसने बात की थी और इस घटना की मनोवैज्ञानिक

विवेचना करनी आरम्भ कर दी थी, इससे बनवारीलाल का विचार था कि रूप को उससे अधिक ज्ञात है जितना वह प्रकट कर रहा है। इसपर भी कुछ निश्चयात्मक बात नहीं जान सका।

उस दिन रूप मकान से फूफा गोवर्धनलाल के मकान पर जा पहुंचा। उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने गौरी से राजेश्वरी को घुल-मिलकर बातें करने देखा। आज वह कई दिनों के उपरान्त अपने फूफा से मिलने आया था। वह अपने कारोबार में लिप्त हो रहा था। अजमेरी गेट के बाहर उसने ब्राडर्थ रोड पर एक अन्य टूटा हुआ मकान मोल ले लिया था। उसकी रजिस्ट्री करवाने, टूटे के स्थान पर नया बनवाने की स्वीकृति में वह भाग-दौड़ कर रहा था। इसमें उसको बुआ तथा फूफा से मिलने का अवकाश नहीं मिला था। आज वह सायंकाल की चाय के समय पर पहुंचा था। उसका विचार था कि फूफा जी भी वहां मिलेंगे, परन्तु वे वहां नहीं थे। गौरी ने रूप को आया देखा तो कह दिया, “रूप ! बैठो। तुम्हारे फूफा आने ही वाले हैं।” वह बैठक में एक ओर बैठ गया। बैठक के दूसरे कोने में बैठी गौरी राजेश्वरी से बातें कर रही थी। रूप मन में विस्मय कर रहा था कि वह वहां किस अर्थ से आई है और क्या फुस-फुस बातें हो रही हैं।

अभी उनका वार्तालाप समाप्त नहीं हुआ था कि गोवर्धनलाल आ पहुंचा। “कहां गए थे आप ?”

“हमारा विधवा आश्रम वाले मकान को मोल ले लेने का निश्चय हुआ था। मैं उसके मालिक से बातचीत करने गया था। मकान का मूल्य तो तय हो गया है परन्तु उसका एक लडका है, और मकान पुरखों की सम्पत्ति में से है। इस कारण कुछ भगड़े वाली बात है। अब उसके लडके को मिलकर दस्तावेज पर हस्ताक्षर कराने का काम रह गया है।”

“कितने में सौदा हुआ है ?”

“दस हजार रुपये में।”

“तो फिर इसको नया बनवाइएगा ?”

“अभी निकट भविष्य में तो नहीं।”

“मैंने एक मकान ब्राडथ रोड पर बनवाने का निश्चय कर लिया है।”

“वह भी बेचने के लिए ही ?”

“जी।”

“तुम्हारा यह हौज काजी वाला मकान तो पूरा हो रहा है ?”

“जी ! उसके ग्राहक अभी आने लगे हैं।”

“भाड़े पर लेने वाले अथवा खरीदने वाले ?”

“दोनों प्रकार के ग्राहक हैं।”

“तो क्या विचार है ?”

“किराया तो लगभग दस-बारह प्रतिशत व्याज देगा। मकान बेचने में तो एकदम बीस से पचीस प्रतिशत लाभ है।”

“तो क्या विचार है ?”

“अभी निर्णय नहीं किया।”

“मेरा विचार है, मकान बेच दो। इसको व्यवसाय के रूप में करो। मकान बनवाकर बेचते जाओ। देखो, मैं तुमको एक बात बताता हूँ। भूषण कल मिला था और बता रहा था कि यूरोप में भयंकर युद्ध होने वाला है। उस युद्ध में इंग्लैंड भाग लेगा तथा इंग्लैंड हारेगा, इंग्लैंड का विरोधी पक्ष विजयी होगा। तब उसका विचार है हिन्दुस्तान स्वतन्त्र होगा। हिन्दुस्तान अपने पाव पर खड़ा नहीं हो सकेगा और इस जगह रूस जैसी व्यवस्था कायम होगी। उस समय मकान इत्यादि सब सम्पत्ति सरकार अपने अधीन कर लेगी। वह कह रहा था कि इस अवस्था में बहुत लम्बी-लम्बी जायदादे रह नहीं सकेगी।

“इसलिए मैं कहता हूँ नकद की बहुत महिमा होगी। नकद भी नोटों के रूप में नहीं, प्रत्युत सोने के रूप में।”

रूपकृष्ण को बात समझ आ रही थी। इतना तो वह भी समझ गया था कि रूस जैसी अर्थ-व्यवस्था में निजी सम्पत्ति नहीं रखी जा सकेगी और उसको फूफा के सुभाव का अर्थ यह समझ आया था कि सोने के रूप में धन चोरी से रखना होगा। उसे फूफा जैसे धर्मात्मा आदमी के मुख से यह बात सुन विस्मय हुआ था। इसमें उसने पूछ लिया, “तो यह विधि भी भूषण ने बताई है ?”

“कौन-सी विधि ?”

“यह सोने के रूप में सम्पत्ति रखने की।”

“नहीं। यह मेरी सम्पत्ति है।”

“पर फफा जी ! यह तो देश के साथ चोरी हो जाएगी।”

“देश के साथ नहीं रूख ! हां, सरकार के साथ अवश्य चोरी हो जाएगी। सरकार और देश में अन्तर समझने हो ?”

“परन्तु सरकार ही तो देश का बना-बुग करने वाली होती ?”

“देखो ! कुछ तो रूस के विषय में मैंने स्वयं समाचारपत्रों में पढ़ा है, कुछ भूषण से बताया है। यदि वैसी व्यवस्था यहां हुई तो वह सरकार देश का प्रतीक नहीं होगी।”

११

राजेश्वरी अब सातवें मास में जा रही थी और वह अपनी मां के घर में प्रसव हेतु गई हुई थी। यह पूर्व से भिन्न बात थी। पूर्व दो वच्चों के होने के समय वह अपनी सास की देख-रेख में रही थी। इस बार वह प्रसव से तीन मास पूर्व ही अपने पिता की कोठी में जाकर रहने लगी थी।

रूप को इसका ज्ञान तब हुआ जब वह अपने विवाह का निमंत्रण देने अपने सम्बन्धियों के पास जा रहा था। वह त्रिपणी बुआ और प्रतापकृष्ण को सपरिवार निमंत्रण देने पहुंचा तो दो बातों का पता चला। एक तो यह कि राजेश्वरी अपनी मां के घर प्रसव करने गई हुई थी। और दूसरे, भूषण अब घर नहीं आता। वह भी कदाचित् अपनी पत्नी के साथ वहां ही रहता है।

“कदाचित् का क्या अर्थ, बुआ ?”

“यह कि हमको ठीक-ठीक विदित नहीं। हमने सुना है कि वह कनाट प्लेस में एक भाड़े के मकान में रहता है और हमको वह यह कहता रहा है कि वह राजपुर रोड पर बैरिस्टर साहब के मकान पर रहता है। मैं पिछले सप्ताह राजेश्वरी से मिलने गई थी और मैंने भूषण के विषय में पूछा था। वह आंखों में आंसू भरती हुई चुप रही थी। उसने किसी प्रकार का उत्तर नहीं दिया।”

रूप ने कह दिया, “तो भाभी को निमंत्रण देने वहां जाऊं ?”

“कहो तो मैं भी जा सकती हूँ। परन्तु मेरा विचार है कि तुम ही जाओ, और यदि भूषण का ठीक-ठीक पता बता दे तो उसको भी आमंत्रित करने वहाँ चले जाओ और फिर पति-पत्नी में सुलह करवाने का यत्न कर दो।”

रूपकृष्ण बात इतनी बिगड़ जाएगी, अनुमान नहीं लगा सका था। वह भूषण के मस्तिष्क की बनावट में खराबी मानता था। अन्यथा एक डाक्टर की उपाधि से विभूषित व्यवित भला राजेश्वरी जैसी पत्नी से कैसे लड़ सकता है ?

वह राजपुरा रोड पर श्री रघुनाथसहाय की कोठी पर जा पहुँचा। वह अपने साथ बैरिस्टर साहब के लिए सपरिवार बरात में सम्मिलित होने का निमंत्रण लेकर गया था।

जब रूपकृष्ण वहाँ पहुँचा तो बैरिस्टर साहब वलब में जाने के लिए तैयार हो रहे थे। औपचारिक नमस्कार के उपरान्त रूपकृष्ण ने बैरिस्टर साहब के लिए निमंत्रण उन्हें दे दिया। बैरिस्टर साहब ने पढ़ा और निमंत्रण-पत्र के लिए शिवकुमार का नाम पढ़ पूछने लगा, “यह रूपकृष्ण कौन है ?”

“मैं हूँ।”

“ओह ! तुम्हारा शिवकुमार से क्या सम्बन्ध है ?”

“वे मेरे ताया जी हैं।”

“सगे ?”

“जी।”

“अच्छी बात है।”

“मेरा निवेदन है कि आप अवश्य आइएगा। आपके आने से तथा मेरी बरात में सम्मिलित होने से मैं अपने को बहुत ही सम्मानित समझूँगा।”

“क्या सम्मान होगा मेरे जाने से ?”

“इसका अनुमान आप नहीं लगा सकते। मैं, मेरे पिता तथा अन्य सम्बन्धी इसको ऐसा समझते हैं। इसके अतिरिक्त मेरे ससुर आपको मेरे साथ देखकर बहुत प्रसन्न होंगे।”

“किनके घर बरात जा रही है ?”

“ला० लक्ष्मीचन्द जी मिल वाले हैं। कब्रन रोड पर बरात जाएगी। बरात चढ़ेगी मिटो क्लब से।”

“परन्तु इतनी बड़ी मुर्गी को कैसे फांस लिया है तुमने ?”

“यह तो ईश्वर की दया से ही हो सका है। ईश्वर कसे अपने प्रिय-जनों को लाभ पहुंचाता है, कह नहीं सकते। इसपर भी यह निश्चय है कि जिसपर उसके आशीर्वाद का हाथ पहुंच जाता है, वह भवसागर पार कर जाता है।”

“लक्ष्मीचन्द को मैं जानता हूं। मेरे क्लब के सदस्य हैं और मुझसे भली भांति परिचित हैं। भाई, मैं चलागा। कम से कम दावत का मजा आ जाएगा।”

रूपकृष्ण ने हाथ जोड़ नमस्ते की ओर कहने लगा, “माता जी को भी साथ लाइएगा। राजेश्वरी भाभी को तो मैं स्वयं निमंत्रण देने आया हूं।”

राजेश्वरी का नाम सुन बैरिस्टर साहब गम्भीर हो गए, रूपकृष्ण समझ रहा था कि कुछ दाल में काला है इससे वह बैरिस्टर साहब के कथन की प्रतीक्षा करता रहा। उन्होंने विचारकर कहा, “अच्छी बात है, उससे मिल लो।”

रूपकृष्ण कोठी के चपरासी की ओर घूमा तो रघुनाथमहाय टैन्स का बल्ला घुमाते हुए मोटर की ओर चले गए।

चपरासी राजेश्वरी को बुलाकर लाया तो वह रूपकृष्ण को ड्राइंग रूम में ले गई। वहां बैठ उसने चाय-पानी के लिए पूछ लिया। रूपकृष्ण ने बताया कि वह घरसे चाय पीकर ही चला है। इसपर श्रीमती तथा श्रीमान भूषणकुमार के लिए अपने विवाह का निमंत्रण देकर कहने लगा, “मैं तो स्वयं आपको आमंत्रित करने आया हूं।”

“बहुत-बहुत बधाई है रूप जी ! आखिर आपको भी कोई मिल गई है !”

“हां भाभी। बड़ों के आशीर्वाद से मेरा भी घर बनने जा रहा है। भाभी, उनको मेरी ओर से विनम्र निवेदन कर देना कि अवश्य आएँ।”

“किनको ?”

“राजकुमार के पिता को। और किसको !”

“यहां कहां हैं वे । उनके दर्शन किए आज तीन मास हो गए हैं ।”

“सत्य ? तो कहां हैं वे ?”

“मैं उनकी चौकीदारी नहीं करती ।”

रूपकृष्ण विस्मय में मुख देखता रह गया । उक्त वाक्य में मन की अति कटुता प्रकट होती थी । रूप ने राजेश्वरी के मुख पर देखा तो उसकी आंखें आंसुओं से भर गई थीं । उसने अपने साड़ी के आंचल से आंखों को पोंछते हुए कहा, “रूप भैया ! अब तुम समझ सकते हो कि मैं आ नहीं सकूंगी ।”

“क्यों ?”

“यह निमंत्रण दोनों का है । और मैं यहां अकेली रहती हूं, और नहीं जानती कि वे कहां हैं ।”

“तो भाभी ! तुम तो आना । तुम यह समझ लेना कि वे कहीं विदेश गए हैं, इस कारण तुम अकेली आ रही हो ।”

“तो उनको आमंत्रित करने नहीं जा रहे हो ?”

“उसको ढूँढ़ा और कहीं मिल गया तो निमंत्रण-पत्र का उल्लेख कर दूंगा कि वह यहां भाभी के पाम रखा है । मैं कल कालेज पहुंच कह दूंगा । इसपर भी यदि वह नहीं आया तो यही समझ लूंगा कि वह कहीं विदेश में है । पर भाभी, तुम तो यहां हो । तुमको आना चाहिए ।”

“मैं आ सकती हूं । परन्तु कहीं वे भी आ गए तो वे नाराज भी हो सकते हैं ।”

“किसे ? तुमसे अथवा हमसे ?”

“यदि कोई नौर्मल (सामान्य) प्रकृति का व्यवित हो तो उसके विषय में अनुमान लगाया जा सकता है कि वह अमुक परिस्थिति में क्या करेगा और क्या नहीं करेगा । वे सामान्य आचार-विचार नहीं रखते । इससे कौन कह सकता है कि वे किससे लड़ेंगे अथवा नहीं लड़ेंगे ?”

“तो भाभी, सुन लो । मैं तो अपने को सामान्य स्वभाव वाला समझता हूं । इस कारण मैं बताता हूं कि उसके भगड़े की प्रतिक्रिया मेरे मन में क्या होगी । यदि वह तुमसे भगड़ा करेगा तो उसको धक्के दे-देकर बाहर निकलवा दूंगा । और यदि मुझसे या घरवालों से भगड़ा करेगा तो उसकी वह खिल्ली उड़ाऊंगा कि वह अपने-आप ही वहां से भाग जाएगा ।”

“इसपर भी रूप जी ! चित्त डरता है। मेरे लिए भाई-भाई लड़ पड़ें, कुछ अच्छी बात प्रतीत नहीं होती।”

“भाभी ! तुमको डरने की आवश्यकता नहीं। उसने एक खराबी की है और उसको उस खराबी के प्रकट होने से डरना चाहिए।”

“अच्छा, ऐसा करना। अपनी बुआ को कह देना कि वे मुझको आकर ले जाएं।”

“कह दगा। वे आ जाएंगी।”

रूप यही निमन्त्रण-पत्र काहन और उसकी पत्नी को भी देने गया। काहन की पत्नी रूप की मौसी थी। इससे उमका वहां आना-जाना बना था। हंसी-ठट्टे में रूप काहन को मौसा जी के नाम से सम्बोधन किया करता था और वह इसको बेटा जी कहकर स्मरण किया करता था। अतः जब रूप उमके क्वार्टर में पहुंचा और काहन ने उसको टैक्सी से उतर क्वार्टर में आते देखा तो बाहर आ उमका स्वागत करने लगा।

“आओ रूप बेटा ! कैसे आना हुआ है ?”

“मौसा जी। आप और मौसी के आशीर्वाद की आवश्यकता पड़ गई है।”

“आशीर्वाद की ? तो कुछ माहम का काम करने जा रहे हो ?”

“हां ! विवाह करने।”

“ओह ! आओ ! आओ बेटा रूप !” काहन हंसता हुआ उसको भीतर ले गया। उसको क्वार्टर की बैठक में बैठाकर काहन ने अपनी पत्नी को आवाज दे दी। “दुर्गरानी ! बाहर तुम्हारा भांजा आया है।”

दुर्गा ने रूप की आवाज सुन ली थी। वह पिछले कमरे में वस्त्र बदल रही थी और स्वयं ही बाहर आने वाली थी। वह आई तो उसने रूप को नमस्कार कर पूछ लिया, ‘रूप जी ! विवाह की तिथि निश्चय हो गई है क्या ?’

“हां दुर्गा जी ! उसीके सम्बन्ध में आया हूं।” रूप ने निमन्त्रण-पत्र सम्मुख रखते हुए कहा, “यह देने को ही आया हूं।”

“कल बहिन रोहिणी आई थी और कह रही थी कि तुम स्वयं आओगे।”

“दुर्गा जी ! आप तो उस दिन प्रातःकाल ही घर पर आ जाना।

काहन भापा तो बरात के समय मिटो क्लब में आ जाएंगे। तुम माता जी के साथ यहां आ सकोगी ?”

“मैं यह विचार करती हूं कि यदि हम सब घर की ओरतें वहां एकत्रित हो गईं तो तुम्हारे घर में बैठने को जगह भी नहीं होगी।”

“दुर्गा मौसी ! और किसीके लिए जगह हो चाहे न हो, पर तुम्हारे लिए तो होगी। तुम मां की छोटी बहिन हो न ? तुम आना। वैसे मैंने अपने पड़ोसियों का मकान खाली करवा लिया है। आप सबके बैठने तथा सोने की भी व्यवस्था होगी। घर की ओरतें वहां आएंगी और पुरुषवर्ग सीधे क्लब में आएंगे। ठीक साढ़े छः बजे बरात चढ़ेगी और सात बजे कर्जन रोड पर पहुंचेगी।”

“राजेश्वरी बहिन आएंगी क्या ?”

“हां ! पर किसलिए पृच्छ रही हो ?”

“वैसे ही। भूपण ने उमसे दगा किया है न ?”

“क्या दगा किया है ?”

“तो तुमको ज्ञात नहीं ?”

“बस इतना ही विदित है कि वह तीन मास से घर नहीं गया।”

“उसने अपना नया विवाह कर लिया है।”

“अच्छा ! कहां रहता है वह ?”

“कनाट सरकम में, फायर ब्रिगेड के सामने एक फ्लैट पर रहता है।”

“क्या नम्बर है मकान का ?”

“११०/६ है।”

“तो आपसे वह मिलता रहता है ?”

“यहां तो वह आ नहीं सकता। हां, इनसे वह मिलता रहता है। उसकी नवीन पत्नी तो यहां आना चाहती है, परन्तु इन्होंने उसको कभी निमन्त्रण नहीं दिया। वे प्रायः सायंकाल कनाट प्लेस के पार्क में घूमते मिल जाते हैं।”

“मैं उसको भी आमन्त्रित करने के लिए जाना चाहता हूं। हां ! देखो, वह आता है या नहीं।”

“तो उसकी नवीन पत्नी को भी निमन्त्रण दोगे ?”

“यदि विधिवत् विवाह हो गया है तो देना ही पड़ेगा ।

“विधिवत् का क्या अर्थ ?”

“हिन्दू रीति से अथवा कचहरी में जाकर ।”

इसपर काहन ने कह दिया, “हिन्दू रीति-रिवाज से तो हुआ नहीं । घर में किसीको भी बुलाया नहीं गया और कोर्ट में हो सकता नहीं । पहली पत्नी के रहते तो उस विधि से विवाह हो सकता नहीं ।”

“तब तो समस्या विकट है । इसपर भी मैं उममे मिलने जा रहा हूँ ।”

१२

रूपकृष्ण भूषण के मकान का नम्बर ढ़टना हुआ वहां पहुंचा तो वह अपनी पत्नी के साथ मकान से उतरता दिखाई पड़ गया । वह भूषण की पत्नी को देख स्तब्ध खड़ा रह गया । भूषण की पत्नी किशनो की लड़की सुमित्रा ने भी रूप को सीढ़ियों के नीचे खड़े देखा तो ठिठककर खड़ी रह गई । भूषण आगे-आगे उतर रहा था । वह उतरता चला आया । जब तक वह सीढ़ियां उतर भूमि पर पहुंचा, रूप अपने-आपको मतर्क कर चुका था ।

“भूषण भापा ! मैं तुमसे मिलने आया हूँ परन्तु...”

सुमित्रा अभी भी दीवार का आश्रय लिए खड़ी थी । इस समय तक भूषण को भी ज्ञान हो गया था कि उसकी पत्नी उसके साथ नहीं, पीछे ही रह गई है । इस समय दोनों सीढ़ियों के ऊपर की ओर जहां सुमित्रा खड़ी थी, देख रहे थे, “सुमित्रा ! आओ न !” भूषण ने आवाज दे दी ।

सुमित्रा को भी विदित हो गया था कि रूप और उसका पति परस्पर परिचित हैं । इस कारण उसने वहीं सीढ़ियों में बैठते हुए कहा, “मेरी तबीयत ठीक नहीं । मैं आज नहीं आऊंगी ।”

भूषण सीढ़ियों पर वापस चढ़ गया । रूप उसके पीछे-पीछे था । दोनों सुमित्रा के समीप जाकर खड़े हुए तो भूषण ने सुमित्रा का परिचय करा दिया, “रूप ! यह मेरी दूसरी पत्नी सुमित्रादेवी है ।”

“ओह ! ठीक है । समझ गया कुछ कष्ट है सुमित्रा ? यहां क्यों बैठ गई हो ?”

भूषण को कुछ समझ आया कि रूप सुमित्रा से जान-पहचान रखता

है। सुमित्रा का मुख पीतवर्ण हो रहा था। उसने बहुत ही धीमी आवाज में कहा, “हम सैर करने जा रहे थे परन्तु मुझको कुछ हो गया है। कह नहीं सकती कि क्या हुआ है। टांगों में बिलकुल ताकत नहीं है।”

भूषण ने कह दिया, “तो ठीक है। चलो लौट चलो। ऊपर चलकर आराम करो। रूपकृष्ण मेरा भाई है। मामा का लड़का है। आओ !” भूषण ने आश्रय देने के लिए हाथ बढ़ा दिया।

सुमित्रा ने बांह का आश्रय लिया। वह उठी और धीरे-धीरे ऊपर को चल पड़ी। रूप उसके पीछे-पीछे था। वह सुमित्रा के घर से भाग आने के विषय में भारी चिन्ता अनुभव करने लगा था।

जब घर की बैठक में जाकर बैठे तो रूप ने भूषण से कहा, “भैया ! विवाह किया है अथवा नहीं ?”

“हमारा नैचुरल ढंग से विवाह हो चुका है।”

“विवाह तो नैचुरल होता ही नहीं। विवाह की विधि तो कृत्रिम है। नैचुरल तो समागम होता है। इसपर भी विवाह का विधिवत् होना समाज ने नियत किया है।”

“मैं इसमें समाज के हस्तक्षेप को अनधिकार मानता हूं।”

“भूषण भैया ! तुम तो समाजवादी थे। तुमसे ही समाज की अवहेलना तो समझ नहीं आ रही।”

“तुम हमारी बात छोड़ो। बताओ, कहां से पता पा गए हो मेरा ?”

“राजपुरा रोड पर मैं अपने विवाह का निमन्त्रण देने गया था। निमन्त्रण-पत्र दे आया हूं। मैं तुमको और तुम्हारी पत्नी को बरात में सम्मिलित होने के लिए कह आया हूं। यह तो काहन से मालूम हुआ है कि तुम यहां रहते हो। मन में विचार आया कि तुमको कह दूं कि तुम्हारा निमन्त्रण-पत्र राजपुरा रोड पर रखा है। परन्तु यहां तो सुमित्रा को देख चकित ही रह गया हूं।”

“वहां निमन्त्रण-पत्र किसको दे आए हो ?”

“राजेश्वरी भाभी को।”

“वह मिली थी ?”

“हां।”

“कुछ कहती थी ?”

“यही कि जब तुम घर पर आओगे तो मेरा सन्देश तुमको दे दिया जाएगा ।”

“तो उसने यह नहीं बताया कि मैं अब उस घर में नहीं जाता ?”

“उसको कदाचित् तुम्हारे इस घर का और सुमित्रा के यहां होने का ज्ञान नहीं । इस विषय में उसने कुछ नहीं बताया ।”

भूषण गम्भीर हो मुख देखता रह गया । वह विचार कर रहा था कि क्या कहे । एकाएक उसके मन में एक विचार आया । उसने रूप से पूछ लिया, “अच्छा रूप ! अब तो तुम सब बातें जान गए हो । यदि तुम मुझको अपने विवाह पर बुलाना चाहते हो, तो मुझको मेरी नई पत्नी-सहित पृथक् निमंत्रण दे दो । राजेश्वरी वाला निमंत्रण तो न मुझको मिलेगा और न ही मैं लेने जाऊंगा ।”

“भूषण भापा ! तुमको तो मैं निमंत्रण दे सकता हूं, परन्तु सुमित्रा को कैसे दू ! तुम्हारा इससे विवाह तो हुआ नहीं ।”

“तुम इसको विवाह नहीं मानते परन्तु मैं तो विवाह मानता हूं ।”

“तुम मान सकते नहीं । सुमित्रा अभी अल्पवयस्क है । उसके माता-पिता की स्वीकृति प्राप्त कर ली है क्या ?”

“हां । बहुत भगड़ा करना पड़ा है । परन्तु वे मान गए हैं ।”

“पता करूंगा ।”

“तुम इसको कैसे जानते हो ?”

“मैं इसके माता-पिता को जानता हूं । जिस दिन तुम इसको घर से भगाकर लाए थे, लाला बनवारीलाल मुझसे मालूम करने आया था । इसीसे पूछ रहा हूं कि उनकी स्वीकृति ली है अथवा नहीं ?”

“इसकी मां यहां आकर रहना चाहती थी । परन्तु सुमित्रा ने पसन्द नहीं किया । आखिर वह मान गई है । अब वह कभी-कभी मिलने ही आती है ।”

“इस समय मेरे पास छपे निमंत्रण-पत्र तो हैं नहीं, मौखिक रूप में तुम दोनों को आमंत्रित करता हूं । सुमित्रा भाभी ! तुम निस्संकोच आ सकती हो । बरात मिटो क्लब से साढ़े छः बजे चलेगी ।”

‘हम आएंगे रूप ! तुम्हारी पत्नी के लिए कुछ भेंट भी लाएंगे ।’

“तो उसका धन्यवाद मेरी पत्नी देगी ।”

“बरात कहां जाएगी ?”

“कर्जन रोड, लाला लक्ष्मीचन्द की कोठी पर।”

“किनकी लड़की है ?”

“लाला जी की अपनी लड़की है।”

“क्या विशेषता देखी है लाला जी ने तुममें ?”

“यह तो देखने वाले ही बता सकते हैं। हां, एक बात हुई है। बड़ी मां इनके घर गई थीं और बाबा का नाम जादू कर गया प्रतीत होता है।”

“पर अपने बाबा के साथ तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ? कहीं झूठ-मूठ बताकर चार सौ बीसी तो नहीं कर रहे ?”

“नहीं भूषण। मेरे स्वसुर मुझको देखने आए थे और फिर अपनी मोटर में बैठा मुझको अपनी कोठी में ले गए थे। मैंने स्वयं उनको अपनी आर्थिक स्थिति बता दी थी। वे कहने लगे, ‘सुलक्षणमल के पोते हो, और व्यापार में लगे हुए हो। यदि अपने बाबा की व्यावसायिक प्रतिभा का एक अंश भी तुम्हारे में हुआ तो भविष्य उज्ज्वल है।’

“मैंने बताया, ‘अजमेरी गेट के मकान पर मैंने साढ़े दस हजार व्यय किया और बीस हजार पर बेच दिया है।’

“वे पूछने लगे, ‘कितने महीने में काम समाप्त किया है ?’

“‘पांच महीने में।’

“ठीक है। मतलब हुआ कि तुम अभी भी डेढ़ हजार रुपये से अधिक प्रति मास पैदा कर सकते हो।’

“मैंने बताया कि ब्राडर्थ रोड पर एक और मकान बनवा रहा हूं। वह भी बेचने के लिए है।

“मेरे इस प्रकार बताने पर उन्होंने मुझको उसी दिन पांच मुहरें देकर बात पक्की कर दी। बातों ही बातों में उन्होंने कह दिया, ‘व्यापार तीन टांगों पर चलता है—एक पूंजी, दूसरे व्यावसायिक बुद्धि और तीसरे काल।’”

“मेरे में दो बातें तो हैं। तीसरी को एकत्रित कर रहा हूं।”

भूषण ने पूछ लिया, “क्या है और क्या एकत्रित कर रहे हो ?”

“व्यावसायिक बुद्धि तो है। काल के मूल्य का ज्ञान भी है और पूंजी

थाड़ी है। शेष एकत्रित कर रहा हूँ।”

रूप गया तो भूषण ने सुमित्रा से पूछ लिया, “तुम इसको देख घबरा क्यों गई थीं ?”

“मेरी इनसे सगाई हो चुकी थी, फिर न जाने क्या हुआ कि विवाह होने में ही न आया। जब आपसे सम्पर्क बना तो मैं राज़ी नहीं होती थी। कारण यही था कि मुझको विदित था कि इनसे विवाह होगा। भागने से एक दिन पूर्व मैंने मां से पूछा था कि इनसे विवाह होगा अथवा नहीं। मां ने बताया कि बात टूट चुकी है तो मैंने आपके साथ भाग जाने का कार्यक्रम बना लिया।”

“तो तुमने रूपकृष्ण को देखा था ?”

“ये कभी-कभी हमारे घर आया करते थे। एक बार जब बात पक्की हो चुकी थी, तो इन्होंने मुझको एक सौ रुपया भी दिया था। एक बार यह सूचना मिली थी कि ये मेरे नाम पचास हजार की सम्पत्ति करने वाले हैं। स्वाभाविक रूप में मेरे मन में इनके लिए आदर था।”

“परन्तु इसके पास पचास हजार कहां से आया ? इसका पिता दो सौ रुपये महीने का नौकर है। यह बेकार धूमता था। अब यहां चोरोں वाला व्यापार करने लगा है।”

“परन्तु इसको श्वसुर तो बहुत बड़े आदमी मिल गए हैं। सेठ लक्ष्मीचन्द तो एक विख्यात व्यक्ति हैं।”

“इन्होंने अवश्य चार सौ बीस खेली है। पीछे जब भेद खुलेगा तो बहुत भगड़ा होगा। सम्भव है कि पति-पत्नी पृथक्-पृथक् हो जाएं।”

“परन्तु चार सौ बीस तो आपने भी खेली है।”

“मैंने ? भला कैसे ?”

“मैं स्मरण कराती हूँ। आप एक दिन करौलबाग में बाईसिकल पर जा रहे थे। मैं अपनी मां के साथ तांगे में बैठी घर को जा रही थी। आपकी दृष्टि मुझपर पड़ी और आप हमारे तांगे के पीछे-पीछे हमारे घर तक आए। इस घटना के कई दिन उपरान्त आपने हमारा दरवाजा खटखटाया। मैंने झाँककर देखा तो आपने कह दिया, ‘बनवारीलाल के नाम एक सरकारी चिट्ठी है।’ मैं लेने आई तो आप मुझपर डोरे डालने लगे। मां घर पर नहीं थी, इस कारण मेरे मन में भी आपके प्रति

संवेदना उत्पन्न होने लगी, मैं उस सरकारी चिट्ठी के लोभ में बातें सुनती रही ।

“ आप जाते समय मुझको ये कर्णफूल, जो आज भी मुझको बहुत ही भले प्रतीत होते हैं, भेंट में दे गए ।

“ बताइए यह चार सौ बीस वाली बात नहीं थी क्या ? वह सरकारी चिट्ठी अभी तक भी आपने नहीं दिखाई । ”

भूषण हंस पड़ा । हंसते हुए उसने कहा, “तुम अब प्रसन्न हो अथवा नहीं ?”

“वह तो सब लड़कियां अपने पति के घर जाकर हो जाती हैं । इसपर मैं समझती हूं कि आपके मामा के लड़के आपसे अधिक सुन्दर और बलिष्ठ दिखाई देते हैं ।”

भूषण के मन में एक सन्देह उत्पन्न हो गया । वह मन में विचार करने लगा था कि सुमित्रा की कितनी घनिष्ठता रूप के साथ रही होगी । उसके मन में उठ रहे संशय का सुमित्रा और रूप दोनों के मुख पर परस्पर देखने पर घबराहट से समर्थन होता था । इसपर भी वह अपने मन के संशय को प्रकट करने से डरता था ।

जिस दिन सुमित्रा के अपनी मां को पृथक् समझाने के पश्चात् किशानो भूषण को दामाद के रूप में स्वीकार कर बैठी थी, उसने भूषण को एक चेतावनी दी थी । उसने कहा था, “ठीक है । मैं तुमको दामाद के रूप में स्वीकार करती हूं, परन्तु स्मरण रखना कि यदि तुमने इस लड़की को धोखा दिया तो मेरे हाथ बहुत लम्बे हैं । तुम इस संसार में जीवित रह नहीं सकते ।”

इससे भूषण सुमित्रा को कुछ कह नहीं सका । इसपर भी रूप के साथ इसका सम्बन्ध एक जांच का विषय बन गया ।

उसने पूछ लिया, “चलोगी रूप के विवाह पर ?”

“यदि आपको मुझे अपने सम्बन्धियों से मिलाना है तो इससे अच्छा अवसर मिलना कठिन है ।”

“ठीक है । तैयार हो जाओ । एक बात के लिए तैयार रहना चाहिए, मेरे सम्बन्धी कदाचित् तुमको अभी वह मान-प्रतिष्ठा न दें जो देनी चाहिए, तुमको कुछ धीरज और संतोष से काम लेना पड़ेगा ।”

“आप चिन्ता न करिए। मैं आपकी पहली पत्नी से ही मित्रता बना लूंगी। तब तो सब प्रसन्न हो जाएंगे ?”

“देखो। राजेश्वरी के पिता बैरिस्टर हैं, बहुत छंटे हुए दुनियादार हैं। वे सब प्रकार के अड़ंगे लगाएंगे।”

“आखिर एक दिन यह सब कुछ होना है। जितना शीघ्र हो जाए ठीक है।”

दूसरे दिन भूषण को एक निमंत्रण-पत्र डाक के द्वारा मिल गया। उसपर लिखा था—मिस्टर भूषण एम० ए०, पी-एच० डी० तथा सुमित्रादेवी।

भूषण निमन्त्रण-पत्र पर नाम पढ़ हंस पड़ा। उसने सुमित्रा को बताया, “रूप ने अभी तुमको मेरी पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं किया।”

“जब आपकी पहली पत्नी स्वीकार कर लेगी तो फिर कोई भी आपत्ति नहीं कर सकेगा।”

भूषण समझता था कि सुमित्रा उससे अधिक व्यावहारिक बुद्धि रखती है।

१३

बरात साढ़े छः बजे चलनी थी और पूजा पाँने छः बजे ही आरम्भ हो गई थी। सब सम्बन्धी पहले ही आ चुके थे। राम अति प्रसन्न था। रूप का सम्बन्ध दिल्ली के कुछ चोटी के धनियों में से एक के साथ हो रहा था।

रूप ने भूषण के नये विवाह के विषय में घर के सब मुख्य-मुख्य व्यक्तियों को बता रखा था। राम को यह सम्बन्ध बिलकुल पसन्द नहीं था। इसपर भी वह इसमें स्वेच्छा से कुछ कहना नहीं चाहता था। राजेश्वरी को भी सब बात विदित थी और वह अपने पति से ठंडे दिल से मिलने के लिए तैयार होकर आई थी।

भूषण जान-बूझकर बरात के समय से पन्द्रह मिनट पूर्व पहुँचा था। पूजा समाप्त हो चुकी थी और रूप दूल्हा के लिए सजाई गई मोटरगाड़ी में बैठ चुका था। रूप के साथ उसकी मां बैठी थी। सबसे बड़ी बहिन कृपा भी थी। कृपा का विवाह हो चुका था।

राजेश्वरी अपने पिता की मोटर में बैठ बरात में जाने वाली थी । वह उस मोटर की ओर जा रही थी कि भूषण सुमित्रा के साथ सामने आ खड़ा हुआ । राजेश्वरी ने हाथ जोड़ नमस्कार किया तो सुमित्रा ने हाथ जोड़ दिए । राजेश्वरी उसकी अवहेलना करना चाहती थी, मानो वह उसका जानती ही नहीं । वह अपने पति को नमस्कार कर अपने पिता की ओर चल पड़ी । उसके पिता तथा माता मोटर के पास खड़े उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे । इस समय भूषण ने कह दिया, “राजेश्वरी ! मैं इनका परिचय कराने के लिए आया हूँ ।”

राजेश्वरी जाते-जाते खड़ी हो गई । भूषण ने परिचय करा दिया । “यह है श्रीमती सुमित्रादेवी, मेरी दूसरी पत्नी ; और सुमित्रा ! ये हैं श्रीमती राजेश्वरी जी, मेरी पहली पत्नी ।”

इसपर सुमित्रा ने मुस्कराते हुए राजेश्वरी से कहा, “आपकी छोटी बहिन हूँ, कृपा की पात्रा हूँ ।”

“यह तो देखना है ।” राजेश्वरी ने सतर्कता से उत्तर दिया ।

परन्तु सुमित्रा कम सतर्क नहीं थी । “परीक्षा के लिए उपस्थित हूँ ।”

“परीक्षा का समय नहीं आया । समय पर सब पता चल जाएगा । पानी का पानी और दूध का दूध हो जाएगा ।”

“तो परीक्षा के लिए उपस्थित होने की स्वीकृति दीजिए । बहिन जी ! यदि कुछ नम्बर कम रह गए तो ग्रेस मार्क्स (रियायती अंक) देकर तो पास कर ही देना चाहिए ।”

इस प्रकार की वार्तालाप में सतर्कता पर राजेश्वरी मुस्कराई और फिर अपने पिता की ओर चल दी ।

रघुनाथसहाय ने भी भूषण को एक लड़की के साथ देखा था । उसने राजेश्वरी से पूछ लिया, “यह भूषण के साथ कौन लड़की है ।”

“यह उनकी नई बीवी है ।”

“नई बीवी ? तो तुमने उसको दो-तीन सुनाई क्यों नहीं ?”

“क्या होता सुनाने से ?”

“उसको धक्के दे-देकर यहां से निकलवा देता ।”

“रूप ने मुझको कहा था कियदि इन्होंने किसी प्रकार की असभ्यता

का व्यवहार किया तो उसके सम्बन्धी मेरा पक्ष लेंगे। यदि मैं कुछ भी अपनी ओर से भगड़ा करती तो फिर वे क्या करते, आप समझ सकते हैं।”

“मैं समझता हूँ कि हमको घर लौट जाना चाहिए।”

“क्यों?”

“मैं तुमको अपमानित किया गया समझ रहा हूँ।”

“मेरा इससे क्या सम्बन्ध है?”

“वह तुम्हारा पति छीनकर ले गई है।”

“पति पर पत्नी का एकाधिकार मानते हैं आप?”

बैरिस्टर साहब को समझ आ गया कि यह हिन्दुस्तान है और यह हिन्दू समाज है। इसमें पति एक से अधिक विवाह कर सकता है।

बैरिस्टर साहब ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कह दिया, “यह तो समाज का अन्याय है और मेरा मन इससे विद्रोह कर रहा है।”

“ठीक है। विद्रोह का उद्देश्य भी तो होना चाहिए।”

“उद्देश्य तो है ही। मैं समाज में से पतितों की इस उच्छृंखलता को निर्मूल करना चाहता हूँ।”

“कैसे करिएगा?”

पहले तो आज ही इस बरात को छोड़कर वापस लौटना चाहता हूँ। इसके अनन्तर ला० लक्ष्मीचन्द द्वारा इस परिवार पर दबाव डालकर इस लड़की को निकलवाऊंगा। तीसरे हिन्दू समाज में एक पत्नी के रहते दूसरे विवाह को वर्जित कराने का आन्दोलन खड़ा कर दूंगा।”

“तो अभी तो वापस लौटने की बात है न?”

“हां।”

“तो लौट जाइए। मैं किसी अन्य मोटर में चली जाऊंगी।”

“तो तुम साथ नहीं लौटोगी?”

“नहीं। मैं अपने ससुराल वालों के सहयोग से अपनी समस्या सुलझाना चाहती हूँ। उनका उपाय दूसरा है।”

“तो उनसे बात हो चुकी है?”

“जी। इनकी एक मौसी है। नाम है गौरी। घर की सब प्रकार की समस्याओं का समाधान उनकी राय से ही किया जाता है। वे कल

मुझको कोठी में मिली थीं और उन्होंने मुझको बताया है कि ठीक ढंग से की हुई तपस्या ही फल लाती है। भगड़ा, आन्दोलन और बहिष्कार तो तपस्या नहीं होते, ये तो उत्तेजनात्मक कार्य होते हैं। इनका प्रभाव विनाशकारी होता है और तपस्या सदा निर्माणात्मक होती है।”

“तो क्या तपस्या बताई है उन्होंने ?”

“मौसी का कथन है कि विवाह के उपरान्त इमपर विचार करेंगे। इस विवाह की बात सबको एक-दो दिन हुए ही ज्ञात हुई है।”

रघुनाथसहाय गम्भीर हो गए। उनको गौरी की बात ठीक प्रकार से समझ नहीं आई। अतएव वे अपनी पत्नी, राजेश्वरी की मां, की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगे। राजेश्वरी की मां ने कह दिया, “बिटिया ठीक कहती है। हमको इस निषय में हस्तक्षेप किए बिना इसकी इच्छानुसार सहायता के लिए तैयार रहना चाहिए।”

रघुनाथसहाय चुप रहे और वे बरात में सम्मिलित हो गए। भूषण को राम ने एक टैक्सी में बैठा दिया। उसके साथ गौरी और गोवर्धन-लाल को बैठा दिया। प्रत्येक टैक्सी में चार-चार सवारी बैठाई जा रही थीं।

जब गौरी सुमित्रा के पास बैठ गई तो भूषण ने सुमित्रा का परिचय करा दिया, “मौसी ! यह है सुमित्रादेवी।”

“समझ गई हूं।” गौरी ने कह दिया, “तुम्हारी नई बहू। क्यों बहू ! क्या गुण देखा है तुमने इस लड़के में ? मैंने सुना है कि तुम इसके साथ मां के घर से भाग आई थीं ?”

सुमित्रा बात इस प्रकार आरम्भ होने की आशा नहीं करती थी। इसपर भी उत्तर देने में वह तेज थी। उसने कह दिया, “जो लड़कियां लड़कों में देखती हैं, किसीके माता-पिता देख लेते हैं। मेरे माता-पिता देख नहीं सके। अतः मुझको स्वयं देखना पड़ गया है।”

अतः माता-पिता के शीघ्र वर न ढूढ़ सकने पर अधीर हो गई थीं ? परन्तु मैं तो कह रही हूं कि तुम्हारा चुनाव ठीक नहीं हुआ।”

“क्या दोष पाती हैं आप इनमें ?” सुमित्रा का पुनः सतर्क प्रश्न था।

“यह मूर्ख है। यह तर्क करना नहीं जानता, इससे यह अपना बुरा-

भला पहचान नहीं सकता । मनुष्य का इस संसार में सबसे बड़ा आश्रय हरि है । हरि जो सबके दुःख और क्लेश हरता है । इसका उसपर विश्वास नहीं, यह कृतघ्न है । इस कारण यह किसीके किए का प्रतिकार नहीं दे सकता....।”

बात बीच में ही काटकर भूषण ने कहा, “मेरे मुख पर ही निन्दा कर रही हो मौसी ?”

“जो बात मुख पर कही जाए वह निन्दा नहीं होती, वह आलोचना मानी जाती है । निन्दा पीठ-पीछे कही बात को कहते हैं । भूषण ! राजेश्वरी ने अपने जीवन का पूर्ण वृत्तान्त मुझको बताया है और एक ब्राह्मण की कन्या को तुमने किसी प्रकार मोह-जाल में फंसाया था, सब कुछ मुझको विदित है । उसके आधार पर तुम्हारे ये गुणानुवाद कर रही हूँ ।”

भूषण समझ गया कि मौसी के साथ यदि वह विवाद में पड़ गया तो अपनी पत्नी के सम्मुख कुछ अन्य कटु बातें प्रकट हो सकती हैं । इससे उसने कह दिया, “मौसी, तुम बड़ी हो । तुम गाली भी दोगी तो आशीर्वाद ही हो जाएगी । इसलिए मैं बैठा हूँ । जो मन में आए कह लो ।”

“सुमित्रा ! तुम सुखी हो ?”

“हां मौसी । अभी तक तो कोई कारण दिखाई नहीं दिया है मुझको इनसे असन्तुष्ट होने का ।”

“भगवान करे कि तुम सदा सुखी रहो ।”

अब सुमित्रा ने अपनी चतुराई का परिचय दे दिया । उसने कह दिया, “मौसी ! कभी आप जैसे वृद्धजनों से शिक्षा लेने के लिए अवसर मिल सके तो आपका आशीर्वाद फलेगा ।”

“मैं घर पर मध्याह्न दो बजे से सायंकाल तक रहती हूँ ।”

“परन्तु आपका घर कैसे दूँडूंगी और फिर ये घर से अकेली निकलने नहीं देते ।”

“भूषण मेरे घर का मार्ग जानता है । सुना है, इसको तीन बजे काम से छुट्टी मिल जाती है ।”

इस समय भूषण ने बात बदल दी । उसने सुमित्रा से कह दिया,

“सुमित्रा ! ये हैं मौसा जा । इनका नाम है श्रीयुत गोवर्धनलाल जी ।”

सुमित्रा ने हाथ जोड़ दिए । बरात चल रही थी । गौरी ने रूप की सगाई की बात बता दी । उसने कहा, “लाला लक्ष्मीचन्द के घर मां गई थीं और उनके कहने से समझो अथवा पिता जी के दान-दक्षिणा की ख्याति के कारण समझो, अथवा हमने तीन ट्रस्ट बनाए हैं उनके कल्याणकारी प्रभाव के कारण समझो, लक्ष्मीचन्द के मन पर बहुत प्रभाव हुआ और वह दूसरे दिन ही रूप को मिला, उसको अपने घर ले गया । सब परिवार वालों ने देखा और पसन्द कर लिया । बहुत भाग्यशाली है रूप !”

“मौसी ? लड़की कैसी है ।”

“पढ़ी-लिखी है । घर पर हिन्दी और संस्कृत पढ़ी है, सीनियर कैम्ब्रिज की परीक्षा पास की है । सुना है, सितार अच्छा बजा लेती है ।”

“मौसी, मैं यह नहीं पूछ रहा । मैं उसकी रूपरेखा की बात पूछ रहा हूँ ।”

“रूपरेखा ? साधारण है ।” गौरी ने टैक्सी के साथ-साथ चल रहे गैस के हंडे के प्रकाश में सुमित्रा की ओर देखकर कह दिया, “तुम्हारी इस बहू के साथ तो किमी अंश में भी तुलना नहीं रखती । राजेश्वरी से भी बहुत साधारण है ।”

“तो रूप को यह बताया है आपने ?”

“हां । और उसने अस्वीकार नहीं किया ।”

“धन के लोभ में मान गया है । मौसी ! यह विवाह स्थिर नहीं रहेगा । और यदि रूप की बहू में धनी बाप की बेटी होने का कुछ भी अभिमान विद्यमान हुआ तो यह विवाह एक वर्ष भी नहीं चलेगा ।”

“यह सब अपने-अपने भाग्याधीन है । रूप को तो पश्चात्ताप नहीं होना चाहिए । मैंने स्वयं उसको लड़की के सब गुण-अवगुण बताया है ।”

“और कहीं लड़की को पश्चात्ताप होने लगा तो ?”

“तो लड़की को गिला अपने पिता से होना चाहिए । हमने उसके पिता से कुछ नहीं छिपाया ।”

बरात का शानदार स्वागत हुआ । उसी रात विवाह का विधि-विधान पूर्ण हुआ और अगले दिन रूप पत्नी को लेकर घर आ गया ।

उत्तरावस्था

•

तीसरा परिच्छेद

उक्त घटना सन् १९३६ की थी। इसके पश्चात् परिवर्तन द्रुत गति से हुए। द्वितीय विश्वव्यापी युद्ध आरम्भ हुआ। इसमें जापान मित्रराष्ट्रों के विपरीत युद्ध में सम्मिलित हुआ। रूस मित्रराष्ट्रों की ओर सम्मिलित हो गया।

युद्ध की इस अप्रत्याशित करवट ने भारत के इतिहास और आचार-विचार पर भारी प्रभाव डाला। जापान के अमेरिका के विपरीत युद्ध आरम्भ कर देने से अमेरिका युद्ध में संयुधि हो गया। अमेरिका की तकनीकी उन्नति और प्राकृतिक साधन अत्यधिक थे। इससे अन्य मित्र-राष्ट्र इंग्लैंड, फ्रांस और अमेरिका की बेढंगी बातें मानने पर विवश थे।

रूस कुटिल नीति में अत्यन्त कुशल था। एक ओर सरलचित्त परन्तु शक्तिशाली अमेरिका का प्रधान और दूसरी ओर कूटनीतिज्ञ स्टालिन दुर्बल इंग्लैंड और फ्रांस को उंगलियों पर नचाने लगे। भारत इंग्लैंड के अधीन होने से इंग्लैंड के साथ ही मिल गया।

अमेरिका ने चीन में च्यांग काई शेक को चीन के कम्यूनिस्ट नेताओं से समझौता करने पर विवश कर दिया। परिणाम में कम्यूनिस्ट चीन पर छा गए। अमेरिकन सिपाही भारत की रक्षा के लिए और चीन की सहायता के लिए बहुत बड़ी संख्या में भारत में आए और भारतीयों में नैतिक पतन के कारण हो गए।

स्टालिन के रूस के साथ मित्रराष्ट्रों की संधि होने से भारत में कम्यूनिज्म का व्यापक प्रचार होने का सुभीता हो गया।

युद्ध में सरकार का युद्ध के लिए सामग्री निर्माण कराना तथा व्यापार अपने हाथ में लेने से देश का घोर पतन हुआ। जहां भी शान्त नै व्यापार और उद्योग-धन्धों को अपने हाथ में लिया है, वहां ही जनता में अनैतिकता का व्यापक प्रचार हुआ है।

कम्यूनिस्टों अथवा कम्यूनिस्टों के सहचरों का कहना है कि कम्यूनिस्ट देशों में यह नैतिक पतन नहीं हुआ। यह कथन निर्विवाद सत्य नहीं। इसपर भी भारत में तो युद्धकाल में सरकार के व्यवसाय और उद्योग में हस्तक्षेप से पतन व्यापक हुआ है।

इसके पश्चात् स्वराज्य आया और स्वराज्य आया एक अति प्रभावशाली और दृढ़निष्ठ समाजवादी के हाथ में। इसने रही-सही भारत की नैतिकता का मलियामेट कर दिया।

सन् १९४७ आ गया। वार्षिक वर्ष भारत के नैतिक जीवन में एक महान विनाशकारी प्रभाव उत्पन्न करने वाले हुए। दिल्ली के नैतिक पतन में एक कारण और हो गया। भारत में पाकिस्तान बना। पंजाब के लाखों हिन्दू पाकिस्तान से भागकर हिन्दुस्तान में आए। इनमें अधिकांश लुट-पिटकर आए थे। सन् १९४७ में भारत सरकार इनकी रक्षा नहीं कर सकी। तत्कालीन सरकार पाकिस्तानी लुटेरों की सहायता करती रही। स्वराज्य-प्राप्ति के पश्चात् तो सरकार पाकिस्तान की उच्छृङ्खलता रोकने में अशक्त सिद्ध हुई। काश्मीर पर पाकिस्तान ने आक्रमण किया और भारत सरकार ने पाकिस्तान से युद्ध विराम-सन्धि कर ली। इससे सरकार की राजनीतिक दुर्बलता स्पष्ट हो गई। सन् १९५०-५१ में पुनः पूर्वी पाकिस्तान से हिन्दू भगाए गए।

सरकार भारतीय नागरिकों की न बर्मा में, न ही लंका में, न ही तिब्बत में, न ही दक्षिणी अफ्रीका में रक्षा कर सकी।

सरकार की मित्रता गलत राष्ट्रों से रही थी। देश के आभ्यन्तरिक विषयों में भी सरकार समाजवादी होने से युद्धकाल के बेईमान प्रशासकों के हाथों में खेलने लगी।

इसका प्रभाव दिल्ली में देश के अन्य भागों से अधिक हुआ। इस समय लाला सुलक्षणमल का परिवार छिन्न-भिन्न हो चुका था। गौरी और गोवर्धनलाल सब कुछ छोड़-छाड़ संन्यासी हो कहीं हिमालय में जा

चुके थे। उनके विषय में कोई नहीं जानता था कि कहां हैं। शिवकुमार और गोपालकुमार का देहान्त हो चुका था। शिवकुमार का लड़का निरंजन शिवकुमार की गद्दी पर बैठता था, परन्तु दुकान की साख (प्रतिष्ठा) मिट्टी में मिल चुकी थी। अब दुकान का विश्वास पहले से शतांश भी नहीं रहा था। ग्राहकों से भगड़े होते थे। फिर मुकदमे होते थे। कभी दुकान जीतती थी, कभी ग्राहक जीतते थे और बदनामी दोनों अवस्थाओं में दुकान की होती थी।

रामकुमार अब वृद्ध होने के कारण काम-काज कुछ नहीं करता था। उसका लड़का रूप एक बहुत बड़ा ठेकेदार बन गया था। घर में रुपया बरसता था और रूप की पत्नी सुभद्रादेवी घर पर शासन करती थी। इस शासन में सबसे बुरी दशा रूप की मां रोहिणी की थी।

परिवार में तीन व्यक्ति अभी भी परस्पर मेल-मुलाकात रखते थे—रूप, काहन और भूषण। रूप ठेकेदार होने से सबसे अधिक समृद्ध था। काहन अब बहुत बड़ा अफसर बन गया था और दुर्गा से सात बच्चों का पिता बन, सुख और चैन का जीवन व्यतीत करता था। वह एक बार 'रिटायर' होकर पुनः 'आडीटर जनरल' के दफ्तर में काम पर ले लिया गया था। भूषण ने यूनिवर्सिटी छोड़ दी थी और भारत सरकार के उद्योग मंत्रालय में सार्वजनिक उद्योग यंत्र का एक मुख्याधिकारी बन गया था।

भूषण की दूसरी पत्नी सुमित्रा भूषण को छोड़ गई थी। राजेश्वरी भूषण से पृथक् अपने लड़के राजकुमार के साथ रहती थी। उसकी लड़की राजकुमारी तो विवाह कर अपने पति के साथ अमेरिका चली गई थी। भूषण के घर में एक शिमला के समीप के गांव की स्त्री नौकरानी के रूप में रहती थी और वह घर पर राज्य करती थी।

भूषण महादेव रोड पर एक सरकारी बंगले में रहता था। भूषण की सेविका सुन्दरी भूषण से मिलने के लिए आने वालों के साथ ऐसा व्यवहार करती थी, जैसे वह उसकी प्राइवेट सैक्रेटरी हो। लाखों रुपये का काम उसके द्वारा हो जाता था और भूषण दिन-प्रतिदिन मोटा होता जाता था।

सुन्दरी का साहस दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता था और वह मिलने वालों से पृथक् में भेंट करती थी और अनेकों बार बिना भूषण की

जानकारी के भी वचन दे देती थी और उसके लिए अग्रिम रिश्त ले लेती थी।

यह सब काम उस समय होता था, जब भूषण मन्त्रालय में गया होता था। एक दिन भूषण आया तो सदा की भांति वह सुन्दरी के कमरे में चला गया। सुन्दरी के सामने वीयर की बोतल और गिलास रखा था। भूषण आया तो उसने उसे भी निमन्त्रण दे दिया, “आइए। आज तो बाहर लू चल रही है। कुछ चित्त ठंडा कर लीजिए।”

“बाहर तो लू चल रही है परन्तु भीतर कूलर लगा है।”

“भीतर रुपये की गर्मी है।”

“तो आज कोई बड़ी-सी मुर्गी हलाल की है?”

“मुर्गी नहीं, मुर्गा है। रूप का लड़का प्रबोध आया था। वह दस हजार दे गया है।”

“किस मतलब के लिए?”

“उसको इमारती स्टील का परमिट चाहिए था।”

“कितने स्टील का?”

“दस हजार टन का।”

“ओह ! इतना स्टील है कहाँ?”

“क्यों ? सरकारी तीन लोहे के कारखानों में कितना प्रतिदिन तैयार होता है?”

“परन्तु सुन्दरी ! अकेला मैं ही तो नहीं हूँ इसका वितरण करने वाला। और भी हैं। फिर मैं मन्त्री नहीं हूँ। एक अण्डर सैक्रेटरी-मात्र हूँ। मैंने पहले ही बहुत परमिट स्वीकार करवाए हैं।”

“रूप का काम तो करना ही होगा।”

“ठीक है। यत्न करूंगा।”

“जी नहीं, मैंने उससे यह वचन लिया है कि सौ रुपया प्रति टन वह हमको देगा। इसमें से पचास रुपया प्रति टन तो आप जिसको चाहें दें, शेष हमारा होगा। देखिए, दस हजार टन का मतलब है पांच लाख रुपया। यह माल एक वर्ष के भीतर देना है। इतना तो आप कर ही सकेंगे। यह अग्रिम दस हजार रुपया तो उक्त गणना से बाहर है।”

भूषण गम्भीर हो गया। देर तक वह गम्भीर हो मौन बैठा रहा।

एकाएक उसको विचार आया कि आज पहली बार रूप उसके पास किसी काम के लिए आया है और पहली ही बार उसने दस हजार रुपया उससे गैठ लिया है। वह मन में क्या सोचेगा। रूप उसके मामा का लड़का है। इसपर उसने बहुत धीरे से कह दिया, “रूप से रिश्त लेकर तुमने ठीक नहीं किया।”

“क्यों?”

“वह मेरे मामा का लड़का है।”

“मां गई तो मामा भी गया।”

“तो क्या रिश्ता भी टूट गया?”

“मैंने तो आपकी उससे नवीन रिश्तेदारी पैदा कर दी है। आप नहीं जानते, परन्तु मैं जानती हूँ कि इस रिश्तेदारी से आपको बहुत लाभ होने वाला है।”

चाय पीने के पश्चात् भूषण तहखाने में चला गया। यह उसने बिना सरकारी अधिकारियों को बताए अपने ‘लम्बर रूम’ (माल गोदाम) में से खुदवा लिया था और उसपर लोहे का ढकना लगवा दिया था। रुपया, भूषण, जवाहरात, सोना, जिसको वह बैंक में नहीं रख सकता था, उसमें रखा रहता था। कोठी में नौकर थे, परन्तु उन नौकरों को भी इस तहखाने की बात विदित नहीं थी। कभी कोई नौकर रूम गोदाम में घुसने नहीं दिया जाता था।

आज भूषण उम तहखाने में उतर गया और अपनी चोरी से रखी सम्पत्ति का निरीक्षण करने लगा। सुन्दरी उसके समीप खड़ी थी। सब कुछ ठीक-ठाक देख, वह बाहर निकल आया। लोहे का ढकना द्वार पर चढ़ा दिया गया। वह ढकना ऐसा प्रतीत होता था, मानो मार्बल चिप्स की सिल हो। वास्तव में लोहे के ऊपर मार्बल चिप्स-सीमेंट की तह चढ़ाई हुई थी और रखने पर वह तह वैसी ही प्रतीत होती थी, जैसा उस कमरे का शेष फर्श था।

लगभग तहखाने में पचास लाख रुपये का सामान रखा था। भूषण गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहा था कि वह इस माल को किस प्रकार अपने प्रयोग में लाएगा। उसको कोई उपाय नहीं सूझ रहा था।

आज उसको यही चिन्ता लग रही थी। आज रात का खाना खाने

समय उसका लड़का राजकुमार आया। वह दसवीं श्रेणी में पढ़ते-पढ़ते पढ़ाई छोड़, घर पर भाषाओं का अभ्यास करने लगा था। उसके शिक्षक ने उसको संस्कृत भाषा पढ़ने के लिए कहा और पांच वर्ष में वह दुनिया की सात प्रमुख भाषाओं का ज्ञाता हो गया। वह भाषा-विज्ञान का विशेषज्ञ बन गया। वह सरकारी विदेश विभाग में अनुवादक के रूप में ठेके पर काम किया करता था।

आज उसको आया देख भूषण बितर-बितर मुन् देखता रह गया। वह पहले कभी भी अपने पिता से मिलने नहीं आया था। और सुन्दरी ने उसको कभी नहीं देखा था।

“क्या मैं भीतर आ सकता हूँ।”

“कौन ?” सुन्दरी का प्रश्न था।

भूषण ने डाइनिंग हाल के द्वार पर खड़े देख पहचान लिया था। इसपर उसने कह दिया, “हां ! आ जाओ। सुनाओ, किसलिए आए हो ?”

“आप मुझको पहचानते हैं क्या ?” राजकुमार ने भीतर आ एक कुर्सी पर बैठते हुए पूछ लिया।

“मैं समझता हू कि तुम राजेश्वरी के लड़के राजकुमार हो। क्या मैं ठीक कह रहा हू।”

“ठीक है। मद्य-सेवन पर भी आपकी बुद्धि में कुछ तो निर्मलता है। मैं आज बीस वर्ष बाद आपके घर पर आया हूँ। यू तो चलते-फिरते आपके दर्शन कई बार किए हैं।”

“किसलिए आए हो ?”

“अपनी मां के कहने पर अपने पिता का श्राद्ध करने।”

“पर मैं अभी मरा नहीं। जीवित हूँ। तभी तो तुमसे बातचीत कर रहा हूँ।”

“आर्यसमाज के सिद्धान्तानुसार जीवित पितरों के श्राद्ध में विश्वास रखता हूँ। इच्छा तो नहीं थी, परन्तु मां के मस्तिष्क में अभी भी कुछ हिन्दू संस्कार शेष हैं। इस कारण उन्होंने कह दिया कि जाओ और अपनी ओर से श्रद्धाञ्जलि दे आओ।”

“हां, तो बरखुरदार ! यह पुण्य-लाभ भी कर लो।”

“मां ने कहा है कि मैं आपको कह दूँ कि आप शीघ्रातिशीघ्र अधिक से अधिक सम्पत्ति लेकर यहां से लापता हो जाएं। यदि सम्भव हो तो विदेश चले जाएं।”

“पर क्यों ?”

“आपका इस देश में तथा दिल्ली में रहना भय से रहित नहीं।”

“यह तुमको किसने कहा है ?”

“यह मैं नहीं बताऊंगा।”

“उसको यह सूचना कहां से मिली है ?”

“यह मैं जानता नहीं।”

“तो बूढ़े जीवित बाप को मरने के लिए कहने आए हो।”

“मैं तो आपके जीने-मरने में रुचि नहीं रखता। यह तो मां है, जो आप जैसे निकम्मे पति के होते भी अपने को सधवा मानती हैं और अपना मुहाग बनाए रखने के लिए मुझको भेज दिया है।”

“बस या और कुछ ?”

“इस सुन्दरी को भी साथ ले जाइए। इसकी भी खैर नहीं यहां।”

“अब तुम जा सकते हो।”

राजकुमार उठकर जाने लगा तो सुन्दरी ने कह दिया, “राज-कुमार ! भोजन तो कर जाओ।”

“मां ने भोजन कराकर भेजा है।”

“तुम्हारा विवाह नहीं हुआ ?”

“हो चुका है। पत्नी प्रसव करने मां के घर गई हुई है।”

“यह कौन-सी सन्तान होगी ?”

“पहली।”

“बहनों का क्या हाल है ?”

“एक तो अमेरिका में है और दूसरी संस्कृत अध्ययन कर रही है।”

सुन्दरी हंसी और बोली, “अच्छा, भोजन नहीं करना तो जाओ। रात के समय पुत्र को घर के बाहर गए जान मां का दिल धड़कता होगा।”

राजकुमार ने दोनों को नमस्कार किया और चला गया। उसकी टैक्सी के जानेका शब्द सुना तो भूषण ने सुन्दरी से पूछ लिया।

“क्या समझी हो इसका अर्थ ?”

“मैं समझी हूँ कि इसकी माँ को कोई बुरा स्वप्न आया है। वह भयभीत है। इसपर भी मेरा विचार है कि कल आप दो महीने की छुट्टी ले लें मैडिकल सर्टिफिकेट पर, मैं आपको पहाड़ पर ले चलूँगी। वहाँ आराम से बैठकर विचार कर लेंगे।”

“यदि कोई गड़बड़ कल ही हो गई तो ?”

“कुछ नहीं होगा। वह आपको व्यर्थ में डरा गया।”

भूषण को सन्तोष नहीं हुआ। जब मे रूप का दस हजार रुपया उसके कोप में आया था, उसको किसी प्रकार का अज्ञात भय लग रहा था, इसपर भी वह अपने मन का भय सुन्दरी को बता नहीं सका।

रात-भर भूषण करवटें लेता रहा। प्रातः चार बजे उसको नींद आई। सुन्दरी तो गहरी नींद मोती रही थी। दोनों देरी में उठने के अभ्यस्त थे। इस कारण वे आठ बजे उठे। दोनों ने बैरा के लिए घण्टी बजाई तो बैरा आया और चाय प्लगों के पास खूब बोला, “बाहर आपसे कोई मिलने आया है।”

“कौन है ?”

“मैंने उसमें नाम पूछा है और कार्ड मांगा है। उसने कहा है कि आप बाहर आएंगे तो पहचान जाएंगे। नाम-धाम बताने की आवश्यकता नहीं।”

“अच्छा चलो। उनको बैठाओ। मैं कपड़े पहन आता हूँ।”

बैरा गया तो भूषण ने समझा कि कोई परमिट इत्यादि लेने वाला आया है और अपना नाम बैरे को बताना नहीं चाहता। इससे वह चाय पी, शौच गया और हजामत बना, स्नान कर, कपड़े पहन आधे घण्टे में ही बाहर आ सका।

बहुत बढ़िया कपड़े पहने दो भद्र पुरुष ड्राइंग-रूम में बैठे थे। दोनों अपरिचित थे। भूषण ने सामने आते ही कह दिया, “मैं भूषणदेव हूँ।”

“डॉक्टर साहब ! मैं पुलिस विभाग का मुख्याधिकारी बन्ना हूँ। कदाचित् आपने नाम सुना होगा।”

“नहीं सुना ! मैं क्या सेवा कर सकता हूँ आपकी ?”

“आप चलने के लिए तैयार हो जाइए। आपको पुलिस थाने में ले

चलना है। साथ ही आपके इस घर की तलाशी लेनी है।”

भूषण को राजकुमार की रात की बातचीत स्मरण हो आई। वह हतोत्साह हो, वहां ही बैठ गया। उस पुलिस अधिकारी ने आवाज दी, “बैरा ! बैरा !”

बैरा भागा हुआ आया तो मिस्टर बत्रा ने कहा, “साहब के लिए जल्दी ठण्डा पानी लाओ।”

बैरा भागा हुआ गया और ‘फ्रिज’ में से ठण्डे पानी का गिलास भरकर ले आया। भूषण ने जल पिया। उसकी घड़कन कम हुई तो उसने कहा, “आपके पास वारंट है ?”

“हां।” बत्रा के पास बैठे दूसरे आदमी ने कह दिया। उसने अपने थैले में से एक कागज निकाला। उसपर हस्ताक्षर कर वह कागज बत्रा को दिखा दिया। भूषण ने पढ़ा। लिखा था, “प्रारम्भिक जांच पर यह पता चला है कि डाक्टर भूषण के विरुद्ध रिश्तन लेने के पर्याप्त प्रमाण हैं। मैं, मिस्टर के० अग्निहोत्री, मिस्टर भूषण, अण्डर सेक्रेटरी, केन्द्रीय मन्त्रालय, को पकड़कर जांच के लिए ह्वालान में रखने की आज्ञा देता हूं और उनके घर की तलाशी की आज्ञा देता हूं।” इस समय दो पुलिस के सिपाही सुन्दरी को बांह से पकड़े हुए भीतर ले आए। एक कान्स्टेबल ने बताया, “हुजूर ! यह औरत कोठी के बाहर जा रही थी। हमने इसको जाने से मना किया तो यह नहीं मानी। हमने रोका तो यह भाग खड़ी हुई। इस कारण इसको पकड़ लाए हैं।”

मजिस्ट्रेट ने आज्ञा दे दी, “बैठ जाओ ! तुम्हारे बयान होने हैं।”

इस समय तक लगभग दो दर्जन सिपाही जो कोठी को घेरा डाले हुए थे, कोठी के अहाते में घुस आए और सब नौकरों को एक कमरे में एकत्रित कर लिया।

२

सुन्दरी के बयान हुए। उसने बताया, “मैं भूषणदेव की ‘हाउस कीपर’ हूं। मुझको रोट्टी-कपड़ा और दो सौ रुपया महीना वेतन मिलता है। मैं नौकर-चाकरों से काम लेती हूं और खाने-पीने का प्रबन्ध रखती हूं। मैं मिस्टर भूषण जी के अन्य किसी काम इत्यादि के विषय में कुछ नहीं

जानती ।”

“तुम मिस्टर भूषणदेव की रखेल हो अथवा विवाहित पत्नी ?”

“दोनों में से कुछ नहीं ।”

“तुम शादीशुदा हो ?”

“मैं विधवा हूँ ।”

“यह सब सामान, जो तहखाने से निकला है, तुम्हारी जानकारी में था क्या ?”

“मैं इसके विषय में कुछ नहीं जानती ।”

“तुम यहां से भाग क्यों रही थी ?”

“पुलिस की वर्दी देख मुझको डर लग गया था ।”

“तुम्हारा यहां कोई ज़ामिन है ?”

“नहीं ।”

“तो एक हजार रुपये का मुचलका भर दो । तुम अपना पता पुलिस वालों को दे दोगी और बुलाने पर हाज़िर हो जाओगी ।”

लाखों रुपयों का सामान सील कर, और बहुत-से कागज़-पत्र अधिकार में ले सुन्दरी को छोड़ पुलिस भूषण को साथ ले गई । जाते-जाते मध्याह्न के दो बज गए थे । उनके चले जाने पर सुन्दरी ने भोजन किया और अपने शयनागार में लेट विचार करने लगी । उसको समझ आया कि यदि वह रूप के घर पहुंच, घटना की बात बताए तो पता चलेगा कि वह इसमें कारण है अथवा नहीं । यदि वह कारण नहीं तो निःसन्देह वह सहायता करेगा ।

अतः वह सायंकाल की चाय पी रूप की कोठी, जो श्रीराम रोड पर थी, जा पहुंची ।

रूप घर पर था । वह सुभद्रा के साथ लॉन में बैठा चाय पी रहा था । रूप ने सुन्दरी को देख पूछ लिया, “सुनाओ, किसलिए आई हो यहां ?”

“भूषण जी आज पकड़ लिए गए हैं ।”

“मुझको विदित है ।”

“तो आपने पकड़वाया है ?”

“नहीं ! यह शरारत प्रबोध ने की है । परन्तु सुन्दरी, तुमको भी

तो उससे रुपये लेने में संकोच नहीं हुआ ।”

“वह कल दो बजे आया था । मैंने रुपया मांगा नहीं था । उसने स्वेच्छा से ही नोटों का ढेर मेरे सामने लगा दिया । इतना रुपया सामने देख, मैं लोभ में फंस गई थी । मुझसे बहुत भूल हुई है । मैं क्षमा मांगने आई हूँ ।”

“किससे ?”

“आपसे और प्रबोध से भी ।”

“प्रबोध से क्षमा मांग लो । मैंने तो इसमें कुछ किया नहीं ।”

“आपने किया है अथवा नहीं किया, मैं इसमें कुछ नहीं कहती । मैं यह कहने आई हूँ कि इसमें आप बहुत कुछ कर सकते हैं ।”

“क्या कर सकता हूँ ?”

“अपने भाई को छुड़ा सकते हैं ।”

यह सुन रूप ने कह दिया, “सुन्दरी, चाय पियोगी ?”

सुन्दरी चाय पीकर आई थी, परन्तु वह जानती थी कि इन्कार करने से काम बिगड़ेगा । इस कारण वह चुप रही । सुभद्रा ने बैरा को बुलाया और चाय लाने के लिए कह दिया । जब चाय आई और सुभद्रा ने एक प्याला उसके लिए बना दिया तो वह पीने लगी ।

इतनी देर में रूप ने मन में पूर्ण योजना विचार कर ली । उसने पूछ लिया, “सुन्दरी, भूषण को छुड़ाने के लिए कितना कुछ खर्च करने के लिए तैयार हो ?”

“आप कितना उचित समझते हैं ?”

“तुम्हारे पास कितना है ?”

“जो कुछ कोठी से निकला है, वह तो जाएगा ही । उसके अतिरिक्त पचास हजार और है ।”

“ता मैं प्रबोध को कह दूंगा और कदाचित् वह तैयार भी हो जाएगा ।”

“इतना कुछ हो जाएगा ।”

“तो ठहरो । एक घण्टे तक प्रबोध आने वाला है । उससे बात कर लो ।”

सुभद्रा के चार बच्चे थे । प्रबोध सबसे बड़ा था । वह इस समय

उन्नीस वर्ष का हो गया था। पिता का कारोबार वह संभालने लगा था। रात के आठ बजे प्रबोध आया और सुन्दरी को वहां देख हंम पड़ा, “क्यों ताई ! अब बुद्धि ठिकाने हुई है अथवा नहीं ?”

“ठिकाने कब नहीं थी, प्रबोध ?”

“उस दिन, इम्पीरियल में, चाय-पार्टी में क्या कहा था तुमने ?”

कुछ विचारकर वह बोली, “ओह ! मिस्टर सरकार से जो कह रही थी ?”

“हां। वह मेरा मित्र है। तुमने कहा था, ‘यह समाजवादी देश है। यहां सब कुछ समाज के लिए है। सरकारी कर्मचारी समाज के हाथ-पांव हैं। इस कारण जो कुछ उनके पास जाता है, वह समाज के पास ही जाता है।’

“ताई, इसमें मतभेद हो गया है। हाथ उसको कहते हैं, जो धन पैदा करता है। अतः उद्योग-धन्धों में लगे हुए लोग समाज के हाथ-पांव हैं। कर्मचारी तो मुख और पेट है। इस कारण जो धन मुख ने दांतों तले दबाया हुआ था, वह हाथों की उगलियों ने मुख से निकाल लिया है।”

“निकाल लिया है न ? मैं अपने कथन के लिए क्षमा मांगने आई हूं।”

प्रबोध ने अपने पिता की ओर देखा। रूप ने पूछ लिया, “प्रबोध, कुछ कर सकते हो अब ?”

“हां, कर तो सब कुछ सकता हूं, कीमत बहुत देनी पड़ेगी।”

“बता दो, कितना चाहते हो ?”

“मैं कल बता सकता हूं।”

तीन दिन की भाग-दौड़ के पश्चात् भूषण हवालात से छूटकर कोठी में आ गया। सुन्दरी उसके स्वागत के लिए बरामदे में खड़ी थी।

नई दिल्ली कोतवाली से टेलीफोन आया था, “मोटर भेज दो। मैं आ रहा हूं।”

सुन्दरी ने तुरन्त मोटर भेज दी और भूषण की प्रतीक्षा करने लगी। प्रबोध ने दस हजार रुपया खर्च की प्रथम किश्त मांगी थी, वह दे दी गई थी। प्रबोध ने रुपया पानी की तरह बहाया और डाक्टर भूषण की एक लाख रुपये की जमानत हो गई। मुकदमा नहीं उठाया गया।

भूषण आया तो साथ प्रबोध भी था। डाक्टर ने स्नान किया, कपड़े बदले और चाय पर आ बैठा। प्रबोध ने सुन्दरी को बताया, “तुम्हारे द्वारा दिया गया दस हजार रुपया सब व्यय हो गया है। अभी मुकदमे में वे नोट ही उपस्थित किए गए हैं, जो मैंने तुम्हें दिए और जिनमें से कई के पीछे मजिस्ट्रेट के हस्ताक्षर थे। अन्य सामान, जो तहखाने से निकला है, उसकी दो सूचियां बनी हैं और दोनों पर गवाहों के हस्ताक्षर हैं। एक सूची में तो केवल दस वस्तुएं हैं, जिनका दाम लगभग पांच सौ रुपया है। दूसरी में सब वस्तुएं दर्ज हैं और सबका मूल्य उनचास लाख आंका जाता है। अब ताया जी बताइए, आप कौन-सी सूची उपस्थित की जानी पसन्द करते हैं ?”

“मैं तो पहली पांच सौ रुपयों के दाम की सूची उपस्थित की जानी पसन्द करता हूं।”

“यह हो सकता है। परन्तु वह सब सामान पुलिस के लोग और आपके कार्यालय के अधिकारी परस्पर बांट लेंगे। उसमें से अब आपको कुछ नहीं मिलेगा।”

“परन्तु।” सुन्दरी ने कह दिया, “यदि ‘नोट’ मुकदमे में उपस्थित किए गए तो डाक्टर जी को दण्ड तो मिल ही जाएगा।”

“उस दण्ड को कम कराने अथवा उसके लिए कोई बहाना बनाना काम रह जाएगा। परन्तु यह पचास लाख का सामान आपके पास कहां से आया, बताना असम्भव हो जाएगा।”

सुन्दरी और डाक्टर भूषण टुकर-टुकर मुख देखते रह गए। चाय पीते हुए प्रबोध ने डाक्टर को कहा, “मान लो कि आपकी सिफारिश लग जाए, अर्थात् आपको नोटों के मुआमले में छुड़ा भी लिया जाए, तो भी इस लाखों रुपयों की सम्पत्ति की सफाई तो दी नहीं जा सकेगी।”

सुन्दरी ने कहा, “प्रबोध भैया ! बात तो बनी नहीं। रिश्वत तो रिश्वत ही है। दस हजार की क्या और दस लाख की क्या ?”

“पर देखो ताई। मैं परमात्मा तो हूं नहीं। मैं ताया जी महाराज को छुड़ाने का यत्न कर रहा हूं। मैंने यह कुछ किया है। शेष के लिए यत्न कर रहा हूं। पिता जी ने एक लाख रुपये की जमानत भी दी है। इतना कुछ भी तो कोई दूसरा करने को तैयार नहीं था।”

सुन्दरी समझ गई कि अवस्था इतनी बिगड़ गई है कि अपने को प्रबोध की दया पर छोड़ने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं। इसपर भी अब डाक्टर मुक्त था और घूम-फिरकर अपने छूटने का यत्न कर सकता था। अतः उसने कह दिया, “इस समय तो हमारा भी मस्तिष्क काम नहीं करता। मैं समझती हूँ कि आप कल आ जाएँ और कुछ शान्त होकर विचार करेंगे कि क्या हो सकता है।”

“इस प्रकार प्रबोध को चाय-पानी पिलाकर अपनी मोटर में बिदा कर दिया।

जब प्रबोध चला गया तो भूषण ने कहा, “यह धन कहां से दिया है तुमने?”

“सैण्ट्रल बैंक के लौकर में था। वह लौकर मेरे नाम था।”

“कितना और रखा है, उसमें?”

“तीस-चालीस के लगभग होगा। कुछ गांव में भूमि में गाड़ा हुआ रखा है। वह सोना है और रत्नादिक हैं।”

“मैं तो बिलकुल उजड़ गया हूँ। यह सब जो तुम्हारे पास है और जो कुछ मेरे पास भी गुप्त रखा है, मिल-मिलाकर डेढ़-दो लाख से अधिक नहीं होगा। यदि इस ढंग से चलने लगे, जैसे प्रबोध ने आज धन लुटाया है तो मैं सर्वथा अकिंचन हो जाऊंगा। साथ ही मैं कैद में बच सकूंगा अथवा नहीं संदिग्ध है।”

“मैं सोचती हूँ कि राजकुमार को यह सब कैसे पता चल गया था? हम भी कितने मूर्ख थे कि उसकी बात को हंसी-ठट्टा समझते रहे थे।”

“अवश्य वह प्रबोध से मिला होगा और प्रबोध से ही उसने कुछ सुनकर अपना अनुमान लगाया होगा।”

“यदि आप कहें तो मैं राजकुमार और उनकी माँ को मिलकर बात करूँ।”

“क्या बात करोगी?”

“देखूंगी कि वे आपके लिए प्रबोध और अन्य किसीपर क्या बल डाल सकेंगे?”

“देख लो करके। मुझको आशा नहीं कि कुछ भी हो सके। मेरा विचार है कि तुम रूप के पिता राम जी के पास चला जाओ। यह बूढ़ा

वकील कुछ सहायता करना चाहे तो बहुत कुछ कर सकता है।”

सुन्दरी मोटर के लौटकर आते ही उसमें पहले तो राजेश्वरी के घर और फिर राम से मिलने के लिए चल पड़ी।

राजेश्वरी घर पर नहीं थी। वह राजकुमार की पत्नी से मिलने उसकी मां के घर गई हुई थी। राजकुमार अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में बैठा एक पुस्तक का अनुवाद कर रहा था। सुन्दरी आई तो राजकुमार अपने कमरे से उठकर बैठक में चला आया। वह अपनी मां के साथ हैमिल्टन रोड पर रहता था।

राजेश्वरी आ पहुंची और वह सुन्दरी को बैठा देख आश्चर्य से देखती रह गई।

“मां ! क्या हाल है ?” राजकुमार ने अपनी पत्नी के विषय में पूछ लिया।

“लड़का हुआ है।”

“तो मां ! तुम दादी बन गई हो ?”

“पर संतोष को बहुत कष्ट हुआ है। कुछ कांट-छांट भी करनी पड़ी है। हल्का ऑपरेशन हुआ है। डाक्टर कहता है कि चिन्ता की बात नहीं, परन्तु कष्ट की बात तो है ही।”

“मां, मैं जाता हूँ।”

“तुम क्या करोगे जाकर ?”

“जाकर उसके पास बैठूंगा।”

“अच्छा जाओ। देख आओ। परन्तु बैठने की आवश्यकता नहीं होगी। संतोषकी मां रहेगी, और तुम चले जाना।”

३

राजकुमार को भूपण के विपरीत किए गए पड़्यन्त्र का ज्ञान विदेश मंत्रालय से हुआ था। वहां उसका अधिकारी, जो विदेशों से आने वाली चिट्ठी-पत्री का अनुवाद कराया करता था, कह बैठा, “आज एक बहुत बड़ी मुर्गी पकड़ी जाने वाली है।”

“कौन है ?”

“एक भूषणदेव है। एम० ए० है, पी-एच० डी० है। मजे में प्रोफेसरी करता-करता राम-नाम की लूट में हिस्सा लेने के लिए उद्योग मंत्रालय में आ गया। समाजवादी विचार रखने के कारण नौकरी मिल गई और लगे समाजवाद का प्रचार करने।”

“परन्तु क्या किया है उसने ?” राजकुमार ने बताया नहीं कि वह उसका पिता ही है।

अधिकारी ने बताया, “मैं अभी-अभी एक स्थान से आ रहा हूं और वहां नई दिल्ली के पुलिस अधिकारी बैठे योजना बना रहे थे।”

राजकुमार से रहस्य न खोलने की सौगन्ध ली हुई थी। इससे उसके विभाग का अधिकारी निश्चित हो बता रहा था। उसने बताया, “आज रात ही उसको पकड़ लेने का प्रबन्ध किया जा चुका है।”

राजकुमार सायं छः बजे घर पहुंचा तो उसने उक्त सूचना मां को दे दी। मां ने कह दिया, “यह तो बहुत बुरा होगा।”

“मां ! हम क्या कर सकते हैं इसमें ?”

“हम उनको सूचना दे सकते हैं कि वे अपनी रक्षा का प्रबन्ध कर लें।”

“क्यों ?”

“राज ! वे तुम्हारे पिता हैं।”

“पर मां, वे बहुत दुष्ट हैं।”

“बेटा ! दुष्ट माता-पिता का भी तो श्राद्ध किया जाता है।”

“मैं अपने कार्यालय से प्राप्त रहस्य किसीको बता नहीं सकता।”

“ठीक है। एक तो यह तुम्हारे दफ्तर की बात नहीं है। दूसरे तुमको न तो दफ्तर का नाम लेना है, न ही पूर्ण विवरण बताना है। तुमको तो केवल यह कहना चाहिए कि उनका जीवन और सब कुछ खतरे में है और उनको शीघ्रातिशीघ्र भाग जाना चाहिए।”

“मां ! यह तो तुम एक महादुष्ट की सहायता कर रही हो।”

“राज ! वह मेरा पति है। मैंने उसके साथ जीवन की कुछ सुख की घड़ियां व्यतीत की हैं और यह अन्तिम भेंट उसकी स्मृति में है।”

राजकुमार समझ गया कि मां ने उसके लिए जो कुछ किया है, यह तो उसका एक बहुत ही तुच्छ प्रतिकार है। वह बिना किसी हील-हुज्जत

के वहां से चल पड़ा। उसने टैक्सी की और महादेव रोड पर जा पहुंचा।

अगले दिन वह कार्यालय में पहुंचा तो उसके अधिकारी ने भूषण की शेष सूचना दे दी। उसने बताया, “इस पूर्ण विषय की कार्रवाई मेरे एक सम्बन्धी पुलिस विभाग में है, वे कर रहे हैं। उनका कहना है कि लाखों की सम्पत्ति मिली है। साथ ही कुछ नोट मिले हैं, जिनपर मजिस्ट्रेट के हस्ताक्षर कराए गए थे।”

“किसके नोट थे ?”

“एक रूपकृष्ण ठेकेदार है, उसके लड़के प्रबोध ने मुखबरी की थी और वास्तव में उसने ही यत्न कर इस पाजी डाक्टर को पकड़वाया है।”

राजकुमार कभी-कभी प्रबोध इत्यादि से मिलने जाया करता था। उस दिन शेष समाचार लेने के लिए वह उनकी कोठी पर जा पहुंचा।

अगले दिन राजकुमार को पता चल गया कि लाखों रुपयों का माल भूषण के घर से मिला था, वह कुछ लोगों ने परस्पर बांट लिया है। और तलाशी में मिली वस्तुओं में नहीं लिखा गया। तीसरे दिन सुन्दरी राजकुमार से मिलने आई।

राजकुमार अपनी राय देकर अपने ससुराल, जो निकलसन रोड पर थी, चला गया। राजेश्वरी ने सुन्दरी की बात सुनी तो कह दिया, “बहिन ! रूपकृष्ण के पास जाओ। वह सब करने की सामर्थ्य रखता है।”

“परन्तु बहिन ! वह तो हमको इस प्रकार निचोड़ लेना चाहता है, जैसे रस निकालने वाले नींबू को निचोड़ लेते हैं।”

“कुछ भी हो। यदि अब इस घर में किसीके मन में दया है तो रूपकृष्ण के ही है और यदि वह भी तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता, तो फिर समझो कि कुछ नहीं हो सकेगा।”

सुन्दरी वहां से राम के पास जा पहुंची। राम तो सर्वथा अपने पुत्र और बहू पर आश्रित था, इससे उसने सुन्दरी की बात सुनी तो रूप को बुला बैठा। उस समय सुभद्रा अपने मां के घर गई हुई थी और

प्रबोध अभी घर आया नहीं था। रूप के अन्य बच्चे अभी छोटे थे। अतः राम ने रूप को स्वतन्त्रतापूर्वक बात करने के लिए सुन्दरी के सामने बुला लिया।

“रूप ! यह भूषण की श्रीमती आई हैं।”

“भापा ! व्यर्थ है। मैं कुछ नहीं कर सकता। तुम जानते हो कि सुभद्रा और प्रबोध मेरी एक नहीं चलने देते।”

“पर मैं पूछता हूँ, तुम सुभद्रा के दास हो ? तुममें आत्मसम्मान कुछ भी है तो अपने मन की बात करो।

“पहले यह बताओ कि तुम क्या करना चाहते हो ?”

“भापा ! मैंने भूषण दादा की जमानत भी अपनी इच्छा से दी है। सुभद्रा तो इसके लिए भी राय नहीं देती थी। मैंने जमानत इसीलिए दी थी कि दादा मुझसे मिलकर योजना बनाएँगे। वे स्वयं तो आए नहीं और भेज दिया है इसको। इससे मैं बात नहीं करना चाहता।”

“मैंने क्या पाप किया है ?”

“तुमने मति भ्रष्ट की है दादा की। तुम मद्य का सेवन करती हो और तुम ही उसका सब लेन-देन करती हो।”

“परन्तु रूप जी ! क्या मैं उनकी इच्छा के बिना कुछ भी कर सकती थी ?”

“मैं तो सब खराबियों का मूल सुन्दर औरत को समझता हूँ।”

राम ने रूप को समझाते हुए कहा, “मेरा कहा मानो। भूषण की सहायता करो। मैं सत्य कहता हूँ कि भूषण के व्यवहार को पसन्द नहीं करता, और यह उसको कहो कि अपना व्यवहार ठीक रखे। परन्तु वह तुम्हारी बुआ का लड़का है। उसकी यथासम्भव सहायता करो।”

“तो सुन्दरी।” रूप ने सुन्दरी को कह दिया, “भूषण जी को कहना, कल प्रातः मुझसे मिलें। यहाँ इस कोठी में नहीं। मैं कुदसिया बाग में आ जाऊँगा, वे भी वहाँ आ जाएँ। हम पृथक् में बैठ बातचीत करेंगे। उनको कहना, मैं ठीक छः बजे वहाँ पहुँचूँगा।”

अगले दिन रूप समय पर कुदसिया बाग में जा पहुँचा तो भूषण भी गया। रूप ने बताया, “मैं इस समय प्रातः भ्रमण के लिए आया

करता हूँ और मैं चाहता हूँ कि इस समय ही हम मिला करें तो ठीक रहेगा ।

“ तो बताओ इस कठिनाई से बचने के लिए क्या त्याग करना चाहते हो ? ”

“मैं तहखाने से निकला पूर्ण धन देने के लिए तैयार हूँ ।”

“भूषण जी ! वह तो गया । उसके पच्चीस भाग होकर बंट गए हैं । एक मुख्याधिकारी को पच्चीस प्रतिशत गया है । पच्चीस प्रतिशत प्रबोध और मजिस्ट्रेट अग्निहोत्री के पास आया है । शेष पचास प्रतिशत लगभग बीस आदमियों में बंटा है और उसका खुर-खोज भी नहीं रहा ।”

“और तो मेरे पास कुछ है नहीं ।”

“ भूषण दादा ! ऐसी बात मत करो । देखो, मैंने रात-भर एक योजना विचार की है । तुम अब बिलकुल बच तो सकते नहीं । कुछ न कुछ दण्ड अवश्य मिलेगा । वह सम्पत्ति जो तहखाने में से निकली है, मिल सकती नहीं । इससे मैं दो दिशाओं पर विचार करता हूँ । एक यह कि तुमको कम से कम दण्ड मिले, जिससे तुम जीवित ही जेल से बाहर आ सको और दूसरे जो शेष तुम्हारे पास बचा है, उसका कम से कम खर्च हो । मुझको तुम्हारे दस हजार का, जो पिछले तीन-चार दिनों में व्यय हुआ है, भारी दुःख है ।

“ सुनो । तुमको न्यायालय में पेश किया जाए तो तुम बयान दे दो कि तुम लोभ में आकर यह दस हजार रुपया, जो प्रबोध ने दिया था, ले बैठे थे । उससे पहले तुमको इस प्रकार के काम करने का न तो अभ्यास था न ही रुचि । तुमसे भूल हुई है । तुम अपने को जज की दया पर छोड़ते हो । भविष्य में ऐसा न करने का वचन देते हो ।

“ वह सब धन जो तुम्हारे पास है, वह सुन्दरी को दे दो । उसको मैं एक बहुत योग्य वकील कर दगा । यह यत्न किया जाएगा कि तुमको कम से कम दण्ड हो । तुम उसकी अपील मत करना और कैद के दिनों में तुमको अधिक से अधिक सुख-सुविधा जेल में पहुचाने का यत्न किया जाएगा ।

“ जब तुम आओगे तो फिर तुम किसी पहाड़ी सस्ते-से स्थान पर रह-कर जीवन व्यतीत कर सकोगे । देखो, मैं सदा सहायता करूँगा, परन्तु

अपनी पत्नी और प्रबोध से चोरी-चोरी । ”

“वे मेरे विरुद्ध क्यों हैं ? ”

“क्या करोगे जानकर ? यदि बात स्वीकार हो तो कल यहां इसी समय आ जाना । मैं तुमको एक परिचित वकील के पास ले चलूंगा और उसको अपना दृष्टिकोण समझा दूंगा । वह तुम्हारा बयान लिख देगा । तुम वह निश्चित तिथि को न्यायाधीश के सामने स्वयं उपस्थित कर देना । इसके विषय में मुन्दरी के अतिरिक्त किसीको मत बताना । यदि तुम्हारे विरोधियों को पता चल गया तो वे तुम्हारे बयान को, कि तुमने यह पहली रिश्वत ली है, झूठी सिद्ध कर देंगे । ”

घर जाकर भूषण ने मुन्दरी से बात की और उसकी सहमति से वह अगले दिन रूपकृष्ण से मिला और वहां मिस्टर खन्ना से बातचीत हुई तो वह मुकदमा लेने पर तैयार हो गया ।

निश्चित तिथि को भूषण ने अपना लिखित बयान दे दिया । उसमें उसने अपना दोष मान लिया । अब प्रबोध को समझ आई कि तहखाने वाला धन बांट लेने से और उसको मुकदमे का अंश न बनाने से भूषण के खिलाफ मुकदमा दुर्बल पड़ गया है ।

मजिस्ट्रेट ने पुलिस से कहा, “इस बयान पर क्या आपत्ति है ? ” मरकारी वकील इसके लिए तैयार न था । उसने केवल यह कहा, “हमारा केवल यही कहना है कि इस व्यक्ति को कड़ा मे कड़ा दण्ड मिलना चाहिए, जिससे अन्य रिश्वत लेने वालों को सबक मिले । ”

मजिस्ट्रेट ने फैमले की तारीख नियत कर दी । उस दिन मजिस्ट्रेट ने स्पष्ट कह दिया, “अपराधी के अपने अपराध मान लेने और आगे में ऐसा न करने का वचन देने से मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि छः मास के कठोर दण्ड से न्याय का उद्देश्य पूर्ण होता है । पुलिस के अपने बयान से यह सिद्ध होता है कि अपराधी स्वभाव में अपराध करने वाला नहीं । ”

४

न्यायालय में मजिस्ट्रेट का निर्णय सुनने के लिए घर के कई प्राणी गए हुए थे । मुन्दरी तो थी ही, साथ ही राम, रूप, प्रबोध, राजकुमार, काहन और उसका सबसे बड़ा लड़का विश्वम्भर भी था । वह पहली पत्नी से

था। वह इस समय बाईस वर्ष का हो गया था। काहन ने उसको विदेश मंत्रालय में नौकर करा दिया था और राजकुमार से उसकी बहुत घनिष्ठ मैत्री थी।

राजकुमार ने निर्णय हो जाने के पश्चात् भूषण के समीप आकर कहा, “पिता जी ! ईश्वर का धन्यवाद है कि सहज ही छूट गए हैं।”

“राजकुमार ! सुन्दरी को अपने घर ले जा मकोगे ?”

“घर माता जी का है। उनसे पूछकर ही बता सकता हूं।”

“उसको एक सप्ताह के भीतर मकान खाली करना है। वह तो रूप की कोठी में जाना चाहती है। परन्तु मैं पसन्द नहीं करता।”

“क्यों ?”

“प्रबोध के कारण। वह अच्छा लड़का नहीं।”

“वह कोई मकान भाड़े पर लेकर रह सकती है।”

भूषण चुप रहा। राजकुमार इसमें किसी प्रकार की रुचि नहीं रखता था। साथ ही वह जानता था, उसकी मा इस मद्यमेवी औरत को घर पर नहीं आने देगी।

जब भूषण पुलिस वैन में चला गया तो राम ने प्रबोध में कहा, “क्यों बेटा प्रबोध ! बहुत डींग हाक रहे थे न कि इसे सात वग की कैद कराकर मांस लोके !”

“मैं यत्न करूंगा कि पुलिस अपील कर दे।”

इसपर रूप ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, “ठीक है बरखुरदार ! अब पुलिस के मुकदमे ही लड़ा करो। कुछ काम-धन्धे करने की क्या आवश्यकता है ?”

“पिता जी ! काम तो किया है। कर रहा हूं। एक महीने में नकद छः लाख रुपये का लाभ हुआ है।”

जब सुन्दरी अपनी गाड़ी पर चलने लगी तो रूप ने आगे आ पूछ लिया, “अब तो सरकारी बंगला खाली करना पड़ेगा।”

“जी ! आशा कर रही हूं कि एक सप्ताह के भीतर खाली कर दूगी।”

“तो कहाँ जा रही हो ?”

“मैं दिल्ली से बाहर जाना नहीं चाहती। कहीं भाड़े का मकान

देखना चाहती हूँ।”

“मकान तो मैं दे सकता हूँ। मगर...”

“हां ! हां !! मगर क्या ?”

“घर वालों से चोरी...”

सुन्दरी ने मुस्कराकर पूछा, “घर वालों से अथवा घर वाली से ?”

“एक ही बात है।”

“तो कब दिखाइएगा मकान ?”

“तुम कोठी पर कब मिलोगी ?”

“आप अपनी सुविधा का समय बताइए। मैं तो आजकल बेकार हूँ।”

“तो रात के खाना खाने के समय आऊंगा।”

इतना कहकर रूपकृष्ण अपने लड़के प्रबोध के पास चला। उनके साथ मोटर में बैठकर वह श्रीराम रोड को चल पड़ा। मार्ग में राम ने पूछ लिया, “क्या कहती थी वह औरत ?”

“यही कि उसको किसी मकान की आवश्यकता है।”

“तो तुमने क्या कहा है ?”

“मैंने कहा है, प्रबोध के पास बहुत जगह खाली है।”

“बहुत मूर्ख हो, रूप !”

“क्यों भापा ! क्या मूर्खता की है ?”

“प्रबोध के पास कौन-सी जगह खाली है ?”

“क्यों प्रबोध ? कोई मकान खाली नहीं है क्या ?”

“मकान तो पिता जी कई खाली हैं। परन्तु मैं इस औरत से किसी भी प्रकार का सम्पर्क रखना नहीं चाहता।”

“क्यों ? इसमें क्या खराबी है !”

“तो आपको वह एक भली औरत दिखाई देती है ?”

इसपर राम ने कह दिया, “प्रबोध ठीक कहता है। गन्दगी में हाथ डालने से कुछ कल्याण की आशा नहीं की जा सकती।”

रूप चुप रहा। घर पहुंच, सायंकाल की चाय पी गई।

राम को पिछली रात राजकुमार अपने घर ले गया था। राजेद्वारी

ने राय करने के लिए बुला भेजा था। राजेश्वरी ने बताया, “भूषण की उपपत्नी सुन्दरी आई थी और इस घर में रहने की स्वीकृति चाहती थी। मैंने उससे कारण पूछा तो कहने लगी कि राजकुमार के पिता उसको यहां रहने के लिए कह गए हैं।”

राम ने पूछ लिया, “तुमने क्या कहा है?”

“मैंने यही कहा है कि वह मद्य का सेवन करती है। इससे उसको यहां कष्ट होगा।

“इसपर उसने कहा है कि वह इस घर में रहती हुई मद्य का सेवन नहीं करेगी। वह सदा मेरे अनुशासन में रहेगी।”

“देख लो। मैं समझता हूं कि उसको यहां रखना नहीं चाहिए।”

“तब ठीक है। वह कल आने के लिए कह गई है। मैं उसको कोई पृथक् मकान लेने में सहायता कर दूंगी।”

“हां, क्यों राजकुमार! तुम्हारा क्या विचार है?”

“यही बात मैंने मां से कही है।”

“राजेश्वरी! इसमें मुझसे राय क्यों कर रही हो?”

“इस समय घर में पुरखा आप हैं। कदाचित् राज के पिता आपसे कुछ कह गए हों। इससे मैंने आपसे राय करनी ठीक समझी है।”

“देखो राजेश्वरी! अब न घर है न घर का कोई पुरखा है। यूं तो लाला सुलक्षणमल की सन्तान दूर-दूर तक फैल गई है। हम सैकड़ों की संख्या में हैं। परन्तु परस्पर वह मेल-मुलाकात भी नहीं रही, जो किसी पड़ोसी से भी होती थी। लाला जी का मन्दिर लाला गोवर्धनलाल के संन्यास लेते ही दादा महेश के अधिकार में चला गया है और पाकिस्तान बनने के समय से अब तक वह भाड़े पर चढ़ा रहता है। उसके हिसाब-किताब का कहीं पता भी नहीं चलता। घर का कोई प्राणी उससे पूछता ही नहीं। महेश किसीकी सुनता भी नहीं।”

राजेश्वरी चुप रही। राम घर लौट आया और अपने कमरे में जाकर सो रहा। सुन्दरी पुनः राजेश्वरी से मिलने नहीं आई। एक-दो दिन तक राजेश्वरी उसकी प्रतीक्षा करती रही और फिर उसको भूल गई।

राजकुमार की पत्नी प्रसव के पश्चात् अपने घर में आ गई और जीवन सामान्य रूप में चलने लगा।

भूषण जेल से नियत समय से दो दिन पूर्व ही छूटकर आ गया। वह बीमार हो गया था और डाक्टर की मम्मति से उसकी कैद की दो दिन की छूट अधिक कर दी गई थी। भूषण ने जेल से छूटते ही टेलीफोन कर टैक्सी मंगवा ली और सीधा राजकुमार के घर जा पहुँचा। राजकुमार अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में बैठा काम कर रहा था। मकान के द्वार पर लगी घण्टी बजी तो उसने खिड़की में से झाँककर देखा। पिता जी को टैक्सी के समीप खड़े देख, वह तपककर नीचे आया और टैक्सी का भाड़ा दे उनको ऊपर ले गया। भूषण ने पूछ लिया, “कहाँ है तुम्हारी माँ?”

“वह अपनी बहू के साथ उसकी माँ के घर गई है।”

“क्या है वहाँ?”

“ऐसे ही सन्तोष का चिन् माँ में मिलने को किया था और वह माँ जी को साथ ले गई है।”

“और सुन्दरी?”

“उसके विषय में हम नहीं जानते।”

“नहीं जानते? तो कहीं चली गई है वह?”

“पिता जी! मैंने अन्तिम बार उसको उसी दिन न्यायालय में देखा था, जिस दिन आपको दण्ड सुनाया गया था।”

भूषण देर तक टुकर-टुकर राजकुमार का मुख देखता रहा। फिर कहने लगा, “मैं माढ़े चार मास तक जेल में रहा हूँ और इस समय में वह तीन बार मुझको मिलने आई है। तीनों बार वह यही बताती रही है कि तुम्हारी माँ के साथ रहती है। तुम्हारा और तुम्हारे लड़के का भी मुख-समाचार वह बताती रही है। और तुम कहते हो कि तुमने उसे देखा तक नहीं।”

“जी, वह यहाँ नहीं रहती।”

भूषण गम्भीर विचार में लीन बठा ही था कि राजेश्वरी और सन्तोष आ गई। राजेश्वरी ने हाथ जोड़ नमस्कार किया और पूछ लिया, “कब आए हैं आप?”

“बस, चला ही आ रहा हूँ। मैं सुन्दरी से मिलने आया था।”

राजेश्वरी ने मुस्कराते हुए कह दिया, “जी, मैंने भी यही समझा है। मैं यह समझने की धृष्टता नहीं कर सकती कि आप मुझको दर्शन देने आए हैं।”

“तो वह कहां है? राज कह रहा है कि उसने उसको कभी देखा नहीं।”

“वह आपके मुकदमे के निर्णय के दिन मायंकाल यहां आई थी। मुझसे यहां रहने की स्वीकृति चाहती थी।

“वह मेरी शर्त, कि मद्य-सेवन नहीं करेगी, मान गई थी और मैंने उससे राज से पूछकर यहां रखने की बात कही थी। वह अगले दिन आने की बात कह गई थी। उस दिन के पश्चात् वह नहीं आई और उससे किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रहा।”

“बहुत विचित्र है। वह मुझको इसके विपरीत बताती रही है।”

“तो ऐसा करिए। इस समय स्नानादि कर अल्पाहार लीजिए और फिर अन्य कहीं पर उसकी खोज करिए। यहा तो वह है नहीं।”

इतना कह राजेश्वरी अपनी बहू के पीछे-पीछे चली गई। भूषण स्नानागार में चला गया।

राजेश्वरी के मकान से वह हृषकृष्ण के घर पर जा पहुंचा। वहां राम सिगरेट फूकता हुआ मिल गया। राम की पत्नी उसके समीप बैठी रूप के विषय में ही बतला रही थी। वह कह रही थी, “सुभद्रा ने आज मुझको यह अंतिम चेतावनी दी है कि यदि रूप ने अपना व्यवहार ठीक न किया तो वह अपने बच्चों के साथ यह घर छोड़ जाएगी।”

“तो फिर क्या होगा?”

“होगा यह कि प्रबोध का कारोबार रूप से पृथक् हो जाएगा।”

“मुझको तो यह ज्ञात है कि रूप पहले ही पृथक् कार्य करता है। दोनों के कार्य के पृथक्-पृथक् रजिस्टर हैं।”

“परन्तु घर पर तो वे इकट्ठे रहते हैं।”

“इससे क्या होता है? वह नया घर बना लेगा। आजकल घर बनाने में कुछ भी कठिनाई नहीं है।”

“तो आप भी यही ठीक समझते हैं?”

“नहीं रोहिणी ! मैं तो यह कह रहा हूँ कि इस घर को छोड़ने से किसको अन्तर पड़ेगा ? सुभद्रा पति से वंचित हो जाएगी । उसका मूर्ख लड़का मूर्खता करने में और भी स्वतन्त्र हो जाएगा और वह दिवाला निकालने के समीप हो जाएगा ।”

“तो इससे हमको हानि नहीं होगी क्या ?”

“मैं समझता हूँ कि मुझको सुभीता हो जाएगा । रूप मेरा और तुम्हारा लड़का है । उसको हमारे से अधिक सहानुभूति है । सुभद्रा और उसके लाड़ले प्रबोध ने तो हमको कैदी बना रखा है । हर रोज़ दो रुपये खाने-पीने के लिए दे जाता है, जिसमें से डेढ़ रुपया तो सिगरेट पीने में चला जाता है ।”

“परन्तु वह रूप की शिकायतें जो करती है ।”

“बया करती है ?”

“रूप मद्य का सेवन करने लगा है । वह रात को बारह बजे और कभी उससे भी देरी कर आता है । पिछले पांच महीने से उसने अपनी पत्नी के पलंग पर पांव नहीं रखा और वह अपने ‘एकाउण्ट’ की किताब ‘सैफ’ में बन्द कर रखता है । वह घर पर भोजन नहीं करता । प्रातः काम पर जाता है और रात को बारह बजे लौटता है ।”

“सत्य ही यह बुरी बात है, परन्तु इसका इलाज सुभद्रा का घर छोड़ जाना नहीं । परमात्मा ने उसको कुरूप बनाया है, परन्तु वह इस अवगुण से हुई त्रुटि की पूर्ति अपने प्रेममय व्यवहार से कर सकती थी । वह उसने की नहीं । मुझको भय है कि उसने अभी भी अपना नया घर बना लिया है ।”

“आप दोनों में सुलह करा दीजिए ।”

इस सभय भूषण आ गया । राम ने देखा तो प्रसन्नता से बोल उठा,
“भूषण, आओ बैठो । कब आए ?”

“बस आ ही रहा हूँ । अभी तो राजेश्वरी के मकान में ठहरा हूँ । सुन्दरी यहां रहती है क्या ?”

“नहीं । वह यहां नहीं । इसपर भी इतना ज्ञात है कि वह दिल्ली में ही है ।”

“कैसे पता चला ?”

“एक दिन प्रबोध कह रहा था कि उसने उसे रेसकोर्स में देखा था।”

“क्या करते हुए?”

“किसी घोड़े पर ‘बिड’ करते हुए।”

“ओह। पर भापा, क्या वह अकेली थी?”

“हां।”

“और उसने पूछा नहीं कि वह कहां रहती है?”

“प्रबोध एक मूर्ख लड़का है। वह सुन्दरी से घृणा करता है और मन के इस आवेश में उसने जानना आवश्यक नहीं समझा।”

“प्रबोध पुनः कभी नहीं गया रेसकोर्स में?”

“यह तो मुझको विदित नहीं। वह इस समय काम पर गया हुआ है। मध्याह्न भोजन के समय आएगा। तब पूछ लेना।”

“अच्छी बात है। मैं भोजन के समय आ जाऊंगा। यदि आप मुझको निमंत्रण दें तो भोजन यहां ही करूंगा।”

“भूषण, तुम मेरी बहिन के लड़के हो। इससे मेरे भी अजीब हो। तुम चाहे कितनी भी खराबी करो पर तुम अपने हो। इससे तुम निःसंकोच और अनिमन्त्रित भी आ सकते हो। जैसी रूखी-सूखी मैं खाता हूं, वैसी तुमको भी मिल जाएगी।”

भूषण वहां से चला आया। वह पैदल ही कश्मीरी गेट की ओर चल पड़ा। वहां से वह लालकिले की ओर चलता हुआ चांदनीचौक में घूम गया। इस समय वह थका हुआ अनुभव करने लगा था। उसने घड़ी में समय देखा। अभी साढ़े ग्यारह बजे थे। वह लौट पड़ा और पैदल चलता हुआ श्रीराम रोड पर सवा बारह बजे जा पहुंचा। रूप की कोठी में ड्राइंगरूम में पहुंचा तो सुभद्रा वहां बैठी एक उपन्यास पढ़ रही थी। उसने भूषण को वहां आते देखा तो विस्मय में उठ खड़ी हुई और अनायास ही उसके मुख से निकल गया, “कब आए हो?”

राम ने बैरे से कहा, “शीघ्र करो। हमें खाने के तुरन्त पश्चात् ही कहीं जाना है।”

बैरा चला गया। राम ने सुभद्रा को सम्बोधन कर कहा, “रूप ने अभी-अभी एक पत्र भेजा है। वह तुमको पढ़कर सुना देता हूं।”

राम ने अपनी जेब से एक लिफाफा निकाला। लिफाफा खुला था। उसने उसमें से पत्र निकाला और पढ़ने लगा। लिखा था, “पिता जी, आज मुझको पता चला है कि भूषण छूट गया है। मुझको यह विदित हुआ है कि वह राजेश्वरी भाभी के घर गया है। मुझको यह जानकर बहुत हर्ष हुआ है। मैं आज किसी समय उससे मिलना चाहूंगा और उसके भविष्य के विषय में सुभाव उपस्थित करूंगा।

“अब मैं कुछ अपने विषय में लिखना चाहता हूं। मैंने अपना एक नया घर बना लिया है। वहां मैं अपनी नई पत्नी के साथ रहता हूं। अभी तक तो मैं नित्य रात के समय आपके घर आ जाया करता था, परन्तु आज से नहीं आऊंगा। मैं आपको श्रीराम रोड वाली कोठी नंबर ३३ रहने के लिए देता हूं। मुभद्रा यदि उसमें रहना चाहे तो कृपया रहने दीजिए। यदि न रहना चाहे तो जहां चाहे जा सकती है। यही बात प्रबोध और उसकी बहिनों के विषय में है। कोठी का सब फर्नीचर मेरा है और मैं आपको दे रहा हूं। आप जैसा चाहें करें।

“मैं अभी नये मकान का पता नहीं दे रहा। मैं इसको तब तक गुप्त रखना चाहता हूं, जब तक पता न चल जाए कि मुभद्रा अब क्या करना चाहती है। मैं उससे ऊत्र गया हूं। यदि प्रबोध काम-धन्धे के विषय में कोई बात करना चाहता है तो उसको कहिएगा मुझको मेरे काम पर कल बारह बजे मिल ले।”

चिट्ठी के नीचे लिखा था, “अपनी मां से मुभद्रा के अभद्र व्यवहार के लिए क्षमा चाहता हूं।—आपका नालायक पुत्र रूपकृष्ण।”

मुभद्रा ने पत्र सुना और उठकर डाइनिंग हाल में चली गई। प्रबोध वहां बैठा प्रतीक्षा कर रहा था।

राम ने भूषण को कहा, “तुम भोजन कर राजेश्वरी के मकान में चले जाना। मैं समझता हूं कि रूप तुमको जीवन में स्थिर होने में सहायता देगा।”

“तो रूप यहां नहीं आ रहा है?”

“मध्याह्न के समय तो वह कई महीने से नहीं आता।”

भोजन आया तो वे तीनों खाने लगे।

डाइनिंग हाल में सुभद्रा और उसका लड़का प्रबोध इस नई परिस्थिति पर विचार कर रहे थे। प्रबोध ने कहा था, “मां ! भापा जी ने सब काम बिगाड़ दिया है।”

“नहीं प्रबोध ! यह तुम्हारे भापा जी ने काम नहीं बिगाड़ा। यह तुम्हारे पिता जी की करनी का फल है। उन्होंने एक पत्र आज भापा जी को लिखा है, जिसमें इस कोठी का मालिक उनको लिख दिया है।”

“और हम ?”

“हम भी चाहें तो उनकी स्वीकृति में यहां रह सकते हैं। इसी पत्र ने उनको शेर बना दिया है; अन्यथा उनका कभी साहस नहीं हुआ कि मेरे मामने बोल भी सकें।”

“यह तो पिता जी ने बहुत बुरा किया है।”

“केवल इतना ही नहीं, अपितु यह भी कि उन्होंने अपना एक नया घर बना लिया है। घर का मतलब है, उन्होंने एक नई पत्नी बना ली है।”

“कहां है वह ?”

“यह उन्होंने बताया नहीं।”

“तो अब क्या होगा ?”

“मैं अभी बता नहीं सकती। अभी तो यहां पर रहूंगी। आगे स्थिति कैसे बदलती है, उसके अनुकूल ही मैं अपना व्यवहार निश्चय करूंगी। तुम अपने काम की बात बताओ। कितना रुपया उममें लगा है और कितना रुपया पिता के काम में है ?”

“हमारी दो कम्पनिया है। एक है ‘अग्रवाल कम्बाइन’। यह पिता जी की है। इसमें वे स्वयं मुखिया है। दो प्रतिशत का हिस्सेदार राज-कुमार है और दो प्रतिशत की राज की बहिन राजकुमारी। बस, ये तीन पत्तीदार हैं। एक कम्पनी है, ‘राजधानी निर्माण संस्थान’। इसमें मेरे दस हिस्से हैं। शेष तुम्हारे तथा मामा जी के हैं। मां ! मेरे और तुम्हारे मिलाकर नब्बे प्रतिशत हिस्से हैं। इस कम्पनी का सरमाया है बीस लाख और पिता जी की कम्पनी का है पचीस लाख। पिछले वर्ष तक तो लाभ

की कुल राशि मिला लेते थे। मेरा अभिप्राय है दोनों कम्पनियों की। इस वर्ष मैंने नहीं दिया और सब प्रकार के कर देकर मेरे पास बचा है, साढ़े तीन लाख।”

“यह तो तुमने बहुत बुद्धिमत्ता की है। अब कौड़ी नहीं देनी उनको।

“एक बात और है। आज किसी समय तुम्हारे पिता भूषण से मिलने राजेश्वरी के घर आने वाले हैं। मेरा कहना है कि भोजन कर वहां चले जाओ और अपने ताया जी को मोटर में बैठाकर राजेश्वरी के घर ले जाओ। वहीं उससे चिपटे रहो। मीठी-मीठी बातें कर उससे पिछली बातों का प्रायश्चित्त कर लो और यह जान आओ कि तुम्हारे पिता क्या चाहते हैं भूषण से और तुमसे भी। वह तुमसे भी मिलना चाहते हैं।”

प्रबोध बाहर आया तो भूषण और राम बाहर ड्राइंगरूम में बैठे हुए कॉफी पी रहे थे। खाने की प्लेटें बैरा उठाकर ले गया था। रोहिणी आराम करने अपने कमरे में चली गई थी।

प्रबोध ने पूछ लिया, “आप तो राजकुमार के घर जा रहे हैं न?”

“हां, वहां मेरा सूटकेस रखा है। इस समय मेरे पास केवल दो ‘सूट’ हैं। यदि शीघ्र ही सुन्दरी न मिली तो यह भी कठिनाई उपस्थित हो जाएगी।”

“मैं भी आपके साथ चल रहा हूं।”

“क्यों?”

“सुना है, पिता जी वहां आ रहे हैं और मुझको उन्होंने मिलने के लिए बुलाया है।”

“ठीक है।” राम ने कह दिया, “मैं भी चल रहा हूं। तुम मोटर निकलवा लो और हम सब इकट्ठे ही चल देंगे।”

ये मध्याह्नोत्तर तीन बजे वहां पहुंचे। राजकुमार अपने काम पर गया हुआ था। राजेश्वरी अपने पोते को खेला रही थी और उसकी बहू सन्तोष घर की सफाई कर रही थी।

राम ने बहू को बैठक भाड़ते हुए देखा था। इससे उसने सन्तोष को कह दिया, “बहू, कोई नौकरानी नहीं रखी हुई?”

“भापा ! मैं जो नौकरानी हूँ। कहीं दो नौकरानियां घर में हो गई तो नित्य का भगड़ा हो जाएगा।”

“ऐसा क्यों होगा ? क्या तुम नौकरों से काम लेना नहीं जानती ?”

इनकी आवाज सुन राजेश्वरी बैठकघर में आ गई थी। राम की बात का उत्तर उसने दे दिया, “भापा ! हम तुम्हारी भांति धनवान नहीं हैं। आज दिल्ली जैसे नगर में नौकर रखना सुगम नहीं।”

राजेश्वरी की गोद में राज का लड़का था। बहू ने उसको गोद में ले लिया और वह दूसरे कमरे में चली गई। राजेश्वरी ने सबको बैठते हुए पूछ लिया, “आज यह दलबल-सहित इस घर पर चढ़ाई क्यों कर दी है ?”

“राजेश्वरी ! यह भूषण यहां ठहरा हुआ है और इसका ज्ञान रूप को हो गया है। वह बहुत प्रातःकाल से काम पर गया हुआ है। काम पर से उसने चिट्ठी लिखी है कि वह भूषण से मिलने यहां आ रहा है। मैं और प्रबोध भी उससे शीघ्रातिशीघ्र मिलना चाहते थे। इस कारण यहां चले आए हैं।”

“रूप को राज मिला होगा। उसीने बताया होगा कि ये यहां ठहरे हैं।”

“हां ! कुछ यही प्रतीत होता है।”

राजेश्वरी ने बात बदल दी, “भापा ! सुभद्रा को भी ले आते। कितने ही काल से उसके दर्शन नहीं हुए।”

“परन्तु तुम भी तो उसको कभी मिलने नहीं आईं। राजकुमार तो कभी-कभी आता रहता है।”

रूपकृष्ण सुन्दरी के साथ वहां आ पहुंचा। सुन्दरी को उसके साथ देख, सबके मन में संशय हुआ। रूप ने अपने पत्र में लिखा था कि उसने अपना नया घर बना लिया है। इससे राम, भूषण और प्रबोध को यह सूझ गया कि रूप का नया घर बनाने वाली सुन्दरी ही हो सकती है। इसपर भी भूषण ने मन के संशय को दबाते हुए पूछ लिया, “पर सुन्दरी ! मैं तो तुमको ढूंढ़ता हुआ ही यहां आया था ? तुम कहां हो ?”

“बैठिए, बताती हूँ।”

सब बैठ गए। राजेश्वरी ने सबके लिए चाय बनाने के लिए राज

की बहू को कह दिया। और वह बच्चे को अपनी सास की गोद में दे रसोईघर में चली गई।

रूप ने बात कह दी, “दस बजे के लगभग मैं सेक्रेटेरिएट में से निकल रहा था कि राजकुमार मिल गया। उसने ही भूषण दादा के छूट जाने की बात बताई। मैंने वहां से ही एक पत्र लिखा और अपने ड्राइवर के हाथ भापा जी को भेज दिया। जो कुछ उस पत्र के अन्दर लिखा था, वह भूषण दादा के आने पर ही लिखने का निर्णय था।

“भापा ! वह पत्र सबको सुना देते तो ठीक रहता।”

“मैंने वह भूषण को सुना दिया है। प्रबोध और उसकी मां को भी उस पत्र का ज्ञान है।”

“मैं दादा के राजेश्वरी भाभी के घर आने से बहुत प्रसन्न हूं और मैं हृदय से चाहता हूं कि अब तो इनको अपने घर में रहना चाहिए।”

भूषण ने हंसते हुए कह दिया, “जैसे तुम रहना चाहते हो?”

“देखो दादा ! राजेश्वरी भाभी और प्रबोध की मां में कोई तुलना नहीं। न ही प्रबोध और राजकुमार में किसी प्रकार की समानता है। राजेश्वरी, प्रबोध की मां से सैकड़ों गुणा श्रेष्ठ और सुन्दर हैं। मैंने तो अब अपना घर सुन्दरी के साथ बना लिया है।”

“ओह !” भूषण के मुख से अनायास ही निकल गया, “पर सुन्दरी ! तुमने यह बताया नहीं। अभी पन्द्रह दिन हुए तुम जेल में मुलाकात करने आई थीं, और बताया था कि तुम राजेश्वरी के साथ रहती हो।”

“मैं आपको जेल में दुःखी करना नहीं चाहती थी। वैसे तो हमने इस नये घर की बात उसी मायंकाल निश्चय कर ली थी, जिस दिन आपको दण्ड हुआ था।”

“मृत्यु !”

“जी ! मैं भी आपसे यह ही कहूंगी कि आप राजेश्वरी बहिन से मुलह कर लें। आखिर इममें क्या खराबी है ?”

“और तुमने मुझमें क्या खराबी देखी है ?”

“खराबी की बात तो मैं मानती नहीं। हां, यह कह सकती हूं कि आपके विचारों का अनुकरण ही कर रही हूं। आप बताया करते थे कि यह प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है कि अपनी अवस्था को सुधारने का यत्न

करे। राजनियम के अन्तर्गत रहते हुए मैंने भी अपनी अवस्था को सुधारने का यत्न किया है।”

“क्या सुधार किया है तुमने अपना !”

“प्रबोध के पिता, राजकुमार के पिता से आयु में कम हैं। वे सौन्दर्य में, धनसम्पदा में और सन्तुलित मन रखने में श्रेष्ठ समझ आए हैं।”

“तो ?”

“बस यही कि मैं उनके साथ रहना पसन्द करती हूँ।”

“और मेरी सम्पदा ?”

“वह दोनों ने मिलकर पैदा की थी। आप अपने भाग से बहुत अधिक व्यय कर चुके हैं। अब शेष में आपका कुछ भी भाग नहीं है।”

इसपर रूप ने कह दिया, “दादा ! तुम तो समाजवादी हो न ? धन-दौलत तो किसी व्यक्ति की मितिकयत नहीं होनी चाहिए। तो फिर तुम्हारी सम्पदा का प्रश्न कहां से आ गया ? सब सम्पदा समाज अर्थात् राज्य की है। अतः यह सुन्दरी और राज्य के बीच की बात है कि कितनी किसके पास रहे। जहां तक तुम्हारा सम्बन्ध है, तुम मेहनत करो और भोजन-वस्त्र मिल जाएगा।”

भूषण इस नई परिस्थिति के विषय में कुछ भी समझ नहीं सका। उसे चुप देख, रूप ने कह दिया, “मैंने भापा को अपने पत्र में लिखा है कि भूषण जी को भविष्य के विषय में कुछ सुझाव उपस्थित करूंगा। सो दादा ! मेरा सुझाव है कि यदि तुम राजेश्वरी भाभी के साथ रहना पसन्द करो तो मैं तुमको दो सौ रुपया महीना पेंशन के रूप में दे सकूंगा।”

इस समय चाय आ गई थी। संतोष ने तिपाही सबके बीच में रख, बर्तन लगा दिए और सबके लिए चाय बनाने लगी। राजेश्वरी ने मिठाई खाने के लिए रखते हुए रूप की बात का प्रतिकार कर दिया, “रूप भैया ! तुम्हारी अपने प्रति सहानुभूति देख मैं आभारी हूं परन्तु मैं कहूंगी कि अपने भाई की सहायता में मुझको बलि मत चढ़ाओ। मेरे इनसे सम्बन्ध की बात दो सौ रुपये से अधिक मूल्य की और जटिल है। मैंने अभी इनको यहां रखने का निर्णय किया नहीं। कदाचित् मैं कर सकती भी नहीं। इसका सम्बन्ध राजकुमार और संतोष से भी है।”

“राजेश्वरी ! तुमको इस विषय में कहने की आवश्यकता भी

नहीं। मैं स्वयं ही यहां रहना पसन्द नहीं करूंगा।

“क्यों भापा ! मैंने तुम्हारी कोठी में एक कमरा मांगा है ? अब तो मेरे लिए वह ही एक आश्रय रह गया है।”

“यह घर चलकर विचार करेंगे। क्यों रूप ? कहां रहोगे अब ?”

“मैंने अपना पक्का मकान नहीं बनाया। अभी सुन्दरी एक अस्थायी स्थान पर रहती है। यदि सुभद्रा श्रीराम रोड वाली कोठी में रहेगी तो मैं सुन्दरी के लिए एक पक्के रूप में मकान का प्रबन्ध कर दूंगा। यदि वह उस कोठी को छोड़ कहीं अन्यत्र चली गई तो मैं कोठी में लौट आने के विषय में विचार कर लूंगा।”

“पिता जी !” प्रबोध ने कह दिया, “हम अभी तो उस कोठी में ही रहने की इच्छा रखते हैं।”

“तो मैं सुन्दरी के लिए प्रबन्ध करूंगा।”

“और दादा भूषण, अब तुम क्या करने का विचार करते हो ?”

“मैं कल से अपने लिए कोई काम ढूढ़ने का यत्न करूंगा। जब इस लायक काम मिल गया कि मैं अकेली जान के लिए पैदा कर सकू तो मकान भी ढूढ़ लूंगा।”

“जैसा मन आए करो। मैंने अपना प्रस्ताव बता दिया है। एक बार हमारे ताया शिव जी ने तुम्हारी मां की सहायता की थी। दो सौ रुपया मासिक का काम देकर। मैं परिवार के प्रति अपना ऋण उतारने के लिए आपको भी एक काम बता कर दो सौ रुपये का प्रस्ताव कर रहा हूँ।”

“और काम यह है कि मैं राजेश्वरी जी का पति बनूँ, बिना उनकी इच्छा के।”

“मेरा मतलब यह है कि आप यत्न करें कि आपमें सुलह हो जाए।”

“मैं समझता हूँ कि यह हो नहीं सकेगी।”

रूप ने कन्धों का झटका देकर असंतोष प्रकट किया और उठ खड़ा हुआ। सुन्दरी भी उठ खड़ी हुई। भूषण को समझ आया कि सुन्दरी पहले से भी सुन्दर होती जा रही है। वास्तव में वह हीरक-जड़ित कर्ण-फूल पहने थी और उनकी चमक ने सुन्दरी के सौन्दर्य को द्विगुण कर

रखा था ।

राम इस अप्रत्याशित परिस्थिति में समझ नहीं रहा था कि क्या करे और क्या कहे । वह रूप और सुन्दरी को जाते देखता रह गया ।

रूप ने जाने से पूर्व प्रबोध को सम्बोधन कर कह दिया, “ देखो प्रबोध, तुम्हारी कम्पनी की आय तुम्हारी है । उसमें तुम अपनी मां का तथा बहिनों का भाग भी समझ लेना । इस कोठी में तुम तब तक रह सकते हो, जब तक भापा जी को किसी प्रकार का कष्ट नहीं दोगे ।

“ आज से तुम अपना ‘किचन’ और नौकर पृथक् कर लो । भापा ! ” उसने अपने पिता को सम्बोधन कर कहा, “ आपसे कोठी के प्रबन्ध और खाने-पीने के सम्बन्ध के लिए मैं रात को कोठी में मिलूंगा । ”

इतना कह वह चला गया । भूषण राजकुमार के कमरे में गया और अपना सूटकेस उठा लाया । राम ने राजेश्वरी को भूषण के मुख पर ही कह दिया, “ राजेश्वरी ! मैं तुम्हारे व्यवहार से अति प्रसन्न हूं । तुम अब परिवार के निर्माण में लग जाओ । भूषण इस योग्य नहीं कि तुम उसके लिए मन में विचार भी करो । ”

७

रामकुमार भूषण को कोठी में रखने के पक्ष में नहीं था । उसने इस बात का संकेत भूषण को दे भी दिया था । भूषण को कोठी में आकर टिके हुए तीन दिन हो चुके थे । वह भोजन प्रबोध तथा सुभद्रा के साथ करता था और उनके कक्ष में ही एक कमरे में रहता था । पिछले दिन तो वह प्रबोध के साथ उसके काम पर भी गया था । अतः रामकुमार ने उसके विचार जानने के लिए भूषण को बुलाकर कह दिया, “ भूषण ! मैं समझता हूं, कि तुमको अपनी जीविका के विषय में कुछ तो विचार करना चाहिए । ”

“ कर रहा हूं भापा । ”

“ किसके साथ विचार कर रहे हो और क्या विचार कर रहे हो ? ”

“ विचार तो अपने मन से कर रहा हूं । प्रबोध मुझको अपनी कम्पनी का जनरल मैनेजर नियुक्त करना चाहता है । मैंने अभी अपनी अनुमति नहीं दी । ”

“क्या वेतन देगा प्रबोध, तुमको ?”

“वेतन मैं पसन्द नहीं करता । मैं तो उनकी कम्पनी में कुछ हिस्से के रूप में अपना पारिश्रमिक चाहता हूं ।”

“कब तक विचार कर लोगे ?”

“आज रात सुभद्रा से बातचीत करनी है । मैं समझता हूं कि बात बन जाएगी ।”

“ठीक है । मेरी सम्मति यह है कि तुमको प्रबोध से कुछ पेशगी ले लेनी चाहिए और कोई मकान भाड़े पर ले लेना चाहिए ।”

“मेरे यहां रहने से आपको कुछ कष्ट है ?”

“मुझको क्या कष्ट होना है । इसपर भी मैं यही उचित समझता हूं ।”

“रात रूप आपसे मिलने आया था । कुछ वह कह गया है क्या ?”

“नहीं । वह तुममें रुचि नहीं रखना । उससे तुम्हारे विषय में कुछ बात नहीं हुई ।”

“मैं चाहता हूं, भापा, कि मुझको एक-दो मास तक यहां रहने दो । तब तक मैं किसी अच्छे मकान को लेने की अपने मे सामर्थ्य उत्पन्न कर लूंगा ।”

“तुमको शीघ्रातिशीघ्र प्रबन्ध कर लेना चाहिए ।”

उस दिन मध्याह्नोत्तर चाय के समय प्रबोध अपने बाबा से आकर पूछने लगा, “भापा ! आपने भूषण ताया को कोटी छोड़ने के कह दिया है ?”

“मैंने यह कहा कि उसे शीघ्रातिशीघ्र कहीं अन्यत्र रहने का प्रबन्ध कर लेना चाहिए ।”

“यहां उनसे किसीको कष्ट है क्या ?”

“हां ! तुम्हारी बहिनों को कष्ट प्रतीत होता है ।”

“क्या कष्ट हो सकता है उनको ?”

“यह मैं क्या बताऊं ? दिति कुछ कह रही थी तुम्हारी दादी से ।”

“भापा ! दादी व्यर्थ में सन्देह किया करती है । इसी कारण मां और दादी में बनती नहीं ।”

“देख लो । परन्तु मुझको क्या रुचि है भूषण को यहां रखने में ?”

“मैं उनको अपनी कम्पनी का जनरल मैनेजर बनाना चाहता हूँ। यदि वे बन गए तो उनका हमारे समीप ही रहना भारी सुभीते की बात होगी।”

“इतनी आवश्यक पदवी पर मा से पूछकर नियुक्त कर रहे हो?”

“वे ही तो मुझको कह रही हैं कि मैं उनको रख लूँ।”

“उनकी क्या रुचि है इसमें? किसी अन्य को रखने के लिए क्यों नहीं कहती?”

“यह तो वे ही बता सकती हैं। वैसे मेरे काम में वे सहायक तब ही हो सकते हैं, जब यहा रहे।”

“मुझको दोनो बातों में किसी प्रकार का भी सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता।”

बात पुनः रात को चली। सुभद्रा ने अपने स्वसुर के पास आकर कह दिया, “भूषण जी यहा रहेगे। यदि आपको कोई आपत्ति हो तो बताइए।”

“यह तुम्हारा निश्चित मत है?”

“जी! प्रबोध के पिता के चले जाने से प्रबोध के कारोबार में जो अवकाश उत्पन्न हो गया है, मैं उसकी पूर्ति के लिए यत्न कर रही हूँ।”

“यदि रूप ने इसमें आपत्ति की तो बहुत कठिनाई उत्पन्न हो जाएगी।”

“तो मैं भी इस कोठी को छोड़ जाऊंगी।”

“ठीक है। मैं बात को इतनी दूर तक ले जाने की इच्छा नहीं रखता। फिर भी यदि तुम जाती हो तो मैं क्या कर सकता हूँ।”

सुभद्रा अपने शयनागार में चली गई। रूप से राम ने इस परिस्थिति का वर्णन किया तो उसने कह दिया, “भापा! मुझको इस धनिकों की लड़की के भले-बुरे में किसी प्रकार की रुचि नहीं।”

“देखो रूप, मैं तुम्हारी पत्नी के विषय में चिन्ता नहीं कर रहा हूँ, मैं तो तुम्हारी लड़कियों की बात कर रहा हूँ। तीन दिन हुए तुम्हारी छोटी लड़की तुम्हारी मा को बता रही थी कि भूषण भोजनोपरान्त मद्य का सेवन करता है और उस दिन वह सोमा को कह रहा था, ‘जरा चखकर तो देखो।’”

“भापा ! वे आक के पेड़ ही हैं जो ऊसर भूमि में उत्पन्न होते हैं। मैंने अपना सम्बन्ध विच्छेद इनसे कर लिया है।”

“परन्तु यहां दुराचार फैलने लगा तो मुझसे सहन नहीं हो सकेगा।”

“उस अवस्था में पुलिस मंगवाकर खेत को निराह देना चाहिए। यह अधिकार मैं आपको देता हूं।”

दिति के मन में सोमा को मद्य पिलाने का यत्न अखरा था और उसने अपनी दादी को इसे बताया था, केवल बताने के लिए। उसके पश्चात् पुनः रोहिणी के पास किसी प्रकार की बुरी सूचना नहीं आई। रूप ने पांच सौ रुपया मासिक अपने पिता को कोठी को साफ-सुथरा, बगीचे को हरा-भरा और नौकर-चाकर से युक्त रखने के लिए देना आरम्भ कर दिया था और स्वयं उसने कोठी में आना छोड़ दिया था।

इस प्रकार छः मास शान्ति से व्यतीत हो गए। रुपये-पैसे की कमी नहीं थी। और किसी प्रकार की जीवन में कठिनाई उपस्थित नहीं हो रही थी। कोठी में दो स्थान पर भोजन बनता था और दो स्थान पर बैठकर खाया जाता था। आधी कोठी रामकुमार के अधीन थी और आधी प्रबोध और उसकी मां के अधीन। दोनों कक्षों में रहने वाले प्राणी परस्पर मिलते नहीं थे।

दोनों कक्षों में सम्बन्ध बनाने वाला एक सूत्र था। वह थी लड़की दिति। वह अपनी दादी से विशेष स्नेह रखती थी और प्रायः नित्य उसके पास आकर बैठा करती थी।

दिति की मां ने एक दिन उससे पूछा भी था, “दिति, उस बुढ़िया के पास क्या लेने जाती हो?”

“कौन बुढ़िया? मां!”

“वही तुम्हारी दादी।”

“ओह! वे मुझको कुछ देती नहीं। केवल पुराने जमाने की बातें बताया करती हैं।”

“मत जाया करो उसके पास।”

“क्यों?”

“तुम भी उसकी भांति मूर्ख हो जाओगा।”

“पर मां! वे मूर्ख हैं क्या?”

“हां।”

“मां, वे कहानी तो बहुत बढ़िया कहती हैं।”

“यही तो मूर्खता के लक्षण हैं।”

दिति को मूर्खता के इन लक्षणों पर विश्वास नहीं आया और वह मां के मना करने पर भी जाती थी।

एक दिन वह स्कूल से लौटी, तो सीधे दादी के कमरे में चली गई। रोहिणी अपने पति के साथ मध्याह्नोत्तर की चाय ले रही थी। रोहिणी ने दिति को चाय लेने के लिए कहा तो उसने कह दिया, “मां ! मैं कल रात की एक बात बताने आई हूं।”

“क्या ?”

“भैया ने मां को बहुत पीटा था।”

“क्यों ?”

“पता नहीं।”

“तुमने देखा था पीटते हुए ?”

“हां ! मुझको मां के कमरे में खटाखट वस्तुओं के गिरने का शब्द सुनाई दिया तो मैं भागी हुई गई। भैया मां को घूसों और मुक्कों से पीट रहे थे। मैंने भैया को मना किया तो उसने मां को छोड़ दिया और यह कह वहां से चला गया, ‘मां ! तुम्हारी हत्या कर दूंगा और स्वयं फांसी पर चढ़ जाऊंगा।’

“जब वह चला गया तो मैंने मां से पूछा, ‘क्या बात थी मां ?’

“इसपर मां ने कह दिया, ‘जाओ ! जाकर सो रहो। तुम्हारे भैया ने मद्य पी ली है और उसके नशे में मुझको पीट रहा था।’

“परन्तु बड़ी मां ! मुझको मां के मुख से मद्य की गन्ध आ रही थी।”

“अच्छा दिति ! तुमको डर लगे तो तुम मेरे पास आकर सो रहा करो। कल उस समय सोमा कहां थी ?”

“वह आजकल विश्वम्भर दादा के घर जाती है और प्रायः भोजन उनके घर खाकर आती है।”

“यह विश्वम्भर हमसे मिलने नहीं आता ?”

“मैंने एक दिन पूछा था तो कहने लगा कि आप सो जाते हैं, इस

कारण आपकी नींद खराब करना नहीं चाहता ।”

दिति ने चाय नहीं पी और अपनी मां के पास चली गई । उसी रात राम ने प्रबोध को नौकर भेज बुला लिया । प्रबोध आया तो उसने कुशल-समाचार पूछा, व्यापार का हाल-चाल पूछ लिया ।

“भापा ! काम चल रहा है । आय दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, परन्तु खर्चा उससे भी अधिक बढ़ रहा है ।”

“क्यों बढ़ रहा है ?”

“एक सहस्र रुपये प्रतिमास की तो शराब ही आ जाती है । पांच सौ रुपया भूषण अपने खर्चों के लिए निकाल लेता है और एक मोटर उसने अपने काम और आराम के लिए रख ली है ।

“मैं मां को इस बढ़ रहे खर्चों के विषय में बताने गया था परन्तु मां शराब पी गुट्ट हो रही थी ।

“मैंने शराब का खर्चा बताया तो कहने लगी, ‘और तुम्हारा दिवाला निकल रहा है इससे ?’

“मैंने बताया कि दिवाला तो नहीं, इसपर भी खर्चा बहुत बढ़ रहा है । चार-पांच हजार प्रतिमास उड़ जाता है ।

“‘तो क्या किया जाए । हमारी इतनी आय है, तभी तो इतना खर्चा हो रहा है । नहीं होगी तो खर्चा स्वयमेव कम हो जाएगा ।’

“मैंने बताया कि भूषण ताया अकेला पांच-छः सौ रुपये की मद्य पी जाता है ।

“इसपर वह बोली, ‘भूषण जी के विषय में मत बातचीत करो । वे इस घर में विशेष व्यक्ति हैं ।’

“‘क्या विशेषता है उनमें ?’

“‘प्रबोध ! इस विषय में तुमको कुछ कहने का अधिकार नहीं ।’

“‘क्यों ? क्या मैं इस धन के उपार्जन में परिश्रम नहीं करता ?’

“‘एक मूर्ख के परिश्रम का मूल्य ही क्या है । तुम दसवीं श्रेणी तो पास नहीं कर सके और समझते हो कि लाखों की आय तुम कर रहे हो ?’

“‘मैं नहीं कर रहा तो यह भूषण ताया कर रहा है ?’

“‘यह मैं कर रही हूं । तुम्हारे पिता भी, जब मैं विवाह कर इस

घर में आई थी तो, चार-पांच सौ रुपया महीना से अधिक पैदा नहीं कर सकते थे। यह मेरी युक्ति और प्रतिभा का परिणाम था कि वे लाखों पैदा करने लगे। तुम भी जब अपने पिता से पृथक् काम करने लगे थे तो दसवीं श्रेणी में तीन बार अनुत्तीर्ण हो चुके थे। तुम्हारे पिता ने तो कह दिया था कि प्रबोध को घर के किसी कुत्ते, बिल्ली की भांति रोटी खिला दिया करो। वास्तव में यह मैं हूँ, जो कार्य कर रही हूँ।

“अब तुम्हारे ताया जी मेरी राय से कार्य करते हैं तो इस कार्य की उन्नति में सहायक हो रहे हैं।’

“भापा ! इसपर मैंने पूछ लिया, ‘तो फिर उनमें विशेषता क्या है ?’

“वे इस समय तुम्हारे पिता के स्थानापन्न हैं।’

“पहले तो मैं समझा नहीं परन्तु पीछे मुझको कुछ सन्देह हुआ तो मैंने पूछ लिया, ‘तो तुम भूषण ताया की पत्नी बन गई हो ?’

“यह मेरी निज की बात है। इसमें तुमको पूछने का अधिकार नहीं।’

“भापा जी ! मुझको क्रोध आ गया और मैंने मां की खूब मरम्मत की। खाने के पश्चात् वह आधी बोतल शराब पी जाया करती है। और उस शराब का नशा उतारने में खूब पीटना पड़ा। उसी समय दिति मां के कमरे में आ गई। वह शोर मचाने ही वाली थी कि मैं वहां से चला आया।

“आज भूषण जी ने मुझको मां के पीटने पर डांटना आरम्भ कर दिया। यह मध्याह्न के भोजन के समय की बात है। मैंने उनको कहा कि यदि उन्होंने अपने को सीमा के भीतर नहीं रखा तो उनको धक्के दे-देकर घर से निकाल दूंगा।

“इसपर भूषण जी ने मुझको बताया है कि मैं तो कम्पनी में दस प्रतिशत हिस्से का मालिक हूँ। शेष तो सुभद्रा जी के और उसके ही हिस्से हैं।

“मैंने पूछा, ‘और मामा जी के ?’

“वे सब मैंने खरीद लिए हैं। इसलिए मां के अधीन होकर रहो, नहीं तो घर से तुम निकाले जाओगे, मैं नहीं।’

“भापा ! मैं आज मामा जी के पास गया था। उन्होंने बताया है कि उनके पन्द्रह प्रतिशत हिस्से थे परन्तु बहिन के कहने पर वे उन्होंने भूषण के नाम कर दिए थे। मैंने उनको मां के विषय में वस्तुस्थिति बताई तो वे कहने लगे कि मैं विवाह कर मां से पृथक् हो जाऊँ। इन विषयों में किसीकी बातों में दूसरों को भाँकने की न तो आवश्यकता है न ही उचित।

“अब आप बताइए कि मैं क्या करूँ ?”

राम कितनी देरी तक विचार करता रहा और वह भी उसी परिणाम पर पहुँचा, जिसपर राम का मामा पहुँचा था। उसने कह दिया, “अपने लिए और अपनी बहिनों के लिए ठीक बात यही है कि तुम विवाह कर लो और अपनी बहिनों को लेकर पृथक् जा रहो।”

“तो भापा ! बड़ी मां से कहकर मेरे विवाह का प्रबन्ध कर दो।”

“मैं आज उससे बात करूँगा। बिरादरी में थोड़ा घूमना पड़ेगा। मेरी राय मानो, तुम अपने पिता से मिलो और उनसे भी राय कर लो।”

८

भूषण और सुभद्रा के सम्बन्धों की बात प्रबोध पर प्रकट हो जाने के पश्चात् तो थोड़ा-सा पर्दा जो वह उससे रखे हुए थे वह भी उतर गया और अब भूषण सुभद्रा के शयनागार में सोने लगा। यह बात सोमा और दिति से भी छुपी नहीं रह सकी। रूप का सबसे छोटा लड़का कमल इस समय ग्यारह वर्ष का था। वह घर की बदल रही अवस्था से अपरिचित था। प्रबोध तो बहिनों से बात करता नहीं था। न ही बहिनें प्रबोध से अपने मन की बातें करती थीं।

कुछ दिनों से सोमा और विश्वम्भर, काहन के लड़के, में मेल-जोल बढ़ रहा था और वह स्कूल से सीधी काहन के घर चली जाती थी। विश्वम्भर कालिज से आता तो सोमारानी को ले घूमने निकल जाता और रात को उसे उसकी मां के घर में छोड़ जाता था।

जिस दिन प्रबोध ने मां को पीटा था और दिति ने उसे पीटते तथा मार डालने की धमकी देते देखा था, उसी रात सोमारानी आई तो दिति ने उसे पूर्ण घटना, जैसा वह समझी थी, बता दी। सोमा विश्वम्भर की

संगत में घूमने से पुरुष-स्त्री के सम्बन्धों को जानने लगी थी। उसने दिति को कह दिया, “इस सबमें भैया का दोष है। उसको मां को पीटना नहीं चाहिए था।”

“यह तो मैं भी समझती हूँ परन्तु भैया ने मां को पीटा क्यों और वे मां को मार डालने की बात किसलिए कहते हैं? मां ने क्या किया है?”

“कुछ भी किया हो। भैया का पीटना क्षम्य नहीं।”

“तो फिर क्या करें? मां को मार डाला तो वह फांसी चढ़ जाएगा। और हम कहां जाएंगी?”

“हम विवाह कर अपने पतियों के घर चली जाएंगी।”

“कौन करेगा हमारा विवाह और कैसे करेगा?”

“भापा और बड़ी मां कर देंगी।”

सोमा के इस कहने पर ही अगले दिन दिति अपनी दादी से मां के पीटे जाने की बात बताने आई थी। दादी ने कह दिया था कि उसको डर लगे तो वह उसके साथ आकर सो जाया करे। इससे दिति को संतोष नहीं हुआ। रात फिर सोमा देरी से आई। दिति ने भोजन किया और मां के साथ-साथ उसके शयनागार की ओर जाते हुए पूछने लगी, “मां, भैया तुमसे नाराज क्यों हैं?”

“वह मद्य पी गया था; उसकी मति ठिकाने नहीं रही।”

“वह तो मां, तुम भी पीती हो?”

“मुझको वह अचेत नहीं करती।”

“पर तुम पीती क्यों हो?”

“तुम्हारे पिता जी के चले जाने से जो दुःख हुआ है उसको भूलने के लिए।”

इस समय वे दोनों शयनागार के बाहर जा पहुंचीं। कमरे के बाहर से ही मां ने दिति को कह दिया, “अब तुम जाओ! स्कूल की पढ़ाई करो। इस वर्ष तो पास हो जाना चाहिए।”

“मैं पास नहीं हूंगी, मां!”

“क्यों?”

“मुझको स्कूल में नींद आई रहती है। स्कूल की बहिन जी कहती हैं कि मैं घर पर ट्यूशन रख लूं। अन्यथा मैं पास नहीं हो सकती।”

“तो उसी मास्टराइन से पूछ लो। वह तुमको पढ़ाया करे। क्या वेतन लेगी?”

“मैंने पूछा है। कहती थी, दो घण्टे नित्य पढ़ाया करेगी और एक सौ रुपया महीना लेगी।”

“तो कल से उसको आने के लिए कह देना।”

सुभद्रा ने लड़की को अपने कमरे में जाने नहीं दिया। उसको बाहर से ही अपने कमरे में भेज दिया।

रात सोमा आई तो ग्यारह बज रहे थे। दिति ने पूछ लिया, “तुम इतनी देरी से क्यों आती हो?”

“दादा विश्वम्भर के साथ इंडिया गेट पर घूमने गई थी। बातें करते-करते इतनी देर हो गई है।”

“तुम्हारी परीक्षा कब होगी?”

इसपर सोमारानी ने मुस्कराते हुए अपनी बहिन की आंखों में देखते हुए कहा, “मैंने स्कूल छोड़ दिया है।”

“क्यों?”

“मैं अब विवाह करूंगी।”

“कैसे करोगी?”

“एक दिन यहां से ससुराल चली जाऊंगी।”

“बस? बरात, फेरे, डोली, दावत इत्यादि कुछ नहीं?”

“यह सब तो मां को करना है। उनसे पूछ लेना।”

“तो अभी पूछ लू?”

“हां। पूछ सकती हो।”

दिति उठकर मां के कमरे की ओर चली गई। कमरा भीतर से बन्द था। भीतर प्रकाश हो रहा था। दिति ने दरवाजा खटखटाया तो भीतर से उसकी मां ने पूछ लिया, “कौन?”

“मैं, दिति।”

“क्या कहती हो?” भीतर से आवाज आई।

“कुछ पूछना है।”

“सुबह आना। मुझको नींद आ रही है।”

दिति विचार करने लगी कि बाहर से ही बहिन के विवाह की बात

बता दे अथवा न। वह अभी विचार ही कर रही थी कि भीतर से दो के बातें करने की आवाज़ आ गई। एक ने कहा, “चली गई है?”

“कह नहीं सकती।” यह उसकी मां ने धीरे से कहा था।

“तो चुप रहो, चली जाएगी।”

दिति को कुछ-कुछ समझ आने लगा था, दूसरी आवाज़ किसी पुरुष की थी।

दिति के मन में भय समा गया। वह भागी हुई अपने कमरे में आई तो उसकी बहिन कपड़े बदल सोने की तैयारी कर रही थी। दिति आई तो उसने पूछ लिया, “पूछा है?”

“नहीं।”

“क्यों?”

वह अपने मन की बात बता न सकी। सोमा दिति से अधिक समझती थी। उसने पूछ लिया, “दरवाज़ा बन्द था?”

दिति ने सिर हिलाकर ‘हां’ में उत्तर दिया। इसपर बड़ी बहिन ने कह दिया, “तो सो जाओ। कल प्रातःकाल बात करेंगे।”

दिति सो नहीं सकी। वह मन में विचार कर रही थी कि बड़ी मां के पास सोने चली जाए क्या?

अगले दिन सोमा उठी और उसने छोटी बहिन को जागते हुए देख पूछ लिया, “उठोगी नहीं?”

“सोई ही नहीं तो उठूंगी क्या?”

“सोई क्यों नहीं?”

इसपर उसने बहिन को मां के कमरे के भीतर की बात बता दी।

“तो फिर क्या हुआ?”

अब इस ‘क्या हुआ?’ की बात तो दिति समझ नहीं सकी। वह चुप रही।

प्रातः के अल्पाहार के समय दिति ने वही बात, जो वह रात के समय मां को बताने गई थी, बता दी। उसने कहा, “मां! सोमा बहिन कहती है कि उसने स्कूल छोड़ दिया है।”

“क्यों?”

उस समय सोमा, प्रबोध और भूषण भी वहां बैठे थे। दिति ने

अपनी बहिन की ओर देखा। वह चाहती थी कि सोमा अपनी बात कहे। सोमा चुप रही। इसपर प्रबोध ने डांट के भाव में पूछ लिया, “बताओ सोमा !”

“क्या बताऊं भैया ? तुमने भी तो बिना पास किए पढ़ाई छोड़ दी थी। मुझमें भी पढ़ाई नहीं होती, मैं भी छोड़ बैठी हूं।”

अब मां ने पूछ लिया, “छोड़ बैठी हो ? कब से ?”

“आज से दो महीने हो गए। मुझसे पढ़ाई नहीं होती।”

“तो फिर क्या करोगी ?” प्रबोध का प्रश्न था।

“जो लड़कियां करती हैं। विवाह कर ससुराल चली जाऊंगी।”

इसपर भूषण ने कह दिया, “ससुराल ढूढ़ने में तो समय लगेगा। तब तक तो स्कूल जाती रहा करो।”

“मैंने ढूढ़ ली है ?”

“क्या ढूढ़ ली है ?” प्रबोध के माथे पर त्योरी पड़ गई थी।

“जिसके ढूढ़ने में समय लगने की बात कर रहे हैं।”

“कहां ढूढ़ ली है ?”

“विश्वम्भर जी से विवाह होगा मेरा।”

“यह कैसे हो सकता है ! वह तो तुम्हारा भाई लगता है !”

“मां-जाया तो है नहीं।”

“तो विश्वम्भर से पूछ लिया है ?” भूषण ने पूछ लिया।

“हां। वह भी कहता है कि आप लोग पुराने विचार के हैं। मानेंगे नहीं। इसलिए हमको स्वयंमेव विवाह कर लेना चाहिए और हमने निश्चय कर लिया है।”

इस घोषणा से तो सब टुकुर-टुकुर मुख देखते रह गए। सबसे पहले सुभद्रा को मार्ग सूझा तो उसने कहा, “अच्छा, विश्वम्भर को आज सायं चाय पर यहां ले आना। यदि वह स्वीकार करेगा तो तुमको पृथक् घर बना देंगे।”

“मैंने पूछा था। वह कहता था कि हम पृथक् मकान बनाकर रहेंगे।”

“कितना बेतन है उसका ?”

“पीने तीन सौ रुपये मिलते हैं। भैया राजकुमार उसको कुछ काम घर पर करने के लिए बता देते हैं और उससे सौ रुपये के लगभग

अतिरिक्त आय हो जाती है।”

“यह आय पर्याप्त नहीं। उसकी आय-वृद्धि के लिए विचार कर लेंगे।”

सोमारानी इससे संतोष अनुभव करती थी। प्रबोध को यह सम्बन्ध पसन्द नहीं था। इस सब अव्यवस्था को देख, उसको अपने बाबा की बात पसन्द आई कि उसको अपने पिता से मिलकर बात करनी चाहिए।

अल्पाहार के पश्चात् प्रबोध ने मोटर निकलवाई और अपने काम पर चला गया। इमारतों के निर्माण का कार्य बहुत वेग से चल रहा था और प्रबोध की कम्पनी ने पांच काम लिए हुए थे। पांचों पर पांच जमादार, जो ओवरसीयर की योग्यता रखते थे, नियुक्त थे। इन जमादारों का काम जहां कारीगर और मजदूर एकत्रित कर काम चलाना था, वहां काम को नक्शे के अनुसार तैयार करवाना था। पांचों कामों पर एक इंजीनियर की योग्यता का आदमी रखा हुआ था। वह केवल काम की श्रेष्ठता का ध्यान रखता था। भूषण हिसाब-किताब रखता था। प्रबोध पांचों कामों पर सबको काम में संलग्न देखता रहता था।

प्रबोध मोटर लेकर दो-तीन घंटों में सब कामों पर घूम और अपने पिता को ढूढ़ने चल पड़ा। उसको रूपकृष्ण अपने घर में मिल गया।

रूप कनाटप्लेस में एक प्लैट पर सुन्दरी के साथ रहता था। मध्याह्न भोजन का समय था और दोनों खाने पर बैठे हुए थे।

प्रबोध को आया देख दोनों प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगे। प्रबोध ने स्वयमेव कुर्सी पर बैठते हुए कह दिया, “पिता जी ! आपसे एक अत्यावश्यक विषय पर परामर्श करने आया हूं।”

“विवाह कर रहे हो अपना ?”

“वह तो आपने करना है। मैं कैसे कर लूंगा ?”

“तो और कौन-सी अत्यावश्यक बात है, जिसके लिए यहां भागे हुए चले आए हो ?”

“आप भोजन कर लें तो बताता हूं।”

“क्यों ? अभी क्यों नहीं ? मैं कानों से तो खा नहीं रहा।”

“परन्तु सुन्दरी के सामने ही बता दू ?”

“बताओ सुन्दरी ! तुम प्रबोध की अत्यावश्यक बात सुनना चाहती हो अथवा नहीं ?”

“यह सुनाएगा तो सुन लूंगी ।”

“तो बेटा, कह डालो । इसको भी सुन लेने दो ।”

“पिता जी, वह मां के विषय में है ।”

“क्या हुआ तुम्हारी मां को ?”

“वह...।”

“हां ! हां !! कहो न रुक क्यों गए ? वह घर से भाग गई है क्या ?”

“घर से नहीं भागी परन्तु उसने भूषण ताया जी से विवाह कर लिया है ।”

“कैसे विवाह कर लिया है ?”

“जैसे आपने सुन्दरी से कर लिया है ।” इसपर रूप और सुन्दरी हंसने लगे ।”

“मैं समझता हूं ।” रूप ने कुछ विचार कर कहा, “तुम भी विवाह कर लो ।”

“किससे कर लू ?”

“यहां बहुत घूमती-फिरती हैं । कोई पकड़ लाओ ।”

“मेरा साहस नहीं होता ।”

“तो अपनी दादी से कहो । वह कोई ढूढ़ देगी । देखो, प्रातःकाल उनके चरण-स्पर्श किया करो । उनको तुमने और तुम्हारी मां ने बहुत कष्ट दिया था । उसके लिए क्षमा मांगा करो । जब वे प्रसन्न हो जाएंगी तब तुम्हारे लिए कोई लड़की ढूढ़कर बाजे-गाजे के साथ विवाह कर देंगी ।”

“पर पिता जी । सोमा कहती है कि उसने विश्वम्भर से विवाह करने का निर्णय कर लिया है ।”

“बहुत बदमाश है वह ?”

“जी, जी ।”

“तो तुम्हारी मां क्या कहती है ?”

“उसने विश्वम्भर को बुलाया है ।”

“ठीक है। यदि काहन स्वीकार करे तो विवाह कर दो।”

“काहन स्वीकार नहीं करेगा।”

“कैसे कहते हो?”

“वह आपका भाई है न?”

“हां। वह भाई था जब हम पुराने काल के विचार रखते थे। तब भाई-भाई में बहुत स्नेह होता था। परिवार की बहुत महिमा थी। एक के लिए परिवार के सब लोग रक्त बहा देते थे। धनवान भाई निर्धन की सहायता करता था। और निर्धन परिवार की मान-प्रतिष्ठा के लिए अपना जीवन तक दे देता था।

“परन्तु अब जमाना बदल रहा है। बेटा, हम सम्य हो रहे हैं। तब क्या हानि है सोमा के उससे विवाह कर लेने में?”

“यह धर्म के विरुद्ध है, पिता जी।”

“तुम्हारी मां का भूषण से विवाह धर्मनुसार है न?”

“पर आपने भी तो किया है?”

“एक अधर्म के कार्य से दूसरा अधर्म का कार्य क्षम्य नहीं हो जाता।”

“पिता जी, इसका अर्थ तो यह है कि सब कुछ गलत हो रहा है।”

“इसीलिए तो कह रहा हूं कि विश्वम्भर माने तो उसका विवाह कर दो। यह युग-धर्म है।”

“अब तुम जाओ और जैसा मैंने कहा है, करोगे तो तुम्हारी समस्या सुलभ जाएगी।”

रूप भोजन कर चुका था। वह उठ खड़ा हुआ। प्रबोध भी जाने के लिए उठ खड़ा हो गया।

९

राम काहन की कोठी में जा पहुंचा। काहन ने पैन्शन ले ली थी। वह अपनी एक कोठी बनाकर रह रहा था। इन दिनों उसका मुख्य कार्य शेयर मार्केट में ले-दे करना था। इस व्यापार में उसने पर्याप्त धनोपार्जन कर लिया था। वह शक्तिनगर में रहता था। घर पर टेलीफोन लगवा लिया था और घर बैठा हिस्से बेचता और खरीदता रहता था।

उसने राम को देख पूछ लिया, “चाचा जी ! आज कैसे आना हुआ है ?”

“मैं यही विचार करता था कि तुम कोई शुभ कार्य करोगे और फिर निमंत्रण दोगे तब मैं और तुम्हारी चाची अथवा साली दोनों आएंगे । जब तुम्हारा किसी प्रकार का निमंत्रण-पत्र नहीं मिला तो पूछने चला आया हूं कि विश्वम्भर का विवाह नहीं करोगे क्या ?”

“चाचा जी ! जमाना बदल गया है । स्वराज्य होने के पश्चात् और शिक्षा के प्रसार से अनेकों माता-पिता बच्चों के विवाह के बोझ से मुक्त हो गए हैं । मैं समझता हूं कि लड़के-लड़कियां भी अब सुख का सांस लेने लगे हैं । उनको अनजाने लड़के-लड़की से विवाह कर बांध दिए जाने का भय नहीं रहा ।”

“तो विश्वम्भर कहीं स्वयं विवाह करने वाला है ?”

“मुझको ज्ञात नहीं । मैं इस विषय में जानने की रुचि भी नहीं रखता । उसने स्वयमेव अपना काम ढूढ़ा है । उम काम में स्वयमेव योग्यता प्राप्त की है और फिर स्वयं ही वह उन्नति कर रहा है ।

“मेरी चिन्ता विश्वम्भर नहीं, अपितु उसके छोटे भाई-बहिन हैं । वह चिन्ता भी उनके विवाह करने की नहीं । वह उनको शिक्षा देने की है । सबके सब अति योग्य और प्रतिभाशाली हैं ।”

“तब तो मुझको विश्वम्भर के आने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी ।”

“तो चाचा जी, किमी लड़की का रिश्ता लेकर आए हैं ?”

“लेकर तो नहीं आया, परन्तु उसकी सम्मति एक लड़की के विषय में जानने आया हूं । मुझको बताया गया है कि तुम्हारे माह्वज्रादे ने उस लड़की को विवाह का वचन दिया है ।”

“और कौन है वह ?”

“काहन । जब तुमको रुचि ही नहीं तो फिर तुमको बनाने की आवश्यकता ही नहीं ।”

“ठीक है । चाय मंगवाऊं चाचा जी !”

“और दुर्गा कहां है ?”

“वह लड़कियों के साथ बाज़ार गई है ।”

“तो लड़कियां पढ़ने नहीं जाती !”

“जाती हैं। आज उनकी स्कूल से छुट्टी थी।”

“विश्वम्भर किस समय दफ्तर से आ जाया करता है ?”

“वह प्रायः साढ़े पांच तक यहां पहुंच जाया करता है।”

राम ने घड़ी में समय देखा और कह दिया, “चार बज चुके हैं। मुझको उसकी प्रतीक्षा करनी ही चाहिए।”

दुर्गा, काहन की पत्नी, लड़कियों के साथ बाज़ार से पहले लौटी। काहन की सबसे बड़ी लड़की चौदह वर्ष की थी। नाम था कीर्ति। सोमा, रूप की लड़की, इसकी महेली थी और इसकी श्रेणी में पढ़ती थी। सोमा सत्रह वर्ष की थी। वह नौवीं श्रेणी में तीन बार अनुत्तीर्ण हो चुकी थी।

जब दुर्गा बाज़ार से लौटी तो सोमा उसके साथ थी। सोमा अपने बाबा को वहां बैठा देख विस्मय में मुख देखती रह गई। वह आज विश्वम्भर को अपनी मां के पास ले जाने का विचार रखती थी। उसको सन्देह हो गया था कि उसका बाबा भी उसीके विषय में बातचीत करने आया है। उसने अपने मन को सुदृढ़ कर लिया और पूछने लगी, “भापा ! आज इधर कैसे आ गए हैं ?”

राम ने उसकी बात का उत्तर देने के स्थान पर उससे पूछ लिया, “तुम यहां क्या कर रही हो ?”

“मैं कीर्ति की श्रेणी में पढ़ती हूं। आज स्कूल में छुट्टी हो गई थी, इस कारण मैं उसके साथ यहां आ गई हूं।”

राम ने बात बदल दी। उसने अपनी साली को सम्बोधन कर पूछ लिया, “बताओ दुर्गा, कैसी हो ?”

“बहुत मजे में हूं, जीजा जी ! आज आपके दर्शन हुए हैं। खैर तो है ?”

“मन में आया, बहिन दुर्गा के परिवार के दर्शन करने चाहिए। बस टैक्सी ली और चल पड़ा।”

“तो ठहरिए। लड़कियां तो आ गई हैं, लड़के भी आने वाले हैं। भगवान की कृपा है, छः मेरे हैं और एक पहले का है।”

“सुना है वह तो नौकर हो गया है।”

“हां। तीन सौ से ऊपर वेतन पाता है।”

“और तुम्हारे साथ कैसे व्यवहार रखता है ?”

“सदा लड़के के समान ही रहा है। सदा आज्ञा का पालन करता है।”

इस समय दो लड़के आ गए। मोहन और सुरेन्द्र। काहन ने उनका परिचय करा दिया, “यह है मोहन, इस समय हायर सैकण्डरी में पढ़ता है और अपनी श्रेणी में प्रायः प्रथम रहता है। और यह है सुरेन्द्र। स्कूल की क्रिकेट टीम का खिलाड़ी है।”

“काहन ! बहुत भाग्यशाली हो तुम !”

“भैया, यह सौभाग्य तुमने ही तो बटोरकर दिया था। स्मरण है, दुर्गा को इस घर में लाने में तुम ही तो कारण थे।”

“अपने-अपने भाग्य के अधीन ही सब आते और जाते हैं। मनुष्य तो निस्सहाय नदी में बहते तिनके के समान है।”

वह उठा और कहने लगा, “कल रविवार है। विश्वम्भर को उधर भेज देना। मैं समझता हूँ कि उसका विवाह हो जाना चाहिए।”

“अच्छी बात है। कह दूँगा, वैसे इस विषय में केवल उसको सम्मति ही दे सकता हूँ।”

“ठीक है काहन भैया ! मैं भी तो आज्ञा देने की स्थिति में नहीं हूँ।”

१०

काहन ने टैक्सी स्टैंड पर टेलीफोन किया। टैक्सी आई और बाबा-पोती उसमें बैठ श्रीराम रोड को चल पड़े। सोमा ने मार्ग में ही पूछना आरम्भ कर दिया, “भापा ! इधर कुछ काम था क्या ?”

“हां। तुम्हारे विषय में बातचीत करनी थी।”

“मेरे ?” सोमा ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया, “मेरे विषय में क्या बातचीत करनी थी ?”

“यही कि तुम यहां आकर क्या करती रहती हो।”

“तो फिर क्या बताया है मौसा जी ने ?”

“कहते थे कि वे कुछ नहीं जानते। विश्वम्भर ही बता सकेगा, क्योंकि तुम और वह ही अधिकतर घूमते-फिरते हो।”

इसमें कुछ उत्तर देने को नहीं था। इस कारण सोमा चुप रही।

परन्तु राम ने बात का सूत्र नहीं छोड़ा, उसने कह दिया, “तुम भी तो विश्वम्भर को अपनी मां से मिलाने के लिए ले जाने वाली थी।”

“हां। परन्तु वे आए नहीं। पहले कभी ऐसा नहीं हुआ।” सोमा समझ गई कि उसका बाबा सत्य स्थिति जानता है।

“तो तुमको भी चिन्ता लग गई है?”

सोमा ने कुछ उत्तर नहीं दिया। राम ने पुनः पूछा, “अब मां को क्या उत्तर दोगी?”

“यही कि वह बहुत देरी तक कार्यालय से नहीं लौटा था।”

“तो कल फिर उसको लेने के लिए आओगी?”

सोमा ने उसका उत्तर नहीं दिया।

“मैंने उसको कल अपनी कोठी में आने का निमंत्रण दिया है। यह प्रातःकाल टेलीफोन में दुहरा भी दगा।”

सोमा फिर चुप रही। राम ने अन्तिम बात पूछ ली, “तुम प्रमत्त हो?”

“मन डरता है।” सोमा मन की बात कहने पर विवश हो गई।

“किस बात से?”

“यह हमारी योजना के विपरीत हो रहा है।”

“तुम्हारी क्या योजना थी?”

“हम तो आज बिना किसीको सूचना दिए बम्बई के लिए जाने वाले थे। वे कह रहे थे कि वे पन्द्रह दिन की छुट्टी लेकर आएंगे। हमने अपने देहरादून एक्सप्रेस में दो बर्थ रिजर्व कराए हुए हैं।”

“उसके जाने में तो अभी बहुत समय है।”

सोमा इसका अर्थ यह समझी थी कि उसका बाबा उसको जाने की स्वीकृति दे रहा है। वह चुप रही तो राम ने कह दिया, “वह घर आएगा और तुमको वहां न देख, निराश होगा, और कदाचित् नाराज भी होगा।”

“यही तो डर लग रहा है। अब जाते ही टेलीफोन कर उनको कहूंगी कि वे टैक्सी लेकर मुझको कोठी पर लेने आ जाएं।”

“हां। यही ठीक होगा।”

सोमा राम के इस प्रकार उसकी योजना को ठीक कहते सुन प्रोत्सा-

हित हो पूछने लगी, “तो भापा ! तुम हमारी योजना को ठीक समझते हो ?”

“ठीक तो नहीं समझता । परन्तु तुम दोनों जो कुछ करोगे अपना भला-बुरा विचार कर करोगे । इस कारण मैं इसमें बाधा भी डालना नहीं चाहता ।”

“तो आप किस अर्थ यहां आए थे ?”

“अपनी भांति काहन को भी तटस्थ करने के विचार से ।”

“तो फिर मौमा जी से बात हुई ?”

“नहीं । विश्वम्भर था नहीं और उसके बिना बात हो नहीं सकी ।” सोमा मन में प्रसन्न थी । वह समझ रही थी कि उसका बाबा तो उसकी मां से भी अच्छा है । वह चुप थी ।

कोठी में पहुंच, वह प्रबोध के कार्यालय में चली गई । टेलीफोन वहां ही लगा था । वहां भूपण बैठा हिसाब-किताब लिख रहा था । सोमा गई और बिना कुछ कहे काहन की कोठी पर टेलीफोन करने लगी । टेलीफोन रुकी हुई थी । इस कारण वह चोगा रख प्रतीक्षा करने लगी । भूपण ने अपनी किताब से सिर ऊपर उठाया और कलम रख सोमा की ओर देख, पूछने लगा, “मोमारानी, कहां टेलीफोन कर रही हो ?”

“जहां के विषय में आपको जानने की आवश्यकता नहीं है ।”

“वाह ! मेरी आवश्यकता मैं जान सकता हूं, तुम क्या जानो ?”

“तो ठीक है । आप जानिए । मैंने आपको मना नहीं किया ।”

“अच्छी बात । करो टेलीफोन ! मैं जान लूंगा ।”

भूपण उठकर टेलीफोन के समीप आ खड़ा हुआ । इससे क्रोध में सोमा कार्यालय से निकल अपने कमरे में चली गई ।

वह वहां गई तो उसकी बहिन दिति वहां नहीं थी । दिति का बिस्तर और पुस्तकें भी वहां नहीं थीं । वह उसका पलंग और मेज खाली देख, विस्मय कर रही थी । वह इसका अर्थ नहीं समझी । फिर मन की निराशावस्था के कारण अपने पलंग पर लेट विचार करने लगी कि क्या करे ? वह भोजन के समय की प्रतीक्षा करने लगी । वह इस समय कार्यालय में जाकर टेलीफोन करने का निश्चय कर चुकी थी । वह समझ रही थी कि उस समय भूपण डाइनिंग हाल में होगा और

वह बिना उसके जाने टेलीफोन कर सकेगी।

परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब कार्यालय को ताला लगा देखा। यह पहले से भिन्न बात थी। उसको अब विश्वास हाने लगा कि भूषण जान गया था कि कहां टेलीफोन करने जा रही थी और वह नहीं चाहता कि विश्वम्भर से उसका सम्पर्क रहे। इसपर भी वह चुप थी और खाने के कमरे में आकर बैठ गई। वह मन में डर रही थी कि विश्वम्भर उससे नाराज़ हो रहा होगा।

भोजन करते हुए भूषण ने सोमा की ओर नहीं देखा, न ही उसकी मां ने सोमा से पूछा कि विश्वम्भर को लेने गई थी अथवा नहीं। हां, एक बात विचित्र हुई। दिति और कमल भोजन पर नहीं थे। सोमा ने पूछ लिया, “मां ! दिति और कमल कहां हैं ?”

उत्तर प्रबोध ने दिया, “वे अपने बाबा के कक्ष में रहने चले गए हैं और कह गए हैं कि भोजन भी उनके साथ ही करेंगे।”

“क्यों ?”

“मैं भी कल पृथक् रहने जा रहा हूं।”

“किससे पृथक् ?”

“मां से और तुमसे।”

“किसलिए ?”

“भापा ने कहा है कि मैं जब उनके कक्ष में रहने लगूंगा तो मेरा विवाह हो जाएगा।”

सोमा को स्मरण आ गया कि भापा उसके विवाह में भी यत्न कर रहा था अतः उसने मां से पूछ लिया, “मां, तुम भैया का विवाह क्यों नहीं कर देती ?”

“तुम्हारे पिता के घर छोड़ जाने से हम सब बदनाम हो गए हैं और जब भी मैं किसी स्थान पर बात करने जाती हूं तो लोग तुम्हारे पिता के विषय में पूछते हैं।”

“तो फिर हम क्या करें।”

“सब अपना-अपना मार्ग ढूँढो। सब अपने-अपने लिए यत्न करो।”

“तो मां ! कार्यालय की चाबी दे दो।”

“क्या काम है ?”

“मैं अपना मागें ढूँढ़ना चाहती हूँ ।”

“क्या मतलब ?”

“मैं भी विश्वम्भर जी को टेलीफोन करना चाहती हूँ ।”

“हां ! तो तुम्हें आज उसको लेकर आना था ।”

“मैं लेने गई थी, परन्तु सायं साढ़े पांच बजे तक वह दफ्तर से लौटा ही नहीं था ।...”

“अच्छा, ऐसा करो, विश्वम्भर को टेलीफोन कर कल यहां आने का निमंत्रण दे दो ।”

“पर मां । कार्यालय को ताला लगा है ।”

“वह भूषण जी ने लगाया है । उनको सन्देह हो गया है कि कोई वहां से कुछ चोरी करना चाहता है ।”

“कोई कौन ? भापा जी ?”

“हो सकता है ।”

“पर क्यों और क्या चोरी करना चाहते हैं ?”

“कुछ कागजात चोरी हुए हैं । अभी तक पता नहीं चला कि उनको कौन और क्यों ले गया है ।”

सोमा टुकुर-टुकुर मुख देखती रह गई । फिर पूछने लगी, “तो फिर टेलीफोन कैसे करूं ?”

“भूषण जी भोजनोपरान्त टेलीफोन करा आते हैं ।”

सोमा नहीं चाहती थी कि भूषण के सामने टेलीफोन करे परन्तु विवश थी और मन में यह निश्चय कर कि वह सावधानी से बात करेगी, वह भूषण के साथ कार्यालय को चली गई ।

जब वे दोनों चले गए तो सुभद्रा ने प्रबोध से पूछा, “तुम भापा जी के साथ रहने क्यों जा रहे हो ?”

“मां । भूषण मुझसे भगड़ा करता है ।”

“तुमने बैंक की पासबुक और चैकबुक किसलिए चुरा ली है ?”

“चैकबुक ? इसको उठाने की आवश्यकता क्या थी ? रुपया तो तुम्हारे और मेरे हस्ताक्षरों के बिना निकल भी नहीं सकता । फिर उसको कोई उठाकर क्या करेगा ?”

“इसीसे तो कहती हूँ कि तुम सब लोग विद्रोह कर रहे हो ।”

“नहीं मां। यह बात नहीं। यह भूषण कुछ गड़बड़ कर रहा है। यह तुमको हमारे विरुद्ध कर रहा है।”

“क्या उद्देश्य हो सकता है, इसमें?”

“उसने स्वयं दोनों को गायब कर दिया है।”

“किसलिए?”

“जिससे हिसाब चैक न किया जा सके।

“क्या आवश्यकता है चैक करने की?”

“पिछले कुछ दिनों में बड़ी-बड़ी रकमों के कई चैक काटे गए हैं और उनको किताबों में दर्ज नहीं किया गया।”

सुभद्रा इसका अर्थ समझने लगी। फिर कुछ विचार कर बोली, “अच्छा कल रविवार है। कल मैं तुम दोनों के सामने बात करूंगी।”

इस समय सोमा लौट आई। मां ने उससे पूछ लिया, “तो, दे आई हो निमंत्रण?”

“वह अभी तक घर पर नहीं लौटा।”

“कहां गया होगा?”

“उसके पिता का विचार है कि यदि सिनेमा देखने गया है तो आधे घण्टे में लौट आ जाएगा। आएगा तो उसको टेलीफोन करने के लिए कह देंगे।”

“तो टेलीफोन कौन सुनेगा?”

“ताया जी अभी वहां काम कर रहे हैं।”

“अच्छी बात है। यदि उसका टेलीफोन आया तो मुझको भी बुला लेना। मैं स्वयं उसको यहां आने का निमंत्रण दे दूंगी।”

विश्वम्भर का टेलीफोन नहीं आया और सोमा रात-भर सो नहीं सकी। बहुत प्रातःकाल अभी भूषण तथा सुभद्रा सो रहे थे कि सोमा उठी और कोठी के उस कक्ष में चली गई जिधर कार्यालय था। वह टेलीफोन करना चाहती थी। भूषण ने पिछली रात कहा था कि सब कागजात ताले में रखकर वहां चपरासी को सोने के लिए कह आया है। इससे वह विचार करती थी कि कार्यालय खुला होगा और वह टेलीफोन कर सकेगी।

उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने चपरासी के स्थान

प्रबोध को कार्यालय में भीतर से कुंडा चढ़ाए बैठे देखा। सोमा ने द्वार खोलना चाहा तो उसको भीतर से बन्द देखा। उसने खटखटाया तो प्रबोध ने द्वार खोल दिया। प्रबोध भूषण के बाहर खड़े होने की आशा करता था और सोमा भीतर चपरासी की। दोनों विस्मय में एक-दूसरे का मुख देखते रह गए। प्रबोध को पहले ही समझ आ गया कि वह टेलीफोन करने आई है और उसने उसे कार्यालय के भीतर कर पुनः द्वार भीतर से बन्द कर लिया।

प्रबोध ने द्वार बन्द कर बिजली जलाई तो सोमा ने देखा कि वह रजिस्ट्रों की जांच-पड़ताल कर रहा है।

“क्या हो रहा है, भैया ?”

“मुझको हिसाब में कुछ गड़बड़ समझ आई थी और वह देख रहा हूँ।”

“तो ताया जी के कागज़ तुमने चुराए हैं ?”

“नहीं, कुछ नहीं चुराया। कुछ चोरी भी नहीं गया। इसपर भी कई लाख की गड़बड़ प्रतीत होती है।”

“पर भैया। वे क्यों ऐसा कर रहे हैं ?”

“तुम टेलीफोन कर यहां से भाग जाओ। मुझको अपना काम करने दो।”

सोमा ने काहन की कोठी पर टेलीफोन किया। वहां से काहन ने उत्तर दिया, “विश्वम्भर रात-भर नहीं आया। मैं आज उसके कार्यालय जाकर पता करूंगा।”

सोमा आश्चर्यचकित रह गई। प्रबोध ने पूछा, “क्यों, क्या हुआ है ?”

“विश्वम्भर घर नहीं आया।”

“कहां गया होगा ?”

“मैं कैसे बता सकती हूँ ? मौसा जी कह रहे हैं कि वे उसके कार्यालय जाकर पता करेंगे, परन्तु आज रविवार है। क्या पता करेंगे ?”

प्रबोध ने कहा, “अच्छा, अब तुम जाओ। मां जाग ले तो बात कर लेना।”

सोमा भीगी बिल्ली की भांति वहां से निकल गई। प्रबोध पुनः

रजिस्टर देखने लगा। वह अभी भी कार्यालय में हिसाब-किताब देख ही रहा था कि भूषण वहां आ पहुंचा। उसके पीछे-पीछे सुभद्रा भी वहां पहुंच गई। प्रबोध कुर्सी पर से उठा नहीं और मां तथा भूषण का मुख देखने लगा। वह चाहता था कि वे ही बात आरम्भ करें।

सुभद्रा ने पूछ लिया, “यहां क्या कर रहे हो प्रबोध ?”

“मां, कम्पनी के हिसाब की जांच-पड़ताल कर रहा हूं।”

“क्यों ?”

“इसमें कुछ गड़बड़ प्रतीत हुई थी।”

“तो फिर क्या देखा है ?”

“मेरा सन्देह ठीक प्रतीत होता है। सारी ही चैकबुक और बैंक की पासबुक ताया जी ने छुपा रखी हैं।”

“क्यों भूषण जी !” सुभद्रा को प्रबोध की रात वाली बात स्मरण थी और वह समझती थी कि इस वक्त सब बात शान्ति से हो सकेगी।

भूषण ने कहा, “वाह ! करे कोको और बताए लोको। मुझे पासबुक को छुपाकर क्या करना है ?”

“देखो जी ! पासबुक अधिक आवश्यक चैकबुक है। पिछले सप्ताह मैंने तीन बड़े-बड़े चैकों पर हस्ताक्षर किए हैं। सबके सब सेल्फ और बेयरर के लिए थे। मैंने देखा है कि उनको रजिस्टर में दर्ज नहीं किया गया। वे चैक आपको दिए गए थे। आपने इनकी रकम वसूल कर ली होगी। वह किधर गई ?”

“मजदूरों के वेतन में निकल गए होंगे। मैं रात हिसाब लिखने लगा था कि चैकबुक नहीं मिली। चपरासी ने बताया था कि तुम मेरी अनुपस्थिति में दफ्तर में देख-भाल करते रहे हो। इससे कहता हूं कि वह तुम्हारे पास हो सकती है।”

“नहीं है। मैंने कुछ और भी गड़बड़ देखी है। वह मैं भापा जी को दिखाकर निश्चय करूंगा।”

“देखो प्रबोध। भापा जी को बीच में डालने की आवश्यकता नहीं। मैं तुम दोनों में यहां ही सुलह करा देती हूं।”

“सुलह। मां, हमारी लड़ाई नहीं है। यह हिसाब समझा देंगे, बस, सुलह ही सुलह है।”

“देखो प्रबोध ! कल बैंक चलेंगे और नई पासबुक मंगवा लेंगे ।”

“उसको तो एक महीना भी लग सकता है । तब तक काम कैसे चलेगा ?”

“मैं मैनेजर को कहकर कम से कम पिछले महीने का चिट्ठा नकल करवा दूंगा ।”

“ताया जी ! आप वही चैकबुक और पासबुक क्यों नहीं निकाल देते ?”

“वह मेरे पास नहीं है प्रबोध ।”

“अच्छा ठहरो ।” सुभद्रा ने चपरासी के क्वार्टर की ओर जाते हुए कहा । चपरासी रात-भर वहां सोया था । वैसे दिन-भर भी वह वहां रहा था । इससे वह बता सकता था कि पिछले दिन प्रबोध के अतिरिक्त कोई वहां आया है अथवा नहीं । भूपण और प्रबोध दोनों समझ रहे थे कि वह किधर गई है । उसके चले जाने पर भूपण ने कहा, “प्रबोध ! क्यों व्यर्थ में भगड़ा कर रहे हो ! तुम सीधे ही बता दो, क्या चाहते हो ?”

“मैं मां से पृथक् होना चाहता हूं ।”

“तो इस भगड़े के बिना भी हो सकते हो ।”

“कैसे ?”

“बताओ । कितना कुछ चाहते हो ?”

“हमारी कम्पनी में जितना कुछ है, उसके छः हिस्से चाहता हूं । चार हम बहिन-भाई हैं और दो तुम । मेरा मतलब है, मां और तुम । इस प्रकार सबको अपना-अपना भाग मिल जाए ।”

“इससे तो काम चल नहीं सकेगा । प्रति सप्ताह दस हजार ‘लेबर’ के लिए चाहिए ।”

“काम भी बंट जाएंगे ।”

“लड़कियां कैसे काम करेंगी ?”

“उनके भाग की रकम नकद देनी होगी । मेरी और कमल की साभेदारी रहेगी । आपकी और मां की साभेदारी रह सकती है ।”

“नकद सब लड़कियों को चला गया तो काम के लिए रुपया नहीं रहेगा और काम ठप्प हो जाएंगे ।”

“हो जाएं । परन्तु मैं अब तुम जैसे बेईमान...” इस समय सुभद्रा

चपरासी को लेकर आ गई।

“यह कहता है,” सुभद्रा ने बताया, “कल यहां भूषण जी और प्रबोध जी के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं आया।”

“तो चोर हम दोनों में से कोई एक है।” प्रबोध ने कहा।

“तो दोनों की तलाशी हो जाए।” भूषण का सुभाव था।

“हां। मगर क्या चोरों का माल कोठी से बाहर नहीं चला गया होगा?” प्रबोध ने कह दिया।

“यह तो तुम ही बता सकते हो।”

“मैंने तो चोरी की नहीं।”

“और कोई कर ही नहीं सकता।”

“तुम भी नहीं?”

भूषण हस पड़ा और यह कहते हुए कार्यालय से चला गया, “यह तो जल मथने के समान है।”

चौथा परिच्छेद

काहन के सुधा से लड़के विश्वम्भर के मन में यह बात स्पष्ट थी कि उसकी मां सौतेली है। इससे बचपन से ही वह स्वतन्त्र रहने की प्रवृत्ति बना बैठा था। उसने सन् १९५४ में बी० ए० पास किया परन्तु विद्यार्थी-जीवन में ही उसने शार्टहैंड-टाइपिंग को आरम्भ कर लिया था और पास करते ही वह विदेश विभाग में अढ़ाई सौ मासिक पर नौकर हो गया। सन् सत्तावन में वह सवा तीन सौ वेतन पाता था, जब उसका सम्पर्क रूपकृष्ण की लड़की सोमारानी से बना। वह नौवीं श्रेणी में दूसरी बार अनुत्तीर्ण हुई थी और अपनी सहेली कीर्ति के घर बैठी रो रही थी।

औरत रोती हुई सदा से अधिक सुन्दर हो उठती है। यह सौन्दर्य था अथवा उसके अनुत्तीर्ण होने से सहानभूति थी, विश्वम्भर इसकी ओर आकर्षित हो उठा। उसी दिन वह उसको और कीर्ति को बाजार ले गया और जहां कीर्ति को पास होने पर सैर कराता रहा, सिनेमा

दिखाता रहा, वहां सोमारानी को उसके अनुत्तीर्ण होने पर सांत्वना देने के लिए सिनेमा दिखाता रहा ।

इसके पश्चात् दोनों में मेल-जोल बढ़ता गया और तब वे अकेले भी घूमने जाने लगे । इन्हीं दिनों सोमारानी ने उससे विवाह की इच्छा प्रकट की और इस विवाह में कठिनाइयों पर बातचीत होने लगी ।

सोमा का कहना था, “आप बड़ों की बात छोड़िए । इनसे हम पीछे निपट लेंगे । पहले आप बताइए ।”

विश्वम्भर के मुख से अनायास निकल गया, “सोमा ! मैं तो तुमको बहुत पसन्द करता हूँ परन्तु यह बात असम्भव मानता हूँ ।”

“क्या असम्भव है इसमें ?”

“हमारा सम्बन्ध इतना समीप का है कि घर में कोई भी पसन्द नहीं करेगा ।”

“हम विवाह कर लेंगे और पीछे सबको स्वीकार करना पड़ेगा ।”

एक बार मानकर कि वह उसको पसन्द करता है, विश्वम्भर पीछे नहीं हो सका । इस कारण योजनाएं बनने लगीं । प्रत्येक योजना को विश्वम्भर कठिन और कार्य में लाने के अयोग्य बता, टाल देता था । इसपर भी सोमा धीरे-धीरे उसपर अपना प्रभाव बढ़ाती जाती थी । कभी विश्वम्भर घर पर अकेला होता और सोमा वहां पहुंच जाती तो वह उससे प्रेम किए जाने की मांग करने लगती । ऐसे अवसरों पर विश्वम्भर भारी मुसीबत में फंस जाता । बहुत कठिनाई से ही वह उसको टाल सकता । एक दिन तो सोमा उसपर विजय पाने के समीप ही थी कि कीर्ति की छोटी बहिन शुचि घर में आ गई । सोमा और विश्वम्भर आलिंगन में थे । जल्दी-जल्दी में वे पृथक् हुए परन्तु शुचि ने उनको देख ही लिया । उसने पूछ लिया, “भैया ! यह क्या कर रहे थे ?”

“यह मुझसे मेरी कलम छीन रही थी ।” विश्वम्भर ने तुरन्त बात बनाते हुए कहा, “और मैं नहीं दे रहा था । इससे छीना-भपटी होने लगी ।”

“तो भैया दे दो न ? यह हमारी बहिन ही तो है ।”

“ओह हां ! यह तो मुझको स्मरण ही नहीं रहा था । अच्छा

सोमा, यह लो ।” उसने जेब से कलम निकाल उसे देते हुए कहा, “पर याद रखो । यदि तुम इस वर्ष भी पास न हुई तो कलम वापस ले लंगा ।”

इस घटना ने विश्वम्भर को मोए हुए से जगा दिया । वह समझ गया कि शुचि जैसी वच्ची भी समझती है कि यह बहिन है तो इससे विवाह असम्भव है । अतः वह अपने सम्बन्धों से वापस होने का विचार करने लगा, परन्तु सोमा अपनी योजनाओं को पूर्ण करने का यत्न करने लगी ।

शुचि ने भैया विश्वम्भर और सोमा बहिन में कलम पर हुई कुश्ती की सूचना अपनी बहिनों और मां को बता दी । दुर्गा को इससे चिन्ता लगने लगी । उसने इस सम्बन्ध के भयंकर सीमा तक पहुंचने से पहले ही एक अपनी योजना चला दी । उसके मायके में एक अति सुन्दर लड़की थी । उसने उसको अपने घर बुलाना आरम्भ कर दिया । लड़की थी दुर्गा के मामा की पोती । बहुत सुन्दर, और इस समय बी० ए० में पढ़ती थी । नाम था करुणा । करुणा की मां विधवा थी और यह मां की एक ही लड़की थी । विश्वम्भर ने इस लड़की को देखा तो उनपर मोहित हो गया । दोनों में बातचीत हुई । यह निश्चय हो गया कि वे दोनों विवाह करेंगे । करुणा का विचार था कि बी० ए० पास करने के पश्चात् विवाह की बात करेंगे । परन्तु विश्वम्भर सोमा के दबाव के कारण शीघ्रातिशीघ्र विवाह कर लेना चाहता था । आखिर एक दिन उसने करुणा को पूर्ण बात बता दी ।

करुणा को कालिज से दो बजे छुट्टी होती थी । विश्वम्भर को पता चला तो वह कालेज के द्वार पर जा पहुंचा । करुणा ने पूछा, “क्या बात है ?”

“एक आवश्यक काम है । चलो, कहीं बैठकर बात करेंगे ।” दोनों टैक्सी में सवार हो नई दिल्ली में बंगर पर जा पहुंचे । वहां बैठ विश्वम्भर ने सोमा के पूर्ण प्रयत्न की कथा सुना दी । इसके साथ ही कह दिया, “यदि तुम्हारा और मेरा विवाह न हुआ तो वह कोई भगड़ा खड़ा कर देगी । मुझको किसी भी प्रकार बदनाम कर सकती है ।”

करुणा इस प्रस्ताव को सुन गम्भीर हो गई और बहुत देर तक चुप

बैठी विचार करती रही, दोनों चुपचाप बैठे चाय पीते रहे । एकाएक करुणा ने कहा, “मैं समझती हूँ कि आप मेरी माँ के पास चलिए । उनकी राय के बिना बात नहीं करूंगी ।”

“तो चलो ।”

दोनों चाय लेने के पश्चात् करुणा की माँ के घर पहुँच गए । विश्वम्भर ने जब अपनी कठिनाई का वर्णन किया तो करुणा की माँ ने कह दिया, “तुम्हारी माँ ने मुझको बताया है कि उसको तुम दोनों के विवाह से प्रसन्नता होगी ।”

“यह तो मुझको भी समझ आ रहा है । परन्तु मैं तो आज ही विवाह की बात कर रहा हूँ ।”

“आज तो बहुत कठिन है । तीन दिन में प्रबन्ध हो जाएगा । पाँच साथियों और घर के पुरोहित के सामने विधिवत् विवाह होगा । उन पाँच साथियों में तुम्हारी माँ भी होगी ।”

“माता जी ! ठीक है परन्तु शर्त यह है कि चुपचाप हो । मैं सोमा को पता होने देना नहीं चाहता ।”

“ऐसा भी हो सकता है ।”

“परन्तु मेरी माँ को पता चला तो पिता जी को भी पता चल जाएगा । बहिनों को पता चलेगा और फिर हल्ला हो जाएगा । वह झगड़ा करेगी और कई प्रकार की बाधाएं पड़ जाएंगी ।”

करुणा की माँ को इसपर कुछ सन्देह हुआ । इस कारण उमने पूछ लिया, “बेटा, सत्य बताना, तुम्हारा उससे कैसा और कितना सम्बन्ध बन चुका है ?”

“माँ जी ! अपनी सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मौखिक कथन से अधिक कोई सम्बन्ध नहीं है । परन्तु किसी समय भी अवसर मिला तो वह मुझको परास्त कर देगी । मैं उससे बचना चाहता हूँ ।”

“परन्तु विवाह के पीछे क्या होगा ?”

“मैं करुणा के पीछे अपने को सुरक्षित अनुभव करूँगा ।”

करुणा की माँ को बात समझ नहीं आई । परन्तु जब करुणा ने कहा, “माँ ! विवाह में क्या हानि है ?”

“देख लो करुणा ! मैं बहुत पढ़ी-लिखी नहीं हूँ । तुम अपना भला-

बुरा विचार कर लो।”

“मां, ठीक है। विवाह कर दो।”

इसके पश्चात् विश्वम्भर ने योजना बना दी, “माताजी ! परसों सायं छः बजे से नौ बजे तक विवाह होगा। पीछे भोजन, तदुपरांत मैं और करुणा पन्द्रह दिन के लिए बम्बई भ्रमण के लिए चले जाएंगे। तब तक सोमा का भगड़ा शांत हो जाएगा और हम दिल्ली लौट आएंगे। पीछे आप मेरी माताजी को बता दीजिए। मैं लौटकर सबको एक आलीशान दावत देकर शांत कर दूंगा।”

करुणा की मां न मानती, परन्तु करुणा कदाचित् अपनी अन्तरात्मा में विश्वम्भर से विवाह के लिए और भी अधिक उत्सुक थी। उसने मां को सांत्वना देते हुए कह दिया, “मां ! चिन्ता न करो। सब ठीक हो जाएगा।”

२

इसी दिन विश्वम्भर घर लौटा तो सोमा उसके कमरे में बैठी, उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसे आया देख, वह लपककर उससे लिपट जाने वाली थी कि विश्वम्भर ने उसे संकेत कर बताया, “बाहर पिता जी खड़े हैं। वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं।”

सोमा रुकी और कहने लगी, “मुझसे यह प्रतीक्षा अब सहन नहीं हो सकती।”

“अच्छा ठहरो। मैं पिता जी से बात कर आता हूं और तुमसे एक योजना बना लेता हूं। यह अन्तिम होगी।”

विश्वम्भर ने दफ्तर के कपड़े उतारे। बाजार जाने के कपड़े पहने और बाहर चला गया। वहां पर कुछ काम तो था नहीं। वैसे ही पांच मिनट बैठ, उसने पिता जी को बताया, “मैं सिनेमा देखने जा रहा हूं। तीन बजे के शो के लिए टिकट खरीदे हुए हैं।”

“कितने हैं ?”

“दो हैं।”

“कौन-कौन जा रहा है ?”

“मैं और सोमा।”

“यह सोमा से तुम्हारे सम्बन्ध बढ़ते जाते हैं !”

“नहीं पिता जी ! अब घट रहे हैं ।”

काहन हंस पड़ा, “भला कैसे ?”

“मुझको करुणा की मां ने कहा है कि मेरा उससे विवाह तब होगा, जब इस लड़की से मेल-जोल छोड़ दू—इसलिए मैं उसको छोड़ रहा हूँ। परन्तु पिता जी ! ये टिकट तो पांच दिन पहले के लिए हुए हैं। वह जाने के लिए आई भी हुई है।”

“ठीक। कहीं रूप को पता चला कि तुम उसपर कुदृष्टि रखते हो तो वह तो हत्या कर देगा।”

“पर पिता जी ! मैं तो उसको बहिन समझता हूँ। साथ ही करुणा की उपेक्षा कर कौन उसे पसन्द करेगा !”

इस प्रकार अपने पिता को शांत कर, वह अपने कमरे में चला गया। अपना पर्स ले, वह सोमा को ले, घर से निकल गया। सिनेमा जाने के स्थान, वह उसको लेकर नई दिल्ली रेल के आफिस में जा पहुंचा और पता करने लगा कि तीसरे दिन बम्बई जाने के लिए किम गाड़ी में जगह मिल सकती है। देहरादून में दो नीचे के बर्थ फर्स्ट क्लास में मिल गए। उसने फार्म भर दिया—‘विश्वम्भरनाथ विद फैमिली।’

टिकट खरीदे गए और बर्थ सुरक्षित कर वे लौटे तो सोमा ने पूछ लिया, “इसका क्या मतलब है ?”

“मतलब यह है कि विश्वम्भर अपनी पत्नी के साथ हनीमून के लिए बम्बई जा रहा है। उसने दफ्तर से पन्द्रह दिन की छुट्टी ले ली है।”

“पर विवाह ?”

“वह बम्बई में चलकर ग्रीन होटल में होगा। मैं कल टेलीफोन से वहां एक कमरा सुरक्षित कर रहा हूँ।”

“तो मैं तैयारी करूँ ?”

“बिलकुल नहीं। किसीको बताना नहीं। मुझको विदित हुआ है कि मेरे माता-पिता भी इस विवाह को पसन्द नहीं करेंगे।”

“तो कैसे होगा यह ?”

“तुम अपनी कोठी में रहना। मैं तुमको रात के नौ बजे लेकर सिनेमा देखने जाऊंगा और हम बम्बई पहुंच जाएंगे।”

“तो कपड़े ?”

“एक सूटकेस तैयार रखना । वे हम चोरी-चोरी निकालकर ले जाएंगे ।”

सोमा बहुत प्रसन्न थी ।

निश्चित रात सोमा करवटें लेती रही थी । अगले दिन तक भी विश्वम्भर घर नहीं लौटा था और उसके घर का कोई प्राणी नहीं जानता था कि वह रात कहां रहा है ।

इसपर तो सोमा को बहुत ही चिन्ता लगी । वह टेलीफोन कर अपने कमरे में पहुंची और कपड़े पहन मां के कमरे में चली गई । मां के कमरे का दरवाजा खटखटाया तो वह बाहर निकल आई । भूषण भी वही था । सोमा ने विश्वम्भर के विषय में बताया तो मां ने पूछ लिया, “तो तुमने टेलीफोन किया है ?”

“हां ।”

“कार्यालय खुला था ?”

“हां मां ! प्रबोध वहां बैठा है ।”

प्रबोध के वहां होने की बात सुनकर भूषण भी कमरे से निकल आया और कार्यालय को चल पड़ा । सुभद्रा भी उसके पीछे जाना चाहती थी । इससे उसने लड़की से पूछ लिया, “अब क्या करोगी ?”

“एक दस रुपये का नोट दे दो । मैं टैक्सी कर उसकी मां से पता पूछने जाना चाहती हूं ।”

“मेरे पलंग पर तकिये के नीचे रुपये रखे हैं । उसमें से ले लो ।”

यह कह सुभद्रा तो भूषण के पीछे-पीछे कार्यालय की ओर चल दी और सोमा मां के कमरे में गई । उसके तकिये के नीचे कई हजार रुपया रखा था । उसमें से बिना गिने उसने एक बण्डल उठा लिया । उसे अपने पर्स में रखा और कोठी से निकल गई । मेडन होटल के समीप से टैक्सी कर वह विश्वम्भर की मां के घर जा पहुंची । उनकी कोठी में कर्णा की मां आई हुई थी । उसने पिछली रात कर्णा और विश्वम्भर के विवाह की बात बता उनके बम्बई चले जाने की सूचना दे दी थी । काहन और दुर्गा अभी इस सूचना पर विस्मय ही कर रहे थे कि सांमा वहां जा

पहुंची ।

ये लोग कोठी के ड्राइंगरूम में बैठे हुए थे कि सोमा दुर्गा को वहां बैठे देख वहां जा पहुंची । उसने आते ही पूछ लिया, “मौसी जी ! पता चला ?”

“हां, बैठो । विश्वम्भर ने करुणा से विवाह कर लिया है और उसको साथ लेकर हनीमून मनाने बम्बई चला गया है ।”

“बहुत बेईमान है ।”

“कौन ?” काहन ने पूछ लिया ।

“आपका लड़का !”

“क्या बेईमानी की है उमने ?”

“उसने तो मुझको बम्बई ले जाने का वचन दिया था ।”

“किसलिए ?”

“हनीमून मनाने के लिए ।”

“पर तुम्हारा उमसे विवाह हो चुका है क्या ?”

“हुआ तो नहीं, पर हम अपना विवाह बम्बई जाकर करने वाले थे ।”

“तो अब नहीं हो सका न ?”

सोमा चुप रही परन्तु उसकी आंखें तरल होने लगी थीं । इसपर करुणा की मां ने पूछ लिया, “तुम अपने माता-पिता से पूछकर जा रही थीं ?”

सोमा चुप थी । इसपर करुणा की मां ने बताया, “करुणा का विवाह कल रात दस-बारह घर के आदमियों के बीच बैठकर पुरोहित द्वारा हुआ है ।”

“सब बदमाशी है ।” आखिर सोमा ने कहा और वह उठ खड़ी हुई ।

परन्तु दुर्गा ने उसकी बांह पकड़कर अपने पास बैठा लिया, “देखो सोमा ! विश्वम्भर का तो विवाह हो गया । अब तुम अपनी मां को कहो कि तुम्हारा भी विवाह कर दे ।”

“मैं पहले विश्वम्भर से एक बात कर लूं फिर विवाह कर लूंगी ।”

“एक क्या बीस बातें करती रहना, परन्तु विश्वम्भर के पिता कह

रहे हैं कि विवाह तुरन्त हो जाना चाहिए।”

“कैसे करेंगे ?”

“अभी तुम्हारी मां को टेलीफोन पर बुला रही हूं। तुम यहीं बैठो। बात तुम्हारे सामने ही निश्चय हो जाए तो ठीक है।”

करुणा की मां ने रात विवाह के अवसर पर मिठाई बांटी थी। उसमें से वह एक थाल में सजाकर लाई थी। वह मोटर में ही रखी थी। वह बाहर गई और ड्राइवर से उठवाकर उसे भीतर ले आई।

इस समय तक टेलीफोन पर सुभद्रा आ चुकी थी और काहन उसको बता रहा था, “देखो सुभद्रा ! तुमको एक समाचार बता रहा हूं। कदाचित् तुमको इसके जानने में रुचि होगी। मेरे लड़के विश्वम्भर ने रात बिना हमको बताए एक लड़की से विवाह कर लिया है। विवाह विधिवत् हुआ है और लड़की की मां अभी विश्वम्भर और लड़की के हस्ताक्षरों की एक चिट्ठी लेकर आई है। उस चिट्ठी में उन्होंने लिखा है :

“ ‘ परम पूजनीय पिता जी ! हम दोनों ने रात कई माथियों के सामने पंडित जी से विवाह करवा लिया है। विवाह के पश्चात् ही हम बम्बई हनीमून मनाने जा रहे हैं। हमको पूर्ण विश्वास है कि आपको इस बात से प्रसन्नता होगी।

“ ‘ आपको इसकी सूचना नहीं दी गई। इसमें कारण यह था कि हमको विवाह तुरन्त करना था और आपको सूचना देने से आप हल्ला कर देते और विवाह में विघ्न पड़ सकता था। दादा राजकुमार विवाह पर उपस्थित था।

“ ‘ हम पन्द्रह दिन के पश्चात् उपस्थित होंगे और आपके चरण-स्पर्श कर आपसे आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। ’

“ यह पत्र है और लड़की की मां मिठाई लिए यहां बैठी है। ”

“तो फिर मैं क्या करूं ?” सुभद्रा ने पूछ लिया।

“आज रविवार है और तुम सब बच्चों तथा राम तथा बहिन रोहिणी को लेकर यहां आ जाओ। मैं रूपकृष्ण को भी बुला रहा हूं। मैं एक आदमी राजकुमार और उसकी मां को भी बुलाने भेज रहा हूं। तुम सब लोग मध्याह्न का भोजन यहां करना और तब हम विचार करेंगे कि

विश्वम्भर के आने पर कैसा और कितना बड़ा जशन करें।”

“मैं तो नहीं आ रही। प्रबोध के बाबा को यहां बुला देती हूं। आप उनको अपना निमंत्रण दे दीजिएगा।”

“पर तुम क्यों नहीं आ रहीं।”

“बस, नहीं आ रही।”

“सोमा यहां बैठी है। उसके विषय में भी विचार करना है।”

“क्या विचार करना है?”

“एक लड़का हमने तजवीज किया है। उसको तुम्हें दिखाऊंगा।”

“ठहरिए। प्रबोध के बाबा आ रहे हैं।”

काहन चोगे के मुख पर हाथ रखकर अपनी पत्नी से कहने लगा,
“राम जी टेलीफोन पर आ रहे हैं।”

“परन्तु!” सोमा ने रोष में कह दिया, “आपने मेरे विषय में क्यों कहा है?”

“तुम्हारे विवाह के विषय में बात करने के लिए।”

“बात करने से पहले लड़का मुझको दिखाना होगा।”

“दिखा देंगे। तुम उसको पसन्द कर लोगी।”

इस समय राम आ गया। काहन ने चोगे के मुख से हाथ उठाकर कहा, “हेलो! चाचा जी! हां। बात यह है कि कल रात विश्वम्भर ने विवाह कर लिया है। उसके विषय में कुछ विचार करना है। आप यहां मध्याह्न का भोजन लेने आ जाइए।”

“कहां है विश्वम्भर?”

“बम्बई चला गया है।”

“बहुत चतुर निकला!”

“जी! मैंने कहा था न कि उसने स्वयं ही पढ़ाई की है। नौकरी ढूंढी है और तरक्की कर रहा है। अब उसने विवाह भी हमको बताए बिना कर लिया है।”

“अच्छा भाई, मेरी बधाई स्वीकार करो।”

“आप आ जाइए। कुछ बेटी सोमा के लिए भी विचार करना है।”

“कहां है वह ?”

“यहां बैठी है। उसकी मां का भी लेते आइए।”

“यह सामने बैठी है। क्यों सुभद्रा, चलीगी काहन के घर ?”

“काहन जी सोमा के विवाह के विषय में कह रहे हैं। इससे चलना ही होगा।”

“तो ठीक है। हम आएंगे। प्रबोध भी आएंगा।”

“आने दो। रूप को तथा राजकुमार को भी बुला रहा हूं। हमारे घर वालों में से वह ही विवाह पर उपस्थित था।”

विश्वम्भर के छोटे भाई को मोटर से रूप और राजेश्वरी के घर भेज दिया गया। रूप आया तो साथ सुन्दरी भी आ गई। इस प्रकार एक विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों का समारोह हो गया।

भूषण को किसीने बुलाया नहीं और अपने-आप वह आया नहीं। परिवार के अन्य सदस्यों निरञ्जनदेव इत्यादि को भी नहीं बुलाया गया।

काहन के छहों बच्चे, रूप, सुन्दरी, राम और रोहिणी, सुभद्रा, सोमा, दिति तथा प्रबोध, राजकुमार, राजेश्वरी और राजकुमार की पत्नी सन्तोष सब उपस्थित थे। भोजन हुआ और फिर सब बड़े बैठ गए। बच्चों को छुट्टी दे दी गई। वे भीतर के कमरों में जा खेलने लगे।

बात काहन ने आरम्भ की। उसने करुणा का परिचय दिया और बताया कि उसकी मां प्रातः विश्वम्भर और करुणा का पत्र लेकर आई थी। उसने वह पत्र पढ़कर सुना दिया। इसके साथ उसने बताया, “सोमारानी ने जब यह पत्र सुना तो बोली कि विश्वम्भर बहुत बड़ा बेईमान है। उसने तो इसके साथ भाग जाने का वचन दिया हुआ था। साथ ही यह रो रही थी। मैंने इसको कहा है कि यदि यह पसन्द करे तो इसका विवाह कर दिया जाए। यह तैयार है यदि लड़का इसको पसन्द हो तो ?”

सुभद्रा ने सोमा से पूछ लिया, “क्यों सोमा, क्या चाहती हो ?”

“विवाह तो मैं करूंगी ही। मेरे आंसू इस कारण निकल पड़े थे कि मैंने विश्वम्भर को विवाह के लिए बहुत यत्न से राजी किया था, परन्तु वह बेईमान निकला। बातें मुझसे करता रहा और विवाह का प्रबन्ध

करुणा की मां से करता रहा ।”

“पर सोमा !” राजकुमार ने पूछ लिया, “तुम तो विश्वम्भर की बहिन लगती हो । इस घर में बच्चे भी जानते हैं कि तुम उसकी बहिन हो । फिर तुमने विवाह के लिए यत्न ही क्यों किया ?”

“आज संसार में कोई भी व्यक्ति नहीं जो इस प्रकार की व्यर्थ की बातों को माने । एक मां के पेट से पैदा हुए ही भाई-बहिन लगते हैं ।”

“देखो सोमा !” राजकुमार ने कह दिया, “विवाह की रस्म किस-लिए मनाई जाती है, जानती हो ?”

“यह भी व्यर्थ है । यह उन औरतों की रक्षा के लिए बनाई गई है जो स्वयं कुछ भी कमाई नहीं कर सकतीं ।”

“और तुम बहुत बड़ा वेतन पाने की क्षमता रखती हो ?”

“मुझको नौकरी की आवश्यकता नहीं । यह निर्धन माता-पिता की लड़कियों को करनी पड़ती है । मुझको समाज के कानून के संरक्षण की आवश्यकता नहीं । मेरा संरक्षण मेरा धन करेगा ।”

“क्यों चाची !” राजकुमार ने सुभद्रा से पूछ लिया, “कितना कुछ सोमा को देने वाली हो ?”

“प्रबोध पूर्ण सम्पत्ति के बंटवारे के लिए कह रहा है । मोटे तौर पर छः से दस लाख इसके हिस्से का बनेगा ।”

“तब ठीक है ।” काहन ने कह दिया, “मेरी मौसी का लड़का है । नाम सन्तराम है । वह इससे विवाह कर लेगा । क्यों सोमारानी ! बुलाऊं उसको ?”

“सन्तराम पर तो मैं थूकूंगी भी नहीं ।”

“ओह ! क्या खराबी देखी है तुमने उसमें ?” काहन का प्रश्न था ।

“वह दुकानदार है । पढ़ा-लिखा नहीं । सूरत-शक्ल भी मामूली है ।”

“और तुम कितनी पढ़ी हो ?”

“मेरे पास रुपया है, उमके पास क्या है ?”

बात राम ने समाप्त कर दी । उमने कहा, “काहन भैया ! इस लड़की से बात करनी व्यर्थ है । इसके मिर पर रुपया सवार है । उसके बल पर

यह भी देवी भवानी बन किसीके सिर पर चढ़ेगी ।”

सोमा नाराज हो, उठकर जाने लगी तो सुभद्रा ने उसकी बांह पकड़ ली । उसने कहा, “बैठो ।”

सोमा बैठी तो सुभद्रा ने कहा, “पर्स में से रुपया निकालो, जो मेरे तकिये के नीचे से उठा लाई हो ।”

“पर मां तुमने स्वयं ही तो कहा था । ले लो ।”

“दस रुपये लेने को कहा था, न कि पांच सौ रुपये ।”

प्रबोध हस पड़ा । हंसकर बोला, “मौसा जी ! यदि मां की सम्पत्ति में से इसे कुछ न मिला तो फिर यह सन्तराम को भी स्वीकार कर लेगी ।”

सब हंसने लगे ।

अब रूप बोला, “आज तो प्रबोध ने भारी अकल की बात की है । प्रबोध ! कहां से सीखकर आए हो ?”

“बड़ी मां ने बताया है कि मेरी मां का दिमाग भी रुपये ने खराब कर रखा है ।”

सुभद्रा ने क्रोध से पूछ लिया, “और तुम्हारे धन ने तुम्हारे मस्तिष्क को खराब क्यों नहीं किया ?”

३

प्रबोध ने हठ किया और राम ने मध्यस्थ बन सुभद्रा की सम्पत्ति का बंटवारा कर दिया । उसने सात भाग किए । उनमें दो भाग सुभद्रा के दो भाग प्रबोध के, एक-एक भाग अन्य तीन बच्चों का ।

“प्रबोध के दो भाग क्यों किए हैं ?”

“वह काम करता था, इस कारण ।”

“और लड़कियों का एक-एक भाग क्यों ?”

“वे घर में काम नहीं करतीं ।”

“मेरे दो भाग किसलिए हैं ?”

“तुम भी काम करती हो । तुम्हारे भूषण जी भी काम करते हैं ।”

“और भूषण जी का भाग क्यों नहीं ?”

“इसलिए कि वह घर का प्राणी नहीं है ।”

“हमको यह फैसला मान्य नहीं।”

“तो न मानो।” इतना कह राम जाने लगा तो सुभद्रा ने कहा, “भापा ! ठहरो ! मैं यह कह रही हूँ कि कमल इत्यादि, जिनको तुमने एक-एक भाग दिया है, वे मानेंगे नहीं।”

“वे मान गए हैं।”

“सोमा भी ?”

“हां।”

विवश सुभद्रा को मानना पड़ा। जो ठेके के काम चल रहे थे वे दो भागों में बांट दिए गए। शेष सम्पत्ति, स्थान और नगदी तीन भागों में बांट दी गई। सोमा इत्यादि को साढ़े सात-सात लाख मिल गया।

नकद कम्पनियों के हिस्सों में और दिल्ली में मकानों के रूप में साढ़े सात लाख रुपया सोमा को मिला तो वह स्कूल जाने का बहाना भी छोड़ बैठी। इस समय सुभद्रा और भूषण कोठी छोड़, एक पृथक् बंगला ले उसमें रहने लगे थे। प्रबोध, सोमारानी और दिति अभी भी अपने बाबा रामकुमार के पास रहते थे। रोहिणी सोमा के लिए पति की खोज कर रही थी। कई लड़के मिल रहे थे, परन्तु अभी निर्वाचन नहीं किया गया था कि एक दिन सोमा एक युवक को साथ लिए हुए अपने बाबा के पास पहुंची और कहने लगी, “भापा ! ये हैं रुद्रमणी। ये वाराणसी के रहने वाले हैं और मुझको विवाह के लिए कह रहे हैं।”

राम भौचक्का हो मुख देखता रह गया। इसपर उस युवक ने पूछ लिया, “बाबा, क्या देख रहे हैं मेरे मुख पर ?”

“यह देख रहा हूँ कि तुम किसके पुत्र हो।”

“और यह मेरे मुख पर लिखा है ?”

“उसका नाम-धाम तो नहीं, परन्तु उसका व्यवसाय और स्वभाव तो लिखा ही हुआ है।”

“सत्य !”

“हां।”

“तो बताओ, क्या लिखा हुआ पढ़ा है आपने ?”

“कुछ उल्लेखनीय नहीं है। मैंने तुमको देख लिया है। अब तुम जा सकते हो। कल यहां आकर तुम इसी लड़की से पूछ जाना कि तुम्हारा

इससे विवाह होगा अथवा नहीं।”

“बाबा, विवाह तो होगा। अपनी इच्छा से कर दो अथवा मैं इसका अपहरण करूंगा।”

“तो फिर यहां किसलिए आए हो ? जो इच्छा है कर लो।”

“चलो सोमा !” रुद्रमणी ने कहा, “चलो, चलो।”

“मैं अपने वस्त्र तो ले लू।”

“क्या करोगी लेकर। बनारस में बहुत सस्ते मिल जाएंगे।”

“अच्छा भापा ! नमस्कार।” इतना कह सोमा कमरे से और फिर कोठी से निकल गई। राम नहीं समझ सका कि क्या करे। उसको विचार आया कि रूपकृष्ण को सूचना तो दे दो। उसने टेलीफोन कर दिया। रूप को जब राम ने पूर्ण बात बताई तो रूप ने कह दिया, “पिता जी ! चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। रुपये के लोभ में ऐसे ही व्यक्ति विवाह के लिए आएंगे। भापा ! चिन्ता न करो। इस लड़की से यही कुछ आशा की जा सकती है।”

“हां, वह बालिग है। इस कारण मैं उसको रोक नहीं सका।”

“ठीक है भापा। यह तो आरम्भ ही है। अभी और आगे-आगे देखेंगे।”

राजकुमार काहन के घर से लौटा तो उसने अपनी पत्नी और मां को बताया कि विश्वम्भर के लौटने पर दो बड़े भोज दिए जाएंगे। एक पारिवारिक भोज होगा। वह तो कोठी में होगा। दूसरे में काहन के अपने साथी, विश्वम्भर के मित्र और कार्यालय के लोग आमन्त्रित होंगे। यह भोज वैंगर में दिया जाएगा। मुझको इन भोजों का (खाने में देने वाली वस्तुओं) का निश्चय करने का प्रबन्ध दिया गया है।”

विश्वम्भर लौटा तो ये दोनों दावतें हुईं। राम के कहने पर परिवार के सब सदस्य बुलाए गए। शिवकुमार के लड़के निरंजन का परिवार था, बाल-बच्चों को मिलाकर तीस प्राणी के लगभग थे। इसी प्रकार रामकुमार के दूसरे भाई-बहिनों का परिवार था। सब मिल-मिलाकर दो सौ से ऊपर प्राणी इस भोज में सम्मिलित थे।

खूब खाना-पीना हुआ। पर इस भोज में सुभद्रा, भूषण और

सोमारानी उपस्थित नहीं थे ।

४

उसी सायंकाल राजकुमार रूप के पास बैठा था, जब भापा राजकुमार का टेलीफोन आया । टेलीफोन सुनने के पश्चात् रूपकृष्ण ने राजकुमार को बताया, “सोमा किसी बनारस के युवक के साथ भाग गई है ।”

“ओह ! मैंने उसको देखा है । वोल्गा में सोमा बहिन उसी युवक के साथ चाय लेने आई थी । विश्वम्भर ने उसे अपनी मेज़ पर ही बैठा लिया । सोमा ने अपने साथी का परिचय कराया । हम दोनों का विचार था कि वह कोई ठग है ।”

“मैंने सुभद्रा के परिवार में रुचि लेनी छोड़ दी है ।”

“परन्तु चाचा जी ! हैं तो वे अपने ही ?”

“हां । इसमें सन्देह नहीं, परन्तु इस धनी बाप की बेटी ने अभिमान में सब कुछ चौपट कर दिया है ।

“देखो राज ! मैंने तुमको एक बात बताने के लिए बुलाया है । मैं विश्वम्भर के विवाह के उपलक्ष्य में दी गई दावत में उपस्थित था । भापा ने एक बात मुझको कही थी । बड़े लाला जी की सुख-समृद्धि उनके धर्म-कर्म के कारण थी । शिव दादा भी फलता-फूलता रहा, जब तक उसके मन में कमाई धर्मार्थ व्यय करने की रुचि रही । उसके विपरीत निरंजन की हालत बहुत पतली है । यह इस कारण है कि वह बेईमान है और सहानुभूति-शून्य है ।

“मैं घर आकर अपनी सम्पत्ति की बात पर विचार कर रहा हूं । मैं जीवन के आरम्भ में जुआरी था । फिर व्यापारी बन गया और अन्त में ठेकेदार बन गया । बहुत रुपया कमाया है, परन्तु धर्म के लिए व्यय करने की रुचि नहीं रही । मैं देख रहा हूं कि मेरी आधी कमाई तो सुभद्रा और उसके बच्चों ने खराब कर दी है । आधी पर भी भारी आय हो रही है । इससे मेरे मन में विचार आया है कि इसमें से कुछ धर्म-कर्म करना चाहिए ।

“जब मैं जुआ खेलता था तो एक बुआ गौरी थी । वह परिवार-भर में धर्म-कर्म पर व्यवस्था दिया करती थी । अब तुम संस्कृत और

शास्त्र पढ़े हो। इस कारण तुमको बुलाया है कि मुझको राय दो कि मैं क्या करूं जिससे मेरी कमाई भले काम में लग सके ? ”

“परन्तु चाचा जी ! सुन्दरी से पूछ लिया है ?”

रूप हंस पड़ा। हंसकर पूछने लगा, “तुमने मुझको औरतों की राय से काम करते कब देखा है ?”

“जब आप गौरी मौसी के कहने से जुआ खेलना छोड़ बैठे थे।”

“वह तो ऐसे ढंग से बात करती थी कि बड़े-बड़े पढ़े-लिखों के भी कान कतर लेती थी।”

“परन्तु चाचा जी ! बीस वर्ष से ऊपर तक तो सुभद्रा चाची आप-पर राज्य करती रही है।”

“हां ! वह मेरे जीवन में एक काले बादल की भांति छाई रही है। परन्तु राज ! वह अवस्था निकल गई है। यह सुन्दरी ने ही सुभाव दिया है कि मैं तुमसे राय करूं। वह इसमें पूर्णरूप में सहमत है। वह तो यह भी कहती है कि मैं अब काम-धन्धा छोड़, कहीं पहाड़ पर जाकर रहना आरम्भ कर दू। अपने निर्वाह के लिए थोड़ी-मो आय रख लू और शेष छोड़कर चल दू।”

“और चाची है कहां ?”

“कुछ खरीदने बाजार गई है।”

“कितना रुपया है आपके पास ?”

रूप ने अपनी अलमारी में एक ‘फाइल’ निकाल ली और उसको राजकुमार के सामने रख, खोल बताने लगा, “इस समय केवल एक ठेके का काम चल रहा है। वह भी समाप्त होने वाला है। उसमें अभी लगभग दस हजार और खर्च होगा और उसका बकाया ‘बिल’ सवा लाख सरकार से लेना बनता है। उसपर टैक्स इत्यादि देने हैं। सब कुछ दे-दिलवाकर प्रथम जनवरी को पचपन लाख की सम्पत्ति है। इसमें से पांच लाख मैं भापा जी और अपने निर्वाण के लिए रखकर शेष सब दान-दक्षिणा में देना चाहता हूं।”

“देखो चाचा जी ! विद्या-दान से श्रेष्ठ कोई दान नहीं, परन्तु ये स्कूल, कालिज जो सरकारी और नीम-सरकारी संस्थाएं खुल रही हैं, पह विद्या नहीं, अविद्या का दान कर रही हैं।

“मैं तो यह समझता हूँ कि यदि कोई ऐसी शिक्षण-संस्था हो, जो सरकारी पाठ-विधि के अतिरिक्त शिक्षा दे तो उसमें कोई पढ़ने वाला नहीं आएगा। इससे मैं एक विद्यादान का दूसरा ढंग चलाने के लिए कहता हूँ।

“नई दिल्ली में कोई बड़ा पुस्तकालय और विद्याकेन्द्र, जिसमें व्याख्यान इत्यादि हो सकें खोल सको तो बहुत कल्याण का कार्य होगा।”

“तो तुम एक योजना बनाओ और स्वयं इसमें कार्य करो तो मैं सब धन बटोरकर तुमको दे सकता हूँ।”

“तो चाचा जी ! एक ट्रस्ट (न्यास) बना दो।”

“लिखत-पढ़त व्यर्थ है। तुम सोल ट्रस्टी बन जाओ और अपने पीछे ट्रस्टी नियुक्त करने की प्रथा बना जाओ। बस मैं यही चाहता हूँ।”

“इसपर भी चाचा जी, कुछ तो लिखत-पढ़त हो जानी चाहिए।”

“वह हो जाएगी।”

“तो मैं योजना बनाता हूँ। परन्तु स्थान ?”

“देखो। यह मकान मेरा है। साथ वाला मकान भी मेरा है। इन दोनों को मिलाकर कुछ बना लो।”

“कितनी जगह है यह ?”

“दोनों मकान मिलाकर ग्यारह सौ गज स्थान है।”

“बहुत कम है।”

“दो मकान और मोल लिए जा सकने हैं।”

“तब कुछ काम बन सकता है।”

“यत्न करूंगा।”

अभी बात समाप्त नहीं हुई थी कि सुन्दरी आ गई। उसको रूप ने बता दिया, “राज ने एक योजना बनाई है और उसने उसका प्रबन्ध करने का भी वचन दिया है।”

“मुझको इससे यही आशा थी।”

“एक अन्य भी समाचार है।”

“क्या ?”

“सोमा किसीके साथ भाग गई है।”

“यह भी आशा के अनुसार ही है, परन्तु वह सुखी वहां भी नहीं

रहेगी।”

रूप हंसता रहा। राजकुमार ने अगले दिन अपनी योजना लिखकर लाने का वचन दिया और चला गया।

राजकुमार के चले जाने पर सुन्दरी ने कहा, “हमको भापा जी से मिलना चाहिए।”

“किसलिए?”

“इससे उनकी चिन्ता निवारण कर सकेंगे।”

“तो चलो।”

वे दोनों मोटर में सवार हो श्रीराम रोड पर जा पहुँचे। राम रात का खाना खा रहा था। प्रबोध, दिति और कमल भी मेज पर बैठे थे। रोहिणी रसोईघर में थी और नौकर से खाना ठीक करवा रही थी।

राम ने रूप को देखा तो रोहिणी को आवाज दे दी। वह आई तो सुन्दरी ने पांव-लागू की और उसके पास बैठ गई। रसोइया खाना परसने लगा था। रूप और सुन्दरी के लिए भी खाना लग गया।

राम ने पूछ लिया, “कैसे आए हो?”

“यही सोमा के विषय में जानने और विचार करने के लिए कि दूसरों का क्या किया जाए।”

“प्रबोध के विवाह का प्रबन्ध तो हो गया।” रोहिणी ने कह दिया, “सगाई की रस्म अगले सप्ताह हो जाएगी और फिर शीघ्र विवाह हो जाएगा। सोमा के लिए एक लड़का आज राजेश्वरी के साथ देखने गई थी। अब वही दिति के लिए निश्चय कर लेंगे।”

“मेरा विचार है भापा! यह सब जल्दी कर दिया जाए। मैं अपनी पूर्ण सम्पत्ति का एक ट्रस्ट बनाने वाला हूँ और आपके तथा अपने खर्च के लिए रखकर शेष उस ट्रस्ट को दान कर देने वाला हूँ।”

“किस काम के लिए ट्रस्ट बनाओगे?”

“राजकुमार को योजना बनाने के लिए कहा है।”

“यह ठीक है।”

रूप ने बात बदल दी। उसने प्रबोध से पूछ लिया, “तुमने अपनी पत्नी देखी है?”

“नहीं जी! देखी तो नहीं परन्तु बड़ी मां कहती है कि वह सुन्दर

है, सुघर है।”

“तो तुमने स्वीकार कर ली है ?”

“और कर ही क्या सकता हूं ? मैं सोमा के साथ आने वाले शोचवे की भांति साहमी तो हूं नहीं।”

रूप हंस पड़ा। हंसते हुए कहने लगा, “अच्छा भापा ! जल्दी विवाह हो जाना चाहिए। मैं यह कोठी ट्रस्ट को दे रहा हूं।”

“तब तो ठीक है। हम भी गोवर्धनलाल के साथ उसके आश्रम में जा रहेंगे। क्यों रोहिणी ? क्या कहती हो ?”

“मैं बहुत प्रसन्न हूं इससे।”

इसके दो सप्ताह के भीतर ही प्रबोध और दिति का विवाह हो गया और दोनों को पृथक्-पृथक् रहने के लिए मकान मिल गया। कमल प्रबोध के साथ रहने लगा। इसी काल में रूपकृष्ण ने कनाटप्लेस में चार मकान ले लिए और इनके स्थान पर एक भवन बनवाने का मान-चित्र बनवा लिया। नीचे की मंज़िल पर पढ़ने का कमरा था। ऊपर की मंज़िल पर एक हॉल, जिसमें एक सहस्र से ऊपर कुर्सियां लगी थीं, और पुस्तकालय के कमरे तीसरी मंज़िल और चौथी मंज़िल पर बनाने की योजना थी। सब मिलाकर एक बड़ा हाल, रीडिंग रूम और छोटी-मोटी सभाओं के लिए कमरे तथा पुस्तकालय के लिए बीस कमरे। यह था इमारत का नक्शा। चार मकान गिरा दिए गए और इनके स्थान पर इमारत का काम आरम्भ हो गया। रूप का यह स्वभाव था, जब कोई बात उसके मस्तिष्क में बैठ जाती, तब वह उसको पूरा किए बिना दम नहीं लेता था।

एक वर्ष में सब कुछ तैयार हो गया। लिखत-पढ़त हो गई। राजकुमार इस पुस्तकालय का अकेला ट्रस्टी बना दिया गया। उसके जीवन-काल के लिए उसको पांच सौ रुपया प्रतिमास कार्य के लिए भत्ते के रूप में दे दिया गया। लिखत में यह भी अधिकार राजकुमार को दिया गया कि वह अपने पीछे एक अथवा एक से अधिक अपने स्थानापन्न नियुक्त कर सके।

राजकुमार विचार करता था कि क्या कारण है जो समान परिस्थितियों में उत्पन्न और समान रूप में कार्य करते हुए भी व्यक्ति समान घटनाओं में भिन्न-भिन्न प्रतिक्रिया देते हैं। भूषण पर मुकदमा हुआ और वह जेल-मुक्त हो गया। सुन्दरी जेल जाती-जाती वच गई। दोनों समान कर्म कर रहे थे। इसपर भी भूषण तो पतनोन्मुख हो गया और सुन्दरी न केवल स्वयं वैसे कार्य से बाहर हो गई, अपितु वह अपने माथी में भी विरक्तता उत्पन्न कर सकी। वह राम, रोहिणी, प्रबोध और सुभद्रा इत्यादि से मिलता रहता था।

भूषण को आश्रय मिला सुभद्रा के घर और सुन्दरी को रूप के घर। दोनों अवस्थाओं में यौन-सम्बन्ध बना, परन्तु एक से सम्बन्ध वैमनस्य का कारण हुआ। मां-पुत्र में, भाई-बहिन में और श्वसुर-पतोह में झगड़ा हुआ। और सब पृथक्-पृथक् होकर रहने लगे। दूसरी अवस्था में सुन्दरी ने रूप को अपने माता-पिता तथा अन्य सम्बन्धियों से मेल-मुलाकात की प्रेरणा दी।

‘यह क्यों?’ उसके विस्मय का ठिकाना न रहा, जब उसने एक दिन सुभद्रा और भूषण में भी जूत-पजार होती देखी। यह रूप तथा राम इत्यादि के हरिद्वार चले जाने के पीछे की बात है। एक दिन राजकुमार सुभद्रा की कोठी के बाहर से गुजर रहा था कि वहां एक ट्रक खड़ा था और उममें सामान लादा जा रहा था। राजकुमार को समझ आया कि ये लोग मकान बदल रहे हैं। उसके ट्रक वाले से पूछा, “यह सामान कहां जा रहा है?”

डाइवर ने उत्तर दिया, “मथुरा रोड पर ओखला के पास।”

“तो लोग वहां जा रहे हैं?”

“हां! साहब जा रहा है।”

“और उनकी पत्नी नहीं?”

“जी! वे यहां ही रहेंगी।”

राजकुमार इसका अर्थ समझने के लिए कोठी में चला गया। भूषण बरामदे में खड़ा था और सामान निकाला जा रहा था। भूषण ने

राजकुमार को देखा तो प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा । राजकुमार ने उसके इस प्रकार देखने का आशय समझ पूछ लिया, “चाची जी कहां हैं ?”

“कुछ काम है उनसे ?”

“कुछ काम है, जो चाचा जी से नहीं है ।”

भूषण हंस पड़ा । उसकी हंसी में स्वाभाविक ध्वनि नहीं थी । इससे राजकुमार को विस्मय हुआ । भूषण को अपनी हंसी भी विलक्षण लगी तो वह एकदम गम्भीर हो कहने लगा, “वाज़ार गई हुई है ।”

“और चाचा जी कहां जा रहे हैं ?”

“मैंने अपना निवास उनसे पृथक् कर लिया है । वे यहां रहेंगी और मैं नये मकान में रहूंगा ।”

“तो भगड़ा हो गया है ?”

“यह मनुष्य का स्वभाव है । सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, ये मन के धर्म हैं ।”

राजकुमार ने बात बदल दी, “चाची कब आने वाली है ?”

“मैं क्या जानूँ ! मुझको बताकर नहीं गई ।”

“कोठी के नौकर-चाकर किधर हैं ?”

“तुम पूछनेवाले कौन हो ?”

“चाचा जी महाराज ! नाराज़ होने की बात नहीं । मुझको चाची जी से काम है और मैं उनकी प्रतीक्षा करना चाहता हूँ ।”

“तो करो मैं तो जा रहा हूँ ।”

सबसे अन्त में ‘टेलीविज़न सैट’ नौकर लाया । उसको लेकर भूषण अपनी मोटर में बैठ गया और ट्रक वालों को अपने लिए कह मोटर चलाकर ले गया ।

राजकुमार अभी भी बरामदे में खड़ा था । कोठी में कोई नहीं था । एक चौकीदार और एक चपरासी तो वहां सदा ही रहा करते थे । वे भी नहीं थे । राजकुमार विस्मय करता हुआ सुभद्रा के आने की प्रतीक्षा कर रहा था । उसको आश्चर्य था कि भूषण कोठी को खुली और बिना किसीकी देख-रेख में छोड़ गया था । उसको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि वह वहां से कुछ चोरी कर भागा है । उसके मन में आया कि पुलिस में

सूचना भेज दे। बरामदे में रखे टेलीफोन का चोगा उठा, वह पुलिस का नम्बर घुमाने ही लगा था कि उसके मन में विचार आया कि ज़रा भीतर नज़र डालकर देख ले। उसने चोगा फिर रख दिया और कोठी में चला गया। सब कमरे खुले थे। केवल एक कमरा, जो प्रायः शयनागार के रूप में प्रयोग होता था, बन्द था।

उसने धक्का देकर किवाड़ खोलना चाहा तो वह खुल गया। कमरे में अंधेरा था। उसने बिजली जलाई। पलंग पर सुभद्रा हाथ-पांव बांधे हुए और मुख में कपड़ा ठूसे हुए पड़ी थी।

राजकुमार ने देखा—सुभद्रा के कई स्थान पर चोटें आई हुई थीं। वह राजकुमार की ओर दया-याचना के भाव से देख रही थी। राजकुमार ने उसके मुख से कपड़ा निकाला और उसके हाथ-पांव खोल दिए। सुभद्रा रोने लगी थी।

“क्या हुआ है चाची ?”

“भूषण गया ?”

“हां।”

“सब कुछ लूटकर ले गया है।”

“चाची ! ईश्वर का धन्यवाद करो कि तुम्हारी हत्या नहीं कर गया और फिर मैं समय पर आ गया हूं। यदि मैं न आता तो तुम अभी भी यहां पड़ी रहती।”

“राज ! एक गिलास जल ले आओ।” सुभद्रा इस समय उठकर पलंग पर बैठ गई।

राजकुमार गया और रसोईघर में से गिलास ले भर लाया। सुभद्रा ने जल पिया और बोली, “तुम ठीक कहते हो, मुझको तुम्हारा धन्यवाद करना चाहिए। कदाचित् रात-भर इसी प्रकार पड़ी रहती तो मर जाती।”

“परन्तु मेरा यहां आना तो अनायास ही हो गया है न ?”

“कुछ भी हो। तुमने जान बचा ली है।”

“कोठी के नौकर कहां हैं ?”

“वह उनको भी साथ ले गया है। उनको पहले ही मोटर में भेज दिया था। जब वे चले गए तो उसने मुझको पीटना आरम्भ कर दिया।

मैंने बचने का यत्न किया तो मेरे मुख में रुमाल ठूस मेरी आवाज बन्द कर, मेरे हाथ-पांव बांध दिए। पीछे मुख पर कपड़ा बांध कमरे का द्वार बन्द कर चला गया। फिर उसने साथ के कमरे में, जो हमारा स्टोर रूम था, जाकर चाबियां लगा सेफ खोला और जो कुछ भी वहां था, ले गया है। कुछ फर्नीचर भी यहां से ले गया मालूम होता है। सामान जाने का शब्द सुनती रही हूँ।”

“चाची ! पुलिस मे रिपोर्ट लिखवाओगी ?”

वह गम्भीर हो गई। फिर राजकुमार का मुख देखती रह गई। राज ने पुनः कहा, “पुलिस को टेलीफोन कर दू ?”

“नहीं।” उसने कहा।

राजकुमार विस्मय में उसका मुख देखने लगा, तो उसने कह दिया, “मैं जांच-पड़ताल मे बयान नहीं देना चाहती। बहुत बदनामी होगी। प्रबोध को टेलीफोन कर दो।”

राजकुमार उठा और बाहर टेलीफोन के पास जाकर प्रबोध का नंबर घुमाने लगा। सुभद्रा उठ रसोईघर में चली गई और चाय के लिए इलेक्ट्रिक जग मे पानी गरम करने के लिए स्विच खोल आई।

प्रबोध बोल रहा था। राजकुमार ने वहां की अवस्था का वर्णन किया और बताया कि वह कैसे यहां आया है और यहां क्या देखा है। प्रन्त में कहा, “चाची चाहती हैं कि तुम जरा यहां आ जाओ।”

“क्या करूंगा आकर ?”

“मा अकेली है। भयभीत है। घायल भी है और मरती-मरती बची है।”

“उसको कह दो कि पुलिस में रिपोर्ट कर दे और हस्पताल में चली जाए।”

राजकुमार ने सुभद्रा को प्रबोध का उत्तर सुनाया तो वह डबडबाई आंखों से कहने लगी, “राज ! मुझको आज रात तो अपने घर ले चलो।”

“और यह कोठी ?”

“ऐसा करो, टैक्सी मंगवा लो। मैं तब तक मर कण्ठों को ताले लगा तैयार हो जाती हूँ।”

राजकुमार टैक्सी-स्टैंड पर टेलीफोन करने लगा तो सुभद्रा चाय बनाने चली गई। जब तक टैक्सी आई, वह चाय बनाकर ले आई। दोनों ने चाय पी और ताले लगा वह राजकुमार के घर जा पहुंची।

अगले दिन कोठी के नौकर वापस कोठी में आए वहां बैठ प्रतीक्षा करने लगे। ग्यारह बजे के लगभग सुभद्रा वहां पहुंची तो उनको बैठे देख पूछने लगी, “कहां गए थे तुम सब ?”

“साहब ने कहा था कि आप ओखला वाली कोठी में जाने वाली हैं। हम मोटर में सवार हो, वहां चले गए। पीछे साहब आए तो कहने लगे कि आप नहीं आईं। प्रातःकाल उन्होंने हमको वापस भेज दिया है। कहा है कि हम आपके साथ ही जा सकते हैं।”

सुभद्रा अब अकेली उस काठी में रहने लगी थी। अब उस सैकड़ों सदस्यों के परिवार में केवल राजकुमार और राजेश्वरी ही उससे बोलते थे। वे कभी उसका सुख-समाचार लेने आ जाते थे। शेष कोई भी उससे सम्बन्ध नहीं रखता था।

एक दिन पुस्तकालय में प्रबोध राजकुमार से मिलने आया। राज उसको अपने कमरे में लेकर चला गया। वहां बैठा राजकुमार ने पूछ लिया, “कैसे आए हो ?”

“मैं भूषण ताया से मिलने गया था।”

“किसलिए ?”

“यह जानने के लिए कि उसने मां को क्यों छोड़ दिया है।”

“तो क्या कहता था ?”

“कहता था कि वह बदकार औरत है।”

“तो फिर ?”

“मैं तुमसे पूछने आया था, क्या विचार है तुम्हारा ?”

“भला मुझसे क्यों ?”

“तुम वहां जाते रहते हो, इसलिए ?”

“मैंने उसमें ऐसी कोई खराबी नहीं देखी जो भूषण में नहीं है।”

“मैं उसका भूषण से मुकाबिला नहीं करना चाहता। मैं तो साधारण रूप में जानना चाहता हूं।”

“जानते हो, तुम्हारा बाप कौन है ?”

“जानता हूँ।”

“वह भूषण नहीं है न ?”

“नहीं।”

“तो फिर मुझसे क्या पूछते हो ?”

प्रबोध उठकर चला गया। उसने जाते हुए नमस्कार भी नहीं किया। राजकुमार के मन में आया, ‘यह कैसा मूर्ख है !’ फिर मन में सोचता रहा, ‘जैसी मां है वैसा ही पुत्र है।’

इस घटना के एक सप्ताह के अन्दर ही कोठी में रात को सोए हुए सुभद्रा की हत्या हो गई। राजकुमार को सन्देह था कि हत्या प्रबोध ने की है अथवा कराई है। परन्तु पुलिस जांच कर रही थी और किसी परिणाम पर नहीं पहुच रही थी। इससे वह चुप था।

सुभद्रा के मस्कार के समय केवल राजेश्वरी और राजकुमार ही वहां थे। अन्य कोई नहीं आया था।

भूषण से वैगर पर एक दिन भेंट हो गई। राजकुमार के पास वह स्वयं ही आकर बैठ गया। राजकुमार ने उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा तो वह पूछने लगा, “सुभद्रा की हत्या की जांच में क्या हुआ है ?”

“मुझको विदित नहीं।”

“तो तुम इसमें रुचि नहीं ले रहे ?”

“नहीं ?”

“क्यों ?”

“दिल्ली में रोज़ तान-चार हत्याएं हो जाती है। मेरे लिए यह हत्या उनसे किसी प्रकार भी विलक्षण नहीं है।”

“वह तुम्हारी चाची थी।”

“हां ! परन्तु मैं उसका न तो उत्तराधिकारी हूँ न ही उसका संरक्षक था।”

“मैं जानता हूँ कि हत्या किसने की है।”

“सन्देह तो मुझको भी है।”

“भल किसपर सन्देह है ?”

“भूषण ताया पर।”

“पिता जी भी तो प्रबोध के पिता हैं। हां ! बेचारी सुन्दरी में एक मानव-हृदय है। चलकर यत्न कर लो। यदि सुन्दरी को राजी कर लोगी तो रूप मान जाएगा। वह भी आजकल का जीव है।”

“पर भापा ! आप तो पारिवारिक सम्बन्ध की महिमा जानते हैं।”

“हां, मेरे पास रहना चाहो तो रह सकती हो। क्यों राहिणी ! तुम क्या कहती हो ?”

“मैं तो इस संसार में आपका समर्थन करने के लिए ही उत्पन्न हुई हूं। पचहत्तर वर्ष की हो गई हूँ मां, बाप, भाई, बन्धु सबको छोड़ आपके पीछे-पीछे ही तो चल रही हूँ। ग्यारह वर्ष की आयु से यही करती चली आ रही हूँ। भला अब, जीवन के इस अन्तकाल में आपसे विमुख होकर क्या करूंगी ?”

“सोम ! मंजूरी मिल गई है। हरिद्वार चली चलो। दिल्ली में रहना ठीक नहीं। प्रबोध ने मां की हत्या करवा दी। भूषण की भी हत्या उसने ही करवाई है और वह तुमको भी नहीं छोड़ेगा।”

○, ○ ○



- हिन्द पॉकेट बुक्स सभी अच्छे पुस्तक-विक्रेताओं, समाचारपत्र-विक्रेताओं, रेलवे बुक-स्टालों तथा रोडवेज बुक-स्टालों से मिल सकती हैं।
- देश-विदेश के प्रसिद्ध लेखकों की पुस्तकें—उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, उर्दू शायरी, ज्ञान-विज्ञान, हास्य-व्यंग्य, स्वास्थ्य, स्त्रियोपयोगी एवं जीवनोपयोगी साहित्य हिन्द पॉकेट बुक्स में प्रकाशित किया जाता है। हिन्द पुस्तकें उच्चकोटि के लेखकों, आकर्षक गेटअप, सुन्दर छपाई, सस्ते दाम के लिए भारत-भर में प्रसिद्ध हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य केवल एक रुपया है। केवल कुछ पुस्तकों का मूल्य दो रुपये प्रति है, परन्तु उनकी पृष्ठ-संख्या २५० से भी ऊपर है।
- यदि आपको हिन्द पॉकेट बुक्स प्राप्त करने में किसी प्रकार की कठिनाई हो तो हमें लिखें। पांच पुस्तकें एकसाथ मंगाने पर डाक-व्यय फ्री की सुविधा भी दी जाती है। यदि आप चाहते हैं कि आपको हिन्द पॉकेट बुक्स की सूचना निरन्तर मिलती रहे, तो अपना नाम, व्यवसाय और पूरा पता कार्ड पर लिखकर हमें भेज दें। हम आपको नये प्रकाशनों की सूचना देते रहेंगे।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

